



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर Indian Institute of Technology Indore

वार्षिक प्रतिवेदन
2024-25



अनुक्रमणिका

1. परिचय	02
2. निदेशक संदेश	04
3. शासी मंडल, संस्थान के अधिकारीगण, आईआईटी इंदौर के अभिषद् के सदस्यगण	06
4. शैक्षणिक कार्य	13
5. पदक प्राप्तकर्ता	18
6. रैंकिंग	22
7. संकाय कार्य	23
8. विभाग व स्कूल की प्रोफाइल	26
• खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी विभाग (Astronomy, Astrophysics and Space Engineering)	
• जीवविज्ञान एवं जैव चिकित्सा अभियांत्रिकी विभाग (Biosciences and Biomedical Engineering)	
• रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग (Chemical Engineering)	
• जानपद अभियांत्रिकी विभाग (Civil Engineering)	
• संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग (Computer Science and Engineering)	
• विद्युत अभियांत्रिकी विभाग (Electrical Engineering)	
• यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग (Mechanical Engineering)	
• धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान विभाग (Metallurgical Engineering & Materials Science)	
• भौतिकी विभाग (Physics)	
• रसायन विज्ञान विभाग (Chemistry)	
• गणित विभाग (Mathematics)	
• मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान स्कूल (Humanities & Social Sciences)	
9. केंद्रों की प्रोफाइल	55
• उद्यमिता शिक्षा एवं विकास केंद्र (CEED)	
• परिष्कृत उपकरण केंद्र (SIC)	
• उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स केंद्र (CAE)	
• संगणक एवं सूचना प्रौद्योगिकी केंद्र (CITC)	
• आईआईटीआई दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन	
• भारतीय वैज्ञानिक ज्ञान परंपरा केंद्र (CISKS)	
• अत्याधुनिक रक्षा एवं अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी केंद्र (CFDST)	
• ग्रामीण विकास एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (CRDT)	
• जय प्रकाश नारायण राष्ट्रीय मानविकी उत्कृष्टता केंद्र (JPNNCEH)	
10. प्रशासन अनुभाग एवं भर्ती प्रकोष्ठ	109
11. वित्त एवं लेखा	112
12. सामग्री प्रबंधन अनुभाग (एमएमएस)	115
13. अनुसंधान एवं विकास (आर एंड डी)	117
14. अंतर्राष्ट्रीय संबंध	121
15. पूर्व छात्र एवं कॉर्पोरेट संबंध (एसीआर)	126
16. शैक्षणिक बाह्य संपर्क	130
17. मेकरस्पेस	133
18. आधारभूत संरचना विकास कार्यालय	135
19. छात्र कार्य	140
20. प्रशिक्षण एवं नियोजन प्रकोष्ठ, आईआईटी इंदौर	145
21. छात्रावास	150
22. केंद्रीय आहार सुविधा	153
23. परामर्श प्रकोष्ठ टीम	155
24. एक भारत श्रेष्ठ भारत	159
25. आईआईटी इंदौर खबरों में	166
26. संस्थान के कार्यक्रम एवं समारोह	173
27. राजभाषा समिति	185
28. संस्थान की सुविधाएँ	188
• विद्यार्जन संसाधन केंद्र	
• स्वास्थ्य केंद्र	
• केंद्रीय कार्यशाला	

परिचय

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में दुनिया में प्रमुख स्थान बनाने और एक नया बदलाव लाने के भारत के विज्ञान को ध्यान में रखते हुए, जिससे बहुत ज्यादा आर्थिक विकास हो रहा है, भारत सरकार ने तकनीकी जनशक्ति की ज़रूरत का फिर से मूल्यांकन किया और आठ नए आईआईटी स्थापित करने का निर्णय लिया। उनमें से छह ने शैक्षणिक वर्ष 2008-09 से काम करना शुरू कर दिया। ये हैदराबाद, गांधीनगर, राजस्थान, रोपड़, पटना और भुवनेश्वर में बनाए गए थे। वहीं, आईआईटी इंदौर और आईआईटी मंडी ने जुलाई 2009 से काम करना शुरू कर दिया था।

मध्य प्रदेश में स्थित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर, जिसे आईआईटी इंदौर या आईआईटीआई के नाम से भी जाना जाता है, राष्ट्रीय महत्व वाला संस्थान है। इस संस्थान ने 2009-10 में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान में एक अस्थायी परिसर के रूप में आईआईटी बॉम्बे की देखरेख में संचालन शुरू किया था। उस समय के केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री अर्जुन सिंह ने 17 फरवरी 2009 को इंदौर शहर से लगभग 25 किमी दूर खंडवा रोड पर सिमरोल में लगभग 501.42 एकड़ (2.1 किमी²) में फैले स्थायी परिसर की नींव रखी थी। फरवरी 2016 से, आईआईटी इंदौर ने अपने स्थायी परिसर से संचालन शुरू कर दिया है।

संस्थान की आधारभूत संरचना: कुल क्षेत्रफल 501 एकड़ है। कुल निर्मित क्षेत्रफल: 2,21,000 वर्ग मीटर और चरण I आधारभूत संरचना विकास के दौरान निर्माण किया गया जिसमें 5 छात्रावास, शैक्षणिक पॉड भवन, विद्यार्जन संसाधन केंद्र (केंद्रीय पुस्तकालय, प्रशासनिक भवन, सेमिनार हॉल और सभागार के साथ व्याख्यान हॉल परिसर, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, केंद्रीय आहार सुविधा, 3 आवासीय इकाइयां, खेल परिसर (इनडोर), केंद्रीय विद्यालय भवन और संबद्ध सेवाएं) शामिल हैं।

विभाग / स्ट्रीम:

- खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी
- जीवविज्ञान एवं जैव चिकित्सा अभियांत्रिकी
- संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी
- विद्युत अभियांत्रिकी
- यांत्रिक अभियांत्रिकी
- धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान
- रासायनिक अभियांत्रिकी
- जानपद अभियांत्रिकी
- मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान
- भौतिकी
- रसायन विज्ञान
- गणित

उपलब्ध पाठ्यक्रम:

- बीटेक
- एमएससी, एमएससी+पीएचडी डुअल डिग्री
- एमएस (रिसर्च), एमएस (रिसर्च)+पीएचडी डुअल डिग्री
- डेटा विज्ञान एवं प्रबंधन में एमएस डिग्री (एमएस-डीएसएम)
- एमएसडीएसएम
- बीटेक + एमटेक डुअल डिग्री
- एमटेक, एमटेक+पीएचडी डुअल डिग्री
- छात्र एक्सचेंज कार्यक्रम (एसईपी)
- पीएचडी
- बैचलर ऑफ़ डिजाइन (बी. डेस)



उद्देश्य

21वीं सदी के पीछे प्रेरक शक्ति, ज्ञान प्रधान समाजों का विकास है। इससे भारत में उच्च शिक्षा के नए संस्थानों की स्थापना हुई है। 2009 में स्थापित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर उस पहल का एक ऐसा हिस्सा है जो भारत को वैश्विक ज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में लीडर के रूप में देखता है। पुराने आईआईटी की परंपरा को जारी रखते हुए आईआईटी इंदौर का लक्ष्य अनुसंधान आधारित शिक्षा और नवाचार संचालित अनुसंधान तथा उद्यमिता पर ध्यान केंद्रित करके भारत को उसके विकास पथ पर आगे बढ़ाने में सक्रिय भूमिका निभाना है। आईआईटी इंदौर का लक्ष्य मानवतावादी सरोकारों के साथ इस उद्देश्य को हासिल करना है।



दृष्टिकोण

शैक्षणिक

- विचारों की स्वतंत्रता तथा अनुसंधान एवं नवाचार विचारों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति के साथ एक शैक्षणिक वर्ग को विकसित करना और उसका बढ़ावा देना।
- अत्याधुनिक सुविधाओं पर व्यापक व्यावहारिक प्रशिक्षण के साथ निरंतर अद्यतित ज्ञान का संतुलन प्रदान करना।
- डेटा विज्ञान, इलेक्ट्रिक वाहन, कुशल परिवहन प्रणाली, अंतरिक्ष अभियांत्रिकी, भारतीय वैज्ञानिक ज्ञान आदि जैसे भविष्य के क्षेत्रों में नए शैक्षणिक कार्यक्रम शुरू करना।
- अंतर्राष्ट्रीय छात्रों की बढ़ती संख्या का चयन करके तथा शिक्षण एवं अनुसंधान में प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय संकाय सदस्य को शामिल करके संस्थान के अंतर्राष्ट्रीयकरण को बढ़ावा देना।
- विभिन्न पीजी एवं पीएचडी कार्यक्रमों में उद्योगों, रक्षा बलों तथा अभियांत्रिकी संस्थानों से उम्मीदवारों को बढ़ाना।
- शिक्षण, अनुसंधान तथा नवाचार के लिए उद्योगों से अनुबद्ध संकाय सदस्य की भागीदारी बढ़ाना।
- पाठ्यक्रम डिजाइन, अनुसंधान, विकास तथा उद्यमिता में प्रतिष्ठित उद्योगों एवं विदेशी विश्वविद्यालयों के विशेषज्ञों को शामिल करना।

अनुसंधान, विकास एवं उद्यमिता

- विज्ञान, अभियांत्रिकी, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान में अंतःविषय अनुसंधान को बढ़ावा देना।
- सतत विकास, जलवायु परिवर्तन और खाद्य एवं जल सुरक्षा जैसे कुछ चुने हुए क्षेत्रों पर बाधाकारी और सामाजिक रूप से प्रभाव डालने वाले अनुसंधान पर कार्य करना।
- नए उत्पादों, प्रक्रियाओं और प्रौद्योगिकियों के लिए उद्योग उन्मुख अनुसंधान को बढ़ावा देना।
- अभियांत्रिकी के साथ जीवन विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान तथा कृषि विज्ञान के अभिसरण पर ध्यान देना।
- औद्योगिक अनुसंधान पार्क की स्थापना करके स्टार्ट अप और उद्यमिता के चलन को बढ़ावा देना, जो मध्य भारत का केंद्र बिंदु होगा।
- एग्रेसिव पेटेंटिंग और आईपीआर की सुरक्षा।



लक्ष्य

- सामाजिक अनुसंधान, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता और ग्रामीण विकास के माध्यम से संस्थान की शैक्षणिक, तकनीकी और सामाजिक पहुँच को बढ़ाना।
- उद्योग, शिक्षण और अनुसंधान संस्थानों के लिए विश्व स्तरीय अनुसंधान और शिक्षण सुविधाओं का विकास करना।
- कौशल विकास और राष्ट्रीय आवश्यकताओं के प्रति अनुसंधान और नवाचार को बढ़ाना।
- अभियांत्रिकी एवं जैव चिकित्सा उपकरण, रक्षा, ई-वाहन, वैकल्पिक ऊर्जा संसाधनों आदि में विश्वस्तरीय तकनीकी नवाचार के विकास में योगदान देना।



निदेशक संदेश

वित्त वर्ष 2024-25 के लिए आईआईटी इंदौर के इस वार्षिक प्रतिवेदन को प्रस्तुत करना मेरे लिए सौभाग्य की बात है, जो उद्देश्यपूर्ण विकास, शैक्षणिक नवाचार और समाज के साथ गहरे जुड़ाव को दर्शाता है। यह संस्थान शिक्षा, अनुसंधान और प्रौद्योगिकी विकास में उत्कृष्टता केंद्र के रूप में अपने स्थान को समेकित करता रहता है, जो प्रतिभा को बढ़ावा देने और राष्ट्रीय प्रगति में सार्थक योगदान देने की प्रतिबद्धता द्वारा निर्देशित होता है।

पिछले कुछ वर्षों में, आईआईटी इंदौर एक ऐसी संस्कृति के साथ एक जीवंत संस्थान के रूप में उभरा है जो महत्वपूर्ण विचार, रचनात्मकता और सहयोग को प्रोत्साहित करता है। हमारा शैक्षणिक सिद्धांत दृढ़ता से राष्ट्रीय शिक्षा नीति के दृष्टिकोण के साथ जुड़ा हुआ है, जिसमें अंतर-विषयी शिक्षा, पाठ्यक्रम में लचीलापन और कक्षा में उद्योग अनुभव के एकीकरण पर जोर दिया गया है। आईआईटी इंदौर अभियांत्रिकी, विज्ञान और अंतःविषय क्षेत्रों में लगभग 60 शैक्षणिक कार्यक्रमों का एक व्यापक और लचीला विस्तार प्रदान करता है। हमारे बीटेक, एमटेक, एमएस (रिसर्च) और पीएचडी कार्यक्रम पारंपरिक कोर क्षेत्रों के साथ-साथ कंप्यूटिंग, अंतरिक्ष विज्ञान, पदार्थ अभियांत्रिकी, मैथेमैटिकल एवं कम्प्यूटेशनल साइंस एवं डिजाइन जैसे उभरते क्षेत्रों में भी विस्तारित हैं। इन कार्यक्रमों, नई शैक्षणिक पद्धतियों और विस्तारित शिक्षण मार्गों ने शैक्षणिक परिवेश को समृद्ध किया है और हमारे छात्रों को पारंपरिक सीमाओं से परे अन्वेषण करने के लिए सशक्त बनाया है।

अनुसंधान, संस्थान की एक निर्णायक क्षमता बनी हुई है। पिछले वर्ष विभिन्न क्षेत्रों में मूल, अनुप्रयुक्त और स्थानांतरणीय अनुसंधान में निरंतर प्रगति देखी गई। गहन प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य देखभाल प्रौद्योगिकियों, स्मार्ट प्रणालियों, डिजिटल समाधानों और निरंतरता-संचालित नवाचारों में हमारे प्रयास वैज्ञानिक दृढ़ता और सामाजिक प्रासंगिकता के साथ वास्तविक दुनिया की चुनौतियों से निपटने के हमारे संकल्प को दर्शाते हैं। स्थानांतरणीय अनुसंधान पर विशेष रूप से डिजिटल हेल्थकेयर के क्षेत्र में जोर दिया गया है, जहां हमारे प्रयासों में एआई-सक्षम डायग्नोस्टिक्स, वियरेबल सेंसिंग सिस्टम और हेल्थकेयर एक्सेसिबिलिटी सॉल्यूशंस शामिल हैं। इन संगठित प्रयासों ने संस्थान को राष्ट्रीय एजेंसियों, उद्योगों और अंतरराष्ट्रीय भागीदारों द्वारा समर्थित कई सौ करोड़ रुपये की संचयी संपत्ति के साथ प्रायोजित अनुसंधान, परामर्श और सहयोगात्मक परियोजनाओं का एक व्यापक पोर्टफोलियो शुरू करने का नेतृत्व किया है।

एनआरएफ पेयर (ANRF PAIR) कार्यक्रम के तहत एक हब के रूप में सेवा करने और आस-पास के संस्थानों को परामर्श देने की जिम्मेदारी सौंपी जा रही है, यह हमारी शैक्षणिक क्षमताओं की पहचान है। इस पहल के माध्यम से, हम क्षमता निर्माण, अनुसंधान वृद्धि और नई शैक्षणिक पद्धतियों को अपनाने में भागीदार संस्थानों का मार्गदर्शन करेंगे, जिससे क्षेत्र के शैक्षणिक परिदृश्य को और मजबूत बनाया जा सके।

आईआईटी इंदौर इस क्षेत्र में दीर्घकालिक जल सुरक्षा और पारिस्थितिक संरक्षण को समर्थन देने के लिए वैज्ञानिक मॉडलिंग, पर्यावरण विश्लेषण और नीति-उन्मुख अध्ययनों का उपयोग करके नर्मदा नदी क्षेत्र प्रबंधन में अपने काम के माध्यम से सतत विकास में योगदान दे

रहा है। हमें एग्री हब की मेजबानी करने पर भी गर्व है, जो जीनोमिक्स और फिनोमिक्स के क्षेत्र में उत्कृष्टता का केंद्र है, जो बीज की गुणवत्ता में सुधार, फसल लचीलापन और एआई और मशीन लर्निंग द्वारा संचालित सटीक खेती को सक्षम करने के लिए समर्पित है। यह केंद्र राष्ट्र की कृषि नवाचार क्षमता को सुदृढ़ करता है और किसानों को डाटा-संचालित, सतत पद्धतियों की ओर अग्रसर होने में सहायता करता है।

हमारे इनक्यूबेशन और मेंटरशिप इकोसिस्टम के माध्यम से उद्यमिता और नवाचार लगातार विकास कर रहे हैं, जो युवा अन्वेषकों को अपनी अवधारणाओं को व्यवहार्य समाधानों में बदलने में सक्षम बनाता है। संस्थान की संस्कृति विद्यार्थियों और अनुसंधानकर्ताओं को निडरता से सोचने, जिम्मेदारी से काम करने और मजबूत सामाजिक विवेक के साथ उद्यमशीलता की मानसिकता विकसित करने के लिए प्रेरित करती है।

अगले पांच वर्षों में, आईआईटी इंदौर ज्ञान, नवाचार और सामाजिक प्रभाव के एक अग्रणी संस्थान के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत करना चाहता है। यह संस्थान केंद्रित बाह्य संपर्क और ग्रामीण जुड़ाव, डिजिटल स्वास्थ्य देखभाल और स्थिरता पर जोर देने के साथ स्थानांतरणीय अनुसंधान का विस्तार करने और संयुक्त अनुसंधान और विकास, कौशल और प्रौद्योगिकी को अपनाने के लिए उद्योग के साथ सहयोग बढ़ाने के माध्यम से अपने सामाजिक जुड़ाव को मजबूत करेगा। हमारा उद्देश्य इनक्यूबेशन, मेंटरशिप और उद्योग साझेदारी द्वारा समर्थित नवाचार और उद्यमिता की एक जीवंत संस्कृति को बढ़ावा देना है। एनईपी-2020 के साथ जुड़े लचीले पाठ्यक्रम और अनुभवात्मक दृष्टिकोणों के माध्यम से छात्र सीखने के अनुभवों को और अधिक समृद्ध किया जाएगा।

मैं अपने संकाय सदस्यगण, छात्रगण, कर्मचारीगण, पूर्व छात्रगण और भागीदारों की हार्दिक सराहना करता हूँ जिनके समर्पण और परिकल्पना ने संस्थान को आगे बढ़ाया है। हम साथ मिलकर एक ऐसे संस्थान का निर्माण करना जारी रखेंगे जो न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए बल्कि अखंडता, समावेशिता और मानवता की सेवा के लिए भी समर्थन करे।

सुहास एस. जोशी

निदेशक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर

शासी मंडल



अध्यक्ष

डॉ. के. सिवन
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, इंदौर

सदस्यगण

प्रोफेसर सुहास एस. जोशी
निदेशक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर

श्री एस.के. बरनवाल
अपर सचिव (टीई), भारत सरकार,
शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली

श्री रघुराज राजेंद्रन, आईएएस
प्रधान सचिव
तकनीकी शिक्षा एवं कौशल विकास विभाग,
मध्य प्रदेश सरकार

प्रोफेसर योगेश एम. जोशी
रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग, आईआईटी कानपुर

प्रोफेसर प्रीति ए. भोबे (6 फरवरी, 2025 तक अभिषद् मनोनीत सदस्य)
भौतिकी विभाग
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर

प्रोफेसर प्रभात कुमार उपाध्याय (6 फरवरी, 2025 तक अभिषद् मनोनीत सदस्य)
विद्युत अभियांत्रिकी विभाग
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर

प्रोफेसर अरुणा तिवारी, (7 फरवरी, 2025 से अभिषद् मनोनीत सदस्य)
संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर

प्रोफेसर बिस्वरूप पाठक (7 फरवरी, 2025 से अभिषद् मनोनीत सदस्य)
रसायन विज्ञान विभाग
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर

श्री एस. पी. होता
कुलसचिव एवं सचिव, शासी मंडल
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर

संस्थान के अधिकारीगण



अधिष्ठाता, शैक्षणिक कार्य
प्रोफेसर विपुल सिंह



अधिष्ठाता, शैक्षणिक बाह्य संपर्क
प्रोफेसर देवेन्द्र एल. देशमुख



अधिष्ठाता, प्रशासन
प्रोफेसर संदीप चौधरी



अधिष्ठाता, अनुसंधान एवं विकास
प्रोफेसर आई. ए. पलानी
(9 फरवरी, 2025 तक)



निदेशक, आईआईटी इंदौर
प्रोफेसर सुहास एस. जोशी



अधिष्ठाता, आधारभूत संरचना विकास
प्रोफेसर मनीष कुमार गोयल



अधिष्ठाता, अंतर्राष्ट्रीय संबंध
प्रोफेसर अविनाश सोनवणे



अधिष्ठाता, पूर्व छात्र एवं
कॉर्पोरेट संबंध (एसीआर)
प्रोफेसर सुमन मुखोपाध्याय



कुलसचिव, आईआईटी इंदौर
श्री एस. पी. होता



अधिष्ठाता, अनुसंधान एवं विकास
प्रोफेसर अभिरूप दत्ता
(10 फरवरी, 2025 से)



अधिष्ठाता, संकाय कार्य
प्रोफेसर अभिषेक श्रीवास्तव



अधिष्ठाता, छात्र कार्य
प्रोफेसर श्रीवत्सन वासुदेवन



अधिष्ठाता, आईटी अवसंरचना
एवं स्वचालन
प्रोफेसर सत्या एस. बुलुसु
(16 दिसंबर, 2024 से)

सह अधिष्ठाता

शैक्षणिक (पीजी/पीएचडी कार्यक्रम)	: डॉ. सोमनाथ डे (18 सितंबर, 2024 से)
शैक्षणिक (अवसंरचना)	: प्रोफेसर राजेश कुमार
शैक्षणिक (यूजी कार्यक्रम)	: प्रोफेसर अंखी रॉय
संकाय कार्य	: प्रोफेसर आमोद सी. उमरीकर
अनुसंधान एवं विकास – I	: प्रोफेसर तृप्ति जैन
अनुसंधान एवं विकास – II	: डॉ. बोधिसत्व मजूमदार (28 फरवरी, 2025 तक)
प्रशासन (एचआर एवं नीति)	: प्रोफेसर निर्मला मेनन
प्रशासन (वित्त एवं एमएमएस)	: प्रोफेसर संतोष होसमनी (30 सितंबर 2024 तक)
प्रशासन (वित्त एवं एमएमएस)	: प्रोफेसर पवन के. कांकर (1 अक्टूबर, 2024 से)
छात्र कार्य	: डॉ. संजीव सिंह

विभागाध्यक्ष

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान	: प्रोफेसर रुचि शर्मा
संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी	: डॉ. रणवीर सिंह
विद्युत अभियांत्रिकी	: प्रोफेसर विवेक कान्हानगड
यांत्रिक अभियांत्रिकी	: प्रोफेसर शनमुगम दिनाकरन
रसायन विज्ञान	: प्रोफेसर तुषार कांति मुखर्जी
गणित	: डॉ. संजीव सिंह (01 जनवरी, 2025 से) प्रोफेसर नीरज कुमार शुक्ला (31 दिसंबर, 2024 तक)
भौतिकी	: प्रोफेसर प्रीति ए. भोबे
खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी	: डॉ. सौरभ दास (25 फरवरी, 2025 से) प्रोफेसर अभिरूप दत्ता (24 फरवरी, 2025 तक)
जीव विज्ञान एवं जैवचिकित्सा अभियांत्रिकी	: डॉ. परिमल कर (23 जुलाई, 2024 से)
धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान	: डॉ. अजय कुमार कुशवाहा
जानपद अभियांत्रिकी	: डॉ. अभिषेक राजपूत

केंद्रों के प्रभारी प्राध्यापकगण

उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स केंद्र	: प्रोफेसर विवेक कान्हानगड
संगणक एवं सूचना प्रौद्योगिकी केंद्र	: प्रोफेसर नेमिनाथ हुबली
अत्याधुनिक रक्षा एवं अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी केंद्र	: डॉ. इंद्रसेन सिंह
उद्यमिता शिक्षा एवं विकास केंद्र	: प्रोफेसर शेख एम. मोबिन (01 मार्च, 2025 से) डॉ. स्वामीनाथन आर. (28 फरवरी, 2025 तक)
ग्रामीण विकास एवं प्रौद्योगिकी केंद्र	: डॉ. देबायन सरकार
डीएसटी-एफआईएसटी गियर अभियांत्रिकी उत्कृष्टता केंद्र	: प्रोफेसर नीलेश कुमार जैन
परिष्कृत उपकरण केंद्र (एसआईसी)	: प्रोफेसर अपूर्व के. दास
भारतीय वैज्ञानिक ज्ञान परंपरा केन्द्र	: प्रोफेसर जी. एस. मूर्ति
इलेक्ट्रिक वाहन एवं कुशल परिवहन प्रणाली केंद्र	: प्रोफेसर आमोद सी. उमरीकर
प्रशिक्षण एवं नियोजन	: प्रोफेसर पवन के. कांकर (30 सितंबर, 2024 तक) डॉ. अंकुर मिगलानी (01 अक्टूबर, 2024 से)
केंद्रीय कार्यशाला	: डॉ. डैन सत्यराज

अप्रैल 2024 से मार्च 2025 के दौरान अभिषद् बैठक

1	42वीं अभिषद् बैठक	17.04.2024
2	43वीं अभिषद् बैठक	15.05.2024
3	44वीं अभिषद् बैठक	09.07.2024
4	45वीं अभिषद् बैठक	07.08.2024
5	46वीं अभिषद् बैठक	25.09.2024
6	47वीं अभिषद् बैठक	20.11.2024
7	48वीं अभिषद् बैठक	26.12.2024
8	49वीं अभिषद् बैठक	23.01.2025
9	50वीं अभिषद् बैठक	19.02.2025
10	51वीं अभिषद् बैठक	12.03.2025
11	52वीं अभिषद् बैठक	26.03.2025

अप्रैल 2024 से मार्च 2025 के दौरान शासी मंडल बैठक

1	53वीं शासी मंडल बैठक	30.05.2024
2	54वीं शासी मंडल बैठक	11.07.2024
3	55वीं शासी मंडल बैठक	25.11.2024
4	56वीं शासी मंडल बैठक	21.03.2025

आईआईटी इंदौर के अभिषद् के सदस्यगण

अध्यक्ष

प्रोफेसर सुहास एस. जोशी
निदेशक, आईआईटी इंदौर

बाहरी विशेषज्ञ

प्रोफेसर हिमांशु राय
श्री उन्मेष डी. मालशे
प्रोफेसर अभिराम जी. रानाडे

निदेशक, आईआईएम इंदौर
निदेशक, आरआरकैट
प्रोफेसर, आईआईटी बॉम्बे

अधिष्ठातागण

प्रोफेसर विपुल सिंह
प्रोफेसर संदीप चौधरी
प्रोफेसर अविनाश सोनवणे
प्रोफेसर मनीष कुमार गोयल
प्रोफेसर अभिरूप दत्ता
प्रोफेसर श्रीवत्सन वासुदेवन
प्रोफेसर सुमन मुखोपाध्याय
प्रोफेसर अभिषेक श्रीवास्तव
प्रोफेसर देवेन्द्र एल देशमुख
प्रोफेसर सत्या एस. बुलुसु

अधिष्ठाता, शैक्षणिक कार्य
अधिष्ठाता, प्रशासन
अधिष्ठाता, अंतर्राष्ट्रीय संबंध
अधिष्ठाता, आधारभूत संरचना विकास
अधिष्ठाता, अनुसंधान एवं विकास
अधिष्ठाता, छात्र कार्य
अधिष्ठाता, पूर्व छात्र एवं कॉर्पोरेट संबंध
अधिष्ठाता, संकाय कार्य
अधिष्ठाता, शैक्षणिक बाह्य संपर्क
अधिष्ठाता, आईटी अवसंरचना एवं स्वचालन

विभागाध्यक्ष

डॉ. अभिषेक राजपूत
डॉ. रणवीर सिंह
प्रोफेसर विवेक कान्हांगड
प्रोफेसर शनमुगम दिनाकरण
डॉ. अजय कुमार कुशावाहा
डॉ. परिमल कर
डॉ. सौरभ दास
प्रोफेसर तुषार कांति मुखर्जी
डॉ. संजीव सिंह
प्रोफेसर प्रीति ए भोबे
प्रोफेसर रुचि शर्मा

विभागाध्यक्ष, जानपद अभियांत्रिकी
विभागाध्यक्ष, संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी
विभागाध्यक्ष, विद्युत अभियांत्रिकी
विभागाध्यक्ष, यांत्रिक अभियांत्रिकी
विभागाध्यक्ष, धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान
विभागाध्यक्ष, जीवविज्ञान एवं जैव चिकित्सा अभियांत्रिकी
विभागाध्यक्ष, खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी
विभागाध्यक्ष, रसायन विज्ञान
विभागाध्यक्ष, गणित
विभागाध्यक्ष, भौतिकी
विभागाध्यक्ष, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान

प्राध्यापकगण

प्रोफेसर नीलेश कुमार जैन
 प्रोफेसर आनंद पारे
 प्रोफेसर राम बिलास पचौरी
 प्रोफेसर अभिनव क्रांति
 प्रोफेसर विमल भाटिया
 प्रोफेसर रजनीश मिश्रा
 प्रोफेसर सुमन मुखोपाध्याय
 प्रोफेसर सुभेंदु रक्षित
 प्रोफेसर कृष्णा आर. मवाणी
 प्रोफेसर सारिका जालान
 प्रोफेसर संदीप चौधरी
 प्रोफेसर अविनाश सोनवणे
 प्रोफेसर जी.एस.मूर्ति
 प्रोफेसर संतोष कुमार विश्वकर्मा
 प्रोफेसर शैबाल मुखर्जी
 प्रोफेसर विपुल सिंह
 प्रोफेसर प्रभात कुमार उपाध्याय
 प्रोफेसर तृप्ति जैन
 प्रोफेसर मुकेश कुमार
 प्रोफेसर मनीष कुमार गोयल
 प्रोफेसर नीलिमा देवरकोंडा सत्यम
 प्रोफेसर पलानी अयमपेरुमल आनंद
 प्रोफेसर भुपेश कुमार लाड
 प्रोफेसर संतोष कुमार साहू
 प्रोफेसर रितुनेश कुमार
 प्रोफेसर दिनाकरन शनमुगम
 प्रोफेसर अरुणा तिवारी
 प्रोफेसर अभिषेक श्रीवास्तव
 प्रोफेसर कपिल आहूजा
 प्रोफेसर अभिरूप दत्ता
 प्रोफेसर अमित कुमार
 प्रोफेसर प्रशांत कोडगिरे
 प्रोफेसर एस.के. सफीक अहमद
 प्रोफेसर अपूर्व कुमार दास
 प्रोफेसर संपक सामंता
 प्रोफेसर संजय कुमार सिंह
 प्रोफेसर विश्वरूप पाठक
 प्रोफेसर निर्मला मेनन
 प्रोफेसर प्रीति शर्मा
 प्रोफेसर रुचि शर्मा
 प्रोफेसर प्रीति आनंद भोबे
 प्रोफेसर राजेश कुमार

यांत्रिक अभियांत्रिकी
 यांत्रिक अभियांत्रिकी
 विद्युत अभियांत्रिकी
 विद्युत अभियांत्रिकी
 विद्युत अभियांत्रिकी
 रसायन विज्ञान
 रसायन विज्ञान
 भौतिकी
 भौतिकी
 भौतिकी
 जानपद अभियांत्रिकी
 जीवविज्ञान एवं जैव चिकित्सा अभियांत्रिकी
 जीवविज्ञान एवं जैव चिकित्सा अभियांत्रिकी
 विद्युत अभियांत्रिकी
 विद्युत अभियांत्रिकी
 विद्युत अभियांत्रिकी
 विद्युत अभियांत्रिकी
 विद्युत अभियांत्रिकी
 विद्युत अभियांत्रिकी
 जानपद अभियांत्रिकी
 जानपद अभियांत्रिकी
 यांत्रिक अभियांत्रिकी
 यांत्रिक अभियांत्रिकी
 यांत्रिक अभियांत्रिकी
 यांत्रिक अभियांत्रिकी
 यांत्रिक अभियांत्रिकी
 संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी
 संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी
 संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी
 खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी
 जीवविज्ञान एवं जैव चिकित्सा अभियांत्रिकी
 जीवविज्ञान एवं जैव चिकित्सा अभियांत्रिकी
 गणित
 रसायन विज्ञान
 रसायन विज्ञान
 रसायन विज्ञान
 रसायन विज्ञान
 मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान
 मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान
 मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान
 भौतिकी
 भौतिकी

प्रोफेसर सुदेशना चट्टोपाध्याय
 प्रोफेसर परशराम एम. शिरागे
 प्रोफेसर स्वदेश के. साहू
 प्रोफेसर रघुनाथ साहू
 प्रोफेसर आमोद सी. उमरीकर
 प्रोफेसर विवेक कान्हांगड
 प्रोफेसर श्रीवत्सन वासुदेवन
 प्रोफेसर देवेन्द्र एल देशमुख
 प्रोफेसर पंकज रमेश सगदेव
 प्रोफेसर अंखी रॉय
 प्रोफेसर सोमादित्य सेन
 प्रोफेसर मोबीन शेख
 प्रोफेसर तुषार कांति मुखर्जी
 प्रोफेसर अंजन चक्रवर्ती
 प्रोफेसर सत्या सिलेंद्र बुलुसु
 प्रोफेसर चेल्वम वेंकटेश
 प्रोफेसर किरण बाला
 प्रोफेसर मिर्जा साकिब बेग
 प्रोफेसर अनिर्बान सेनगुप्ता
 प्रोफेसर नेमिनाथ हुब्बल्ली
 प्रोफेसर रूपेश शिवाजी देवन
 प्रोफेसर संतोष सतप्पा होसमनी
 प्रोफेसर एंटनी विजेश विलावरायण
 प्रोफेसर नीरज कुमार शुक्ला
 प्रोफेसर सत्यजीत चटर्जी
 प्रोफेसर काजी सबिरुद्दीन
 प्रोफेसर पवन कुमार कांकर
 प्रोफेसर शरद गुप्ता
 प्रोफेसर सूर्य प्रकाश
 प्रोफेसर सोमनाथ डे
 प्रोफेसर संजाराण प्रेमजीत खंगनबा
 प्रोफेसर एम. तनवीर
 प्रोफेसर शैलेश कुंडलवाल

भौतिकी
 धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान
 गणित
 भौतिकी
 विद्युत अभियांत्रिकी
 विद्युत अभियांत्रिकी
 विद्युत अभियांत्रिकी
 यांत्रिक अभियांत्रिकी
 भौतिकी
 भौतिकी
 भौतिकी
 रसायन विज्ञान
 रसायन विज्ञान
 रसायन विज्ञान
 रसायन विज्ञान
 रसायन विज्ञान
 जीवविज्ञान और जैव चिकित्सा अभियांत्रिकी
 जीवविज्ञान और जैव चिकित्सा अभियांत्रिकी
 संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी
 संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी
 धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान
 धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान
 गणित
 गणित
 यांत्रिक अभियांत्रिकी
 यांत्रिक अभियांत्रिकी
 यांत्रिक अभियांत्रिकी
 जीवविज्ञान एवं जैव चिकित्सा अभियांत्रिकी
 संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी
 संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी
 मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान
 गणित
 यांत्रिक अभियांत्रिकी

अन्य प्राधिकारीगण

डॉ. सप्तर्षि घोष
 डॉ. शरद गुप्ता
 डॉ. आनंद पिटारे

मुख्य वार्डन
 संयोजक, स्वास्थ्य केंद्र सलाहकार समिति
 कार्यशाला अधीक्षक, केंद्रीय कार्यशाला

सचिव

श्री एस. पी. होता

कुलसचिव, आईआईटी इंदौर

शैक्षणिक कार्य

संस्थान के शैक्षणिक कार्य कार्यालय का नेतृत्व शैक्षणिक कार्य के अधिष्ठाता करते हैं, जिन्हें संस्थान के विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों में नामांकित छात्रों के लिए सभी शैक्षणिक गतिविधियों की रणनीतिक योजना और कार्यान्वयन की देखरेख के लिए सह अधिष्ठाता और प्रशासनिक टीम का सहयोग प्राप्त है। यह कार्यालय एक नियोजित शैक्षणिक कैलेंडर के अनुसार कार्य करता है, जिसे प्रत्येक सेमेस्टर में इस प्रकार तैयार किया जाता है कि यह सुनिश्चित हो सके कि प्रत्येक कार्यक्रम का शैक्षणिक पाठ्यक्रम संस्थान की सीनेट द्वारा निर्धारित दिशानिर्देशों, नियमों और नीतियों का पालन करता है।

शैक्षणिक कार्यालय टीम



प्रो. विपुल सिंह
अधिष्ठाता, शैक्षणिक कार्य
(डीओए)



प्रो. सोमनाथ डे
सह अधिष्ठाता,
शैक्षणिक कार्य
(पीजी व पीएचडी)



प्रो. अंखी रॉय
सह अधिष्ठाता,
शैक्षणिक कार्य
(यूजी)



प्रो. राजेश कुमार
सह अधिष्ठाता,
शैक्षणिक कार्य
(शैक्षणिक अवसंरचना)



शैक्षणिक कार्य कार्यालय, संस्थान की शैक्षणिक अवसंरचना के आधार के रूप में निरंतर कार्य कर रहा है। केंद्रीय समन्वय इकाई के रूप में, यह स्नातक, स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट कार्यक्रमों में सभी शैक्षणिक गतिविधियों की योजना, कार्यान्वयन और सुचारु रूप से निष्पादन की देखरेख करता है। शैक्षणिक विभागों, संकाय सदस्यगण और संस्थान-स्तरीय समितियों के साथ संगठित सहयोग में काम करते हुए, कार्यालय यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक शैक्षणिक प्रक्रिया संस्थान के अभिषद् द्वारा स्थापित नियमों और नीतियों का पालन करे।

सावधानीपूर्वक तैयार किया गया सेमेस्टर-वार शैक्षणिक कैलेंडर प्रत्येक वर्ष शिक्षण, विद्यार्जन और मूल्यांकन गतिविधियों का मार्गदर्शन करता है, जो शैक्षणिक पारिस्थितिकी तंत्र को संरचना और निरंतरता प्रदान करता है। निरंतर निगरानी, सक्रिय समर्थन और समय पर सुविधा के माध्यम से, कार्यालय उत्कृष्टता, अखंडता और छात्र-केंद्रित विकास के संस्थान के मानकों को बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है।

गतिविधियों के मुख्य आकर्षण (2024-25)

1. प्रवेश व छात्र ऑनबोर्डिंग

- प्रवेश लेने वाले नए छात्रों के लिए सफलतापूर्वक ऑरिएंटेशन और पंजीकरण कार्यक्रम आयोजित: **यूजी (450) पीजी (343) और पीएच.डी. (215)** सभी आने वाले बैचों के लिए एक सहज और स्वागत शुरुआत सुनिश्चित करना।
- **एम.टेक कार्यक्रमों के लिए पहली बार स्पॉट प्रवेश दौर** की शुरुआत की गई, जिससे संस्थान सीओएपी दौर के बाद **शेष 32 रिक्त सीटों** को भरने में सक्षम रहा।

2. शैक्षणिक संचालन एवं कार्यक्रम प्रबंधन

- जारी यूजी, पीजी और पीएच.डी. कार्यक्रमों के सुचारु संचालन को सुनिश्चित किया गया, जिसमें पाठ्यक्रम समीक्षा, शैक्षणिक मार्गदर्शन, परीक्षा संचालन और समय पर परिणाम प्रसंस्करण शामिल है, जिससे पूरे शैक्षणिक चक्र में दक्षता बनी रहती है।
- संस्थान वर्तमान में कार्यक्रमों का एक विविध पोर्टफोलियो प्रदान करता है, जिसमें शामिल हैं:

- 9 बी.टेक कार्यक्रम
- 15 एम.टेक कार्यक्रम
- 5 एम.एससी. कार्यक्रम
- 6 एम.एस. (रिसर्च) कार्यक्रम
- 17 विषयों में पीएच.डी. कार्यक्रम

यह उच्चतर शिक्षा में विस्तार और गहराई दोनों के लिए आईआईटी इंदौर की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

3. एनईपी 2020 कार्यान्वयन और पाठ्यक्रम में प्रगति

- **एनईपी 2020 सुधारों** के कार्यान्वयन को मजबूत करना, जिसमें बहु-विषयक कार्यक्रमों का विकास, नवीन और समकालीन पाठ्यक्रमों की शुरुआत और उभरते अनुसंधान और उद्योग की जरूरतों के अनुरूप लचीले शैक्षणिक प्रक्रिया का विस्तार शामिल है।
- यूजी छात्रों के लिए एनईपी अवसंरचना के तहत वैकल्पिक विकल्पों का विस्तार। **2023 बैच** से शुरू करते हुए, छात्रों के पास अब अपने **दूसरे सेमेस्टर** से ही विभागीय और संस्थान-व्यापी ऐच्छिक विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला तक पहुंच है।

4. नई शैक्षणिक पहल

- एनईपी 2020 के उद्देश्यों के साथ संरेखित **उद्योग पेशेवरों** के साथ बेहतर जुड़ाव। **अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट** एकीकरण के प्रावधानों के साथ योग्य उद्योग विशेषज्ञों को-विशेष रूप से **एआई, डेटा विज्ञान और जलवायु परिवर्तन** जैसे क्षेत्रों में-चुनिंदा बी.टेक पाठ्यक्रमों की पेशकश करने की योजना चल रही है।
- **डू-इट-योरसेल्फ (डीआईवाई)** और **परियोजना-केंद्रित शिक्षा** को निरंतर बढ़ावा देना। प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए शुरू किए गए **मेकर स्पेस पाठ्यक्रम** ने व्यावहारिक नवाचार, वैचारिक डिजाइन कौशल और प्रोटोटाइप विकास को बढ़ावा दिया है।

5. छात्र विकास एवं कल्याण

- शैक्षणिक परिवेश में एक सहज परिवर्तन सुनिश्चित करने के लिए शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण पर ध्यान केंद्रित करते हुए, प्रवेश लेने वाले नए बी.टेक छात्रों के लिए **7-दिवसीय जीवन कौशल विकास कार्यशाला** का आयोजन किया गया।
- **लगभग 3100 छात्रों और 210 से अधिक संकाय सदस्यगण** के एक सक्रिय समुदाय के साथ, संस्थान बौद्धिक रूप से उत्तेजक और समृद्ध शैक्षणिक परिवेश प्रदान करना जारी रखता है।

6. डिजिटल शिक्षण पहल

- राष्ट्रीय डिजिटल-लर्निंग प्लेटफार्मों में सक्रिय रूप से भाग लिया गया। छात्रों को **एनपीटीईएल** और **स्वयं** के माध्यम से पाठ्यक्रम उपलब्ध कराए गए।
- कई संकाय सदस्यगण ने यूजी, पीजी और पीएच.डी. स्तरों पर प्रमुख अभियांत्रिकी और विज्ञान विषयों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले **वेब और वीडियो व्याख्यान रिकॉर्ड** करने के लिए मंत्रालय के साथ सहयोग किया।

7. दीक्षांत समारोह

- आईआईटी इंदौर (2025) के त्रयोदश दीक्षांत समारोह** को कुशलतापूर्वक नियोजित और कार्यान्वित किया गया, जिसके दौरान **814 छात्रों** को विभिन्न विषयों में उपाधि प्रदान की गई। इस कार्यक्रम में उपाधि प्राप्त करने वाले बैच ने अपनी शैक्षणिक उपलब्धियों का उत्सव मनाया और संस्थान के लिए यह आयोजन एक महत्वपूर्ण उपलब्धि साबित हुई।

संस्थान के 13वें दीक्षांत समारोह के दौरान डिग्री प्रदान करने के लिए सभी निर्धारित आवश्यकताओं को पूरा करने वाले 814 छात्रों का सारांश।

कार्यक्रम	विभाग	महिला	पुरुष	कुल
बी.टेक	जानपद अभियांत्रिकी	8	34	42
	संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी	20	63	83
	विद्युत अभियांत्रिकी	18	69	87
	यांत्रिक अभियांत्रिकी	18	65	83
	धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान	8	37	45
कुल		72	268	340
एम.एससी.	खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी	3	11	14
	जीव विज्ञान एवं जैवचिकित्सा अभियांत्रिकी	12	8	20
	रसायन विज्ञान	10	16	26
	गणित	6	13	19
	भौतिकी	3	24	27
कुल		34	72	106
एम.टेक.	खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी	2	7	9
	जीव विज्ञान एवं जैवचिकित्सा अभियांत्रिकी	1	6	7
	इलेक्ट्रिक वाहन एवं कुशल परिवहन प्रणाली केंद्र	0	8	8
	जानपद अभियांत्रिकी	1	16	17
	संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी	2	14	16
	विद्युत अभियांत्रिकी	3	20	23
	यांत्रिक अभियांत्रिकी	4	36	40
	धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान	0	12	12
कुल		13	119	132
बी.टेक. + एम.टेक.	यांत्रिक अभियांत्रिकी	0	1	1
कुल		0	1	1
एमएस (रिसर्च)	संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी	2	9	11
	विद्युत अभियांत्रिकी	1	6	7
	मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान	2	0	2
	यांत्रिक अभियांत्रिकी	0	5	5
	अंतरिक्ष विज्ञान एवं अभियांत्रिकी	1	3	4
कुल		6	23	29

एमएसडीएसएम	डेटा विज्ञान एवं प्रबंधन में एमएस	47	28	75
कुल		47	28	75
पीएचडी	खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी	3	4	7
	जीव विज्ञान एवं जैवचिकित्सा अभियांत्रिकी	3	5	8
	रसायन विज्ञान	12	25	37
	जानपद अभियांत्रिकी	1	1	2
	संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी	2	6	8
	विद्युत अभियांत्रिकी	6	15	21
	मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान	3	5	8
	गणित	5	2	7
	यांत्रिक अभियांत्रिकी	1	10	11
	धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान	1	10	11
	भौतिकी	1	10	11
कुल		38	93	131
कुल योग		210	604	814

पदक विजेता व उपाधि प्राप्त करने वाले छात्र

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर

त्रयोदश दीक्षांत समारोह 2025:

पदक एवं पुरस्कार प्राप्तकर्ता

राष्ट्रपति स्वर्ण पदक

उपाधि प्राप्त करने वाले सभी यूजी छात्रों के बीच सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक प्रदर्शन के लिए



श्री कदम माधव मुकुंद
बी.टेक. (सीएसई)
क्रमांक 210001027

संस्थान रजत पदक

विभिन्न विभाग के उपाधि प्राप्त करने वाले सभी यूजी छात्रों के बीच सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक प्रदर्शन के लिए



श्री कृष अग्रवाल
बी.टेक. (सीएसई)
क्रमांक 210001034



श्री हरमन सिंह बग्गा
बी.टेक. (ईई)
क्रमांक 210002036



श्री दिव्यम पांडे
बी.टेक. (एमई)
क्रमांक 210003030



श्री क्षितिज केसरवानी
बी.टेक. (सीई)
क्रमांक 210004022



श्री ईशान मोहन
श्रीवास्तव
बी.टेक. (एमईएमएस)
क्रमांक 210005021

संस्थान रजत पदक

उपाधि प्राप्त करने वाले सभी पीजी छात्रों के बीच सर्वश्रेष्ठ समग्र प्रदर्शन के लिए (एमटेक एवं एम.एससी. कार्यक्रम)



श्री ओमकार राजेश कोकणे
एम.टेक. (ईई)
क्रमांक 2302102023



श्री सौमाल्य दास
एम.एससी. (बीएसबीई)
क्रमांक 2303171016

बूटी फाउंडेशन स्वर्ण पदक

उपाधि प्राप्त करने वाली सभी महिला पीजी छात्राओं के बीच सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक प्रदर्शन के लिए



सुश्री मधु त्रिवेदी

एम.टेक (सीई)

क्रमांक 2302104002

वीपीपी मेनन स्वर्ण पदक

महिला छात्रा द्वारा उत्कृष्ट पीएचडी शोध प्रबंध के लिए



डॉ. जस्टी जोसेफ

पीएचडी (एचएसएस)

क्रमांक 1901261006

थीसिस का शीर्षक: "विभाजन का इतिहास और उसके आगे: 1947 के विभाजन में भाषाई पूर्वाग्रहों की पहचान और उन्हें कम करने के लिए एक अर्ध-स्वचालित दृष्टिकोण"

अगम प्रसाद मेमोरियल स्वर्ण पदक

उत्कृष्ट पीएचडी शोध प्रबंध के लिए



डॉ. तन्मय व्यास

पीएचडी (बीएसबीई)

क्रमांक 2001171008

थीसिस का शीर्षक: "पर्यावरणीय निगरानी के लिए कार्बन क्वांटम डॉट्स (सीक्यूडीएस) आधारित फ्लोरोसेंट थिन फिल्म सेंसर"

श्री गण्टि सुब्बा राव एवं श्रीमती गण्टि वेंकट रमानी पुरस्कार
उत्कृष्ट पीएचडी शोध प्रबंध के लिए



डॉ. आदित्य अंशुल
पीएचडी (सीएसई)
क्रमांक 2101101007

थीसिस का शीर्षक: "उच्च स्तरीय संश्लेषण के दौरान आईपी पायरेसी और ट्रोजन के खतरों से निपटने के लिए हार्डवेयर सुरक्षा के वैकल्पिक प्रतिमान"

संस्थान स्वर्ण पदक

उपाधि प्राप्त करने वाले सभी छात्रों के बीच सर्वश्रेष्ठ ऑल राउंड प्रदर्शन के लिए



श्री आदित्य गुहागरकर
बी.टेक (ईई)
क्रमांक 210002005

सर्वश्रेष्ठ बी. टेक. प्रोजेक्ट (बीटीपी) पुरस्कार
उपाधि प्राप्त करने वाले सभी यूजी छात्रों में



सुश्री पोलिसेट्टी साई मेघना
बीटेक (सीई)
क्रमांक 210004032

परियोजना शीर्षक "लचीले फुटपाथों में नवीन और पारंपरिक भू-ग्रिड की कार्यनिष्पादन तुलना: कार्बन फुटप्रिंट आकलन का समावेशन"

एमएसडीएसएम रजत पदक

उपाधि प्राप्त करने वाले सभी के बीच सर्वश्रेष्ठ समग्र प्रदर्शन के लिए
(एमएसडीएसएम कार्यक्रम)



श्री अमित कुमार
क्रमांक 2304107008

रैंकिंग

आईआईटी इंदौर को क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग्स 2026 में 556वीं रैंक प्राप्त हुई है। यह भारतीय विश्वविद्यालयों में 12वें स्थान पर है और दूसरी पीढ़ी के आईआईटी में एक बार फिर सर्वोच्च स्थान पर उभरा है। विश्वविद्यालयों का मूल्यांकन 09 प्रमुख सूचकांकों के आधार पर किया जाता है, जिनमें शामिल हैं शैक्षणिक प्रतिष्ठा, नियोक्ता प्रतिष्ठा, प्रति संकाय उद्धरण, संकाय-छात्र अनुपात, अंतरराष्ट्रीय छात्र, अंतरराष्ट्रीय संकाय, अंतरराष्ट्रीय शोध नेटवर्क, सततता और रोजगार परिणाम। ये सूचकांक वैश्विक विश्वविद्यालयों की सबसे व्यापक और संतुलित तुलना प्रदान करते हैं। इस वर्ष की क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग्स में विश्वभर के लगभग 1,501 संस्थान शामिल थे (जिनमें भारत के 54 संस्थान सम्मिलित हैं), जो यूरोप, एशिया और उत्तर अमेरिका सहित विविध क्षेत्रों से संबंधित विश्वविद्यालयों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

शिक्षा मंत्रालय द्वारा जारी “इंडिया रैंकिंग्स 2024 (एनआईआरएफ)” में आईआईटी इंदौर देश के इंजीनियरिंग संस्थानों में 16वें स्थान पर है। इस श्रेणी में संस्थानों का मूल्यांकन पाँच प्रमुख मानकों – शैक्षणिक प्रदर्शन, अनुसंधान, उपाधि प्राप्त करने वाला परिणाम, बाह्य संपर्क एवं समावेशन और धारणा – के आधार पर किया जाता है। साथ ही, आईआईटी इंदौर समग्र श्रेणी में 33वें स्थान पर तथा अनुसंधान श्रेणी में 27वें स्थान पर रहा है।

निदेशक प्रोफेसर सुहास एस. जोशी ने आईआईटी इंदौर समुदाय को बधाई दी और उनसे आग्रह किया कि वे अपने शोध एवं शैक्षणिक गतिविधियों को निष्ठा और परिश्रम के साथ जारी रखें, जिससे संस्थान की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान होगा और भविष्य में वैश्विक पहचान को और अधिक सुदृढ़ करने का मार्ग प्रशस्त होगा।

संकाय कार्य

संकाय कार्य कार्यालय, संकाय सदस्यगण से संबंधित सभी प्रशासनिक कार्यों का प्रबंधन करता है। यह संकाय सदस्यगण की भर्ती से लेकर उनकी सेवानिवृत्ति होने तक के प्रशासनिक रिकॉर्ड रखता है। इस कार्यालय का नेतृत्व संकाय कार्य के अधिष्ठाता, प्रोफेसर अभिषेक श्रीवास्तव करते हैं और प्रोफेसर आमोद सी. उमरीकर सह अधिष्ठाता के रूप में कार्यरत हैं। इस टीम में सहायक कुलसचिव श्री राजन थॉमस, अनुभाग अधिकारी श्री सुनील सावले, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक श्री शिशिर कुमार, वरिष्ठ सहायक श्री सनी नामदेव और संकाय कार्य के अधिष्ठाता की निजी सहायक सुश्री पिनाज़ डैनियल भी शामिल हैं।

यह कार्यालय निम्नलिखित कार्य करता है:

- (क) विभिन्न विभागों/स्कूलों में स्थायी/संविदा/विजिटिंग/डिस्टिंग्विड/एमेरिटस संकाय सदस्यगण की भर्ती अभियान और नियुक्ति।
- (ख) नए नियुक्त संकाय सदस्यगण की कार्यभार ग्रहण करने की प्रक्रियाएँ।
- (ग) संकाय सदस्यगण के सेवा रिकॉर्ड और व्यक्तिगत फाइलों का रखरखाव।
- (घ) वेतन संशोधन, अपग्रेडेशन और कन्वर्जन, अवकाश, एलटीसी, आश्रित सूची, प्रतिनियुक्ति, वार्षिक वेतन वृद्धि, संविदा नियुक्तियों के लिए कार्यकाल विस्तार, स्थायीकरण, एनपीएस आदि सहित सभी सेवा कार्यों का निष्पादन करना।
- (ङ) सेवा विवरणों को नियमित रूप से अपडेट करना।
- (च) शिक्षा मंत्रालय/आरटीआई प्रश्नों और लोकसभा/राज्यसभा प्रश्नावलियों के उत्तर प्रदान करना।

वर्ष 2024-25 के दौरान किए जाने वाले कुछ प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं:

- (क) शिक्षक दिवस कार्यक्रम तथा आईआईटी इंदौर से सेवानिवृत्त होने वाले पहले संकाय सदस्य, प्रोफेसर नरेंद्र एस. चौधरी के लिए सेवानिवृत्ति समारोह का आयोजन किया गया।
- (ख) शिक्षण सदस्यगण के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के उद्देश्य से एक साथ मिलकर तनाव प्रबंधन के लिए फैकल्टी पिकनिक का आयोजन किया गया।
- (ग) नियमों और प्रक्रियाओं के मानकीकरण हेतु विभिन्न नीतियाँ तैयार की गईं।
- (घ) नए सदस्यगण की कम से कम कार्यप्रणालियाँ सुनिश्चित करने और नए परिवेश में उनके शीघ्र घुलने-मिलने के लिए कार्यभार ग्रहण करने की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित किया गया।
- (ङ) संकाय सदस्यगण को समय पर एलटीसी प्रदान किया गया।
- (च) नए संकाय सदस्यगण के लिए आईआईटीआई परिसर के बाहर आवास व्यवस्था की सुविधा प्रदान की गई।

31 मार्च 2025 तक संकाय सदस्य के भरे गए पद:

पदनाम	संख्या
प्रोफेसर	75
एसोसिएट प्रोफेसर	46
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड I	79
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड II	12
कुल	212

वर्ष 2024-25 के दौरान आईआईटी इंदौर में सेवा में कार्यरत होने वाले संकाय सदस्यगण की संख्या 12 है और विवरण इस प्रकार है:

पदनाम	संख्या
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड I	06
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड II	06
कुल	12

कुल 33 संकाय सदस्यगण में से प्रोफेसर (6) व एसोसिएट प्रोफेसर (11) के पद पर अपग्रेड किया गया और एपीजी II को एपीजी I (16) में कन्वर्जन किया गया।

1. प्रो. नरेंद्र एस. चौधरी, प्रोफेसर, संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग, 31 मार्च, 2025 को सेवानिवृत्त हो गए।

- डॉ. तितास चंदा, असिस्टेंट प्रोफेसर, भौतिकी विभाग, 22 जुलाई, 2024 को कार्य मुक्त किए गए।
- डॉ. श्रीधरन बालकृष्णन, असिस्टेंट प्रोफेसर, जानपद अभियांत्रिकी विभाग, 17 अगस्त, 2024 को कार्य मुक्त किए गए।
- डॉ. सुनील कुमार बोडा, असिस्टेंट प्रोफेसर, जीव विज्ञान एवं जैवचिकित्सा अभियांत्रिकी विभाग, 2 सितंबर, 2024 को कार्य मुक्त किए गए।
- डॉ. दीपक गुप्ता, असिस्टेंट प्रोफेसर, भौतिकी विभाग, 22 सितंबर, 2024 को कार्य मुक्त किए गए।

सम्मान व पुरस्कार

सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र पुरस्कार 2024-2025

विवरण निम्नानुसार है:

शोध पत्र का शीर्षक	लेखक
उष्णकटिबंधीय तापमंडलीय क्षेत्र में द्वितीयक गुरुत्व तरंग संचरण: गतिज श्यानता में परिवर्तन की भूमिका।	दत्ता, एस., दास, एस., और सुंदा, एस.
हेलिकोबैक्टर पाइलोरी के विषाणु पर क्लोरपाइरीफोस और एंडोसल्फान और उनके मेटाबोलाइट्स का प्रभाव	सिद्धार्थ सिंह, निधि वाष्णीय, शिवा सिंगोथु, वसुंधरा भंडारी, हेम चंद्र झा
आणविक 02 को शामिल करते हुए आवेश स्थानांतरण संक्रमण के माध्यम से प्रकाश-संवेदी-मुक्त एकल ऑक्सीजन उत्पादन, एरिलामाइन्स के एज़ोएरोमैटिक्स के साथ अत्यधिक कुशल ऑक्सीडेटिव युग्मन की ओर	एस. सिंह और टी. के. मुखर्जी
हिमालय में सबसे लंबी द्रव्यमान संतुलन श्रृंखला का अरैखिक मॉडल का उपयोग करके पुनः विश्लेषण: छोटा शिग्री ग्लेशियर (भारत)	आज़म, एम. एफ., विंसेंट, सी., श्रीवास्तव, एस., बर्थियर, ई., वैगनन, पी., कौशिक, एच., हुसैन, एम.डी. ए., मुंडा, एम. के., मंडल, ए., और रामनाथन, ए.
वास्तविक समय वीडियो विसंगति का पता लगाने के लिए दोहरे विभेदक जीएएन के साथ ध्यान-निर्देशित जनरेटर	ऋतुराज सिंह, अनिकेत सेठी, कृष्णु सैनी, सुमीत सौरव, अरुणा तिवारी, संजय सिंह
डबली इन्वर्टेड गामा-गामा टर्बुलेंस चौनल पर मल्टी-हॉप यूएवी-आधारित एफएसओ सिस्टम	पी. शर्मा, स्वामीनाथन आर, और दीपशिखा सिंह
आरओबीओएसएस: पर्यवेक्षित लर्निंग के लिए एक सुदृढ़, परिबद्ध, विरल और सुचारु लॉस फंक्शन	एम. अख्तर, एम. तनवीर, और एम. अरशद
प्रक्रिया दक्षता बढ़ाने के लिए डब्ल्यूएएएम-टीआईजी के लिए समवर्ती बहु-तार फीड तंत्र का विकास	साध्या, एस., खान, ए.यू., कुमार, ए., चटर्जी, एस., और मधुकर, वाई.के.
Na _{0.75} (Mn-Al-Ni)O ₂ स्युडो टर्नरी सिस्टम में शून्य Mn ³⁺⁺ लाइन के साथ बेहतर विद्युत रासायनिक गुणों के साथ इष्टतम संरचना की पहचान	हरि नारायणन वसावन, मनीष बडोले, समृद्धि सकसैना, वेलागा श्रीहरि, आशीष कुमार दास, प्रतीक्षा गामी, नेहा डागर, सोनिया देसवाल, प्रदीप कुमार, हिमांशु कुमार पोसवाल, सुनील कुमार
hZZ युग्मन के संकेत और नई भौतिकी के लिए निहितार्थ	डी. दास, ए. कुंडू, एम. लेवी, ए. एम. प्रसाद, आई. साहा, ए. सरकार
उच्च एन्ट्रॉपी मिश्र धातु प्रणालियों में विसरण – एक समीक्षा	विवेक वर्मा, केल्विन एच. बेल्वर, डिरान एपेलियन, एनरिक जे. लावर्निया



विभाग व स्कूल की प्रोफाइल

खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी विभाग



विभाग का परिचय

2015 में स्थापित खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी विभाग (डीएएसई), आईआईटी सिस्टम में इस तरह का पहला अंतःविषय विभाग है। यह पीएचडी, खगोल विज्ञान में एमएससी, एम.टेक, एमएस (रिसर्च) और अंतरिक्ष अभियांत्रिकी में बी.टेक पाठ्यक्रम ऑफर करता है। इस विभाग में बारह नियमित संकाय सदस्य, एक आईएनई डिस्टिंग्विशड प्रोफेसर और तीन विजिटिंग प्रोफेसर हैं जो स्व्वायर किलोमीटर एरे और आदित्य-एल1 जैसी उन्नत शोध परियोजनाओं में शोध कार्य कर रहे हैं, जिन्हें डीएसटी, डीआरडीओ, इसरो और अन्य एजेंसियों द्वारा वित्त पोषित किया जाता है। डीएएसई दुनिया भर के विश्वविद्यालयों और उद्योग के साथ मिलकर कार्य करता है और अधिकांश पूर्व छात्र संबंधित क्षेत्रों में शोध या करियर बना रहे हैं।

यह विभाग मध्य प्रदेश में अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए हेरिटेज एंड इनोवेशन सेंटर फॉर एस्ट्रोनॉमी एंड स्पेस इंजीनियरिंग (एचईसीएएसई) में भी योगदान दे रहा है। वर्तमान में, डीएएसई में 38 पीएचडी छात्र, 43 पीजी छात्र और 37 यूजी छात्र हैं। हमारे छात्र गैलेक्सी के क्लस्टर के रेडियो और एक्स-रे अवलोकन, मशीन लर्निंग और बिग डेटा जैसे क्षेत्रों में अत्याधुनिक अनुसंधान और तकनीकी विकास में शोध कार्य कर रहे हैं; सस्टेनेबिलिटी रिसर्च, अंतरिक्ष मौसम और आयनमंडल: जीएनएसएस, एनएवीआईसी (NAVIC) और निम्न-आवृत्ति रेडियो खगोल विज्ञान, पेलोड, छोटे उपग्रहों, डिटेक्टर डिज़ाइन, डेटा विश्लेषण, इमेजिंग और उच्च-स्तरीय संख्यात्मक सिमुलेशन का उपयोग करते हुए, जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, कृषि, रक्षा, संचार, नेविगेशन और खगोल विज्ञान में अनुप्रयोगों को लक्षित करते हैं।

शैक्षणिक कार्यक्रम

इन शैक्षणिक कार्यक्रमों में एमएससी (खगोल विज्ञान), एमएस (रिसर्च), एमटेक (अंतरिक्ष अभियांत्रिकी) और पीएचडी शामिल हैं। एमएससी (खगोल विज्ञान) कार्यक्रम में छात्रों को जैम (JAM) के माध्यम से प्रवेश दिया जाता है। यह विभाग अंतरिक्ष अभियांत्रिकी में बीटेक छात्रों के लिए एक माइनर डिग्री भी प्रदान करता है।

हमारे सक्रिय संकाय सदस्यों का समूह खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी के अध्ययन में अनुसंधान और प्रशिक्षण की शैक्षणिक गतिविधियों के सुचारु संचालन के लिए एक अनुकूल परिवेश बनाए रखना चाहता है। एक सहयोगात्मक और नवोन्मेषी परिवेश को बढ़ावा देकर, हमारा उद्देश्य अपने छात्रों और शोधकर्ताओं को ब्रह्मांड के रहस्यों की खोज में प्रेरित और सहायता प्रदान करना है। हमारे संकाय सदस्यगण उच्च-गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और मार्गदर्शन प्रदान करने, अत्याधुनिक सुविधाओं तक पहुँच को आसान बनाने और अग्रणी अनुसंधान परियोजनाओं में कार्य करने के लिए समर्पित हैं। यह प्रतिबद्धता सुनिश्चित करती है कि हमारे छात्र दुनिया भर के शैक्षणिक जगत, उद्योग और अनुसंधान संस्थानों में सफल करियर के लिए अच्छी तरह तैयार हों और अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में महत्वपूर्ण प्रगति में योगदान दें।

संकाय सदस्यों की संख्या	12
प्रोफेसर	01
एसोसिएट प्रोफेसर	05
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड I	06
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड II	शून्य
विजिटिंग प्रोफेसर / आईएनएई फेलो	04
पोस्ट डॉक्टरल फेलो की संख्या	01

कार्यक्रम	प्रवेश लेने वाले छात्र	डिग्री प्राप्त
बी.टेक	37	शून्य
एम.एससी.	27	53
एम.टेक	12	18
एमएस (रिसर्च)	7	7
पीएचडी	38	25

उल्लेखनीय अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ

डीएएसई के संकाय सदस्यगण निम्नलिखित क्षेत्रों में कई परियोजनाओं पर कार्य कर रहे हैं:

- हेरिटेज एंड इनोवेशन सेंटर फॉर एस्ट्रोनॉमी एंड स्पेस इंजीनियरिंग (एचईसीएएसई):** एचईसीएएसई के विकास में योगदान, जिसका उद्देश्य खगोल विज्ञान व अंतरिक्ष अभियांत्रिकी में अनुसंधान और नवाचार को आगे बढ़ाना है।
- अनुसंधान सहयोग:** आरआरकैट इंदौर के साथ अनुसंधान सहयोग।
- खगोल विज्ञान व खगोल भौतिकी:** भारत की तीन मेगा विज्ञान परियोजनाओं से संबंधित – स्ववायर किलोमीटर एरे (एसकेए), थर्टी मीटर टेलीस्कोप (टीएमटी) और एलआईजीओ इंडिया (ग्रेविटेशनल वेव ऑब्ज़रवेटरी) – वित्त पोषण डीएसटी, डीएई, सीएसआईआर और एमओई (शिक्षा मंत्रालय) से आता है।
- अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी:** इसरो के साथ कुछ मेगा विज्ञान परियोजनाओं और अंतरिक्ष मिशनों से संबंधित – वित्त पोषण इसरो, एमओई, डीएसटी से आता है।
- पृथ्वी एवं वायुमंडलीय विज्ञान:** रिमोट सेंसिंग अनुप्रयोगों और जलवायु/मौसम अध्ययन से संबंधित – वित्त पोषण डीएसटी, इसरो, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय आदि से आता है।
- इस विभाग ने उन उद्योगों के साथ भी सहयोग बढ़ाया है जो इन सुविधाओं का उपयोग करना चाहते हैं। अब तक हमसे जुड़ने वाले उद्योग हैं:** ध्रुव स्पेस, एरियल आईक्यू, एलॉग8, पियरसाइट, गैलेक्सीआई स्पेस, इम्पेटस, सनलाइफ, आदि।

विभाग में उल्लेखनीय गतिविधियाँ

- हमारे संकाय सदस्यगण और छात्र विभिन्न गतिविधियों पर कार्य कर रहे हैं:
 - सूर्य के अवलोकन के लिए भारत के पहले मिशन, आदित्य एल1 से प्राप्त इन-सीटू मापों के पूरक के रूप में अंतरिक्ष मौसम अनुकूली मॉडलिंग ढाँचा (टीआरएल 5) विकसित किया गया।
 - डीएएसई द्वारा 'सर्च फॉर एक्स्ट्राटेरेस्ट्रियल इंटेलिजेंस (एसईटीआई)' पर पहला लेख 2024 में रॉयल एस्ट्रोनॉमिकल सोसाइटी के मंथली नोटिस में प्रकाशित किया गया था, जिसमें डीएएसई के सदस्य प्रियतम कुमार (एमएससी खगोल विज्ञान के छात्र) और डॉ. सुमन मजूमदार (संकाय सदस्य) का महत्वपूर्ण योगदान था।
 - रडार डेटा प्रोसेसिंग ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर, 'पीवाईआईडब्ल्यूआर' विकसित किया गया है।
 - भारतीय मिशन एस्ट्रोसैट और नासा मिशन एनआईसीईआर का उपयोग करके न्यूट्रॉन स्टार एक्स-रे बाइनरी जेड-सोर्स से ब्रॉडबैंड परिवर्तनशीलता और वर्णक्रमीय उत्सर्जन की जाँच की गई, जिससे तारकीय गुणों और अभिवृद्धि उतार-चढ़ाव पर प्रतिबंध लगाया गया।
 - आईआईटी इंदौर इंटरफेरोमीटर के लिए डिजिटल बैकएंड विकास।

- च. इंदौर के लिए शहरी वृक्ष मानचित्रण और बायोमास हानि लक्षण वर्णन।
- छ. 2024 और 2025 में भारतीय आर्कटिक अभियान में भाग लिया।
- 2) आईआईटी इंदौर में न्यूमेरिकल रेडिएटिव ट्रांसफर पर स्पार्क द्वारा प्रायोजित एक व्यक्तिगत पाठ्यक्रम (15-24 जनवरी 2024) का आयोजन किया गया। इस पाठ्यक्रम के प्रशिक्षक प्रो. इलियान टी. इलिव, यूनिवर्सिटी ऑफ ससेक्स, यूके थे।
 - 3) हमारे विभाग में, दो छात्रों को पीएमआरएफ फेलोशिप (श्री केशव अग्रवाल और श्री सिरशा नंदी) दी गई।
 - 4) अंतर्राष्ट्रीय संबंध: 3 स्पार्क परियोजनाएँ, 2 डीएसटी-एसआईआरई परियोजनाएँ, 1 मैक्स प्लैंक पार्टनर अनुदान।
 - 5) कई उच्च-प्रभावी प्रकाशन।
 - 6) अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन: आईआरएडी सम्मेलन, जनवरी 2024।
 - 7) क्षमता निर्माण गतिविधियाँ, जिनमें कार्यशालाएँ, राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस समारोह और खगोल विज्ञान एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी में व्यावहारिक प्रशिक्षण सत्र शामिल हैं।
 - 8) 3 स्पार्क परियोजनाओं, 2 डीएसटी-एसआईआरई परियोजनाओं और 1 मैक्स प्लैंक पार्टनर अनुदान के माध्यम से सक्रिय अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान।
 - 9) प्रो. इलियान टी. इलिव, यूनिवर्सिटी ऑफ ससेक्स (यूके) के नेतृत्व में आईआरएडी 2024 और न्यूमेरिकल रेडिएटिव ट्रांसफर पर एक स्पार्क कोर्स (जनवरी 2024) का आयोजन किया गया।
 - 10) दो छात्रों (श्री केशव अग्रवाल, श्री सिरशा नंदी) को प्रतिष्ठित पीएमआरएफ फेलोशिप से सम्मानित किया गया।

परियोजना

परियोजना	प्रायोजित	परामर्श कार्य
नई परियोजनाएँ	8	—
जारी परियोजनाएँ	18	—
पूर्ण	9	1

प्रकाशन

विवरण	प्रकाशित पुस्तकें	पुस्तकों में अध्याय	सम्मेलन में शोधपत्र	पत्रिकाओं में लेख
कुल	1	—	38	46

जीव विज्ञान एवं जैवचिकित्सा अभियांत्रिकी विभाग



विभाग का परिचय

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर में जीवविज्ञान एवं जैव चिकित्सा अभियांत्रिकी विभाग (बीएसबीई) की स्थापना जुलाई 2012 में एक उत्कृष्टता केंद्र स्थापित करने के उद्देश्य से की गई थी जो जीवविज्ञान, जैव अभियांत्रिकी और जैव चिकित्सा अभियांत्रिकी में मानव संसाधन विकास और अनुसंधान पर केंद्रित होगा। बीएसबीई विभाग का उद्देश्य जैव-संबंधित क्षेत्रों में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त करना और व्यक्तिगत, सामूहिक और संगठनात्मक प्रभावशीलता में सुधार हेतु प्रशिक्षण और करियर विकास प्रयासों के एकीकृत उपयोग के साथ, इस क्षेत्र में भविष्य के लीडर तैयार करना है।

शैक्षणिक कार्यक्रम

इन शैक्षणिक कार्यक्रमों में एमएससी (बायोटेक्नोलॉजी), एम.टेक. (बायोमेडिकल इंजीनियरिंग), एम.टेक. (बायोमेडिकल डिवाइसेस) और पीएचडी शामिल हैं। एमएससी (बायोटेक्नोलॉजी) कार्यक्रम में छात्रों को जैम (JAM) और जीएटी-बी (GAT-B) के माध्यम से प्रवेश दिया जाता है।

बायोमेडिकल इंजीनियरिंग में एम.टेक (दो वर्षीय), एम.टेक. + पीएच.डी. डुअल डिग्री शैक्षणिक वर्ष 2023–2024 से शुरू हुई, जबकि बायोमेडिकल डिवाइसेस में एम.टेक (दो वर्षीय), एम.टेक. + पीएच.डी. डुअल डिग्री शैक्षणिक वर्ष 2025–2026 से शुरू होगी। यह विभाग बायोमेडिकल इंजीनियरिंग में बी.टेक छात्रों के लिए एक माइनर डिग्री भी प्रदान करता है। यह विभाग बी.टेक कार्यक्रम शुरू करने की योजना बना रहा है।

हमारे संकाय सदस्यों का सक्रिय समूह अनुसंधान में शैक्षणिक गतिविधियों के सुचारु संचालन के साथ-साथ जीवन और जीवों के अध्ययन पर प्रशिक्षण के लिए एक ऐसा परिवेश तैयार करने की आकांक्षा रखता है, जिसमें सामान्य जीवाणुभोजी से लेकर मानव जैसे जटिल बहुकोशिकीय जीव शामिल हैं; संरचना, कार्य, वृद्धि, उत्पत्ति, विकास, वितरण और वर्गीकरण पर ध्यान केंद्रित करते हुए। मूल जीवविज्ञान अनुसंधान के अलावा, बीएसबीई विभाग देश में व्यावहारिक समस्याओं पर अनुप्रयुक्त अनुसंधान में योगदान देने में अग्रसर रहता है।

संकाय सदस्यों की संख्या	14
प्रोफेसर	07
एसोसिएट प्रोफेसर	03
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड I	04
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड II	00
पोस्ट डॉक्टरल फेलो की संख्या	03

कार्यक्रम	प्रवेश लेने वाले छात्र	डिग्री प्राप्त
एमएससी	20	20
एम.टेक	07	07
पीएचडी	16	06

उल्लेखनीय अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ

- प्रो. अमित कुमार के शोध समूह ने कई प्रभावी दवाओं की पहचान की है, जिनके लिए सात अलग-अलग पेटेंट फ़ाइल किए गए हैं और उन्हें 2023 का सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र पुरस्कार भी मिला है।
- प्रो. प्रशांत कोडगिरे के समूह का हालिया अध्ययन जीनोम म्यूटेटर एंजाइम एआईडी और यूबीएन1 के बीच परस्पर क्रिया पर पहली रिपोर्ट है, फिर भी, एसएचएम या सीएसआर के संदर्भ में यूबीएन1 और एआईडी के बीच परस्पर क्रिया का भविष्य अभी तक खोजा जाना बाकी है।
- डॉ. परिमल कर के शोध समूह ने वर्चुअल स्क्रीनिंग और आणविक गतिकी सिमुलेशन के माध्यम से दोहरे ल्यूसीन जिपर काइनेज को लक्षित करने वाले न्यूरोडीजेनेरेटिव रोगों के लिए नए अवरोधकों की पहचान की है।
- डॉ. बेग के शोध ने संक्रमणों के प्रति होस्ट की प्रतिक्रिया को समझने में एक नया तंत्र प्रस्तुत किया है और पुरानी सूजन संबंधी बीमारियों और कैंसर में नवीन चिकित्सीय लक्ष्यों की खोज में योगदान दिया है। इस शोध में नवीन छोटे अणु, पेप्टाइड और संयोजन चिकित्सा शामिल हैं।
- डॉ. हेम चं. झा ने वायरस से प्रेरित तंत्रिका संबंधी विकारों की जाँच और उनके उपचार के लिए पेटेंट फ़ाइल किए हैं।
- डॉ. किरण बाला का शोध समूह मधुमेह के उपचार के लिए मैग्नेटो-प्राइम्ड सोयाबीन के बीजों और शैवाल प्रजातियों से डीपीपी-IV अवरोधकों के रूप में नवीन पेप्टाइड्स और जैवसक्रिय यौगिकों की खोज कर रहा है और कृषि अपशिष्टों का उपयोग करके गामा-अमीनोब्यूटिरिक एसिड (जीएबीए) के किफ़ायती उत्पादन और अनुकूलन पर काम कर रहा है।

परियोजना

परियोजना	प्रायोजित	परामर्श कार्य
नई परियोजनाएँ	12	शून्य
जारी परियोजनाएँ	22	शून्य
पूर्ण	28	01

प्रकाशन

विवरण	प्रकाशित पुस्तकें	पुस्तकों में अध्याय	सम्मेलन में शोधपत्र	पत्रिकाओं में लेख
कुल	01	09	09	124

रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग



विभाग का परिचय

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर का रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग, संस्थान के सबसे नए विभागों में से एक है, जिसकी स्थापना जुलाई 2023 में की गई थी। इस विभाग का उद्देश्य ऐसे इंजीनियरों और वैज्ञानिकों को प्रशिक्षित करना है जो रासायनिक अभियांत्रिकी की अत्याधुनिक समस्याओं पर काम करेंगे और ऐसे समाधान प्रस्तुत करेंगे जिनसे समाज को लाभ होगा और हमारे देश और विश्व की प्रगति और कल्याण में मदद मिलेगी। इसलिए, रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग का लक्ष्य मौलिक और व्यावहारिक प्रश्नों पर ध्यान केंद्रित करके अगली पीढ़ी के लीडर को प्रशिक्षित करते हुए रासायनिक अभियांत्रिकी अनुसंधान और अभ्यास में वैश्विक अग्रणी बनना है।

शैक्षणिक कार्यक्रम

रासायनिक अभियांत्रिकी में शैक्षणिक कार्यक्रमों के तहत बी.टेक. और पीएचडी शामिल हैं। बी.टेक. कार्यक्रम में, छात्रों को जेईई-एडवांस्ड के माध्यम से प्रवेश दिया जाता है और पीएचडी छात्रों को गेट और एक कठिन चयन प्रक्रिया के माध्यम से प्रवेश दिया जाता है। आने वाले वर्षों में, यह विभाग रासायनिक अभियांत्रिकी में एम.टेक. और माइनर बी.टेक. कार्यक्रम शुरू करने की योजना बना रहा है।

हमारे विविध संकाय सदस्यों का समूह रासायनिक अभियांत्रिकी विषय की व्यापक समस्याओं पर काम करता है। पारंपरिक रासायनिक अभियांत्रिकी समस्याओं, जैसे कि कैटेलिसिस और पॉलिमर से लेकर नई रासायनिक अभियांत्रिकी समस्याओं, जैसे कि रासायनिक अभियांत्रिकी में एआई और बायोसिस्टम इंजीनियरिंग पर काम करना।

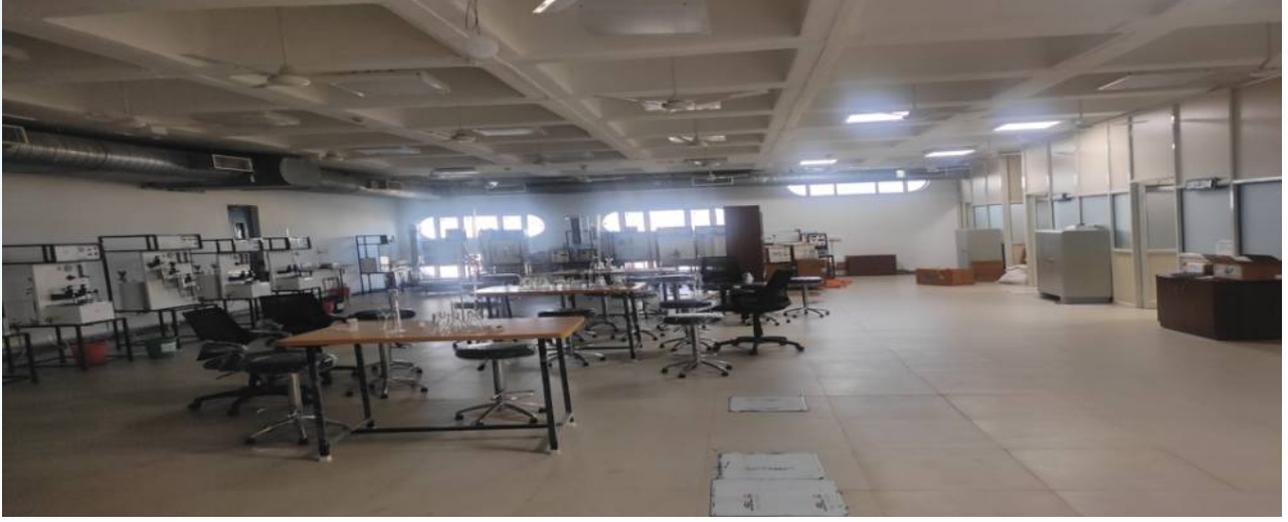
शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों का विवरण	
एसोसिएट प्रोफेसर	01
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड I	06
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड II	01
विजिटिंग डिस्टिंग्विशड प्रोफेसर	05
तकनीकी और प्रशासनिक कर्मचारी	04

कार्यक्रम	प्रवेश लेने वाले छात्र	डिग्री प्राप्त
पीएचडी	6	0
बी.टेक.	73	0



विभाग प्रयोगशालाएँ

1. ऊष्मा एवं द्रव्यमान स्थानांतरण प्रयोगशाला



2. द्रव यांत्रिकी प्रयोगशाला



3. रासायनिक प्रतिक्रिया अभियांत्रिकी प्रयोगशाला



4. कम्प्यूटेशनल रासायनिक अभियांत्रिकी प्रयोगशाला



5. यूनिट ऑपरेशन प्रयोगशाला





6. पदार्थ लक्षण वर्णन प्रयोगशाला



जानपद अभियांत्रिकी विभाग



विभाग का परिचय

वर्ष 2016 से, जानपद अभियांत्रिकी विभाग वास्तविक दुनिया की समस्याओं को हल करने के लिए बुनियादी और अनुप्रयुक्त अनुसंधान पर ध्यान केंद्रित करते हुए कार्य कर रहा है। यह विभाग चार वर्षीय पाठ्यक्रम ऑफर करता है जिसके माध्यम से जानपद अभियांत्रिकी में स्नातक और पीएचडी की डिग्री प्राप्त की जा सकती है। जानपद अभियांत्रिकी के संकाय सदस्यगण और छात्रगण भारत सरकार के विभिन्न संगठनों द्वारा वित्त पोषित प्रायोजित अनुसंधान परियोजनाओं के साथ-साथ देश-विदेश में उद्योगों/परामर्श परियोजनाओं में सक्रिय रूप से शामिल हैं। विभाग में सक्रिय और गतिशील संकाय सदस्यों की एक टीम है, जिन्हें अंतर्राष्ट्रीय अनुभव प्राप्त है और जिन्हें जानपद अभियांत्रिकी के विविध क्षेत्रों जैसे संरचनात्मक, भू-तकनीकी, परिवहन, जल संसाधन और पर्यावरण अभियांत्रिकी में विशेषज्ञता प्राप्त है। जानपद अभियांत्रिकी के संकाय सदस्यगण को दुनिया भर के विभिन्न मंचों पर समिति अध्यक्षों/सदस्यों, उत्कृष्ट समीक्षकों और संपादकीय बोर्ड के सदस्यों के रूप में मान्यता प्राप्त है। जानपद अभियांत्रिकी विभाग राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर, सक्रिय उद्योग संपर्क और राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के साथ एक प्रमुख शैक्षणिक केंद्र के रूप में अपनी पहचान बनाने के लिए तत्पर है।

शैक्षणिक कार्यक्रम

यह विभाग सिविल इंजीनियरिंग में बीटेक, एमटेक और पीएचडी कार्यक्रम संचालित करता है। यह विभाग संस्थान, प्रायोजित शोध परियोजनाओं और अन्य एजेंसियों द्वारा प्रायोजित विभिन्न विशेषज्ञताओं में पोस्ट-डॉक्टरल फेलो कार्यक्रम भी ऑफर करता है।

संकाय सदस्यों की संख्या: (असिस्टेंट/एसोसिएट/फुल प्रोफेसर)	
प्रोफेसर	03
एसोसिएट प्रोफेसर	03
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड II	01
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड I	10
पोस्ट डॉक्टरल फेलो की संख्या	06

कार्यक्रम	प्रवेश लेने वाले छात्र	डिग्री प्राप्त
बीटेक	53	42
एमटेक	20	17
एमएससी	—	—
पीएचडी	—	02

विभाग में उल्लेखनीय गतिविधियाँ

इस विभाग को कई शोध और औद्योगिक परामर्श परियोजनाएँ (लगभग 90 परियोजनाएँ) मिली हैं जिनका मूल्य लगभग 7.69 करोड़ रुपये है। हमारे सक्रिय संकाय सदस्यगण और छात्रगण को विभिन्न मंचों पर मान्यता प्राप्त है; हमारी कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं:

- क. डॉ. संदीप चौधरी का नवाचार, GOBAiR इस तरह का पहला गोबर आधारित फोमिंग एजेंट है, जिसे उच्चतर शिक्षा संस्थानों द्वारा विकसित शीर्ष 200 प्रौद्योगिकियों में चुना गया है और प्राकृतिक रूप से कलर्ड जियोपॉलिमर कंपोजिट को 28 फरवरी और 01 मार्च, 2025 को आईआईटी मद्रास में आयोजित इन्वेंटिव (InveTiv) 2025 में प्रदर्शित उभरती हुई शीर्ष 50 प्रौद्योगिकियों की कॉफी टेबल में मान्यता दी गई थी। स्पार्क (SPARC) और यूकेआईआईआरआई (UKIERI) द्वारा प्रायोजित, पुनर्नवीनीकृत समुच्चय के क्षेत्र में अनुसंधान क्षमता निर्माण कार्यक्रम के एक भाग के रूप में, 9 यूजी, 3 पीजी और 1 पोस्ट-डॉक्टरल फेलो के लिए यूके के यूनिवर्सिटी ऑफ प्लायमाउथ में 3-सप्ताह के एक्सचेंज विजिट का आयोजन किया गया। यह इस तरह का पहला एक्सचेंज कार्यक्रम है जहाँ छात्रों के एक बड़े समूह ने स्टुडेंट एक्सचेंज में भाग लिया और अपना शोध प्रस्तुत किया।
- ख. डॉ. मनीष कुमार गोयल 2020, 2021, 2022, 2023 और 2024 में दुनिया के शीर्ष 2: वैज्ञानिकों की सूची (स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी द्वारा तैयार) में शामिल हैं। साथ ही शीर्ष 200 में, पर्यावरण अभियांत्रिकी (मौसम विज्ञान और वायुमंडलीय विज्ञान) के क्षेत्र में प्रमुख शोधकर्ता हैं।
- ग. डॉ. नीलिमा सत्यम को भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (आईएनएसए) द्वारा आईएनएसए एसोसिएट फेलोशिप (2024) से सम्मानित किया गया। वह 2025-2027 की अवधि के लिए एलएआरएएम (LARAM) की स्कूल साइंटिफिक कमिटी की सदस्य भी हैं।
- घ. डॉ. ललित बोराना को फ्रांस सरकार द्वारा एसएसएचएन फेलोशिप पुरस्कार-2024 प्रदान किया गया और उन्होंने एमजीएसयू, मॉस्को में रूसी संघ के विज्ञान और उच्च शिक्षा मंत्रालय द्वारा आयोजित प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक और व्यावहारिक संगोष्ठी, 'निर्माण उद्योग का भविष्य: चुनौतियाँ और विकास संभावनाएँ' में मुख्य व्याख्यान दिया।
- ङ. डॉ. गुरुप्रकाश को अमेरिकन सोसाइटी ऑफ मैकेनिकल इंजीनियरिंग: जर्नल ऑफ नॉन-डिस्ट्रिक्टव इवैल्यूएशन डायग्नोस्टिक्स, क्यूएनडीई2025 सम्मेलन, मॉन्ट्रियल, कनाडा, 2025 में प्रकाशन के 2 वर्षों के भीतर शीर्ष 5 सर्वाधिक उद्धृत पत्रों के लिए मान्यता प्राप्त हुई। वे यूनिवर्सिटी ऑफ वाटरलू, कनाडा में विजिटिंग रिसर्चर हैं।
- च. डॉ. गौरव सिल को आईआईटी बॉम्बे में टीपीएमडीसी 2024 में सर्वश्रेष्ठ पेपर पुरस्कार मिला। वे आईआईटी आईआईटीएसएस मध्य प्रदेश चौपटर के अध्यक्ष हैं।
- छ. डॉ. प्रियांशु सिंह को 2024 में आईआईटी बॉम्बे में टीपीएमडीसी सम्मेलन में सर्वश्रेष्ठ पोस्टर पुरस्कार मिला और उन्होंने आईआरसी मानकों के अनुरूप, पारगम्य कंक्रीट के लिए एक अभिनव एग्रीगेट-ब्लेंडिंग-आधारित मिश्रण डिजाइन विधि विकसित की।
- ज. डॉ. आशुतोष मंडपे के बी.टेक प्रोजेक्ट के छात्र को 10 अक्टूबर, 2024 को आईआईएम इंदौर में 'भारत में सौर ई-कचरे के रूझान की भविष्यवाणी: टिकारू पुनर्चक्रण समाधानों के लिए एआरआईएमए (ARIMA) दृष्टिकोण' शीर्षक वाले कार्य के लिए सर्वश्रेष्ठ मौखिक प्रस्तुति का पुरस्कार मिला और उन्होंने मध्य प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (एमपीपीसीबी) के सहयोग से मध्य प्रदेश में ई-कचरा प्रबंधन पर एक हितधारक कार्यशाला का आयोजन किया।
- झ. डॉ. मयूर शिरीष जैन को आईआईटी गुवाहाटी में अपशिष्ट प्रबंधन पर 5वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 'रीसायकल 2025' में सर्वश्रेष्ठ मौखिक प्रस्तुति के लिए पुरस्कार मिला। पांडा, एस., और जैन, एम. एस. (2025). थर्मल प्रीट्रीटेड सोयाबीन स्ट्रॉ के अपस्केलिंग एनारोबिक डाइजेस्टिव पर प्रोसेस डायनेमिक्स और तकनीकी-आर्थिक व्यवहार्यता।
- ञ. डॉ. प्रियांक जे शर्मा ने मैकग्रा हिल एजुकेशन (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड द्वारा प्रकाशित 'इंजीनियरिंग हाइड्रोलॉजी' (6वां संस्करण) नामक एक यूजी पाठ्यपुस्तक का सह-लेखन किया और साइंटिफिक रिपोर्ट्स जर्नल के संपादकीय बोर्ड के सदस्य के रूप में इनके योगदान के लिए 'सिंगर नेचर ऑथर सर्विस अवार्ड 2025' प्राप्त किया।
- ट. डॉ. रामू बाडिगा ने आईआईटी इंदौर के लिए 10वें भारतीय युवा भू-तकनीकी इंजीनियर्स सम्मेलन का सफलतापूर्वक संचालन किया, जो 11 और 12 मार्च 2025 को आयोजित किया गया।

अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ

इस विभाग को जानपद अभियांत्रिकी की विभिन्न उप-शाखाओं जैसे संरचनात्मक, भू-तकनीकी, परिवहन, जल संसाधन और पर्यावरण अभियांत्रिकी में विशेषज्ञता प्राप्त है।

परियोजना

परियोजना	प्रायोजित	परामर्श कार्य
नई परियोजनाएँ	12	52
जारी परियोजनाएँ	20	21
पूर्ण	10	78

प्रकाशन

विवरण	प्रकाशित पुस्तकें	पुस्तकों में अध्याय	सम्मेलन में शोधपत्र	पत्रिकाओं में लेख
कुल	12	34	59	96

संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग



विभाग का परिचय

आईआईटी इंदौर में संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी (सीएसई) विभाग की स्थापना जुलाई 2009 में हुई थी। यह बैचलर ऑफ टेक्नोलॉजी (बी.टेक.), मास्टर ऑफ साइंस (एम.एस.) बाय रिसर्च और डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएचडी) सहित कई व्यापक शैक्षणिक कार्यक्रम ऑफर करता है। 2023 से, यह विभाग मास्टर ऑफ टेक्नोलॉजी (एम.टेक.) कार्यक्रम भी ऑफर कर रहा है।

यह विभाग एक आधुनिक, छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धति का पालन करता है, जो शैक्षणिक स्वतंत्रता, नवाचार और व्यावहारिक शिक्षण को प्रोत्साहित करता है। यह अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं, उन्नत हार्डवेयर और नवीनतम सॉफ्टवेयर उपकरणों से सुसज्जित है, जो शिक्षण और अत्याधुनिक अनुसंधान दोनों को सहायता प्रदान करते हैं। ये संसाधन छात्रों और शोधकर्ताओं को प्रमुख परियोजनाओं को प्रभावी ढंग से क्रियान्वित करने और अनुसंधान परिणामों को प्रमाणित करने में सक्षम बनाते हैं।

मध्य भारत के तेजी से बढ़ते आईटी केंद्र, इंदौर में स्थित, यह विभाग उद्योग-अकादमिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए रणनीतिक रूप से स्थित है। माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, मैथवर्क्स, इम्पेटस, टीसीएस, इंसोसिस और अन्य प्रमुख आईटी संगठनों जैसी कंपनियों की इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपस्थिति है, जो इंटरशिप, शोध साझेदारी और रोजगार के भरपूर अवसर प्रदान करती हैं।

शैक्षणिक कार्यक्रम

संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग (सीएसई) बैचलर ऑफ टेक्नोलॉजी (बी.टेक.), मास्टर ऑफ साइंस बाय रिसर्च (एम.एस. बाय रिसर्च) और डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएचडी) की डिग्री प्रदान करने वाले शैक्षणिक कार्यक्रम ऑफर करता है। 2023 से, इस विभाग ने मास्टर ऑफ टेक्नोलॉजी (एम.टेक.) कार्यक्रम भी शुरू किया है।

जुलाई 2025 तक, इस विभाग से कुल 699 बी.टेक., 35 एम.एस. रिसर्च, 16 एम.टेक. और 52 पीएचडी छात्र ग्रेजुएट हुए हैं। वर्तमान में, इसमें 261 बी.टेक., 24 एम.एस. रिसर्च, 16 एम.टेक. और 53 पीएचडी छात्र हैं।

संकाय सदस्यगण की संख्या:	
प्रोफेसर	20
एसोसिएट प्रोफेसर	07
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड I	03
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड II	08
पोस्ट डॉक्टरल फेलो की संख्या	02
	शून्य

कार्यक्रम	प्रवेश लेने वाले छात्र	डिग्री प्राप्त
बी.टेक.	80	699
एम.एस. रिसर्च	12	35
एम.टेक.	16	16
पीएच.डी.	लागू नहीं	52

उल्लेखनीय अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ

संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग को पिछले 5 वर्षों में विभिन्न राष्ट्रीय वित्त पोषण एजेंसियों जैसे डीएसटी, सीएसआईआर, इसरो, एमईआईटीवाई, डीआरडीओ, आईसीएमआर और टीआईएच हब्स और कई अंतरराष्ट्रीय वित्त पोषण एजेंसियों से कुल 20.33 करोड़ रुपये के अनुदान के साथ राष्ट्रीय महत्व पर केंद्रित लगभग 20 परियोजनाएँ मिलीं हैं। हमने 35 से अधिक परियोजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा किया है, जिसमें पूर्व में 11.08 करोड़ रुपये का अनुदान शामिल है। विभाग ने 50 से अधिक पीएचडी छात्रों को भी डिग्री प्रदान की है, जो प्रतिष्ठित उद्योग और शैक्षणिक संस्थानों में कार्यरत हैं। हमने कुछ तकनीकी वार्ताएं, कार्यशालाएं और संगोष्ठियां भी आयोजित कीं, जैसे कि इन-हाउस और ओपन-हाउस संगोष्ठियां, बीजगणितीय ग्राफ सिद्धांत पर एक दिवसीय कार्यशाला (रामानुजन ग्राफ पर आधारित) और आईसीआईएसएस 2025, आदि। वर्तमान में, हमारे विभाग में संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी के विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञता रखने वाले 20 संकाय सदस्यगण हैं। हम पिछले शैक्षणिक वर्ष में वर्तमान संकाय सदस्यगण की कुछ उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हैं, जो इस प्रकार हैं:

- बड़े पैमाने पर कॉर्पोरा (इंडिक-एसटी, इंडिक-टीईडीएसटी) विकसित और जारी किया गया, एससीआईई पत्रिकाओं में व्यापक रूप से प्रकाशित किया गया और वाक प्रौद्योगिकियों में पेटेंट प्राप्त किए गए।
- आभासी विरासत संरक्षण में महत्वपूर्ण बदलाव लाने, सांस्कृतिक अन्वेषण के लिए एक इंटरैक्टिव और शैक्षणिक मंच प्रदान करने और ऐतिहासिक सटीकता और पहुँच सुनिश्चित करने के लिए व्याख्यात्मक कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एक्सएआई) और मिश्रित वास्तविकता को एकीकृत करते हुए मालादेवी मंदिर (विदिशा) का एक इमर्सिव मेटावर्स अनुभव विकसित किया गया।
- सीएसआईआर-सीईआईआरआई पिलानी के सहयोग से टोल प्लाजा की समस्या के लिए जनरेटिव एआई अनुसंधान को एआई/एमएल-आधारित सॉफ्टवेयर उत्पाद में बदलना।
- डेटा प्लेन में एमएल-संचालित नेटवर्क फंक्शंस को डिजाइन और तैनात करने के लिए एक एकीकृत विधि की कमी के समस्या का समाधान करने के लिए नेटवर्क डिवाइस आर्किटेक्चर में एक मॉड्यूलर, प्रीमिटिव-आधारित एमएल फ्रेमवर्क विकसित किया गया।
- कृषि गतिविधियों में किसानों की सहायता के लिए एक मोबाइल ऐप का विकास कृषि सेवा
- सी3आईहब (C3iHub), आईआईटी कानपुर, भारत से अनुदान प्राप्त 'प्रोएक्टिव एंड जनरलाइज्ड डीपफेक डिफेंस मैकेनिज्म टू रीइन्फोर्स साइबरस्पेस', 2024 पर एक परियोजना को मंजूरी दी गई और उसकी शुरुआत की गई।
- इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (एमईआईटीवाई) (स्टार्टअप, इनोवेशन डिवीजन) द्वारा वित्त पोषित 'एग्रीहब: कृषि के लिए नवाचार केंद्र' शीर्षक से जनवरी 2025 में उत्कृष्टता केंद्र (सीओई) (एआई/एमएल और डीप लर्निंग में) की स्थापना के लिए एक कंसोर्टियम परियोजना को मंजूरी दी गई और उसकी शुरुआत की गई। इस परियोजना का उद्देश्य आईसीएआर-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-आईआईएसआर) इंदौर, आईसीएआर-सीआईईई भोपाल, सीडैक पुणे और एस एंड टी मध्य प्रदेश के साथ सहयोग करना है, जिसमें योगदान देने वाले उद्योग शामिल हैं; रुचि सीड्स इंडस्ट्रीज लिमिटेड इंदौर, देवादित्य टेक्नोक्रेट्स लिमिटेड इंदौर, कॉर्नर स्टोन लिमिटेड इंदौर और टेकरिम्मा एग्रो रिसर्च एंड डेवलपमेंट प्राइवेट लिमिटेड इंदौर। इसके अतिरिक्त, एआई/एमएल एवं डीप लर्निंग के लिए प्रौद्योगिकी केंद्र का उद्घाटन जून 2025 में किया गया।

परियोजना

परियोजना	प्रायोजित	परामर्श कार्य
नई परियोजनाएँ	11	1
जारी परियोजनाएँ	14	1
पूर्ण	6	0

प्रकाशन

विवरण	पेटेंट	प्रकाशित पुस्तकें	पुस्तकों में अध्याय	सम्मेलन में शोधपत्र	पत्रिकाओं में लेख
कुल	7 स्वीकृतए 1 फ़ाइल की गई	3	3	37	49

विद्युत अभियांत्रिकी विभाग



विभाग का परिचय

2009 में स्थापित, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर का विद्युत अभियांत्रिकी विभाग, युवा प्रतिभाओं को प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ, अग्रणी और उच्च-गुणवत्ता वाले पेशेवर बनाने के लिए आवश्यक मार्गदर्शन और अनुकूल शिक्षण परिवेश प्रदान करने का लक्ष्य रखता है। विभाग उच्चतम व्यावसायिक क्षमता वाले प्रतिभाशाली व्यक्तियों को आगे बढ़ाने का प्रयास करता है जो तकनीकी प्रगति में योगदान दे सकें। विभाग के संकाय सदस्यगण शिक्षण और शोध गतिविधियों के बीच सामंजस्य बनाने और छात्रों को उच्च-गुणवत्ता वाले शोध के माध्यम से नवीनतम और प्रासंगिक क्षेत्र ज्ञान प्रदान करने का प्रयास करते हैं। संकाय सदस्यों का उद्देश्य छात्रों को बौद्धिक रूप से प्रोत्साहित करना और जिज्ञासा एवं नवाचार का परिवेश बनाना है। हम अत्याधुनिक तकनीकों में शोध कार्यक्रम प्रदान करने और ऐसे कुशल शोधकर्ताओं को तैयार करने का प्रयास करते हैं जो तेज़ी से विकसित हो रहे तकनीकी परिदृश्य में काम करने के लिए उत्सुक और सक्षम हों। वर्तमान में, विभाग के संकाय सदस्यगण और छात्रगण संचार, सिग्नल प्रोसेसिंग, इमेज प्रोसेसिंग, वीएलएसआई, नैनोइलेक्ट्रॉनिक्स, सेमीकंडक्टर डिवाइस, आरएफ और माइक्रोवेव, फोटोनिक्स, पॉवर इंजीनियरिंग और बायोफोटोनिक्स इंस्ट्रुमेंटेशन में अनुसंधान में सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं।

शैक्षणिक कार्यक्रम

इस विभाग का उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना और चुनौतियों का समाधान करने तथा औद्योगिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप भविष्य की तकनीकों का विकास करने हेतु अंतःविषयक, उद्योग-उन्मुख, उन्नत वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा देना है। यह विभाग यूजी (बी.टेक.), पीजी (कम्युनिकेशन एंड सिग्नल प्रोसेसिंग में एम.टेक., वीएलएसआई डिज़ाइन एंड नैनोइलेक्ट्रॉनिक्स में एम.टेक., पॉवर सिस्टम्स एंड पॉवर इलेक्ट्रॉनिक्स में एम.टेक. और एम.एस. बाय रिसर्च) और डॉक्टरेट (पीएचडी) कार्यक्रम ऑफर करता है।

संकाय सदस्यगण की संख्या:	23
प्रोफेसर	12
एसोसिएट प्रोफेसर	2
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड II	4
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड I	5

कार्यक्रम	प्रवेश लेने वाले छात्र	डिग्री प्राप्त
बी.टेक.	85	83
एम.टेक. (सीएसपी)	15	12
एम.टेक. (वीडीएन)	15	05
एम.एस. (रिसर्च)	10	04
पीएच.डी.	41	21

परियोजना

परियोजना	प्रायोजित	परामर्श कार्य
नई परियोजनाएँ	14 (2024-2025)	0
जारी परियोजनाएँ	74 (आज तक)	1
पूर्ण	37	7

प्रकाशन

विवरण	प्रकाशित पुस्तकें	पुस्तकों में अध्याय	सम्मेलन में शोधपत्र	पत्रिकाओं में लेख
कुल	0	0	13	07

यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग



विभाग का परिचय

हमारे संस्थान के सबसे पुराने और सबसे बड़े विभागों में से एक, यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग में 28 पूर्णकालिक संकाय सदस्यगण और 10 से अधिक प्रशासनिक एवं तकनीकी कर्मचारी हैं। हमारा पाठ्यक्रम विज्ञान, अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी पर केंद्रित है, जो तकनीकी कौशल, समस्या-समाधान और नवाचार को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। हम शैक्षणिक और शोध कार्यक्रमों को सहयोग देने के लिए अत्याधुनिक शोध सुविधाएँ प्रदान करते हैं। हमारा प्राथमिक लक्ष्य उच्च-गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है, जिससे छात्रों को वर्तमान और भविष्य की माँगों को पूरा करने के लिए एक मजबूत आधार और विशिष्ट प्रशिक्षण प्राप्त हो सके। हम ऐसे सक्षम इंजीनियरों को तैयार करने के लिए प्रतिबद्ध हैं जो यांत्रिक अभियांत्रिकी के क्षेत्र को विस्तृत रूप प्रदान करेंगे।

शैक्षणिक कार्यक्रम

यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग बीटेक, एमटेक, एमएस (रिसर्च) और पीएचडी कार्यक्रम ऑफर करता है, जिसमें डुअल डिग्री भी शामिल हैं। 335 से अधिक यूजी, 42 पीजी और 65 पीएचडी छात्रों के साथ, यह एक सक्रिय शैक्षणिक परिवेश प्रदान करता है। यह डीआरडीओ, सशस्त्र बलों और विभिन्न क्षेत्रों के पोस्टडॉक्टरल फेलो और कार्मिकों को भी अपनी सेवाएँ प्रदान करने का अवसर देता है। एमटेक कार्यक्रम उन्नत विनिर्माण, मैकेनिकल सिस्टम डिज़ाइन और थर्मल एवं ऊर्जा प्रणालियों को कवर करते हैं। नेपाल और नाइजीरिया जैसे देशों के अंतर्राष्ट्रीय छात्र वैश्विक शिक्षण परिवेश में योगदान देते हैं। यह विभाग शैक्षणिक उत्कृष्टता, अनुसंधान नवाचार और ऐसे इंजीनियरों के विकास के लिए समर्पित है जो इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रभाव डालेंगे।

संकाय सदस्यगण की संख्या:	28
प्रोफेसर	9
एसोसिएट प्रोफेसर	5
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड II	2
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड I	10
पोस्ट डॉक्टरल फेलो की संख्या	06

कार्यक्रम	प्रवेश लेने वाले छात्र	डिग्री प्राप्त
बीटेक	70	76
एमटेक	40	30
एमएस रिसर्च	10	6
पीएचडी	10	4

उल्लेखनीय अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ

यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग ने डीआरडीओ, इसरो, जॉन डियर (इंडिया) और सिंपल एनर्जी प्राइवेट लिमिटेड जैसे संगठनों के लिए कई शोध परियोजनाएँ शुरू की हैं। अत्याधुनिक शोध सुविधाओं से सुसज्जित, विभाग ने पेशेवरों और शिक्षाविदों के लिए अल्पकालिक कार्यक्रम (एसटीपी) और संकाय विकास कार्यक्रम (एफडीपी) आयोजित किए हैं। प्रमुख शोधों में एडिटिव मैनुफैक्चरिंग के लिए माइक्रो-प्लाज्मा ट्रांसफर्ड आर्क (μ -PTA) प्रक्रियाओं का विकास, बायोकम्पैटिबल नी इम्प्लांट्स, विंड टर्बाइन गियरबॉक्स के लिए फॉल्ट डिटेक्शन एल्गोरिदम और ऊर्जा संचयन के लिए लेड-फ्री ट्राइबोइलेक्ट्रिक नैनोजनरेटर शामिल हैं। अन्य योगदानों में सॉफ्ट रोबोटिक्स, फेज चेंज मटीरियल का उपयोग करके थर्मल प्रबंधन, सिरैमिक कोटिंग्स, शेप मेमोरी एलॉय स्प्रिंग की विश्वसनीयता परीक्षण, नैनोग्लास अनुसंधान और रूट कैनल तैयारी का बायोमैकेनिकल विश्लेषण शामिल हैं।

परियोजना

परियोजना	प्रायोजित	परामर्श कार्य
नई परियोजनाएँ	24	20
जारी परियोजनाएँ	26	16
पूर्ण	20	18

प्रकाशन

विवरण	प्रकाशित पुस्तकें	पुस्तकों में अध्याय	सम्मेलन में शोधपत्र	पत्रिकाओं में लेख
कुल	1	38	52	120

धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान विभाग



विभाग का परिचय

इस विभाग की शुरुआत 2013 में पदार्थ विज्ञान एवं अभियांत्रिकी केंद्र के रूप में हुई थी और फिर 2016 में इसे धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान विभाग (एमईएमएस) के रूप में स्थापित किया गया। यह विभाग पदार्थ विज्ञान और धातुकर्म में अंतःविषय अनुसंधान करने पर ध्यान केंद्रित करता है ताकि समाज को लाभ पहुंचाने वाली वास्तविक दुनिया की जटिल समस्याओं का समाधान खोजा जा सके। वर्तमान में, इस विभाग में 18 मुख्य संकाय सदस्यगण के साथ-साथ 6 सहायक कर्मचारी भी कार्यरत हैं। हमारा सामूहिक लक्ष्य विभिन्न प्रकार के पदार्थों के संश्लेषण, प्रसंस्करण और लक्षण-निर्धारण को समझना और फिर उनके गुणों का सहसंबंध स्थापित करके उनके प्रदर्शन को बेहतर बनाना है। एमईएमएस के संकाय सदस्यगण पारंपरिक धातु विज्ञान से लेकर आधुनिक पदार्थ विज्ञान तक के अनुसंधान क्षेत्रों में कार्यरत हैं।

शैक्षणिक कार्यक्रम

यह विभाग यूजी और पीजी स्तर पर विभिन्न कार्यक्रम ऑफर करता है। यह धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान में बी.टेक, (क) पदार्थ विज्ञान एवं अभियांत्रिकी (ख) धातुकर्म अभियांत्रिकी, दोनों में एम.टेक और पीएचडी कार्यक्रम ऑफर करता है। यह विभाग मूल विज्ञान और अभियांत्रिकी सहित विभिन्न पाठ्यक्रमों के साथ-साथ उन्नत स्तर के वैकल्पिक पाठ्यक्रम भी ऑफर करता है।

हमारे संकाय सदस्यों का सक्रिय समूह धातुकर्म एवं पदार्थ विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान एवं प्रशिक्षण में शैक्षणिक गतिविधियों के सुचारु संचालन के लिए अनुकूल परिवेश तैयार करने की आकांक्षा रखता है। हमारा ध्यान सरल मिश्रधातुओं से लेकर जटिल मिश्रित पदार्थों तक, उनकी संरचना, गुणों, प्रसंस्करण और प्रदर्शन पर केंद्रित है। हमारा उद्देश्य पदार्थों के व्यवहार को नियंत्रित करने वाले मूलभूत सिद्धांतों को समझना और इस ज्ञान को व्यावहारिक समस्याओं के लिए नवीन समाधान विकसित करने हेतु लागू करना है। मूलभूत अनुसंधान के अलावा, धातुकर्म एवं पदार्थ विज्ञान विभाग विभिन्न उद्योगों के सामने आने वाली व्यावहारिक चुनौतियों का समाधान करने वाले अनुप्रयुक्त अनुसंधान में योगदान देने के लिए समर्पित है।

संकाय सदस्यगण की संख्या:	21
प्रोफेसर	03
एसोसिएट प्रोफेसर	08
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड I	06
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड II	04
पोस्ट डॉक्टरल फेलो की संख्या	02

कार्यक्रम	प्रवेश लेने वाले छात्र (2024)	डिग्री प्राप्त (2024)
बी.टेक	44	43+2 (यदि वे पास हो जाएं)
एम.टेक	13	12
पीएच.डी.	12	11

उल्लेखनीय अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ

1. ऊर्जा एवं पर्यावरणीय पदार्थों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (ई2एम-2024)

दिनांक: 11-13 जुलाई 2024

यह अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों और उद्योग विशेषज्ञों के लिए सतत ऊर्जा और पर्यावरणीय पदार्थों पर अपने शोध कार्य प्रस्तुत करने हेतु एक बहु-विषयक मंच के रूप में कार्य किया, जिससे वैश्विक चुनौतियों से निपटने हेतु नवीन दृष्टिकोणों को बढ़ावा मिला।

2. सतत विकास हेतु पदार्थों पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (आईएसएमएसडी-2024)

दिनांक: 20-21 दिसंबर 2024

यह संगोष्ठी सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में उन्नत पदार्थों की भूमिका पर केंद्रित थी। इसमें प्रसिद्ध राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय वक्ताओं द्वारा मुख्य व्याख्यान, तकनीकी सत्र और पैनल चर्चाएँ शामिल थीं।

3. उन्नत पदार्थ प्रसंस्करण एवं अभिलक्षणन पर कार्यशाला

दिनांक: 19-23 दिसंबर 2024

इस पाँच दिवसीय कार्यशाला के माध्यम से प्रतिभागियों को पदार्थ अनुसंधान में व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली अत्याधुनिक प्रसंस्करण और अभिलक्षणन तकनीकों का सैद्धांतिक और व्यावहारिक अनुभव प्रदान किया गया।

4. विद्युत-रासायनिक ऊर्जा भंडारण उपकरणों पर कार्यशाला

दिनांक: 23-24 दिसंबर 2024

इस केंद्रित कार्यशाला के माध्यम से विद्युत-रासायनिक ऊर्जा भंडारण प्रणालियों, जैसे बैटरी और सुपरकैपेसिटर, और उनके वास्तविक-विश्व अनुप्रयोगों में हाल के विकासों का अन्वेषण किया गया।

परियोजना

परियोजना	प्रायोजित	परामर्श कार्य
नई परियोजनाएँ	13	03
जारी परियोजनाएँ	25	01
पूर्ण	शून्य	शून्य

प्रकाशन

विवरण	प्रकाशित पुस्तकें	पुस्तकों में अध्याय	सम्मेलन में शोधपत्र	पत्रिकाओं में लेख
कुल	1	1	21	153

भौतिकी विभाग



विभाग का परिचय

भौतिकी विभाग 2009 में संस्थान की स्थापना के बाद से ही एक सक्रिय और समृद्ध विभाग रहा है। वर्तमान में, इसमें 19 संकाय सदस्यगण कार्यरत हैं, जो संघनित पदार्थ भौतिकी, उच्च ऊर्जा भौतिकी, ब्लैक होल भौतिकी, गेज/गुरुत्वाकर्षण द्वैत और जटिल नेटवर्क सहित विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञता रखते हैं। विभाग अत्याधुनिक अनुसंधान प्रयोगशालाओं से सुसज्जित है जो अत्याधुनिक अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए निरंतर विकसित होती रही हैं। ये सुविधाएँ हमारे युवा शोधकर्ताओं के बीच नवाचार और तकनीकी प्रगति को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

शैक्षणिक कार्यक्रम

2009 से, भौतिकी विभाग पीएचडी कार्यक्रम और उसके बाद 2013 से एमएससी कार्यक्रम ऑफर कर रहा है। आज तक, हमने 71 से अधिक पीएचडी और 193 एमएससी छात्रों को डिग्री प्रदान की है। हमारे पीएचडी और एमएससी ग्रेजुएट दुनिया भर के प्रतिष्ठित संस्थानों में कार्यरत हैं और अनुसंधान एवं उच्चतर शिक्षा में सक्रिय रूप से योगदान दे रहे हैं।

2023 में, हमने इंजीनियरिंग फिजिक्स में एक यूजी बी.टेक कार्यक्रम शुरू किया है, जिसकी शुरुआत 20 छात्रों की एक प्रारंभिक कक्षा के साथ हुई। इसके अतिरिक्त, यह विभाग यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग के साथ मिलकर अनुप्रयुक्त प्रकाशिकी और लेजर प्रौद्योगिकी में विशेषज्ञता वाला एम.टेक कार्यक्रम भी ऑफर करता है। सभी शैक्षणिक स्तरों पर व्यावहारिक अनुसंधान अनुभव के लिए प्रतिबद्ध, इस विभाग ने 15 से अधिक उन्नत अनुसंधान प्रयोगशालाएँ स्थापित की हैं, जिनमें से प्रत्येक भौतिकी की एक विशिष्ट शाखा को समर्पित है। ये सुविधाएँ छात्रों को अध्ययन और नवाचार के असाधारण अवसर प्रदान करती हैं।

भारत सरकार द्वारा हाल ही में घोषित राष्ट्रीय क्वांटम मिशन के उद्देश्यों के अनुरूप, हम क्वांटम प्रौद्योगिकी में एक माइनर कार्यक्रम शुरू करने की तैयारी कर रहे हैं। इस कार्यक्रम के अंतःविषय स्वरूप को देखते हुए, भौतिकी विभाग इसके सफल कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग के साथ मिलकर काम करेगा।

संकाय सदस्यगण की संख्या:	19
प्रोफेसर – एचएजी	03
प्रोफेसर	08
एसोसिएट प्रोफेसर	02
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड I	07
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड II	00
पोस्ट डॉक्टरल फेलो की संख्या	03

कार्यक्रम	प्रवेश लेने वाले छात्र	डिग्री प्राप्त
बी.टेक (इंजीनियरिंग फिजिक्स)	20	—
एमएससी	26	27
पीएचडी	18	10

विभाग की उल्लेखनीय गतिविधियाँ

यह विभाग एक अत्यधिक सहयोगात्मक शोध परिवेश को बढ़ावा देने पर गर्व करता है जो आईआईटी इंदौर के विभिन्न विभागों के साथ-साथ प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के बीच घनिष्ठ संपर्क को प्रोत्साहित करता है। हम आईआईएससी बैंगलोर; आईआईटी बॉम्बे, दिल्ली, मद्रास, कानपुर, रोपड़ और हैदराबाद; आरआरकैट इंदौर; बीएआरसी मुंबई; आईआईएसआईआर कोलकाता, पुणे और बरहामपुर; एचआरआई इलाहाबाद; पुणे, मुंबई, इलाहाबाद और कलकत्ता के केंद्रीय विश्वविद्यालयों; एसएनबी-एनसीबीएस कोलकाता; और एसएनआईपी कोलकाता जैसे प्रतिष्ठित संगठनों के साथ सक्रिय सहयोग बनाए रखते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, हमारे सहयोग में यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैम्ब्रिज, यूनिवर्सिटी ऑफ़ ऑक्सफोर्ड, स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी, मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी (यूएसए), पेन स्टेट यूनिवर्सिटी (यूएसए), सीयूएनवाई (यूएसए), लीबनिज यूनिवर्सिटी ऑफ़ हनोवर और यूनिवर्सिटी ऑफ़ डुइसबर्ग-एसेन (जर्मनी), रदरफोर्ड एपलटन लैबोरेट्री और आईएसआईएस फ़ैसिलिटिज़ (यूके), टीयू बर्लिन और टीयू डॉर्टमुंड (जर्मनी), क्वीन मैरी यूनिवर्सिटी लंदन (यूके), एलएमयू म्यूनिख (जर्मनी), बर्न यूनिवर्सिटी (स्विट्जरलैंड), ओसाका यूनिवर्सिटी (जापान), एनटीयू (सिंगापुर), कॉम्प्लेक्सिटी साइंस इंस्टीट्यूट – सीएनआरएस (इटली), और इंस्टीट्यूटो सुपीरियर टेक्निको, लिस्बन (पुर्तगाल) शामिल हैं।

इस विभाग को अपनी अकादमिक उत्कृष्टता पर बहुत गर्व है, जहाँ तीन प्रोफेसर को प्रोफेसर-एचएजी के पद पर पदोन्नत किया गया है। इसके अतिरिक्त, एक प्रोफेसर को राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत का फेलो और एक अन्य को महाराष्ट्र विज्ञान अकादमी का फेलो चुना गया है।

प्रभावशाली अनुसंधान के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हुए, इस विभाग ने डीएसटी इंडिया पीएआईआर योजना के अंतर्गत एक बहु-संस्थागत अनुसंधान प्रस्ताव प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हमने डीएसटी सुप्रीम और डीएसटी एफआईएसटी (स्तर सी) योजनाओं के अंतर्गत उच्च-मूल्य वाली परियोजनाएँ भी प्रस्तुत की हैं, जो अत्याधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान को आगे बढ़ाने के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।

परियोजना

परियोजना	प्रायोजित	परामर्श कार्य
नई परियोजनाएँ	09	शून्य
जारी परियोजनाएँ	14	शून्य
पूर्ण	40	शून्य

प्रकाशन

विवरण	प्रकाशित पुस्तकें	पुस्तकों में अध्याय	सम्मेलन में शोधपत्र	पत्रिकाओं में लेख
कुल	02	02	07	44

रसायन विज्ञान विभाग



विभाग का परिचय

अगस्त 2009 में स्थापित, आईआईटी इंदौर का रसायन विज्ञान विभाग, अनुसंधान विविधता, बाह्य वित्त पोषण और कई प्रकाशनों के साथ तेज़ी से विकसित हो रहा है। हमारे 20 संकाय सदस्यगण पारंपरिक क्षेत्रों (जैविक, अकार्बनिक, भौतिक और सैद्धांतिक / कम्प्यूटेशनल) से लेकर नैनोटेक्नोलॉजी, कैटेलिसिस, ऊर्जा, मशीन लर्निंग, जैव-रासायनिक, विश्लेषणात्मक और पदार्थ जैसे उच्च अंतःविषय अनुसंधान क्षेत्रों तक, अनुसंधान में रुचि रखते हैं। विभाग के संकाय सदस्यगण विशेष रूप से सुयोग्य और प्रेरित हैं और शिक्षण एवं अनुसंधान के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता रखते हैं। हमारे विभाग में रसायन विज्ञान और अंतःविषय अनुसंधान के कई क्षेत्रों में अनुसंधान को सुगम बनाने के लिए अत्याधुनिक परिष्कृत उपकरण सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

शैक्षणिक कार्यक्रम

रसायन विज्ञान विभाग के शैक्षणिक कार्यक्रमों में पीएचडी, एमएससी और बी.टेक यूजी छात्रों के लिए पाठ्यक्रम शामिल हैं। कॉर्डिनेशन रसायन विज्ञान, सैद्धांतिक रसायन विज्ञान, सिंथेटिक कार्बनिक रसायन विज्ञान, सुपरमॉलिक्युलर रसायन विज्ञान, ठोस-अवस्था रसायन विज्ञान और अन्य अंतःविषय क्षेत्रों से लेकर विविध क्षेत्रों में शोध कार्य इस विभाग को अत्याधुनिक अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण केंद्र बनाते हैं। आईआईटी इंदौर का रसायन विज्ञान विभाग भारत में निर्मित दूसरी पीढ़ी का एकमात्र आईआईटी है जिसने रसायन विज्ञान में दो वर्षीय मास्टर कार्यक्रम (एमएससी रसायन विज्ञान) शुरू किया है, जिसमें एक पूरा वर्ष, विशेष रूप से कार्यक्रम का दूसरा वर्ष, छात्र की पसंद के क्षेत्र में प्रयोगशाला अनुसंधान के लिए समर्पित होता है। 2013 से, यह अनूठा कार्यक्रम प्रयोगशाला में मूलभूत शोध समस्याओं का समाधान करने और छात्रों को यह निर्णय लेने का अवसर प्रदान करने के लिए एक पूरा वर्ष समर्पित करता है कि क्या वे अपने उच्च अध्ययन में डॉक्टरेट कार्यक्रम के साथ आगे बढ़ना चाहते हैं। यह सुनिश्चित करता है कि केवल योग्य और प्रेरित छात्र ही डॉक्टरेट कर रहे हैं और समाज के कल्याण में योगदान दे रहे हैं। इसके अतिरिक्त, छात्र आईआईटी इंदौर में मास्टर कार्यक्रम पूरा करने के बाद डॉक्टरेट कार्यक्रम की ओर अपना कदम बढ़ाते हैं या आकर्षक नौकरी की तलाश करते हैं।

संकाय सदस्यों की संख्या:	19
प्रोफेसर	11
एसोसिएट प्रोफेसर	04
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड I	04
पोस्ट डॉक्टरल फेलो की संख्या	05

कार्यक्रम	प्रवेश लेने वाले छात्र	डिग्री प्राप्त
एमएससी	28	26
पीएचडी	30	33

उल्लेखनीय अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ

- 19 मई, 2025 को रसायन विज्ञान पर आंतरिक संगोष्ठी।
- भारत-जर्मन साझेदारी के अंतर्गत सतत रसायन विज्ञान-III पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, 2025, 18-20 अप्रैल 2025
- ज्ञान पाठ्यक्रम 'एक सतत भविष्य के लिए उन्नत कार्बनिक संश्लेषण और उत्प्रेरण' पर, 24-28 मार्च, 2025
- स्पार्क कार्यशाला- बोरोन न्यूट्रॉन कैप्चर थेरेपी: कैंसर का उपचार, 14-21 दिसंबर, 2024।
- प्रो. तुषार काति मुखर्जी को संस्थान का सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र पुरस्कार 2025 मिला।
- प्रो. बिस्वरूप पाठक: एसीएस एप्लाइड मैटेरियल्स एंड इंटरफेसेस के एसोसिएट एडिटर (2024 से)
- प्रो. बिस्वरूप पाठक, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत (एनएएसआई) के फेलो (2024) के रूप में चयनित।



परियोजना

परियोजना	प्रायोजित	परामर्श कार्य
नई परियोजनाएँ	07	शून्य
जारी परियोजनाएँ	17	शून्य
पूर्ण	11	शून्य

प्रकाशन

विवरण	प्रकाशित पुस्तकें	पुस्तकों में अध्याय	सम्मेलन में शोधपत्र	पत्रिकाओं में लेख
कुल	शून्य	02	शून्य	163

गणित विभाग



विभाग का परिचय

आईआईटी इंदौर का गणित विभाग, गणित की विभिन्न शाखाओं में शैक्षणिक और शोध कार्यक्रमों का एक प्रमुख केंद्र रहा है। यह विभाग निरंतर अग्रणी शोध क्षेत्रों में कार्य करता रहा है और अन्य विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभागों के साथ सहयोगात्मक अनुसंधान को प्रोत्साहित करता रहा है।

संकाय सदस्यगण की संख्या:	
प्रोफेसर	05
एसोसिएट प्रोफेसर	06
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड I	08
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड II	01
पोस्ट डॉक्टरल फेलो की संख्या	01

शैक्षणिक कार्यक्रम

यह विभाग वर्तमान में गणित में पीएचडी, एमएससी और मैथेमैटिक्स एंड कंप्यूटिंग में बी.टेक कार्यक्रम ऑफर कर रहा है। साथ ही, यह विभाग सांख्यिकी और अनुप्रयुक्त कंप्यूटिंग जैसे संबद्ध क्षेत्रों में अन्य मास्टर कार्यक्रम भी संचालित करने की योजना बना रहा है।

कार्यक्रम	प्रवेश लेने वाले छात्र	डिग्री प्राप्त
एमएससी (गणित)	20	19
पीएचडी	7	5
बी.टेक	39	लागू नहीं

उल्लेखनीय अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ

- आईईईई सीआईएस विंटर स्कूल प्रोग्राम 2025
- आईएनएसए प्रतिष्ठित लेक्चर फेलो 2024 (अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी अनुभागीय समिति में एकमात्र प्राप्तकर्ता, प्रो. एम. तनवीर)
- 18–24 जनवरी, 2024 तक कार्यशाला योजना के अंतर्गत एसईआरबी द्वारा वित्त पोषित "रैंकिंग एवं चयन में सांख्यिकीय मॉडलिंग" पर एक उच्च-स्तरीय कार्यशाला का आयोजन (डॉ. मोहम्मद अरशद)
- 14–17 जनवरी, 2025 को आईआईटी इंदौर में नेटवर्क विज्ञान (नेटसाइ-एक्स-25) पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन (डॉ. बापन घोष-सह-आयोजक)

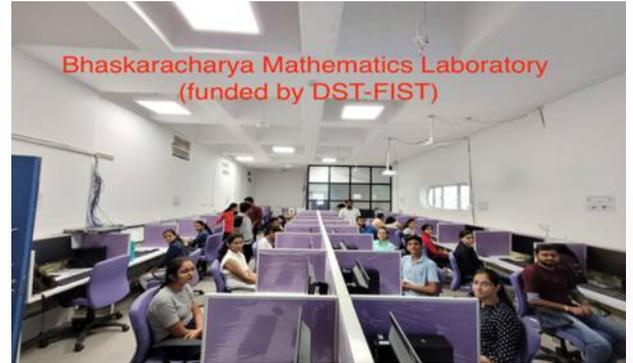
परियोजना

परियोजना	प्रायोजित	परामर्श कार्य
नई परियोजनाएँ	05	शून्य
जारी परियोजनाएँ	16	शून्य
पूर्ण	23	शून्य

डीएसटी – एफआईएसटी सहायता

भास्कराचार्य गणित प्रयोगशाला

ब्रह्मगुप्त गणित पुस्तकालय



प्रकाशन

विवरण	प्रकाशित पुस्तकें	पुस्तकों में अध्याय	सम्मेलन में शोधपत्र	पत्रिकाओं में लेख
कुल	16	20	33	405

इसके अलावा, यह विभाग विभिन्न आउटरीच गतिविधियों, जैसे अल्पकालिक पाठ्यक्रम, वेबिनार, छात्र सेमिनार श्रृंखला आदि के माध्यम से भारत में कॉलेज के शिक्षकों, स्नातकोत्तर और स्नातक छात्रों के बीच गणित को बढ़ावा देने में भी लगा हुआ है। साथ ही, यह विभाग नियमित रूप से दुनिया भर के प्रतिष्ठित संस्थानों के प्रख्यात गणितज्ञों द्वारा व्याख्यान भी आयोजित करता है।

अधिक जानकारी के लिए, कृपया <http://math.iiti.ac.in> पर जाएँ।

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान स्कूल



स्कूल का परिचय

आईआईटी इंदौर का मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान स्कूल अनुसंधान और शिक्षण के लिए एक शानदार और सक्रिय स्थान है। इस स्कूल के संकाय सदस्यगण अर्थशास्त्र, अंग्रेजी, इतिहास, दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान और समाजशास्त्र के विविध विषयों के शोधकर्ताओं का एक चयनशील मिश्रण हैं। इस स्कूल में 17 संकाय सदस्यगण हैं जिनमें से तीन सदस्य मानद प्रोफेसर, डिस्टिंग्विश्ड विजिटिंग प्रोफेसर और विजिटिंग प्रोफेसर हैं। वर्तमान में कुल 66 पीएचडी छात्र महत्वपूर्ण परियोजनाओं और शोध समस्याओं पर काम कर रहे हैं और 8 छात्रों को वर्ष 2025 में प्रवेश के लिए पहले ही अनुशंसित किया जा चुका है। संकाय सदस्यगण के अनुसंधान सहयोग, चाहे वे स्कूल के भीतर हों या संस्थान में विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विषयों में हों या राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सहकर्मियों के साथ हों, स्कूल में किए गए अनुसंधान की वास्तविक अंतःविषय प्रकृति को प्रदर्शित करते हैं।

शैक्षणिक कार्यक्रम

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान स्कूल में तीन मुख्य शैक्षणिक कार्यक्रम हैं: पीएचडी, एमए (लिट्रेचर एंड लिंग्विस्टिक्स) और एमएस (रिसर्च)।

एमए इंग्लिश (लिट्रेचर एंड लिंग्विस्टिक्स) कार्यक्रम, जो इस वर्ष विभाग के प्रमुख कार्यक्रम के रूप में शुरू हो रहा है, मजबूत सैद्धांतिक आधारों पर आधारित शोध-आधारित और अभ्यास-उन्मुख पाठ्यक्रम के माध्यम से साहित्यिक और भाषाई विषयों का एक अनूठा मिश्रण प्रदान करता है।

पीएचडी कार्यक्रम में पाठ्यक्रम कार्य और गहन शोध प्रबंध शामिल हैं। हमारे छात्रों ने प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय छात्रवृत्तियाँ, फेलोशिप और पुरस्कार प्राप्त किए हैं। ग्रेजुएट छात्र अपने चुने हुए करियर में उत्कृष्टता प्राप्त कर रहे हैं।

संकाय सदस्यगण की संख्या	
प्रोफेसर	04
एसोसिएट प्रोफेसर	03
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड I	09
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड II	01

उल्लेखनीय अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ

- प्रो. निर्मला मेनन, जून 2025 से, एक वर्ष की अवधि के लिए ब्रिक्स एजुकेशन एंड रिसर्च एक्सचेंज की कार्य समिति की सदस्य हैं।
- प्रो. रुचि शर्मा को विश्व बौद्धिक संपदा संगठन (डब्ल्यूआईपीओ) द्वारा 23–24 जून, 2025 तक गैर-कृषि भौगोलिक संकेतकों पर अंतर्राष्ट्रीय परियोजना के लिए विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया गया था।
- प्रो. रुचि शर्मा को 16–20 जून, 2025 के बीच द्वि-राष्ट्रीय पर्यवेक्षित डॉक्टरेट डिग्री/कोटुटेल 2024/25 के अंतर्गत जर्मनी के बर्गिस्चे यूनिवर्सिटी वुपर्टल में शोध कार्य और चर्चा प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया था।
- प्रो. प्रीति शर्मा 7 मई, 2025 को ईएसजी इंटरनेशनल प्रोजेक्ट, यूनिवर्सिटी ऑफ़ यूट्रेक्ट, नीदरलैंड्स द्वारा आयोजित 'ग्रहीय न्याय: भारत से पारिस्थितिक-सामाजिक परिप्रेक्ष्य' विषय पर पृथ्वी प्रणाली शासन संगोष्ठी श्रृंखला में एक आमंत्रित पैनलिस्ट थीं।
- प्रो. प्रीति शर्मा को 6 मई, 2025 को एनईपी के तहत कौशल कार्यक्रमों के माध्यम से रोजगार सृजन पर चर्चा के लिए मध्य प्रदेश सरकार के नीति आयोग द्वारा पैनलिस्ट के रूप में आमंत्रित किया गया था।
- प्रो. निर्मला मेनन ने आईआईटी इंदौर से डिजिटल ह्यूमैनिटीज इंटरसेक्शन (डीएचआई) का शुभारंभ किया। <https://dhi.iiti.ac.in/index.php/dhjournal/index> 4 अप्रैल, 2025 को।
- प्रो. प्रीति शर्मा द्वारा सह-लिखित नीति संक्षिप्त, जिसका शीर्षक 'नर्मदा जनसांख्यिकी एटलस' है, 17 फरवरी, 2025 को जारी किया गया।
- डॉ. अशोक कुमार मोचेरला, 20 जून से 19 जुलाई 2025 तक, चाइनीज यूनिवर्सिटी ऑफ़ हॉन्ग कॉन्ग के सांस्कृतिक और धार्मिक अध्ययन विभाग में विजिटिंग स्कॉलर हैं।
- डॉ. अनन्या घोषाल शास्त्री-इंडो द्विपक्षीय शिक्षा मंच (एसबीईएफ 2025) अनुदान की प्राप्तकर्ता थीं और उन्होंने मार्च 2025 में नई दिल्ली में प्रतिनिधिमंडल में आईआईटी इंदौर का प्रतिनिधित्व किया था।
- डॉ. अनन्या घोषाल को वैश्विक ओपन मूक 'पर्यावरण जागरूकता के लिए अंग्रेजी शिक्षण' (कैनसस स्टेट यूनिवर्सिटी, अक्टूबर-नवंबर 2024) के लिए एकमात्र भारतीय पूर्व छात्र समन्वयक के रूप में चुना गया था, जिसे 24 देशों के आवेदकों में से चुना गया था।
- डॉ. तपस्या को 27–29 जून, 2025 को तमिल विश्वविद्यालय के भाषा विज्ञान विभाग के अखिल भारतीय द्रविड़ भाषा विज्ञान सम्मेलन में सिस्टमैटिक फंक्शनल लिंग्विस्टिक्स पर सर्वश्रेष्ठ शोधपत्र के लिए भारतीय द्रविड़ भाषा विज्ञान संघ और अंतर्राष्ट्रीय द्रविड़ भाषा विज्ञान विद्यालय द्वारा प्रो. वेनेलकांति प्रकाशम पुरस्कार 2024 से सम्मानित किया गया।
- डॉ. केदारमल वर्मा को जेपीएन सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस से 'नैचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग में भाषाई जटिलता और कॉग्निटिव लोड: एक शारीरिक-व्यवहारिक दृष्टिकोण' शीर्षक से एक शोध परियोजना (2024–2026) के लिए वित्त पोषण प्राप्त हुआ है।
- डॉ. तपस्या द्वारा मार्च 2025 में एनईपी 2020 के अनुरूप केरल के पीवीटीजी के बीच मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा (एमटीबी-एमएलई) कार्यान्वयन पर दो वर्षों के लिए आईसीएसएसआर-वित्त पोषित एक परियोजना पर कार्य किया जा रहा है; जुलाई 2024 में एनएलपी में फिजियो-बिहेवियरल मेट्रिक्स का उपयोग करके भाषाई जटिलता और कॉग्निटिव लोड पर दो साल के लिए जेपी नारायण केंद्र द्वारा प्रायोजित अनुसंधान; और आईआईटी इंदौर से यंग फैकल्टी रिसर्च सीड ग्रांट के तहत वाईएफआरएसजी परियोजना भाषा 'वैरिएशन और कॉग्निटिव: भारतीय अंग्रेजी पर एक अध्ययन' का पूरा होना।

संकाय सदस्यगण ने निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित कीं:

- प्रो. निर्मला मेनन द्वारा 'प्रेक्टिसिंग डिजिटल ह्यूमैनिटीज इन इंडिया: लर्निंग बाय डूइंग' 2024 प्रकाशित किया। यूके: रूटलेज।
- प्रो. प्रीति शर्मा द्वारा एआईसीटीई के यूजी द्वितीय वर्ष के छात्रों के लिए 2024 हेतु एक पाठ्यपुस्तक 'इफेक्टिव टेक्निकल कम्युनिकेशन' प्रकाशित की गई।
- डॉ. दिशारी चट्टराज ने पेडागॉजी ऑफ़ स्पेस एंड द ग्लोबल साउथ: मशीन-जनरेटेड लिटरेचर ओवरव्यू प्रकाशित किया। 2024. सिंगापुर: स्पिंगर नेचर (संपादित वॉल्यूम)
- डॉ. दिशारी चट्टराज ने क्रिटिकल फूड स्टडीज इन एशिया: मशीन-जनरेटेड लिटरेचर ओवरव्यू प्रकाशित किया। 2024. सिंगापुर: स्पिंगर नेचर (संपादित वॉल्यूम)

परियोजना

परियोजना	प्रायोजित
नई परियोजनाएँ	14
जारी परियोजनाएँ	14
पूर्ण	06

प्रकाशन

विवरण	प्रकाशित पुस्तकें	पुस्तकों में अध्याय	सम्मेलन में शोधपत्र	पत्रिकाओं में लेख
कुल	04	14	27	106

केंद्रों की प्रोफाइल

उद्यमिता शिक्षा एवं विकास केंद्र (CEED)

केंद्र का परिचय

उद्यमिता शिक्षा एवं विकास केंद्र (सीईईडी), आईआईटी इंदौर की एक पहल है जो नवाचार और उद्यमिता की शिक्षा प्रदान करने के लिए समर्पित है। सीईईडी, आईआईटी इंदौर के छात्रों के लिए शैक्षणिक पाठ्यक्रमों के साथ-साथ बाहरी समुदाय के सदस्यों के लिए अल्पकालिक कार्यक्रम और संकाय सदस्य विकास पहल भी प्रदान करता है।

शैक्षणिक कार्यक्रम

सीईईडी, आईआईटी इंदौर के सभी यूजी, पीजी और पीएचडी छात्रों के लिए 'फ़ाउंडेशन फॉर एंटरप्रेन्यूरशिप' नामक एक ओपन वैकल्पिक पाठ्यक्रम ऑफर करता है, जो ऑटम 2022 से संचालित किया जा रहा है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य अनुभवात्मक शिक्षा के माध्यम से नवाचार और उद्यमिता कौशल को बढ़ावा देना है। नियमित कक्षा व्याख्यानों के अलावा, इस पाठ्यक्रम में क्षेत्र के विशेषज्ञों, स्टार्टअप संस्थापकों, आईआईटी/आईआईएम के संकाय सदस्यों, एंजेल इन्वेस्टर्स और अन्य पेशेवरों द्वारा आमंत्रित व्याख्यान शामिल हैं। इस पाठ्यक्रम के तहत, छात्र अपने स्टार्टअप आइडिया के आधार पर एक व्यावसायिक योजना विकसित करने के लिए टीमों में काम करेंगे, जिसे सीड फंडिंग से सहायता मिलगी। इन योजनाओं का मूल्यांकन एक विशेषज्ञ समिति द्वारा किया जाएगा।

समूह

- प्रो. मोबिन शेख (प्रभारी प्राध्यापक)
- डॉ. अनन्या घोषाल
- डॉ. शोमिक दासगुप्ता
- डॉ. आशुतोष मंडपे
- डॉ. मोहनसुंदरी थंगावेल
- प्रो. रुचि शर्मा
- सुश्री सोनल राय (कनिष्ठ सहायक)

प्रमुख उपलब्धियाँ

सीईईडी, आईआईटी इंदौर ने आईआईटीआई एडवांस्ड सेंटर फॉर एंटरप्रेन्योरशिप (एसीई) फ़ाउंडेशन और एजुकेशनल आउटरीच के सहयोग से 2 स्टार्टअप बूटकैम्प का आयोजन किया, जहाँ हमारे विशेषज्ञों ने स्टार्टअप और उद्यमिता के विभिन्न पहलुओं से संबंधित 2 दिनों (लगभग 6 घंटे प्रति दिन) के 6 तकनीकी सत्रों में व्याख्यान दिया, जैसे स्टार्टअप आइडिया चुनना, आइडिया को एमवीपी में विकसित करना, सफल स्टार्टअप बनाना, स्टार्टअप में प्रमुख शब्द और शब्दावली, मूल्यांकन की मूल बातें, फंडिंग के स्रोत, उद्यमियों के लिए आईपी की मूल बातें आदि। बूटकैम्प 12 और 13 अगस्त, 2024 को एमसीटीई महु (5 प्रतिभागियों) के लिए और 25 और 26 अक्टूबर, 2024 को सुशीला देवी बंसल कॉलेज (100 छात्र) के लिए आयोजित किए गए थे।

सीईईडी ने आईआईटीआई एसीई फ़ाउंडेशन और एमएसएमई डीएफओ इंदौर के सहयोग से, आईआईटी इंदौर सहित इंदौर के विभिन्न स्थानों पर 10 उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम (ईएपी), 5 प्रबंधन विकास कार्यक्रम (एमडीपी) और एक उन्नत उद्यमिता कौशल विकास कार्यक्रम (ईएसडीपी) आयोजित किए हैं। इन कार्यक्रमों से छात्रों, स्टार्टअप संस्थापकों, संस्थागत कर्मचारियों, उद्यमियों और एमएसएमई प्रतिनिधियों सहित 1,000 से अधिक प्रतिभागियों को सामूहिक रूप से लाभ हुआ है।

कार्यक्रमों की झलकियाँ



सुशीला देवी बंसल कॉलेज बूट कैंप की छवियाँ

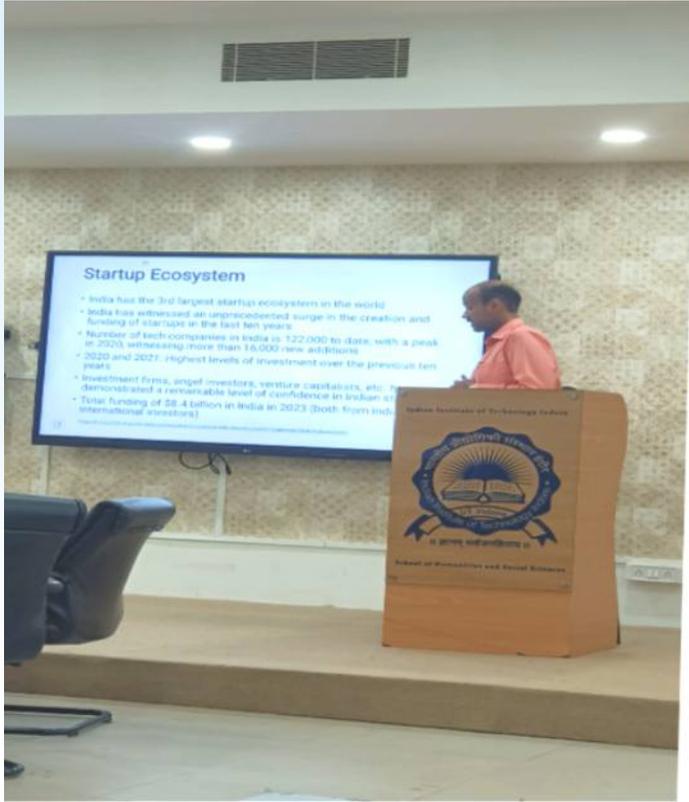


उन्नत उद्यमिता कौशल विकास कार्यक्रम



5 एमडीपी कार्यक्रम:





एमसीटीई कर्मचारी के लिए बूटकैम्प का आयोजन

परिष्कृत उपकरण केंद्र (SIC)

केंद्र का परिचय

आईआईटी इंदौर में अनुसंधान कार्यक्रम को बढ़ावा देने के लिए सितंबर, 2011 में परिष्कृत उपकरण केंद्र (एसआईसी) की स्थापना की गई थी। एसआईसी का उद्देश्य अत्याधुनिक उपकरण सुविधा और अत्याधुनिक अनुसंधान में इसके अनुप्रयोग प्रदान करके, आईआईटी इंदौर में अनुसंधान पहलों का समर्थन और संवर्धन करना है। अपने हितधारकों को उच्चतम गुणवत्ता वाला डेटा विश्लेषण प्रदान करने के लिए उच्च-मूल्य वाले उपकरणों को वहीं स्थापित किया गया है। एसआईसी संस्थान के सभी विभागों और बाह्य शैक्षणिक एवं औद्योगिक उपयोगकर्ताओं को विश्लेषणात्मक सेवाएँ प्रदान करता है। एसआईसी आईआईटी इंदौर में विज्ञान और अभियांत्रिकी की सभी शाखाओं में अनुसंधान को समर्थन और संवर्धन देने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

एसआईसी वर्तमान में बाह्य उपयोगकर्ताओं को प्रदान की जाने वाली सेवाओं के माध्यम से फंड एकत्र करके आत्मनिर्भर केंद्र बनने का प्रयास कर रहा है। एसआईसी सुविधा का एक महत्वपूर्ण लाभ छात्रों और संकाय सदस्यों के लिए इसकी आसान पहुँच है, साथ ही उपलब्ध उपकरणों की तुलना में छात्रों का अनुपात भी अनुकूल है। संस्थान के निम्नलिखित विभाग अपने अनुसंधान और विकास गतिविधियों को बढ़ाने के लिए एसआईसी सुविधा का सक्रिय रूप से उपयोग कर रहे हैं: रसायन विज्ञान, भौतिकी, यांत्रिक अभियांत्रिकी, विद्युत अभियांत्रिकी, जानपद अभियांत्रिकी, धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान, जीवविज्ञान एवं जैव चिकित्सा अभियांत्रिकी और रासायनिक अभियांत्रिकी।

परिकल्पना, ध्येय और उद्देश्य

1. आईआईटी इंदौर के प्रोफेसर, वैज्ञानिकों और छात्रों के साथ-साथ विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों और उद्योगों को अनुसंधान और विकास कार्यों हेतु नमूना विश्लेषण करने हेतु उच्च स्तरीय उपकरण सुविधाएँ प्रदान करना।
2. विश्वविद्यालयों और उद्योगों के शोधकर्ताओं के लिए विभिन्न एसआईसी उपकरणों के उपयोग और अनुप्रयोग पर वार्ता, सेमिनार और कार्यशालाएँ आयोजित करना।
3. उपकरणों का पूर्ण उपयोग करने और उन्हें विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में नए अनुसंधान क्षितिजों का पता लगाने के लिए उपलब्ध कराने हेतु नई विश्लेषणात्मक तकनीकों/विधियों का विकास करना।
4. उन्नत अनुसंधान के लिए आसान डेटा संग्रह सुनिश्चित करना।
5. अन्य शैक्षणिक संस्थानों और उद्योगों को सामान्य शुल्क पर सेवाएँ प्रदान करना।
6. संस्थान और उद्योग के बीच सहयोग के माध्यम से 'उत्कृष्टता केंद्र' का निर्माण और सहायता प्रदान करना।



प्रो. अपूर्व के. दास
प्रभारी प्राध्यापक, एसआईसी
ईमेल: head-sic@iiti.ac.in



प्रो. कृष्णा आर. मवाणी
सह-संयोजक, एसआईसी
ईमेल: krushna@iiti.ac.in



श्री घनश्याम भावसार
तकनीकी अधीक्षक



श्री किन्नी पांडेय
तकनीकी अधीक्षक



डॉ. रविंदर
कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक



श्री अतुल सिंह
कनिष्ठ तकनीकी सहायक



सुश्री काजल चौधरी
कनिष्ठ तकनीकी सहायक



श्री रणजीत रघुवंशी
प्रशासनिक कर्मचारी

एसआईसी में उपलब्ध सुविधाएँ

एसआईसी सुविधाओं में निम्नलिखित क्षेत्रों के उपकरण शामिल हैं:

1. स्पेक्ट्रोस्कोपी
2. क्रोमैटोग्राफी
3. माइक्रोस्कोपी और इमेजिंग
4. तापीय विश्लेषण
5. एक्स-रे डिफ्रैक्टोमीटर
6. अभिलक्षणन उपकरण

स्पेक्ट्रोस्कोपी		
400 मेगाहर्ट्ज एनएमआर और 500 मेगाहर्ट्ज एनएमआर (डीएसटी-एफआईएसटी-रसायन विज्ञान)	यूवी-विज़िबल स्पेक्ट्रोमीटर	यूवी-वीआईएस-एनआईआर स्पेक्ट्रोमीटर
टाइम-कोरिलेटेड सिंगल फोटॉन काउंटिंग (टीसीएसपीसी)	सर्कुलर डाइक्रोइज्म (सीडी)	स्पेक्ट्रोफ्लोरोमीटर
फूरियर ट्रांसफॉर्म इन्फ्रारेड स्पेक्ट्रोमीटर (एफटी-आईआर)	फोटोल्यूमिनेसेंस (पीएल)	पोलारिमीटर

क्रोमैटोग्राफी		
लिक्विड क्रोमैटोग्राफी- हाई रिजॉल्यूशन मास स्पेक्ट्रोमेट्री (एलसी-एचआरएमएस)	गैस क्रोमैटोग्राफी - मास स्पेक्ट्रोमीटर (जीसी-एमएस)	रिवर्स फेज-हाई परफॉर्मैस लिक्विड क्रोमैटोग्राफी (आरपी-एचपीएलसी)
प्रेपरेटिव - हाई परफॉर्मैस लिक्विड क्रोमैटोग्राफी (प्रेप-एचपीएलसी)	नॉर्मल फेज - हाई परफॉर्मैस लिक्विड क्रोमैटोग्राफी	

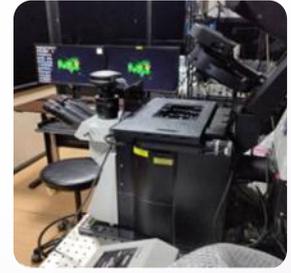
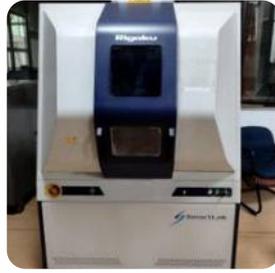
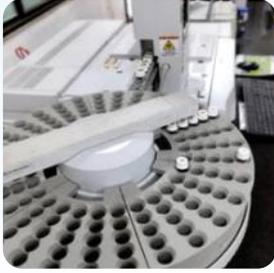
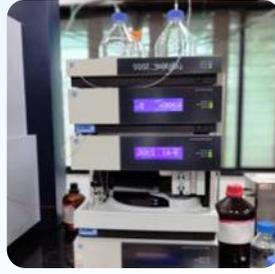
माइक्रोस्कोपी और इमेजिंग		
फील्ड-एमिशन स्कैनिंग इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी (एफई-एसईएम)	एटॉमिक फोर्स माइक्रोस्कोपी (एएफएम)	कॉन्फोकल लेजर स्कैनिंग माइक्रोस्कोपी (सीएलएसएम)
टोटल इंटरनल रिफ्लेक्शन फ्लोरेसेंस माइक्रोस्कोपी (टीआईआरएफएम)	ट्रांसमिशन इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी (टीईएम) जल्द ही स्थापित किया जाएगा	

तापीय विश्लेषण	
थर्मोग्राविमेट्रिक एनालाइजर (टीजीए)	डिफरेंशियल स्कैनिंग कैलोरीमेट्री (डीएससी)

एक्स-रे डिफ्रैक्टोमीटर		
सिंगल क्रिस्टल एक्सआरडी (एससीएक्सआरडी)	पाउडर एक्सआरडी (पीएक्सआरडी)	एनर्जी डिस्पर्सिव एक्स-रे स्पेक्ट्रोस्कोपी (ईडीएस/ईडीएक्स)
वेवलेंथ डिस्पर्सिव स्पेक्ट्रोस्कोपी (डब्ल्यूडीएस/डब्ल्यूडीएक्स)	एक्स-रे एबजॉर्प्शन फ़ाइन स्ट्रक्चर (एक्सएएफएस)	

अभिलक्षणन उपकरण		
लाइओफिलाइजर	सतह क्षेत्र विश्लेषक (बीईटी)	रियोमीटर
सीएचएनएसओ विश्लेषक	स्पेक्ट्रो इलेक्ट्रो-केमिकल सेल (एसईसी)	डुअल आयन बीम स्पटरिंग डिपोजिशन सिस्टम (डीआईबीएसडी)
कीथली सोर्स मीटर (विद्युत रसायन अभिलक्षणन)	माइक्रोवेव सिंथेसाइजर	

एसआईसी में प्रमुख सुविधाओं की झलकियाँ



कार्यशालाएँ / सम्मेलन

एसआईसी ने 14-16 मई, 2025 के दौरान 'उन्नत माइक्रोस्कोपी (अत्याधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए शक्तिशाली उपकरण) पर कार्यशाला और व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम' शीर्षक से एक कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में भारत और विदेश से 33 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।





एसआईसी में नव स्थापित उपकरण

1. फील्ड एमिशन स्कैनिंग इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप (एफई-एसईएम), निर्माता: जीस (Zeiss), मॉडल: ईडीएएक्स, एबीएसडी एंड एएसटीईएम (EDAX, aBSD & aSTEM) के साथ जेमिनी 360

दिसंबर 2024 में स्थापित



एफई-एसईएम का उद्घाटन माननीय निदेशक प्रोफेसर सुहास एस. जोशी द्वारा 16 दिसंबर, 2024 को किया गया।

2. क्विड क्रोमैटोग्राफी-हाई रेजोल्यूशन मास स्पेक्ट्रोमीटर, XEVO-G3 QTOF, एक्विटी एच-क्लास प्लस यूपीएलसी (एलसी-एचआरएमएस) के साथ युग्मित



जून 2025 में स्थापित

3. हाई परफॉर्मेंस लिक्विड क्रोमेटोग्राफी (एचपीएलसी)



दिसंबर 2024 में स्थापित

नए खरीदे गए उपकरण (शीघ्र ही स्थापित किए जाएंगे)

1. हाई रिज़ॉल्यूशन ट्रांसमिशन इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप (एचआर-टीईएम)
2. फिजिकल प्रॉपर्टी मेज़रमेंट सिस्टम (पीपीएमएस)

एसआईसी में कुछ उल्लेखनीय प्रतिनिधियों का दौरा

क्र.सं.	प्रतिनिधि का नाम	पद व विभाग
1	प्रोफेसर सुभाषिष चौधरी	पूर्व निदेशक, आईआईटी बॉम्बे
2	डॉ. सत्येन कुमार दास	मुख्य महाप्रबंधक, अनुसंधान एवं विकास केंद्र, फरीदाबाद
3	डॉ. प्रवाकर मोहंती	वैज्ञानिक-ई, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली
4	सुश्री सौम्या गुप्ता	भा.प्र.से., संयुक्त सचिव, तकनीकी शिक्षा, भारत सरकार, दिल्ली



संस्थान की स्थापना से अनुसंधान गतिविधि में एसआईसी की भूमिका

	प्रकाशन: 9000 से अधिक अंतर्राष्ट्रीय जर्नल प्रकाशनों के प्रकाशन हेतु सहायता प्रदान की गई। एसआईसी संस्थागत संकाय सदस्यगण और शोधार्थियों की शोध आवश्यकताओं को पूरा करता रहा है।
	पेटेंट: 90 से अधिक पेटेंट स्वीकृत हुए तथा एसआईसी डेटा का उपयोग करके 200 से अधिक पेटेंट फाइल किए गए।
	तकनीकी स्थानांतरण: 5 प्रौद्योगिकियों को उद्योगों को स्थानांतरित किया गया तथा 11 प्रौद्योगिकियों को एसआईसी की सहायता से विकसित किया गया।
	एसआईसी द्वारा 600 करोड़ रुपये से अधिक मूल्य की 700 से अधिक परियोजनाओं को सहायता प्रदान किया गया।

मुख्य बिंदु: 2024-25 में प्रमुख उपकरणों का उपयोग करके नमूनों का विश्लेषण किया गया

उपकरण	नमूनों की संख्या
एनएमआर (400 व 500 मेगाहर्ट्ज)	21061
एलसी-एचआरएमएस	7856
एफई-एसईएम	2131
सीएलएसएम	4319
जीसी-एमएस	3865
बीईटी	653
टीजीए	578
सीडी	989
एएफएम	581
यूवी-वीआईएस	143
यूवी-वीआईएस-एनआईआर	1238
फ्लोरेसेंस	944
लायोफिलाइज़र	685
प्रेप-एचपीएलसी	198
एलएन2	27056 लीटर
मिलिक वॉटर	1675 लीटर

स्थापना के बाद से बाह्य शिक्षा, उद्योग और अंतर्राष्ट्रीय उपयोगकर्ताओं से उत्पन्न राजस्व की धनराशि 1.24 करोड़ रुपये थी, जबकि चालू वित्त वर्ष 2024-25 के लिए यह 10.72 लाख रुपये थी।



समूह चित्र

उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स केंद्र (CAE)

केंद्र का परिचय

उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स केंद्र (सीआई) की स्थापना जून 2020 में आईआईटी इंदौर में एक अंतःविषय अनुसंधान केंद्र के रूप में की गई है, जिसका उद्देश्य कंप्यूटिंग, संचार, चिकित्सा और ऊर्जा सहित बहु-विषयक अनुप्रयोगों के लिए पदार्थ, उपकरण और प्रौद्योगिकियां विकसित करना है।

सीआई को इलेक्ट्रॉनिक्स और उससे जुड़े क्षेत्रों में कार्यरत कुछ प्रतिष्ठित शिक्षाविदों को एक तकनीकी प्लेटफॉर्म पर लाकर मानवता के लाभ के लिए उच्च-गुणवत्तापूर्ण अनुप्रयुक्त अनुसंधान को संभव बनाने का गौरव प्राप्त है। हम इलेक्ट्रॉनिक्स के राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण क्षेत्र में अनुप्रयुक्त अनुसंधान, उपकरण विकास और कौशल एवं जनशक्ति विकास के लिए एक प्लेटफॉर्म बनाने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

शैक्षणिक कार्यक्रम

उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स केंद्र (सीआई) ने उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स में विशेष रूप से पीएचडी कार्यक्रम शुरू किया है, जिसमें नैनोइलेक्ट्रॉनिक्स / माइक्रोइलेक्ट्रॉनिक्स, इंटीग्रेटेड सिलिकॉन फोटोनिक्स/ऑप्टोइलेक्ट्रॉनिक्स, उन्नत पदार्थ और उपकरण, उन्नत मेमोरी प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्ट उपयोग, कम्प्यूटेशनल इलेक्ट्रॉनिक्स और सामग्री और 2 डी इलेक्ट्रॉनिक पदार्थ, जैव रासायनिक सेंसर, सिग्नल प्रोसेसिंग, वीएलएसआई सर्किट और सिस्टम डिजाइन, फोटोवोल्टिक्स, वायरलेस और ऑप्टिकल संचार और एआई और मशीन लर्निंग जैसे अनुसंधान क्षेत्र शामिल हैं।

यह केंद्र राष्ट्रीय सेमीकंडक्टर आवश्यकताओं को पूरा करने, विशेष रूप से जनशक्ति जनरेट करने और भारत सेमीकंडक्टर मिशन में तकनीकी रूप से योगदान करने के उद्देश्य से उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स में एमएस रिसर्च नामक एक पीजी कार्यक्रम का प्रस्ताव करने की प्रक्रिया में है।

संकाय सदस्यगण की संख्या	12
प्रोफेसर	09
एसोसिएट प्रोफेसर	02
रामानुजन फेलो	01

कार्यक्रम	प्रवेश लेने वाले छात्र	डिग्री प्राप्त
पीएचडी	03	—

उल्लेखनीय अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ

यह केंद्र बहु-विषयक क्षेत्रों में अनुप्रयुक्त अनुसंधान पर केंद्रित है। उन्नत सेमीकंडक्टर प्रौद्योगिकी और पदार्थ विज्ञान में अनुसंधान एवं विकास के लिए कुछ अत्याधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

- सीआई में, रडार प्रौद्योगिकी और फोटोनिक्स के क्षेत्र में संयुक्त अनुसंधान कार्य हेतु भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड के साथ गैर-प्रकटीकरण समझौते पर हस्ताक्षर किए गए हैं। संकाय विकास कार्यक्रमों (एफडीपी) और अन्य पाठ्यक्रमों के आयोजन के माध्यम से आउटरीच गतिविधियों को जोरदार तरीके से बढ़ावा दिया जा रहा है, जिनका उद्देश्य आंतरिक और बाह्य दोनों प्रकार के छात्रों और संकाय सदस्यों को लाभान्वित करना है।
- आईआईटी इंदौर के विद्युत अभियांत्रिकी विभाग में प्रो. शैबाल मुखर्जी के नेतृत्व में हाइब्रिड नैनोडिवाइस अनुसंधान समूह (एचएनआरजी), सूक्ष्म और नैनो-संरचित पदार्थों में नए भौतिकी के अन्वेषण में लगा हुआ है। इस ज्ञान का उपयोग रासायनिक, जैविक, प्रकाशिक, इलेक्ट्रॉनिक और ऊर्जा क्षेत्रों में अनुप्रयोगों के लिए उन्नत उपकरणों और युक्तियों के निर्माण में किया जा रहा है।
- टीआईएफआर मुंबई में प्रो. एस. एस. प्रभु के सहयोग से Ge- आधारित THz उत्सर्जकों के निर्माण और लक्षण-निर्धारण पर कार्य शुरू किया गया है। स्पटर किए गए Ge पर THz उत्सर्जकों का निर्माण और परीक्षण किया जा चुका है। वर्तमान में आँकड़ों का विश्लेषण किया जा रहा है और उपकरण मापदंडों का अनुकूलन किया जा रहा है।
- रासायनिक वाष्प निक्षेपण (सीवीडी) तकनीकों का उपयोग करके Ge फिल्मों के विकास हेतु सीईएनएसई, आईआईएससी बेंगलोर के साथ एक सहयोग स्थापित किया गया है।

- THz उत्सर्जकों और अनुसंधान से उभरने वाली संबंधित प्रौद्योगिकियों के व्यावसायीकरण हेतु एक स्टार्टअप कंपनी, THz इनोवेशन प्राइवेट लिमिटेड, की स्थापना की गई है। डीपीआईआईटी द्वारा मान्यता प्राप्त यह कंपनी, आईआईटी इंदौर के एसीई फाउंडेशन में इनक्यूबेट की गई है। स्टार्टअप इंडिया सीड फंड योजना के अंतर्गत प्रारंभिक निधि प्राप्त हुई है।
- कार्बनिक-अकार्बनिक नैनोहाइब्रिड का उपयोग करके इथेनॉल का पता लगाने हेतु एक रसायन-प्रतिरोधी सेंसर का निर्माण किया गया है।
- यौगिक सेमीकंडक्टर में बिंदु दोषों, सतहों और इंटरफेस की इलेक्ट्रॉनिक संरचना का अध्ययन किया जा रहा है और प्रथम-सिद्धांत गणनाओं का उपयोग करके विद्युत और चुंबकीय गुणों पर उनके प्रभाव का विश्लेषण किया जा रहा है।
- नैनोमटेरियल विज्ञान एवं अभियांत्रिकी, पदार्थों में दोष, सिंगल-वॉल एवं मल्टी-वॉल कार्बन नैनोट्यूब (सीएनटी), बहु-परत ग्राफीन तथा 2डी एवं 3डी पदार्थों की इंजीनियरिंग के क्षेत्रों में अनुसंधान किया जा रहा है।
- ट्रांजिशन मेटल डाइचाल्कोजेनाइड्स (टीएमडी), नवीन पेरोव्स्काइट्स, टोपोलॉजिकल इंसुलेटर, हाइड्रोजन एवं ईंधन सेल प्रौद्योगिकियों के लिए छिद्रयुक्त पदार्थ, क्षार-आयन बैटरियाँ, ऊर्जा भंडारण, सौर सेल, नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकियाँ, CO₂ एवं CO अभिग्रहण तथा हाइड्रोजन भंडारण पर भी अनुसंधान किया जा रहा है।
- प्रो. मुकेश कुमार के नेतृत्व में ऑप्टोइलेक्ट्रॉनिक नैनोडिवाइस अनुसंधान प्रयोगशाला में, चिप-स्तरीय फोटोनिक उपकरणों के लिए सेमीकंडक्टर विषम संयोजनों पर आधारित एक तकनीक विकसित की गई है, जिसका उद्देश्य ऑप्टिकल संचार, डेटा केंद्रों और स्वास्थ्य सेवा में अनुप्रयोगों को बढ़ावा देना है।

परियोजनाएँ

परियोजना	बाहरी प्रायोजित परियोजना
नई परियोजनाएँ	—
जारी परियोजनाएँ	8
पूर्ण	—

प्रकाशन

विवरण	पुस्तकें प्रकाशित	पुस्तकों में अध्याय	सम्मेलन में शोध पत्र	पत्रिकाओं में शोध पत्र	पेटेंट
कुल	—	10	08	88	10

आउटरीच गतिविधियाँ

क्र. सं.	दिनांक	गतिविधियाँ
1	13 अगस्त, 2024	सिमरोल शासकीय एच. एस. गर्ल्स स्कूल के साथ कौशल संवर्धन गतिविधि 'दैनिक जीवन में प्रकाश और प्रकाश-आधारित प्रौद्योगिकियाँ'

सीईई के संकाय सदस्यगण की प्रोफाइल



प्रोफेसर विवेक कान्हांगड
(प्रभारी प्राध्यापक, सीईई)

शोध रुचियाँ:

- बायोमेट्रिक्स
- डिजिटल सिग्नल और इमेज प्रोसेसिंग



प्रोफेसर मुकेश कुमार

शोध रुचियाँ:

- एकीकृत ऑप्टोइलेक्ट्रॉनिक्स
- सिलिकॉन फोटोनिक्स
- नैनोइलेक्ट्रॉनिक्स
- एकीकृत सीएमओएस फोटोनिक्स
- उपकरण निर्माण और वीएलएसआई तकनीक
- जैव-रासायनिक सेंसर
- नैनो-स्केल उपकरण



प्रोफेसर शैबाल मुखर्जी

शोध रुचियाँ:

- डीसी-टू-डीसी कन्वर्टर के लिए कम लागत वाले एचईएमटी / एचएफईटी
- इमेज प्रोसेसिंग और न्यूरोमॉर्फिक कंप्यूटेशन के लिए विषम एकीकृत आरआरएम
- अगली पीढ़ी के अल्ट्राथिन और कम लागत वाले फोटोवोल्टिक
- कृषि, जल और वायु के लिए लचीले और कम लागत वाले जैव-रासायनिक सेंसर
- उच्च-प्रदर्शन वाले यूवी डिटेक्टर



प्रोफेसर विमल भाटिया

शोध रुचियाँ:

- संचार और प्रकाशिकी के लिए एआई / एमएल
- 6जी और 7जी संचार प्रणालियाँ
- प्रदर्शन विश्लेषण और अनुकूलन
- सिग्नल और छवि प्रसंस्करण एल्गोरिथम
- गणितीय विश्लेषण और कंप्यूटिंग
- सॉफ्टवेयर कार्यान्वयन

सीईई के संकाय सदस्यगण की प्रोफाइल



प्रोफेसर संतोष कुमार विश्वकर्मा

शोध रुचियाँ:

- एसआरएएम डिज़ाइन और आर्किटेक्चर
- विश्वसनीय, सुरक्षित और ऊर्जा-कुशल सर्किट डिज़ाइन
- डिजिटल एसआईसी / एसओसी डिज़ाइन
- इन-मेमोरी कंप्यूटिंग
- एसओसी / एफपीजीए आधारित सीएनएन हार्डवेयर एक्सेलरेटर
- एनएएनडी फ़्लैश मेमोरी डिवाइस
- उन्नत एमओएस डिवाइस
- डिवाइस सर्किट सह-डिज़ाइन



डॉ. अजय कुमार कुशवाहा

शोध रुचियाँ:

- संक्षारण-रोधी कोटिंग्स
- नैनोमटेरियल्स
- ऊर्जा संचयन और भंडारण



प्रोफेसर राजेश कुमार

शोध रुचियाँ:

- नैनो पदार्थ और नैनो उपकरण
- इलेक्ट्रॉनिक और इलेक्ट्रोक्रोमिक उपकरण
- उपकरण भौतिकी, रमन स्पेक्ट्रोस्कोपी और माइक्रोस्कोपी
- प्राकृतिक जैव पदार्थ



प्रोफेसर विनोद कुमार

शोध रुचियाँ:

- नैनो पदार्थ
- उच्च एन्ट्रॉपी मिश्र धातुएँ
- चुंबकीय पदार्थ
- संक्षारण और लेप
- संरचना-गुण सहसंबंध,
- सूक्ष्म संरचनात्मक अभिलक्षण,
- हल्की धातु मिश्र धातुओं और इस्पातों का ऊष्मा-यांत्रिक प्रसंस्करण
- विफलता विश्लेषण
- निर्माण पदार्थ
- ऊर्जा पदार्थ

सीईई के संकाय सदस्यगण की प्रोफाइल



प्रोफेसर अपूर्व के. दास

शोध रुचियाँ:

- जैवपदार्थ
- पेप्टाइड और न्यूक्लियोबेस—आधारित नैनोसंरचित पदार्थ
- तंत्र रसायन विज्ञान
- अतिआणविक इलेक्ट्रॉनिक्स
- कार्बनिक—अकार्बनिक संकरित पदार्थ



डॉ. श्रीमंत पाखिरा

शोध रुचियाँ:

- सैद्धांतिक संघनित पदार्थ भौतिकी
- कम्प्यूटेशनल पदार्थ विज्ञान
- क्वांटम पदार्थ
- नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकी
- यौगिक अर्धचालकों में सतहें और अंतरापृष्ठ तथा प्रथम—सिद्धांत गणनाओं का उपयोग करके विद्युत और चुंबकीय गुणों पर उनका प्रभाव



प्रोफेसर राम बिलास पचोरी

शोध रुचियाँ:

- सिग्नल और इमेज प्रोसेसिंग
- बायोमेडिकल सिग्नल प्रोसेसिंग
- नॉन—स्टेशनरी सिग्नल प्रोसेसिंग
- स्पीच सिग्नल प्रोसेसिंग
- ब्रेन—कंप्यूटर इंटरफेसिंग
- मशीन लर्निंग
- स्वास्थ्य सेवा में एआई
- वेदों के लिए सिग्नल प्रोसेसिंग



डॉ. अभिषेक सिंह (रामानुजन फेलो)

शोध रुचियाँ:

- फोटोनिक टेराहर्ट्ज तकनीक: THz उत्पादन, पहचान और अनुप्रयोग
- ऑप्टोइलेक्ट्रॉनिक्स
- अल्ट्राब्रॉडबैंड THz तकनीक के लिए GaAs, Ge और Ge/Si आधारित अर्धचालक उपकरण
- टेराहर्ट्ज स्पेक्ट्रोस्कोपी
- अल्ट्राफास्ट ऑप्टिक्स
- Ge आधारित उच्च—गति फोटोडिटेक्टर
- लिथोग्राफी का उपयोग करके नैनो—स्केल और माइक्रो—स्केल उपकरण निर्माण



Glimpse of Skill Enhancement Activities in Optics



Glimpse of Skill Enhancement Activities in Optics

संगणक एवं सूचना प्रौद्योगिकी केंद्र (CITC)

सीआईटीसी भवन



डेटा सेंटर



यह केंद्र आईआईटीआई समुदाय के सदस्यों को विभिन्न सेवाएँ प्रदान करता है। इन सेवाओं में शामिल हैं:

नेटवर्क कनेक्टिविटी: सीआईटीसी पूरे परिसर में 10 जीबीपीएस नेटवर्क कनेक्टिविटी प्रदान करता है। पूरा परिसर 1200 से ज्यादा नए वायरलेस एक्सेस पॉइंट्स से जुड़ा है। सभी भवन, विभाग, छात्रावास, विद्यार्जन संसाधन केंद्र, प्रशासनिक विभाग, व्याख्यान कक्ष परिसर, स्वास्थ्य केंद्र और संकाय आवास 10 जीबीपीएस 144 कोर फाइबर बैकबोन से जुड़े हैं। आईआईटी इंदौर वैश्विक एडुरोम नेटवर्क का भी हिस्सा है।

डेटा सेंटर: सीआईटीसी भवन में विकसित डेटा सेंटर 120 केवीए यूपीएस और 320 केवीए डीजी सुविधाओं से सुसज्जित है। सीआईटीसी सर्वर, स्टोरेज, नेटवर्क उपकरण और एक उच्च-प्रदर्शन कंप्यूटिंग (एचपीसी) सुविधा प्रदान करता है। सीआईटीसी में 7 इनफिनिबैंड लिनक्स क्लस्टर, कुल 3500 से अधिक सीपीयू कोर और 500 टीबी स्टोरेज क्षमता है। संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग के लिए डेटा सेंटर में डीजीएक्स एनवीडिया क्लस्टर भी उपलब्ध है।

आवश्यक आईटी सेवाएँ: सीआईटीसी सभी आवश्यक सेवाएँ आंतरिक रूप से संचालित कर रहा है, जैसे संस्थान की वेबसाइट का रखरखाव और विकास, आंतरिक/बाह्य डीएनएस सर्वर, वेब-आधारित स्वचालन (ईआरपी (एचआरएमएस और एमएमएस मॉड्यूल), फाइल ट्रेकिंग सिस्टम (एफटीएस), वेब-आधारित टेलीफोन निर्देशिका, एलडीएपी/रेडियस का उपयोग करके केंद्रीकृत प्रमाणीकरण, प्रत्येक भवन के लिए डीएचसीपी-आधारित डायनामिक आईपी आवंटन सेवाएँ, परिसर वाई-फाई, स्टोरेज, परिसर टेलीफोन सेवाएँ, ऑनलाइन स्वचालन सेवाएँ, वर्चुअल संसाधन आवंटन, व्यक्तिगत होमपेज होस्टिंग सेवाएँ और उपयोगकर्ताओं के लिए ओपन-वीपीएन। सीआईटीसी में टिकट-आधारित ऑनलाइन सेवा अनुरोध प्रणाली है; उपयोगकर्ता ऑनलाइन सेवा अनुरोध और शिकायतें दर्ज कर सकते हैं और बाद में उनकी स्थिति को ट्रैक किया सकता है।

तकनीकी सहायता: सीआईटीसी सभी विभागों, एलएचसी, छात्रावासों, आवासीय क्षेत्रों और प्रशासनिक अनुभागों में आईटी उपकरणों और एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर की स्थापना और रखरखाव के लिए सहायता प्रदान करता है। हम स्मार्ट कक्षाओं, सम्मेलन कक्षाओं और बोर्ड रूम की स्थापना और रखरखाव के लिए भी तकनीकी सहायता प्रदान करते हैं।

हमारी टीम के सदस्य:

1. प्रोफेसर सत्या एस. बुलुसु, अधिष्ठाता, आईटी अवसंरचना एवं स्वचालन
2. श्री जीनियस संजोग, सिस्टम मैनेजर
3. श्री योगेन्द्र सिंह, उप सिस्टम मैनेजर
4. श्री जीतेन्द्र गुप्ता, तकनीकी अधीक्षक
5. श्री धीरज विजयवर्गीय, कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक
6. श्री सुभाष सोनी, कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक
7. श्री छत्तर सिंह, कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक
8. सुश्री प्रिंसी अवधिया, एप्लिकेशन डेवलपर
9. सुश्री प्रीति रघुवंशी, एप्लिकेशन डेवलपर
10. श्री प्रहलाद सिंह पंवार, सिस्टम विश्लेषक
11. श्री शैलेश कौशल, तकनीकी अधीक्षक
12. श्री सुभा जाना, तकनीकी अधीक्षक

आईआईटीआई दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन



केंद्र का परिचय

आईआईटी इंदौर द्वारा स्थापित आईआईटी दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा समर्थित प्रौद्योगिकी नवाचार केंद्र है। दृष्टि सीपीएस ने अब तक विभिन्न भारतीय शैक्षणिक और अनुसंधान संस्थानों के संकाय सदस्यगण, छात्रों और शोधकर्ताओं के नेतृत्व में 94 से अधिक शोध परियोजनाओं का समर्थन किया है। यह फाउंडेशन 70 से अधिक स्टार्टअप को विकसित भी करता है, जो डिजिटल हेल्थकेयर और स्मार्ट मैनुफैक्चरिंग पर ध्यान केंद्रित करते हुए 3 लाख रुपये से लेकर 100 लाख रुपये तक की वित्तीय सहायता प्रदान करता है। हब ने एक ऐसा पारिस्थितिकी तंत्र बनाया है जो प्रौद्योगिकी विकास और व्यावसायीकरण के लिए शिक्षा, उद्योग और सरकारी एजेंसियों के प्रयासों के अभिसरण के लिए एक केंद्र बिंदु के रूप में काम करता है। यह वर्तमान में इस क्षेत्र में देश की बढ़ती मांग को पूरा करते हुए, स्थानांतरीय अनुसंधान, उत्पाद व्यावसायीकरण, स्टार्टअप इनक्यूबेशन और कौशल वृद्धि के माध्यम से सीपीएस के क्षेत्र में प्रौद्योगिकियों का समर्थन करने के लिए काम कर रहा है।

दृष्टि सीपीएस ने प्रौद्योगिकी विकास परियोजनाओं और डीप टेक स्टार्टअप्स में लगभग 30 करोड़ रुपये का निवेश किया है। अब तक, इस हब ने क्लाउड कंप्यूटिंग, औद्योगिक सिमुलेशन और ऑटोमेशन, आईओटी, हार्डवेयर और सिमुलेशन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और क्लिनिकल डेटा एनालिटिक्स जैसे विविध क्षेत्रों में 35 कौशल विकास कार्यक्रम संचालित किए हैं, जिनमें कुल 3,176 व्यक्तियों को प्रशिक्षण दिया गया है। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप 1,400 से अधिक रोजगार के अवसर सृजित हुए हैं। यह हब 59 पेशेवरों की एक गतिशील टीम के साथ काम करता है, जिनमें शोधकर्ता, चिकित्सक, इंजीनियर, उद्यमी और व्यवसाय विकास एवं संचालन के विशेषज्ञ शामिल हैं।

टेक्नोलॉजी ट्रांसलेशन रिसर्च पार्क (टीटीआरपी) में उन्नयन

दृष्टि सीपीएस को हाल ही में एक तृतीय-पक्ष मूल्यांकन (टीपीई) समिति, वैज्ञानिक सलाहकार समिति और एनएम-आईसीपीएस के मिशन शासी निकाय द्वारा सघन मूल्यांकन के बाद, राष्ट्रीय अंतःविषय साइबर-भौतिक प्रणाली मिशन (एनएम-आईसीपीएस) के अंतर्गत डिजिटल स्वास्थ्य सेवा पर केंद्रित टेक्नोलॉजी ट्रांसलेशन रिसर्च पार्क (टीटीआरपी) में अपग्रेड किया गया है, जिसे डीएसटी के सचिव और माननीय मंत्री, डीएसटी द्वारा अंतिम अनुमोदन प्राप्त हुआ है। पूरी समीक्षा प्रक्रिया में लगभग 6 महीने लगे और टीपीई समिति का नेतृत्व आईआईएससी बेंगलूर के पूर्व निदेशक प्रोफेसर अनुराग कुमार ने किया। हमारे अलावा, टीटीआरपी में अपग्रेड किए गए अन्य टीआईएच में आईआईटी कानपुर (साइबर सुरक्षा), आईआईएससी बेंगलूर (रोबोटिक्स और स्वायत्त नेविगेशन) और आईएसएम धनबाद (माइनिंग) शामिल हैं।

टीटीआरपी के रूप में, दृष्टि सीपीएस अब नवाचार को गति देने और प्रभावी प्रौद्योगिकी स्थानांतरण को सक्षम बनाने, अनुसंधान और मार्केट-रेडी समाधानों के बीच की आवश्यकता को पूरा करने के लिए समर्पित है। हमारे मुख्य फोकस क्षेत्रों में सिस्टम मॉडलिंग, सिमुलेशन और विजुअलाइजेशन शामिल हैं, और डिजिटल ट्विन तकनीकों को आगे बढ़ाने के लिए हमारी प्रतिबद्धता दृढ़ है। हमारी वर्तमान प्रमुखता निवारक और व्यक्तिगत स्वास्थ्य सेवा, अलग-अलग स्वास्थ्य सेवा प्रणालियों के एकीकरण और मानकीकृत लास्ट-माइल डिलीवरी में महत्वपूर्ण चुनौतियों का समाधान करने के लिए मानव डिजिटल ट्विन प्लेटफॉर्म, चरकडीटी को मजबूत करने पर है।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

यूनाइटेड किंगडम यात्रा (30 सितंबर 2024 – 7 अक्टूबर 2025)

आईआईटी दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन द्वारा आईआईटी इंदौर के संकाय सदस्यों के साथ यूनाइटेड किंगडम के कई प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों और संस्थानों का दौरा किया गया। इस यात्रा में यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ लंदन, ऑक्सफोर्ड ब्रूक्स यूनिवर्सिटी, लंदन स्थित रॉयल एकेडमी ऑफ इंजीनियरिंग, यूनिवर्सिटी ऑफ कैम्ब्रिज स्थित इंस्टीट्यूट ऑफ मैनुफैक्चरिंग, लीड्स यूनिवर्सिटी, हडर्सफील्ड यूनिवर्सिटी, यूनिवर्सिटी ऑफ ऑक्सफोर्ड, यूके सरकार के विज्ञान, नवाचार और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसआईटी), रॉयल लंदन हॉस्पिटल एंड बार्ट्स हेल्थ एनएचएस, और लंदन स्थित भारतीय उच्चायोग के साथ बातचीत शामिल थी।

इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य डिजिटल स्वास्थ्य सेवा और इंटेलिजेंट मैनुफैक्चरिंग में भारत और ब्रिटेन के बीच समानताएँ स्थापित करना और तालमेल को बढ़ावा देना था – जो समकालीन चुनौतियों का समाधान करने और औद्योगिक आवश्यकताओं के लिए अकादमिक नवाचार को लागू करने हेतु महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं। इस यात्रा के मुख्य आकर्षणों में रॉयल लंदन हॉस्पिटल और बार्ट्स हेल्थ एनएचएस के साथ बैठकें शामिल थीं, जो एआई और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस-संचालित स्वास्थ्य सेवा समाधानों पर केंद्रित थीं और यूनिवर्सिटी ऑफ कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में सतत, डेटा-संचालित विनिर्माण प्रक्रियाओं पर चर्चाएँ शामिल थीं। डीएसआईटी और रॉयल एकेडमी ऑफ इंजीनियरिंग के साथ बैठकों ने नवाचार के लिए ब्रिटेन के नीतिगत ढाँचों और वित्तपोषण तंत्रों की जानकारी प्रदान की। यह यात्रा नवाचार और उद्यमिता के माध्यम से वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने के भारत और ब्रिटेन के साझा दृष्टिकोण का प्रतीक थी, जिसने मजबूत द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ावा देने की उनकी प्रतिबद्धता की पुष्टि की।



इस यात्रा के परिणामस्वरूप, दृष्टि सीपीएस ने यूनिवर्सिटी ऑफ कैम्ब्रिज के इंस्टीट्यूट ऑफ मैनुफैक्चरिंग (आईएमएफ) के साथ मिलकर इंदौर और नासिक में कार्यशालाओं का आयोजन किया, जहाँ पेशेवरों ने उत्पादन गुणवत्ता, इन्वेंट्री प्रबंधन और अन्य विनिर्माण क्षेत्रों में महत्वपूर्ण चुनौतियों से निपटने के लिए कम लागत वाली, कम जोखिम वाली डिजिटलीकरण तकनीकों का लाभ उठाने की व्यावहारिक जानकारी प्राप्त की। ये सत्र सफलतापूर्वक लागू किए गए समाधानों के वास्तविक दुनिया के केस स्टडीज़ से समृद्ध थे और स्थानीय विनिर्माण प्रथाओं को वैश्विक मानकों के अनुरूप ढालने के लिए एक मंच भी प्रदान करते थे।

डॉइच गेसेलशाफ्ट फर इंटरनेशनल जुसामेनार्बीट (जीआईजेड) जर्मनी के बिजनेस आइडियाज फॉर डेवलपमेंट प्रोग्राम के तहत, दृष्टि सीपीएस जर्मनी के भारतीय प्रवासी उद्यमियों द्वारा स्थापित 8 डीप-टेक और इम्पैक्ट स्टार्टअप्स को समर्थन देगा, जो भारत में बदलाव लाना चाहते हैं।

गहन देखभाल सुविधाओं में बहु-स्तरीय निर्णय लेने की परस्पर निर्भरताओं की जाँच और एकीकृत अनुकूलन तकनीकों के माध्यम से संसाधन उपयोग को अनुकूलित करने के लिए, दृष्टि सीपीएस ने यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन के साथ साझेदारी की है। इस सहयोग का उद्देश्य परिसंपत्ति और सुविधा प्रबंधन को विकसित करना है, जिसमें रॉयल एकेडमी ऑफ इंजीनियरिंग, यूके द्वारा वित्त पोषित एक प्रौद्योगिकी विकास परियोजना के तहत डिजिटल ट्विन-आधारित निर्णय समर्थन प्रणाली विकसित करने पर जोर दिया जाएगा। स्वास्थ्य सेवा सुविधा प्रबंधन को बेहतर बनाने और रोगी देखभाल वितरण में सुधार लाने के लिए सतत बुनियादी ढाँचे, प्रक्रिया नवाचार और उन्नत डिजिटल उपकरणों का लाभ उठाना।

उल्लेखनीय अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ

चरकडीटी- एकीकृत मानव डिजिटल ट्विन प्लेटफॉर्म

चरकडीटी एक एकीकृत मानव डिजिटल ट्विन प्लेटफॉर्म है जिसे आईआईटी इंदौर और दृष्टि सीपीएस ने व्यक्तिगत और निवारक देखभाल के माध्यम से स्वास्थ्य सेवा वितरण में व्यापक बदलाव लाने के लिए संयुक्त रूप से विकसित किया है। यह विविध स्वास्थ्य डेटा, नैदानिक ज्ञान और रीयल-टाइम विश्लेषण को एकीकृत करके मानव शरीरक्रिया विज्ञान का एक आभासी प्रतिनिधित्व तैयार करता है ताकि अंगों के कार्यों और रोग की प्रगति का अनुकरण और निगरानी की जा सके। रोग-अज्ञेय और व्यक्ति-केंद्रित होने के लिए डिज़ाइन किया गया, चरकडीटी भारत के पारंपरिक चिकित्सा ज्ञान को आधुनिक एआई-संचालित निर्णय समर्थन प्रणालियों के साथ जोड़ता है। यह प्लेटफॉर्म फेफड़ों, हृदय और आँखों जैसे महत्वपूर्ण अंगों के लिए परीक्षण-स्थलों की सहायता करता है, जिससे शीघ्र निदान, व्यक्तिगत उपचार प्रोटोकॉल और पूर्वानुमानित स्वास्थ्य प्रबंधन संभव होता है। भारत के अनूठे स्वास्थ्य सेवा परिदृश्य के लिए तैयार, चरकडीटी अलग-अलग डेटा प्रणालियों, विविध चिकित्सा पद्धतियों और ग्रामीण पहुँच जैसी स्वदेशी चुनौतियों को शामिल करता है, साथ ही मज़बूत डेटा सुरक्षा, क्लाउड एकीकरण और रीयल-टाइम विश्लेषण सुनिश्चित करता है। अकादमिक शोधकर्ताओं और स्टार्टअप्स के साथ सक्रिय सहयोग के माध्यम से, चरकडीटी चिकित्सकों को शक्तिशाली सिमुलेशन टूल से सशक्त बनाकर, प्रणालीगत अक्षमताओं को कम करके और सभी के लिए समावेशी, तकनीक-सक्षम स्वास्थ्य पहुँच को सक्षम बनाकर स्वास्थ्य सेवा के भविष्य को आकार दे रहा है।



आंकड़े

कुल परियोजनाएँ	94 छात्रों और शिक्षकों द्वारा
स्पिन-ऑफ़	28
परिनिर्वाह	5 स्थान
प्रौद्योगिकी लाइसेंसिंग	2 (दस्तावेजीकरण के अधीन)
पेटेंट	टीआईएच द्वारा – फाइल की गई: 26 टीआईएच को स्वीकृत: 01 अन्य: फाइल की गई: 40 स्वीकृत: 17
प्रकाशन	56

शुरू किए गए कार्यक्रम

दिशा: बौद्धिक संपदा (आईपी) से प्रेरित भारतीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने और साइबर-भौतिक प्रणालियों (सीपीएस) प्रौद्योगिकियों के विकास के राष्ट्रीय अंतःविषय साइबर-भौतिक प्रणालियों (एनएम-आईसीपीएस) मिशन के साथ तालमेल बिटाने के लिए, दृष्टि सीपीएस ने अपनी प्रमुख पहल, **दिशा (डेवलपिंग इन्वेंशंस फॉर सक्सेसफुल हार्नेसिंग एंड एडॉप्शन)** शुरू की। यह राष्ट्रीय स्तर का लैब-टू-मार्केट एक्सेलेरेशन प्लेटफॉर्म भारतीय शैक्षणिक संस्थानों और बाजार के बीच एक सेतु का काम करता है, जो डिजिटल हेल्थकेयर, इंटेलिजेंट मैनुफैक्चरिंग और अन्य संबंधित क्षेत्रों जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उन्नत प्रौद्योगिकियों के व्यावसायीकरण का समर्थन करता है।

रणनीतिक वित्तपोषण, विशेषज्ञ मार्गदर्शन, परियोजना प्रबंधन, सघन परीक्षण और सत्यापन प्रोटोकॉल, प्रमाणन सहायता और सतत व्यवसाय मॉडल विकास के एक मजबूत ढांचे के माध्यम से, दिशा का लक्ष्य वैज्ञानिकों, नवप्रवर्तकों और छात्र या संकाय सदस्य-नेतृत्व वाले स्टार्टअप के विचारों को मार्केट-रेडी समाधानों में बदलने के लिए सहायता देना है।

इस कार्यक्रम के लिए देशभर के शैक्षणिक संस्थानों से 140 आवेदन प्राप्त हुए, जो भारत भर में इसकी नवोन्मेषी क्षमता को दर्शाता है। निवेशकों, शैक्षणिक विशेषज्ञों और उद्योग जगत के दिग्गजों द्वारा संचालित एक व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया के माध्यम से, कार्यक्रम के तहत सहायता के लिए 27 उच्च-प्रभावी प्रौद्योगिकियों का चयन किया गया।

सुविधा विस्तारण

दृष्टि सीपीएस ने हाल ही में मध्य प्रदेश सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के एमपीएसईडीसी के साथ मिलकर इंदौर में एक नवाचार एवं इनक्यूबेशन केंद्र स्थापित किया है ताकि इस क्षेत्र में तकनीकी अवसरचना और नवाचार को मजबूत किया जा सके। मध्य प्रदेश सरकार ने सिंहासा आईटी पार्क, इंदौर में दृष्टि सीपीएस को 7 वर्षों की अवधि के लिए 10,000 वर्ग फुट का किराया-मुक्त स्थान प्रदान किया है। यह एक सह-स्थित नवाचार केंद्र के रूप में कार्य करेगा, जो अकादमिक शोधकर्ताओं, स्टार्टअप्स, निवेशकों और उद्योग सहयोगियों को एक साथ लाएगा।



बाह्य वित्तपोषण

रॉयल एकेडमी ऑफ इंजीनियरिंग द्वारा

परियोजना: किफायती स्वास्थ्य सेवा के लिए क्रिटिकल केयर डिजिटल टिवन
सहयोगी: आईआईटी इंदौर, यूनिवर्सिटी ऑफ कैंब्रिज, यूके और एम्स, नई दिल्ली
वित्त पोषण: 108,000 GBP (लगभग 1.18 करोड़ रुपये)

एसएमसी, भारत द्वारा

उद्देश्य: आईआईटी इंदौर में मेक्ट्रॉनिक्स, औद्योगिक स्वचालन और उद्योग 4.0 प्रौद्योगिकियों में उत्कृष्टता केंद्र के पहले चरण की स्थापना और उसका संचालन
वित्त पोषण: 5.6 करोड़ रुपये

एमईआईटीवाई, भारत सरकार द्वारा जेनेसिस (GENESIS) के अंतर्गत

उद्देश्य: एंटरप्रेन्योर-इन-रेजिडेंस (ईआईआर) कार्यक्रम के अंतर्गत स्टार्टअप्स को सहायता प्रदान करना।
वित्तपोषण: 4.3 करोड़ रुपये।

एमईआईटीवाई, भारत सरकार द्वारा समृद्ध (SAMRIDH) के अंतर्गत

उद्देश्य: एमईआईटीवाई के समृद्ध स्टार्टअप एक्सेलेरेशन के अंतर्गत नवाचार को बढ़ावा देना और स्टार्टअप्स को सहायता प्रदान करना तथा भारत की प्रमुख चुनौतियों का समाधान करने हेतु सामाजिक प्रभाव पैदा करने और समाधानों का विस्तार करने पर केंद्रित चयनित स्टार्टअप्स को 6 महीने का एक्सेलेरेशन कार्यक्रम प्रदान करना।
वित्त पोषण: 2.6 करोड़ रुपये

सहयोग

विवरण	छवि
<p>तीर्थकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद उद्देश्य: छात्रों को शोध फेलोशिप, कौशल विकास प्रशिक्षण और संस्थान में एक सैटेलाइट केंद्र की स्थापना को बढ़ावा देना। इसका उद्देश्य साइबर-भौतिक प्रणालियों के क्षेत्र में शिक्षा, नवाचार और क्षमता निर्माण को बढ़ावा देना है।</p>	
<p>एम्स भोपाल डिजिटल स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में संयुक्त अनुसंधान और प्रौद्योगिकी विकास को बढ़ावा देना। हम मिलकर आठ से अधिक सहयोगी अनुसंधान परियोजनाओं पर काम कर रहे हैं। इन पहलों को आईआईटी इंदौर के छात्रों और संकाय सदस्यों द्वारा एम्स भोपाल के चिकित्सा विशेषज्ञों के सहयोग से सह-विकसित, प्रमाणित और व्यावसायीकरण के लिए तैयार किया जा रहा है, जिससे अभियांत्रिकी नवाचार और चिकित्सा विशेषज्ञता के बीच एक मजबूत तालमेल को बढ़ावा मिलेगा।</p>	

विवरण	छवि
<p>एसएमसी कॉर्पोरेशन (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड आईआईटी इंदौर में मेक्ट्रॉनिक्स, औद्योगिक स्वचालन और उद्योग 4.0 प्रौद्योगिकियों में उत्कृष्टता केंद्र के पहले चरण की स्थापना और उसका संचालन करना।</p>	
<p>एसटीपीआई, एआईसी एसटीपीआईनेक्ट आईआईटी इंदौर में इंटेलिजेंट मैनुफैक्चरिंग के लिए उद्यमिता केंद्र स्थापित करना। इंटेलिजेंट मैनुफैक्चरिंग (उद्योग 4.0) पर उद्यमिता केंद्र, उद्योग 4.0 क्षेत्र में नई तकनीक और नवाचार विकसित करने के लिए स्टार्टअप्स को एक पारिस्थितिकी तंत्र प्रदान करेगा।</p>	
<p>मलट्री कॉलेज ऑफ़ टेलीकम्युनिकेशन इंजीनियरिंग (एमसीटीई) रक्षा अनुप्रयोगों के लिए साइबर-भौतिक प्रणालियों के क्षेत्र में उन्नत प्रौद्योगिकियों का संयुक्त रूप से नवाचार, विकास और व्यावसायीकरण करना।</p>	

कौशल विकास

विवरण	छवि
<p>एडब्ल्यूएस का उपयोग करते हुए क्लाउड इन्फ्रास्ट्रक्चर पर कार्यशाला दृष्टि सीपीएस ने तीर्थकर महावीर विश्वविद्यालय (टीएमयू), मुरादाबाद में एडब्ल्यूएस का उपयोग करते हुए क्लाउड इन्फ्रास्ट्रक्चर पर 10-दिवसीय गहन कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला का उद्देश्य क्लाउड कंप्यूटिंग में युवा प्रतिभाओं के कौशल को निखारना और एडब्ल्यूएस का व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना है। 100 से अधिक उत्साही छात्रों की भागीदारी वाली इस कार्यशाला में क्लाउड कंप्यूटिंग, एडब्ल्यूएस स्टोरेज, एडब्ल्यूएस सुरक्षा आदि जैसे प्रमुख क्षेत्रों पर गहन चर्चा की जाएगी।</p>	

विवरण	छवि
<p>आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर चरक डिजिटल हेल्थकेयर मास्टरक्लास</p> <p>आईआईटीआई दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन ने एम्स, नई दिल्ली के एसईटी केंद्र में चरक डिजिटल हेल्थकेयर मास्टरक्लास का आयोजन किया, जिसमें माइक्रोबायोलॉजी, पैलिटिव मेडिसिन, ट्रॉमा सर्जरी, पीडियाट्रिक्स और ऑन्कोलॉजी सहित विविध विशेषज्ञताओं के 130 से अधिक डॉक्टर और शोधकर्ता शामिल हुए। कार्यशाला में डेटा और एआई के माध्यम से स्वास्थ्य सेवा के विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिसमें डिजिटल टिवन मॉडलिंग, डेटा विजुअलाइज़ेशन, न्यूरल नेटवर्क, जनरेटिव एआई और नैचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (एनएलपी) जैसे प्रमुख विषयों को शामिल किया गया, जिसमें लार्ज लैंग्वेज मॉडल (एलएलएम) पर एक व्यावहारिक सत्र भी शामिल था।</p>	
<p>डिजिटल स्वास्थ्य मानकों और ईएचआर प्रशिक्षण पर चरक मास्टरक्लास</p> <p>दृष्टि सीपीएस ने राष्ट्रीय ईएचआर मानक संसाधन केंद्र, सी-डैक, पुणे के सहयोग से डिजिटल स्वास्थ्य मानकों और ईएचआर प्रशिक्षण पर दो दिवसीय सत्र का आयोजन किया। एनआरसीईएस के विशेषज्ञों ने एसएनओएमईडी सीटी, आईसीडी-10, एलओआईएनसी और एफएचआईआर जैसे प्रमुख डिजिटल स्वास्थ्य मानकों पर गहन प्रशिक्षण प्रदान किया। सी-डैक के टूलकिट का उपयोग करके व्यावहारिक प्रदर्शन और व्यावहारिक प्रशिक्षण आयोजित किया गया।</p> <p>पहले दिन एबीडीएम और एनएचसीएक्स जैसे राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य ढाँचों की वैचारिक समझ और लाइव प्रदर्शनों पर ध्यान केंद्रित किया गया। दूसरे दिन चरक केंद्र में व्यावहारिक सत्र आयोजित किए गए, जिनमें ईएचआर एकीकरण अभ्यास, एफएचआईआर-आधारित रोगी प्रोफाइल निर्माण और चरक डीटी प्लेटफॉर्म की प्रस्तुति शामिल थी।</p>	
<p>क्लिनिकल डेटा एनालिटिक्स पर चरक मास्टरक्लास</p> <p>दृष्टि सीपीएस ने कलकत्ता नेशनल मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल (सीएनएमसी एंड एच) के सहयोग से क्लिनिकल डेटा एनालिटिक्स पर एक मास्टरक्लास का आयोजन किया, जिसमें 50 से अधिक चिकित्सकों, जन स्वास्थ्य अधिकारियों, शोधकर्ताओं और प्रौद्योगिकीविदों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में स्वास्थ्य सेवा वितरण में बदलाव लाने में एआई और डिजिटल टिवन्स की भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया गया।</p>	

सत्र की शुरुआत मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य के लिए डेटा-संचालित रणनीतियों पर जोर देने के साथ हुई। प्रमुख सत्रों में रोगी की यात्रा का अनुकरण करने और संसाधनों के अनुकूलन के लिए डिजिटल दिवन अनुप्रयोगों का परिचय दिया गया। मातृ एवं शिशु मृत्यु दर की चुनौतियों पर विचार-विमर्श के लिए एक पैनल चर्चा आयोजित की गई, जिसमें टेली-मॉनिटरिंग और समुदाय-आधारित देखभाल जैसे डिजिटल मध्यवर्ती का प्रस्ताव रखा गया।

लाइव प्रदर्शनों में रीयल-टाइम डैशबोर्ड, ईएचआर डिजिटलीकरण और पूर्वानुमानित विश्लेषण उपकरण प्रदर्शित किए गए। जाधवपुर विश्वविद्यालय में दूसरे दिन, व्यावहारिक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया गया। सत्रों में डेटा प्रबंधन, अनुमानित सांख्यिकी और इमेजिंग डेटा से 3डी कार्डियक डिजिटल दिवन मॉडलिंग शामिल थे। एआई डायग्नोस्टिक्स पर इंटरैक्टिव अभ्यासों ने प्रतिभागियों को और अधिक सक्रिय रूप से शामिल किया, जिससे नैदानिक निर्णय लेने में व्यावहारिक अनुप्रयोगों को सुदृढ़ बनाया गया। मास्टरक्लास ने विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा दिया और व्यावहारिक डिजिटल स्वास्थ्य प्रशिक्षण की बढ़ती माँग पर प्रकाश डाला।

डोजी द्वारा स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के लिए एआई के मूल सिद्धांत

डोजी ने दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन के सहयोग से स्वास्थ्य सेवा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की परिवर्तनकारी भूमिका पर एक आकर्षक मास्टरक्लास का आयोजन किया। पैथोलॉजी, मनोविज्ञान, क्रिटिकल केयर और बाल रोग जैसे विविध क्षेत्रों के 140 डॉक्टरों ने इस सत्र में भाग लिया और इस बात पर गहन चर्चा की कि एआई स्वास्थ्य सेवा डेटा की भविष्यवाणी, व्याख्या और विश्लेषण कैसे कर सकता है। मास्टरक्लास ने प्रतिभागियों को वास्तविक दुनिया की नैदानिक चुनौतियों से निपटने के लिए सटीक समस्या-समाधान तैयार करने में मदद करके एआई का उपयोग करके समस्या-समाधान पर जोर दिया। इसमें एआई विकास जीवनचक्र को शामिल किया गया, जिसमें एल्गोरिदम के निर्माण और मूल्यांकन पर व्यावहारिक अभ्यास भी शामिल थे।



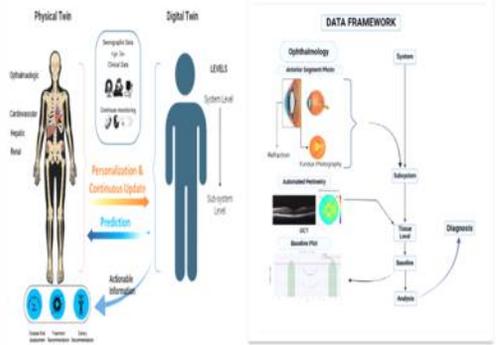
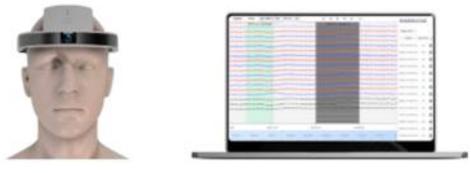
आयोजन एवं कार्यक्रम

विवरण	छवि
<p>सिद्धि 2.0</p> <p>एम्स भोपाल के सहयोग से, दृष्टि सीपीएस ने अपने चरक सेंटर फॉर डिजिटल हेल्थकेयर के माध्यम से सिद्धि 2.0 (डेटा-संचालित हेल्थकेयर इनोवेशन के लिए छात्र इंटरशिप) का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में आईआईटी इंदौर के 16 छात्रों और 16 संकाय सदस्यों की एक बहु-विषयक टीम के साथ-साथ एम्स भोपाल के 14 डॉक्टर भी शामिल हुए, जिन्होंने 10 अत्याधुनिक अनुसंधान और प्रौद्योगिकी विकास परियोजनाओं पर काम किया। ये परियोजनाएँ डेटा कैचर, डेटा विश्लेषण और नैदानिक निर्णय लेने जैसे प्रमुख क्षेत्रों पर केंद्रित थीं।</p>	
<p>शक्ति 1.0</p> <p>दृष्टि सीपीएस ने 19 सितंबर, 2024 को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर में शक्ति 1.0 का आयोजन किया। यह कार्यक्रम तकनीकी क्षेत्र में महिला उद्यमियों को सशक्त बनाने के लिए समर्पित था। इस समापन सत्र के दौरान 33 होनहार उद्यमियों को अनुदान प्राप्त हुआ, जो महिलाओं द्वारा संचालित स्टार्टअप्स को समर्थन देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।</p>	 
<p>डिजिटल विनिर्माण में किफ़ायती पर कार्यशाला – नासिक</p> <p>दृष्टि सीपीएस ने भारत में डिजिटल विनिर्माण के लिए कम लागत वाली कार्यशाला का आयोजन किया। यह कार्यशाला नासिक स्थित महिंद्रा इंस्टीट्यूट ऑफ़ क्वालिटी (एमआईक्यू), भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर और यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैम्ब्रिज के इंस्टीट्यूट फॉर मैनुफैक्चरिंग (आईएफएम) के सहयोग से आयोजित की गई। इस गतिशील समूह ने उत्पादन मात्रा, इन्वेंट्री प्रबंधन और अन्य विनिर्माण मुद्दों से जुड़ी प्रमुख चुनौतियों का समाधान करने के लिए कम लागत और कम जोखिम वाली डिजिटलीकरण तकनीकों के उपयोग के बारे में व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त, कार्यशाला ने स्थानीय विनिर्माण प्रक्रियाओं को वैश्विक मानकों के अनुरूप ढालने के लिए एक मंच प्रदान किया। दृष्टि सीपीएस द्वारा समर्थित कई स्टार्टअप्स ने अपनी नवीन तकनीकों का प्रदर्शन किया, जिससे चर्चाओं में महत्वपूर्ण योगदान मिला।</p>	

विवरण	छवि
<p>डिजिटल विनिर्माण में किफ़ायती पर कार्यशाला – इंदौर</p> <p>दृष्टि सीपीएस ने इंदौर में एक और कार्यशाला आयोजित की, जिसमें भारत में डिजिटल विनिर्माण की सीमित क्षमता की संभावनाओं का पता लगाने के लिए ओईएम, एमएसएमई और स्टार्टअप्स को एक साथ लाया गया। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, इंदौर और यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैंब्रिज के इंस्टीट्यूट फॉर मैनुफैक्चरिंग (आईएफएम) के सहयोग से, इस कार्यशाला में उत्पादन गुणवत्ता और इन्वेंट्री प्रबंधन जैसी चुनौतियों का समाधान करने के लिए कम लागत और कम जोखिम वाली डिजिटलीकरण तकनीकों का परिचय दिया गया।</p> <p>भारतीय उद्योग परिसंघ और आईएमए इंदौर ने इस पहल का समर्थन किया और उद्योग जगत के पेशेवरों और नवप्रवर्तकों को एक साथ लाया। यह कार्यशाला भारत में विनिर्माण प्रक्रियाओं को बदलने और स्थानीय उद्योगों को वैश्विक विशेषज्ञता और उन्नत समाधानों से सशक्त बनाने की दिशा में एक और कदम है।</p>	
<p>चरक कनेक्ट 2.0</p> <p>दृष्टि सीपीएस ने अपने चरक सेंटर फॉर डिजिटल हेल्थकेयर के माध्यम से चरक कनेक्ट 2.0 नामक एक कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में एम्स भोपाल (कार्यकारी निदेशक डॉ. अजय सिंह की मेज़बानी करने का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ), भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर के प्रतिष्ठित संकाय सदस्यों और हमारे समर्थित स्वास्थ्य सेवा स्टार्टअप्स के विविध चिकित्सा विशेषज्ञों का एक समूह एक साथ उपस्थित हुआ।</p> <p>इस कार्यक्रम में व्यावहारिक तकनीकी प्रदर्शन, हमारी चल रही सहयोगी परियोजनाओं पर महत्वपूर्ण चर्चाएँ और क्षेत्र के प्रमुख हितधारकों के साथ मूल्यवान नेटवर्किंग के अवसर शामिल थे। कार्यक्रम व्यावहारिक तकनीकी प्रदर्शनों से समृद्ध था, जिससे संभावित सहयोगी परियोजनाओं पर महत्वपूर्ण चर्चाओं को बढ़ावा मिला।</p>	
<p>दिशा</p> <p>दृष्टि सीपीएस ने डिजिटल स्वास्थ्य सेवा में 15 अग्रणी तकनीकों को सम्मानित करने के लिए नई दिल्ली में अपने दिशा (डेवलपिंग इनोवेशंस फॉर सक्सेसफुल हर्नेसिंग एंड एडॉप्शन) कार्यक्रम के लिए एक पुरस्कार समारोह का आयोजन किया।</p> <p>इस कार्यक्रम में 140 से अधिक स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों, शिक्षाविदों, उद्योग जगत के लीडर, नवप्रवर्तकों और स्टार्टअप्स ने सार्थक सहयोग को बढ़ावा देने और प्रौद्योगिकी व्यावसायीकरण की यात्रा को गति देने के लिए एक साथ आए।</p>	

विवरण	छवि
<p>स्टार्टअप इग्निशन बूटकैंप</p> <p>दृष्टि सीपीएस ने इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय की जेनेसिस पहल के तहत स्टार्टअप इग्निशन बूटकैंप का आयोजन किया, जिसमें स्टार्टअप संस्थापकों, निवेशकों और उद्योग विशेषज्ञों को एक आकर्षक और ज्ञान-आधारित अनुभव के लिए एक साथ लाया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य संस्थापकों को स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र की प्रमुख चुनौतियों का समाधान करते हुए स्केलेबल और वित्तपोषित उद्यम बनाने के लिए व्यावहारिक रणनीतियों से लैस करना था। इस अंतर्दृष्टि ने उद्यमियों को एक संरचित और बाजार-संचालित दृष्टिकोण के साथ अपनी व्यावसायिक रणनीतियों को परिष्कृत करने में मदद की।</p>	
<p>टीआईपीएस 6.0</p> <p>भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) के एनएम-आईसीपीएस के अंतर्गत आईआईटी इंदौर में दो दिवसीय छठी राष्ट्रीय कार्यशाला टीआईपीएस 6.0 (टेक्नोलॉजी इनोवेशंस इन साइबर-फिजिकल सिस्टम्स) का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में सरकार, स्टार्टअप, निवेशक, शिक्षा जगत और उद्योग जगत के लोग शामिल हुए और देश भर के 25 प्रौद्योगिकी नवाचार केंद्रों ने विचारों का आदान-प्रदान किया और सीपीएस प्रौद्योगिकी में प्रगति का प्रदर्शन किया।</p>	
<p>टेकवी स्टार्टअप गैराज बूटकैंप</p> <p>इंदौर में दृष्टि सीपीएस, आईआईटी इंदौर और नैसकॉम डीपटेक द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित दो दिवसीय टेकवी स्टार्टअप गैराज बूटकैंप, मध्य भारत में महिलाओं द्वारा संचालित बी2बी टेक स्टार्टअप्स के लिए एक परिवर्तनकारी लॉन्चपैड के रूप में कार्य किया। कहानी कहने, मूल्य प्रस्ताव डिज़ाइन, समस्या निर्धारण और बाज़ार में प्रवेश की रणनीति पर सक्रिय सत्रों के साथ, पहले दिन संस्थापकों को उद्देश्य-संचालित उद्यम बनाने के लिए स्पष्टता और आत्मविश्वास प्रदान किया गया। दूसरे दिन आदर्श ग्राहक प्रोफाइल और वित्तीय मॉडलिंग पर कार्यशालाओं के माध्यम से उनके फोकस को और अधिक स्पष्ट किया गया, जिसका समापन एक प्रेरक डेमो डे के साथ हुआ जहाँ 15 से अधिक महिला उद्यमियों ने उद्योग जगत के नेताओं और पारिस्थितिकी तंत्र के समर्थकों के सामने अपनी बात रखी। एमपीएसईडीसी, इंदौर मैनेजमेंट एसोसिएशन, इग्नाटियुज़ और टैली सॉल्यूशंस जैसे भागीदारों द्वारा समर्थित, इस बूटकैंप ने सीखने, नेटवर्किंग और निवेशक जुड़ाव का एक शक्तिशाली पारिस्थितिकी तंत्र तैयार किया।</p>	

अनुसंधान क्षेत्र और मुख्य विशेषताएँ

परियोजना/स्टार्टअप विवरण	प्रौद्योगिकी की छवि
<p>तकनीक का नाम: मेडटिवन</p> <p>वनलाइनर: उन्नत निदान और डेटा प्रबंधन के लिए साइबर-भौतिक प्रणालियों के साथ स्वास्थ्य सेवा को सशक्त बनाना</p> <p>विवरण: मेडटिवन एक साइबर-भौतिक स्वास्थ्य सेवा प्रणाली है जो वास्तविक समय विश्लेषण, रोग ट्रैकिंग और सुलभ, डेटा-संचालित देखभाल प्रदान करने के लिए निदान को एआई के साथ जोड़ती है। चिकित्सा विशेषज्ञों द्वारा संचालित, यह विभिन्न एआई-एमएल मॉडलों की क्षमताओं को और बढ़ाने के लिए वास्तविक समय डेटा जनरेट करता है।</p> <p>टीआरएल चरण: टीआरएल 5</p>	
<p>स्टार्टअप का नाम: अविन्या न्यूरोटेक प्राइवेट लिमिटेड</p> <p>उत्पाद का नाम: न्यूरोपाही (हार्डवेयर), न्यूरोएस्ट्रा (एआई-संचालित सॉफ्टवेयर)</p> <p>डोमेन: हेल्थटेक टीआरएल चरण- टीआरएल 4</p> <p>विवरण: अविन्या न्यूरोटेक, न्यूरोलॉजिकल देखभाल को अधिक सुलभ, सटीक और किफायती बनाने के लिए एआई की क्षमता का उपयोग करके नैदानिक न्यूरो डायग्नोस्टिक्स के भविष्य का विकास कर रहा है। हमारा मिशन चिकित्सा-स्तरीय, लागत-प्रभावी समाधान प्रदान करके न्यूरोडायग्नोस्टिक्स और निगरानी में महत्वपूर्ण बदलाव लाना और उसे लोकतांत्रिक बनाना है, जो न्यूरोलॉजिस्ट और आपातकालीन देखभालकर्ताओं को वैश्विक स्तर पर बेहतर रोगी परिणामों के लिए समय पर और साक्ष्य-आधारित निर्णय लेने में सक्षम बनाते हैं।</p>	<p>Avinya Neurotech product.png Avinya NeuroTech EEG Headset.pdf</p> 

भारतीय वैज्ञानिक ज्ञान परंपरा केन्द्र (CISKS)

केंद्र का परिचय

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, इंदौर में (सीआईएसकेएस) की स्थापना जून 2021 में भारत की विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विरासत को समझने, संरक्षित करने, पढ़ाने और अनुकूलित करने पर केंद्रित करने के लिए की गई थी। यह केंद्र विशेष रूप से भारत की वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी विरासत और आधुनिक विश्व में इसकी प्रासंगिकता पर केंद्रित होगा। इसका मुख्य ध्यान गणित, खगोल विज्ञान, धातु विज्ञान, जीव विज्ञान, कृषि, अभियांत्रिकी और चिकित्सा जैसे कठिन विज्ञानों पर केंद्रित होगा। यह केंद्र भारतीय ज्ञान प्रणालियों के भाषा अध्ययन, मानविकी या सामाजिक विज्ञान पहलुओं पर ध्यान केंद्रित नहीं करेगा।

शैक्षणिक कार्यक्रम

शैक्षणिक कार्यक्रमों में संस्कृत भाषा में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम (सीसीएसएल) और संस्कृत भाषा में डिप्लोमा पाठ्यक्रम (डीसीएसएल) शामिल हैं। ये पाठ्यक्रम परिसर में या परिसर के बाहर सभी के लिए उपलब्ध हैं।

हमारे संकाय सदस्यों का सक्रिय समूह संस्कृत अनुसंधान में विद्वानों की गतिविधियों के साथ-साथ भारत की विज्ञान और प्रौद्योगिकी विरासत पर प्रशिक्षण के लिए एक परिवेश बनाने की आकांक्षा रखता है।

संकाय सदस्यगण की संख्या:	
प्रोफेसर	21
एसोसिएट प्रोफेसर	04
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड I	06
असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड II	01
	शून्य

कार्यक्रम	प्रवेश लेने वाले छात्र	डिग्री प्राप्त
संस्कृत भाषा में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम (सीसीएसएल)	13	10
संस्कृत भाषा में डिप्लोमा पाठ्यक्रम डीसीएसएल (जारी)	05	24

परियोजनाएँ

परियोजना	प्रायोजित	परामर्श कार्य
नई परियोजनाएँ	3	शून्य
जारी परियोजनाएँ	6	शून्य
पूर्ण	2	शून्य

उल्लेखनीय गतिविधियाँ

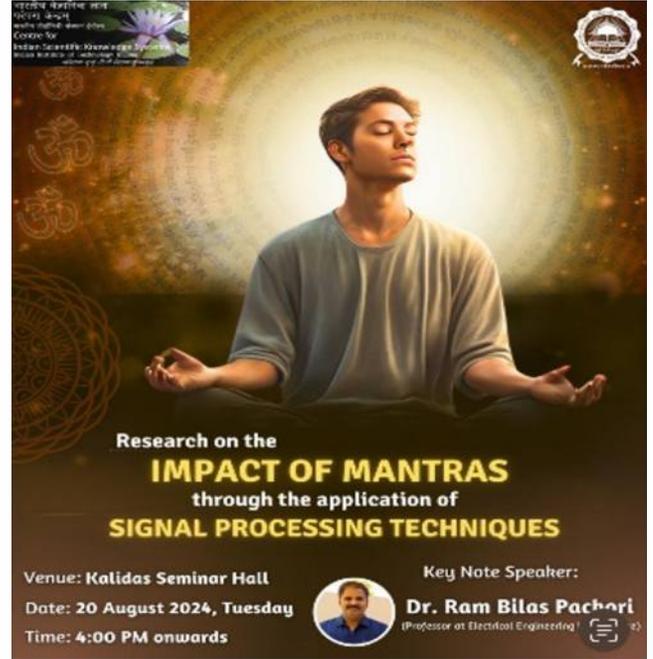
- यूजीसी-आईकेएस (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग – भारतीय ज्ञान परंपरा) के तत्वावधान में 1 जुलाई से 3 जुलाई 2024 तक कृषि, वनस्पति विज्ञान और जल प्रबंधन पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला प्रो. गण्ट एस. मूर्ति, डॉ. वी.एन. प्रभाकर और डॉ. सुब्रमण्य कुमार की देखरेख में आयोजित की गई।



- मंदिर वास्तुकला पर केंद्रित दो दिवसीय कार्यशाला 4 और 5 जुलाई 2024 को आयोजित की गई। कार्यशाला का आयोजन भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईएसटी) के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. हर्ष सिन्हा की देखरेख में किया गया।



- 20 अगस्त 2024 को एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य सिग्नल प्रोसेसिंग के माध्यम से मंत्रों के प्रभाव पर केंद्रित था। इस संगोष्ठी का उद्देश्य आधुनिक सिग्नल विश्लेषण तकनीकों का उपयोग करके मंत्रों के वैज्ञानिक आधार और ध्वनिक गुणों का पता लगाना था।



- भगवद् गीता पर जारी पाठ्यक्रम 28 मार्च 2024 को शुरू हुआ और इसका संचालन कृष्णार्चना दास प्रभुजी द्वारा किया जा रहा है।



- 'भारत की यात्रा: परंपराओं का अध्ययन' विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें वृत्तचित्र 'वॉटर स्टीवर्डशिप' (निर्देशक की कट) का प्रदर्शन और वैज्ञानिकों के पोस्टर प्रदर्शनी भी शामिल थी। प्राच्यम फिल्मस के संस्थापक श्री प्रवीण चतुर्वेदी ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।



6. आईआईटी इंदौर के सीआईएसकेएस विभाग द्वारा 24 से 27 अक्टूबर 2024 तक 'नीतिविधान' नामक तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में डॉ. रामास्वामी बालासुब्रमण्यम (लेखक एवं सदस्य, मानव संसाधन एवं क्षमता निर्माण आयोग, भारत सरकार) और माननीय प्रोफेसर सुहास जोशी, निदेशक, आईआईटी इंदौर की उपस्थिति रही।

इस कार्यक्रम में निम्नलिखित प्रतिष्ठित वक्ता भी शामिल थे:

- श्री श्रीनिवास जम्मालमदका (विद्वान, भारतीय ज्ञान परंपरा, सिद्धांत ज्ञान फाउंडेशन)
- कृ. उपासना तेंदुलकर (संस्थापक, डांसिंग टैल्स)
- श्री राघव कृष्ण
- श्री अमृतांशु पांडे (संस्थापक एवं सीईओ, बृहत)
- डॉ. अनुराग शुक्ला (निदेशक, नीति एवं शिक्षा, बृहत)



7. स्वामी विवेकानंद की 152वीं जयंती के अवसर पर, सीआईएसकेएस, आईआईटी इंदौर में प्रोफेसर डॉ. गण्टि एस. मूर्ति, डॉ. देवायन सरकार और अन्य विशिष्ट अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति में 'युवा दिवस' मनाया गया।



8. 9 अक्टूबर 2024 को 'अशांत मन को वश में करना: मन को नियंत्रित करने की कला' शीर्षक से एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। सत्र के वक्ता आईआईटी पटना के इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. रंजन कुमार बेहरा थे।



9. आईआईटी इंदौर के सीआईएसकेएस विभाग ने शैक्षणिक वर्ष 2022-23 के दौरान केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा संचालित संस्कृत भाषा के सर्टिफिकेट कोर्स में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने पर सुश्री सायली विखरनकर को स्वर्ण पदक से सम्मानित किया है। यह पदक आईआईटी इंदौर के निदेशक माननीय प्रोफेसर सुहास जोशी द्वारा प्रदान किया गया और प्रोफेसर डॉ. विनोद कुमार ने अपनी दिवंगत दादी श्रीमती कुसमा देवी की स्मृति में प्रदान किया।



10. आईआईटी इंदौर के सीआईएसकेएस विभाग द्वारा आयोजित लोगो डिजाइन प्रतियोगिता में सुश्री अपूर्वा कांबले ने प्रथम स्थान प्राप्त किया है। उन्हें यह पुरस्कार संस्थान के कुलसचिव माननीय श्री सिबा प्रसाद होता ने प्रदान किया। प्रविष्टियों का मूल्यांकन श्री प्रवीण चतुर्वेदी (संस्थापक, प्राच्यम फिल्मस) और सीआईएसकेएस विभागाध्यक्ष डॉ. गन्ति एस. मूर्ति ने किया।



11. 'आई के युग में विज्ञान और आध्यात्मिकता' पर एक व्याख्यान आयोजित किया गया, जिसमें आईआईटी दिल्ली के प्रोफेसर ललन कुमार विशिष्ट वक्ता थे।
12. विभागीय पुस्तकालय की औपचारिक स्थापना जनवरी 2025 में की गई।
13. शिक्षा मंत्रालय के आईकेएस प्रभाग द्वारा सीआईएसकेएस को आईकेएस केंद्रों में से एक के रूप में चुना गया। आईकेएस केंद्र, आईकेएस प्रभाग द्वारा दी जाने वाली सर्वोच्च संस्थागत मान्यता है। प्रस्ताव बहुत प्रतिस्पर्धी थे और 184 आवेदनों में से केवल 9 केंद्रों का चयन किया गया। प्रस्ताव का नेतृत्व प्रोफेसर ईश्वर प्रसाद कोरिमिल्ली और प्रोफेसर गन्ति एस मूर्ति ने किया।
14. सीआईएसकेएस में आईकेएस केंद्र भारत की धातुकर्म परंपराओं पर ध्यान केंद्रित करेगा, जिसमें लौह धातुकर्म और भारतीय पारंपरिक कृषि पद्धतियों से प्रेरित सतत कृषि पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। केंद्र के उद्देश्य राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के अनुरूप हैं, जो खाद्य सुरक्षा और धातुकर्म की गंभीर चुनौतियों का समाधान करने के लिए पारंपरिक ज्ञान को समकालीन वैज्ञानिक प्रगति के साथ एकीकृत करना सुनिश्चित करते हैं। अनुसंधान के अलावा, केंद्र आधुनिक अभियांत्रिकी विषयों के साथ आईकेएस के शैक्षिक एकीकरण पर भी जोर देता है।

अत्याधुनिक रक्षा एवं अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी केंद्र (CFDST)

यह केंद्र 'आत्मनिर्भर भारत' की दिशा में रक्षा और अंतरिक्ष क्षेत्रों के लिए विभिन्न अग्रणी और भविष्योन्मुखी तकनीकों के विकास के माध्यम से 'राष्ट्र-निर्माण' में योगदान हेतु छात्रों और शोधकर्ताओं को एक मंच प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। यह केंद्र देश के रक्षा संस्थानों, जैसे रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) की प्रमुख प्रयोगशालाओं की कुछ शोध समस्याओं के तकनीकी समाधान प्रदान करने में योगदान दे रहा है। केंद्र निकट भविष्य में रक्षा और अंतरिक्ष के व्यापक क्षेत्र में विशिष्ट और समर्पित एम.टेक / एमएस (रिसर्च) और पीएचडी कार्यक्रम भी प्रदान करने की योजना बना रहा है।

डॉ. इंद्रसेन सिंह (प्रमुख सीएफडीएसटी), श्री बालकृष्ण विश्वकर्मा अत्याधुनिक रक्षा एवं अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी केंद्र का कार्यभार संभाल रहे हैं।

सीएफडीएसटी में सदस्य

• डॉ. इंद्रसेन सिंह— प्रमुख सीएफडीएसटी	• डॉ. विवेक कान्हांगड
• प्रोफेसर नीलेश कुमार जैन	• डॉ. हेम झा
• प्रोफेसर रजनीश मिश्रा	• डॉ. जयप्रकाश मुरुगेशन
• प्रोफेसर राम बिलास पच्चौरी	• प्रोफेसर मुकेश कुमार
• प्रोफेसर विमल भाटिया	• प्रोफेसर निर्मला मेनन
• प्रोफेसर अभिरूप दत्ता	• प्रोफेसर रुचि शर्मा
• डॉ. अभिषेक राजपूत	• प्रोफेसर सोमादित्य सेन
• प्रोफेसर अविनाश सोनावणे	• डॉ. सुमंत सामल
• डॉ. अजय कुमार कुशवाह	• प्रोफेसर सूर्य प्रकाश
• प्रोफेसर आई ए पलानी	• डॉ. स्वामीनाथन रामबद्रन
• डॉ. ललित बोराणा	• प्रोफेसर नेमिनाथ हुबली
• डॉ. मृगेन्द्र दुबे	• प्रोफेसर मनीष कुमार गोयल
• प्रोफेसर नीलिमा सत्यम	• डॉ. गौरीनाथ बांदा
• प्रोफेसर पंकज सागदेव	• डॉ. के ईश्वर प्रसाद
• डॉ. पुनीत गुप्ता	• प्रोफेसर संतोष कुमार विश्वकर्मा
• डॉ. राम सजीवन मौर्य	• डॉ. सप्तर्षि घोष
• प्रोफेसर संजय कुमार सिंह	• डॉ. बोधिसत्व मजूमदार
• डॉ. सौरभ दास	• प्रोफेसर संजराम प्रेमजीत खंगनबा
• प्रोफेसर शैबाल मुखर्जी	• प्रोफेसर गण्ट एस मूर्ति
• डॉ. विनोद कुमार	• डॉ. विजय कुमार सोहनी

सीएफडीएसटी में कार्यालय कर्मचारी

- श्री बालकृष्ण विश्वकर्मा

उल्लेखनीय उपलब्धियाँ: कोविड 19 महामारी के दौरान आयोजित वेबिनार:

- डॉ. अजय कुमार भा.प्र.से., रक्षा सचिव, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा भारतीय रक्षा उद्योग, उभरते क्षेत्र पर वेबिनार का विशेषज्ञ व्याख्यान।
- मेजर जनरल ए. के. चन्नन, पीवीएसएम, एसएम, अपर महानिदेशक, आर्मी डिज़ाइन ब्यूरो द्वारा सैन्य युद्ध पर प्रौद्योगिकी के विघटनकारी प्रभाव पर वेबिनार का विशेषज्ञ व्याख्यान।
- लेफ्टिनेंट जनरल वीजी खंडारे, पीवीएसएम, एवीएसएम, एसएम (सेवानिवृत्त), सैन्य सलाहकार, राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय द्वारा राष्ट्रीय सुरक्षा और व्यापक राष्ट्रीय शक्ति में प्रौद्योगिकी की भूमिका पर वेबिनार का विशेषज्ञ व्याख्यान।
- 26 अगस्त 2020 को आयुध प्रतिष्ठानों में अनुसंधान और विकास के अवसरों पर एक दिवसीय कार्यशाला (एआरएमआरईबी-2020)।

संकाय सदस्य की प्रोफाइल

डॉ. शैबाल मुखर्जी

प्रोफेसर (एफ-जेएसपीएस, एफ-हम्बोल्ट फाउंडेशन, एफआईएनएसटीपी, एफ-आईईटीई) टीआईएच-आईओटी चाणक्य फैकल्टी फेलो, आईआईटी बॉम्बे shaibal@iiti.ac.in पीएचडी, यूनिवर्सिटी ऑफ ओक्लाहोमा (अमेरिका)



अनुसंधान क्षेत्र का विवरण एवं मुख्य विशेषताएँ

उन्होंने सहकर्मी-समीक्षित पत्रिकाओं में 145 से अधिक शोध लेख, 110 से अधिक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन कार्यवाहियाँ, 11 पुस्तक/पुस्तक अध्याय और 15 पेटेंट (स्वीकृत: 12 और फाइल की गई/प्रकाशित: 3) प्रकाशित किए हैं। उन्हें विभिन्न प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जैसे 'अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट फाउंडेशन द्वारा 2025 फ्रेडरिक विल्हेम बेसेल रिसर्च अवार्ड', '2024 माइक्रोइलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग जर्नल मिडिल करियर इन्वेस्टिगेटर अवार्ड एंड लेक्चरशिप', '2023 जापान सोसाइटी फॉर द प्रमोशन ऑफ साइंस (जेएसपीएस) इन्व्हेशनल फेलोशिप अवार्ड', '2021 जेएसपीएस इन्व्हेशनल फेलोशिप अवार्ड', '2020 डीयूओ-इंडिया प्रोफेसर फेलोशिप अवार्ड', '2019 डीएएडी फेलोशिप अवार्ड', '2018 मैटेरियल्स रिसर्च सोसाइटी ऑफ इंडिया (एमआरएसआई) मेडल', 'इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी के लिए विश्वेश्वरैया पीएचडी योजना के अंतर्गत 2016 युवा फैकल्टी रिसर्च फेलोशिप (वाईएफआरएफ)। वह आईईईई मध्य प्रदेश (एमपी) सेक्शन इलेक्ट्रॉन डिवाइसेस सोसाइटी (ईडीएस) और नैनोटेक्नोलॉजी काउंसिल (एमटीसी) चौप्टर्स के संस्थापक अध्यक्ष हैं। वह क्वांटेकएल2एम इनोवेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक, सह-संस्थापक और मेंटर भी हैं।

उनकी शोध रुचियों में शामिल हैं: (क) छवि प्रसंस्करण, एआई/एमएल और डेटा सुरक्षा के लिए क्वांटम आरआरएम; और (ख) सतत कृषि, पर्यावरण और स्वास्थ्य सेवा के लिए एआईओटी-सक्षम और पोर्टेबल सेंसर।

डॉ. स्वामीनाथन रामबद्रन

अनुसंधान क्षेत्र का विवरण एवं मुख्य विशेषताएं: वर्तमान अनुसंधान क्षेत्रों में 6जी वायरलेस प्रौद्योगिकियां, इन्टेलिजेंट परावर्तक सतहें (आईआरएस), गैर-स्थलीय नेटवर्क (एनटीएन), वाहन संचार, ऑप्टिकल वायरलेस संचार (एफएसओ और वीएलसी), टैराहर्ट्ज (टीएचजेड) संचार, हाइब्रिड रेडियो सिस्टम, संचार प्रणालियों के लिए मशीन लर्निंग और सैन्य संचार के लिए इन्टेलिजेंट रिसेवर डिजाइन शामिल हैं।

हमारे शोध समूह ने 40 अंतर्राष्ट्रीय जर्नल लेख और 57 सम्मेलन लेख प्रकाशित किए हैं, जिनमें 5 आईईईई जर्नल/ट्रांज़ैक्शन/शोध पत्र, 15 आईईईई राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन लेख और 2014-25 के वित्तीय वर्ष में एक पाठ्यपुस्तक शामिल है। वर्तमान में, 3 प्रायोजित शोध परियोजनाएँ चल रही हैं और 4 परियोजनाएँ पूरी हो चुकी हैं (एक पीआई के रूप में)। हमारा शोध समूह एनटीयू सिंगापुर, यूनिवर्सिटी ऑफ एसेक्स, यूके, यूनिवर्सिटी ऑफ आइजू, जापान और यूनिवर्सिटी ऑफ थेसालोनिकी, ग्रीस के कुछ प्रमुख शोध समूहों के साथ भी सहयोग कर रहा है।



ग्रामीण विकास एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (CRDT)

केंद्र का परिचय

संस्थान ने अप्रैल 2020 में शोधकर्ताओं, स्वयंसेवकों, चिकित्सकों, शिक्षकों और अन्य लोगों के लिए ग्रामीण सशक्तिकरण और प्रगति समाधानों में सहयोग और सुविधा प्रदान करने हेतु एक नोडल केंद्र के रूप में ग्रामीण विकास एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (सीआरडीटी) की स्थापना की। सीआरडीटी, सहभागी, सतत, लोकतांत्रिक, पारदर्शी और लैंगिक-संवेदनशील प्रक्रियाओं को अपनाते हुए, उपयुक्त और जन-अनुकूल प्रौद्योगिकियों के विकास और अनुप्रयोग द्वारा ग्रामीण आबादी को उनके जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए सशक्त और सक्षम बनाने का प्रयास करेगा।

शैक्षणिक कार्यक्रम

ग्रामीण विकास एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (सीआरडीटी) ने विशेष रूप से ग्रामीण विकास एवं प्रौद्योगिकी में पीएचडी कार्यक्रम शुरू किया है, जिसमें कृषि एवं पर्यावरण अर्थशास्त्र, सततता अध्ययन, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, खाद्य सुरक्षा, जल ऊर्जा, खाद्य संबंध जैसे अनुसंधान क्षेत्र शामिल हैं।/कृषि समस्याओं में कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीकों का अनुप्रयोग।/ग्रामीण क्षेत्रों के लिए उत्पाद निर्माण।/ग्रामीण अवसंरचना में मृदा स्थिरीकरण के लिए स्थायी पदार्थों का विकास और मूल्यांकन।/ग्रामीण क्षेत्रों में आपदा जोखिम न्यूनीकरण।/स्थायी पारिस्थितिकी तंत्र के लिए फसलों में रोगों का शीघ्र पता लगाना।/स्थानीय समुदायों पर ग्रामीण अवसंरचना विकास के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव का मूल्यांकन।/खाद्य और जैव प्रसंस्करण उपकरण डिजाइन और स्केलअप।/सतत ग्रामीण विकास के लिए आधुनिक तकनीकों के साथ पारंपरिक ज्ञान और प्रथाओं का एकीकरण।/प्राकृतिक संसाधन और पर्यावरण अर्थशास्त्र, कृषि पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव, जनजातीय अध्ययन, नीति विश्लेषण, ग्रामीण विकास।/कृषि मशीनरी और ऑटोमोबाइल में शोर, कंपन और कठोरता।/पोषक तत्व ऊर्जा जल संबंध।/किफायती और सतत ग्रामीण आवास के लिए निर्माण तकनीकों और पदार्थों का अनुकूलन।/कृषि पारिस्थितिक प्रणालियों का लचीलापन।/कृषि के लिए सेंसर।/सतत निर्माण।/सतत ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा।/खाद्य भंडारण के लिए सतत तकनीकें।/वीएलएसआई सर्किट और सिस्टम डिजाइन।

संकाय सदस्यगण की संख्या:	13
प्रोफेसर	10
एसोसिएट प्रोफेसर	02
सहायक प्रोफेसर ग्रेड	01

क्र.सं.	पीएचडी में नामांकित छात्रों की संख्या	पर्यवेक्षक का नाम
1	श्री हत्तामु मेलेसे डिचा (शिक्षा मंत्रालय, इथियोपिया और नवाचार एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत अरबा मिंच यूनिवर्सिटी, इथियोपिया से संयुक्त एकीकृत पीएचडी कार्यक्रम)	प्रोफेसर संदीप चौधरी
2	श्री सतीश दबे	प्रोफेसर संदीप चौधरी
3	श्री बुद्धदेव घोष	प्रोफेसर गन्ति एस. मूर्ति
वैकल्पिक पाठ्यक्रम: 02		
ग्रामीण अनुप्रयोग के लिए डिजाइन थिंकिंग (आरडीटी 301 / 401 / 601)		
ग्रामीण प्रौद्योगिकी विकास के लिए इमर्सन (आरडीटी 201)		

उल्लेखनीय अनुसंधान एवं विकास गतिविधिया

क्र.सं.	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	प्रतिभागियों की संख्या	सहयोगी संगठन
1.	'मधुमक्खी पालन और पुष्पकृषि कौशलों को क्रियान्वित करके सशक्तिकरण को बढ़ावा देना' विषय पर कौशल विकास कार्यशाला	23 सितंबर, 2024	100	केवीके, इंदौर
2.	ग्रामीण विकास की दिशा में नवाचार: सर्वश्रेष्ठ विचार प्रस्तुति प्रतियोगिता	25 सितंबर, 2024	18	—
3.	ग्रामीण लोगों के लिए प्रौद्योगिकी विकास को समझने हेतु छात्रों के लिए कौशल विकास कार्यक्रम	7 नवंबर, 2024	10	माता गुजरी गर्ल्स पब्लिक स्कूल, इंदौर
4.	15 जनवरी, 2025 को भोपाल में आयोजित मध्य प्रदेश संगोष्ठी में आईआईटी इंदौर के चार छात्रों, सिद्धार्थ सिंह ने जैव विविधता और पारंपरिक ज्ञान में प्रथम पुरस्कार जीता, वैशाली सैनी और आयुष ने स्वास्थ्य में द्वितीय पुरस्कार जीता, नीलाद्रि एस रॉय ने कृषि और ग्रामीण विकास में प्रथम पुरस्कार जीता और अनूप के. ने कृषि और ग्रामीण विकास में द्वितीय पुरस्कार जीता।	15 जनवरी, 2025	04	एआईजीजीपीए, भोपाल
5.	पूर्वोत्तर के संकाय सदस्यों (एसईआईएल कार्यक्रम) के साथ छात्र हमारे संस्थान का दौरा करेंगे। सीआरडीटी में चल रहे शोध कार्य को समझने के संबंध में।	1 फरवरी, 2025	40	युवा विकास केंद्र
6.	रूरल इनोवेटर्स कॉन्क्लेव	21-22 मार्च, 2025	100	अनुसंधान नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (एएनआरएफ)

सम्मेलन/सेमिनार/संगोष्ठी (एसएसवाई) के लिए बाह्य वित्तपोषण

सम्मेलन सेमिनार/संगोष्ठी का नाम	दिनांक	वित्तपोषण एजेंसियों का नाम	अनुदान	प्रतिभागियों की संख्या	आमंत्रित वार्ताओं की संख्या	स्टार्टअप प्रस्तुतियों की संख्या	उत्पाद प्रदर्शन की संख्या	प्रस्तुत की गईं नई तकनीकों की संख्या
रूरल इनोवेटर्स कॉन्क्लेव	21-22 मार्च, 2025	अनुसंधान नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (एएनआरएफ)	4.5 लाख	100	13	15	20	09

परियोजनाएँ

परियोजनाएँ	आंतरिक परियोजना	बाह्य प्रायोजित परियोजना
जारी परियोजनाएँ	30	04
पूर्ण	—	—

आंतरिक परियोजना

निम्नलिखित अनुसंधान संस्थान के सहयोग से सीआरडीटी के तत्वावधान में तीस केंद्र-वित्त पोषित परियोजनाएं चल रही हैं।

- आईसीएआर-केंद्रीय कृषि इंजीनियरिंग संस्थान, भोपाल के साथ तेरह परियोजनाएँ,
- वसुमित्रा लाइफ एनर्जीज प्राइवेट लिमिटेड, पुणे, महाराष्ट्र के साथ तीन परियोजनाएँ,
- शिवगंगा, झाबुआ के साथ पाँच परियोजनाएँ और
- योगक, नंदुरबार, महाराष्ट्र के साथ नौ परियोजनाएँ

आईसीएआर-केंद्रीय कृषि इंजीनियरिंग संस्थान, भोपाल				
क्र.सं.	परियोजना का शीर्षक	पीआई (आईआईटी इंदौर)	सह-पीआई (आईआईटी इंदौर)	सह-पीआई (सीआईईई भोपाल)
1.	मक्के के डंठल से निकाले गए सेल्यूलोज का उपयोग करके बायोप्लास्टिक का विकास	डॉ. अपूर्व के. दास	—	इंजी. हर्षा वाकुडकर, डॉ. संदीप मंडल
2.	संसाधन पुनर्प्राप्ति दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए विष्टा संबंधी, नगरपालिका और कृषि अपशिष्टों सहित जैविक अपशिष्ट प्रवाह का सतत प्रबंधन	डॉ. आशुतोष मंडपे	—	डॉ. संदीप गंगिल
3.	कृषि मशीनीकरण और किसानों की आर्थिक स्थिति पर इसके प्रभावों का आकलन	डॉ. कालंदी चरण प्रधान	डॉ. मोहनसुंदरी थंगावेल	डॉ. कौशिक प्रसून साह
4.	मेमरिस्टिव क्रॉसबार ऐरे-आधारित छवि का उपयोग करके धान/सोयाबीन में रोगों का वास्तविक समय में पता लगाना	प्रो. शैबाल मुखर्जी	प्रो. राम बिलास पचोरी	डॉ. मनोज कुमार, डॉ. दीपक सिंह, योगेश राजवाड़े
5.	रोगानुरोधी प्रतिरोध, हेलिकोबैक्टर पाइलोरी की वृद्धि और रोगजनन से निपटने के लिए सोयाबीन आधारित प्रोबायोटिक्स का मूल्यांकन	डॉ. हेम चंद्र झा	—	डॉ. समलेश कुमारी
6.	मृदा, जल एवं पोषक तत्वों के धारण गुणों के अध्ययन हेतु किफायती सुपर शोषक एग्री-जेल का विकास	डॉ. मृगेंद्र दुबे	—	डॉ. के. वी. रमण राव

7.	परिवर्तनशील आवर्धन यूएवी चित्रों का उपयोग करके मक्का फसल के ऊपरी भू-जैवभार का गहन सीएनएन-आधारित आकलन।	डॉ. अंकुर मिगलानी	डॉ. पवन कुमार कांकर	डॉ. योगेश राजवाड़े
8.	किफायती हस्तचालित चावल प्रत्यारोपण यंत्र का डिज़ाइन और विकास	डॉ. जयप्रकाश मुरुगेसन	—	डॉ. राहुल राजाराम पोत्दार
9.	दूषित भूजल से कीटनाशकों के कुशल निष्कासन और अपघटन हेतु किफायती फोटोएक्टिव सॉफ्ट पदार्थों का विकास	डॉ. तुषार कांति मुखर्जी	—	डॉ. अभिषेक एम. वाघये
10.	कृषि गतिविधियों में किसानों की सहायता के लिए मोबाइल ऐप का विकास: कृषि सेवा	प्रो. अरुणा तिवारी	—	डॉ. शशि रावत
11.	कृषि-औद्योगिक अपशिष्ट का उपयोग करके पीएलए आधारित बायोप्लास्टिक निर्माण हेतु पॉलीलैक्टिक एसिड (पीएलए) का सतत उत्पादन।	प्रो. संपक सामंता	—	डॉ. मनोज कुमार त्रिपाठी
12.	कृषि अपशिष्ट से प्राप्त कार्बन को डोपड-नैसिकॉन पदार्थों के साथ संयोजित करके हाइब्रिड सोडियम-आयन कैपेसिटर का विकास	डॉ. धीरेंद्र कुमार राय	—	डॉ. विनोद कुमार भार्गव
13.	कृषि विषाक्त रसायनों को हटाकर जल शोधन में छिद्रयुक्त कार्बनिक बहुलक (पीओपी)	प्रो. सुमन मुखोपाध्याय	—	डॉ. के. वी. रमण राव

वसुमित्रा लाइफ एनर्जीज़ प्राइवेट लिमिटेड

क्र.सं.	परियोजना का शीर्षक	परियोजना पीआई	सह-पीआई (आईआईटी इंदौर)	सह-पीआई (बाह्य)
1.	विकेंद्रीकृत ऊर्जा और कृषि के लिए हाइड्रोजन भंडारण और CO ₂ संग्रहण का विकास: ग्रामीण सततता को सशक्त बनाना	डॉ. श्रीमंत पाखीरा	—	—
2.	पादप शरीरक्रिया विज्ञान और मृदा कार्बन गतिकी पर अजैविक तनावों और कार्बन संचयन के प्रभाव की जाँच	प्रो. किरण बाला	—	—
3.	सुदूर संवेदन का उपयोग करके पौधों के अजैविक तनाव की निगरानी	डॉ. उन्मेष खटी	—	डॉ. मनोज सेमवाल, कम्प्यूटेशनल बायोलॉजी विभाग, केन्द्रीय औषधीय एवं सगंध पौधा संस्थान

शिवगंगा, झाबुआ

क्र.सं.	परियोजना का शीर्षक	परियोजना पीआई	सह-पीआई (आईआईटी इंदौर)	सह-पीआई (बाह्य)
1.	सतत किफायती फर्टिगेशन व्यवस्था का विकास: सिंचाई के दौरान प्रत्यक्ष जड़ निषेचन हेतु ठोस जैविक उर्वरक को तरल में परिवर्तित करना	डॉ. आशीष रजक	—	—

2.	झाब वाली का दस्तावेजीकरण और संरक्षण: झाबुआ, मध्य प्रदेश के लिए एक बोली शब्दकोश	डॉ. तपस्या जे	—	—
3.	झाबुआ का सुर: मध्य प्रदेश की लोक संगीत विरासत का दस्तावेजीकरण	डॉ. अनन्या घोषाल	डॉ. शोमिक दासगुप्ता	—
4.	आदिवासी कला विरासत की खोज: मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले में स्वदेशी कला रूपों का एक अध्ययन	डॉ. शोमिक दासगुप्ता	डॉ. अनन्या घोषाल	—
5.	हल्मा विरासत के माध्यम से कृषि को पुनर्जीवित करना: मध्य प्रदेश के झाबुआ और अलीराजपुर जिलों में सांस्कृतिक और सामाजिक-आर्थिक प्रभाव अध्ययन।	डॉ. दिशारी चट्टराज	डॉ. मोहनसुन्दरी टी	—

योगक, नंदुरबार, महाराष्ट्र

क्र.सं.	परियोजना का शीर्षक	परियोजना पीआई	सह-पीआई (आईआईटी इंदौर)	सह-पीआई (बाह्य)
1.	एकीकृत मौसम पूर्वानुमान के साथ एक स्मार्ट, किफायती मौसम केंद्र का विकास	डॉ. सौरभ दास	—	—
2.	भंडारण कंटेनरों में फलों के खराब होने को कम करने के लिए कमरे के तापमान पर एथिलीन गैस संवेदन का विकास।	डॉ. प्रवर्तणा धनपाल	डॉ. देवेश मिश्रा, श्री संदीप प्रजापति, परियोजना प्रमुख (स्वयान परियोजना)	—
3.	ग्रामीण विकास के लिए किफायती बिजली जनरेटर (किफायती जनरेटर)	डॉ. सुमित गौतम	—	—
4.	जल प्रबंधन के प्रति समग्र दृष्टिकोण: स्वदेशी जल उपयोग पद्धतियाँ, मौखिक आख्यान और नंदुरबार, महाराष्ट्र में नेसु नदी महोत्सव	डॉ. अरात्रिका दास	डॉ. विवेक सिंह	—
5.	पारंपरिक कृषि को पुनर्जीवित करना: सतत खेती के लिए बहुउद्देशीय सौर ऊर्जा से चलने वाले ट्रैक्टरों की पेशकश	डॉ. डैन सत्यराज	डॉ. आनंद पिटार	—
6.	कृषि उत्पादों के लिए सिंथेटिक जेट इंपिंगमेंट का उपयोग करके कुशल सौर एयर ड्रायर	डॉ. हरेकृष्ण यादव	—	—
7.	रोटरी ड्रम कम्पोस्टिंग और उसके बाद वर्मिकम्पोस्टिंग के माध्यम से खरपतवार प्रबंधन में अग्रणी।	डॉ. मयूर शिरीष जैन	—	—
8.	किफायती पर्यावरण अनुकूल ट्राइबो का डिजाइन और विकास कम पानी की स्वच्छता के लिए पीजो हाइब्रिड लचीली स्मार्ट फ्लशिंग प्रणाली	प्रो. पलानी आई. ए.	डॉ. हितेंद्र कुमार	—
9.	मौसम पूर्वानुमान और डेटा डिजिटलीकरण वाला किफायती मौसम केंद्र	प्रो. बिस्वरूप पाठक	—	—

बाह्य प्रायोजित परियोजना

क्र.सं.	परियोजना का शीर्षक	वित्तपोषण एजेंसी	अवधि	वित्त पोषण राशि	सहयोगी संगठन
1.	सतत ग्रामीण बुनियादी ढाँचे को सहायता प्रदान करने हेतु उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला हेतु संपीडित रंगीन कम्पोजिट का प्रौद्योगिकी प्रसार	डीएसटी, भारत सरकार	2023-2025	₹59,40,000	टीआईआईटी पटियाला, भारत
2.	मध्य प्रदेश राज्य के इंदौर जिले के सिमरोल ब्लॉक में श्रमिक विकास सामुदायिक भागीदारी प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से अनुसूचित जाति के श्रमिकों के लिए आजीविका मध्यवर्तन	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी)	2025-2028	₹68,85,115	सिमरोल पंचायत
3.	पोर्टेबल किट का विकास – फोटोडायनामिक निष्क्रियता का उपयोग करते हुए पारंपरिक कटाई-पश्चात प्रबंधन का एक विकल्प	एग्रीहब: कृषि के लिए नवाचार केंद्र (एआई/एमएल और गहन शिक्षण उत्कृष्टता केंद्र) योजना, आईआईटी इंदौर	2025-2027	₹12,50,000	—
4.	पोर्टेबल किट का विकास – पारंपरिक कटाई-पश्चात प्रबंधन का एक विकल्प	टीआईएच फाउंडेशन फॉर आईओटी और आईओई	2025-2027	₹1,29,57,438	—

प्रकाशन

विवरण	प्रकाशित पुस्तकें	पुस्तकों में अध्याय	सम्मेलन में शोधपत्र	पत्रिकाओं में लेख	पेटेंट
कुल	—	—	2	10	3

पेटेंट

- सूक्ष्मजीवों के दृश्य प्रकाश प्रकाशीय निष्क्रियण के लिए एक पोर्टेबल किट – शीत भण्डारण का एक विकल्प, 2024 में फाइल की गई: 202421010243, नीलाद्रि शेखर रॉय और देबयान सरकार
- गोबर आधारित हल्की निर्माण पदार्थ और उसकी विधि, प्रकाशित: 07.03.2025, आवेदन संख्या: 202421010279, संचित गुप्ता और संदीप चौधरी
- खाद्यान्न, दालें, बाजरा और मेवों का एक पोर्टेबल डिस्पेंसर और उसकी विधि, 2024 में फाइल की गई: 202421019969, अंकुर मिगलानी और पवन कुमार कांकर

आउटरीच गतिविधियाँ

गतिविधि का नाम – विशेषज्ञ वार्ता			
क्र.सं.	दिनांक	वक्ता का नाम	विषय
1.	23 सितंबर, 2024	डॉ. डी. के. मिश्रा, प्रधान वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केंद्र, कस्तूरबाग्राम, इंदौर	मधुमक्खी पालन और पुष्पकृषि कौशल को क्रियान्वित करके सशक्तिकरण को बढ़ावा
2.	2 अक्टूबर, 2024	डॉ. अरविंद सी. रानाडे, निदेशक, राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान	सतत विकास

गतिविधि का नाम – ग्रामीण अनुप्रयोग के लिए डिज़ाइन थिंकिंग शैक्षणिक पाठ्यक्रम के एक भाग के रूप में क्षेत्रीय भ्रमण (आरडीटी 301/401/601)		
क्र.सं.	दिनांक	स्थान
1.	14-15 सितंबर, 2024	शैक्षिक यात्रा शिवगंगा (झाबुआ दर्शन यात्रा)
2.	1 फरवरी, 2025	निर्माण पदार्थ में पुनर्चक्रण हेतु केले के रेशे के अध्ययन एवं नमूना संग्रह हेतु शैक्षिक भ्रमण, बुरहानपुर, मध्य प्रदेश
3.	1-3 मार्च, 2025	शिवगंगा झाबुआ द्वारा आयोजित हलमा कार्यक्रम में अध्ययन हेतु शैक्षिक भ्रमण
4.	10 अप्रैल, 2025	यशवंत सागर झील – रामसर वेटलैंड, इंदौर का प्रशिक्षण एवं शोध-उन्मुख एक दिवसीय भ्रमण

2 अक्टूबर को स्थानीय और ग्रामीण कारीगरों और शिल्पकारों की प्रदर्शनी का आयोजन

सीआरडीटी की संगठनात्मक संरचना प्रभारी प्राध्यापक

डॉ. देबायन सरकार

शोध रुचियाँ:

- सूक्ष्मजीवों का दृश्य प्रकाश निष्क्रियण
- सूक्ष्मजीवों के दृश्य प्रकाश प्रकाशीय निष्क्रियण का उपयोग करते हुए सब्जी भंडारण
- जैवसक्रिय प्राकृतिक उत्पादों का पृथक्करण और अनुप्रयोग



कृषि, वानिकी और पर्यावरण

प्रो. प्रीति शर्मा

शोध रुचियाँ:

- कृषि अर्थशास्त्र (भूमि, जल और वन अर्थशास्त्र)
- विकास अर्थशास्त्र (विकासशील देशों की ग्रामीण गरीबी और व्यापार संबंधी चिंताएँ)



प्रो. गण्ट एस. मूर्ति

शोध रुचियाँ:

- मूल्यवर्धित जैव-उत्पादों और जैव-ईंधन के उत्पादन हेतु
- जैव-प्रक्रिया विकास और विस्तार
- जैविक और जैव-प्रक्रिया मॉडलिंग, नियंत्रण और बहु-मानदंड अनुकूलन
- तकनीकी-आर्थिक विश्लेषण, जीवन-चक्र मूल्यांकन और संसाधन मूल्यांकन का उपयोग करते हुए प्रणाली विश्लेषण
- पोषक तत्व-ऊर्जा-जल-भूमि के संयोजन में लचीलापन और स्थिरता



डॉ. मोहनसुंदरी थंगावेल

शोध रुचियाँ:

- कृषि अर्थशास्त्र
- संसाधन अर्थशास्त्र: ऊर्जा, जल और कृषि वानिकी
- पर्यावरण अर्थशास्त्र: जलवायु परिवर्तन अनुकूलन और प्रभाव अध्ययन
- शहरी और ग्रामीण उपभोग पैटर्न
- किसान उत्पादक संगठन



ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा

प्रो. अविनाश सोनवणे

शोध रुचियाँ:

- होस्ट प्रतिरक्षा प्रतिक्रियाओं के नियमन में माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस ग्लाइकोप्रोटीन और ग्लाइकोलिपोप्रोटीन की भूमिका
- एम. ट्यूबरकुलोसिस संक्रमण के दौरान स्टेम कोशिकाओं का एपिजेनोमिक्स
- माइकोबैक्टीरियल प्रतिरक्षा में मेज़बान रोगाणुरोधी पेप्टाइड्स
- दवा वितरण
- प्राथमिक और पुनरावर्ती तीव्र लसीका ल्यूकेमिया के उपचार के लिए एल-एस्पेरेजिनेज आधारित चिकित्सा का विकास



डॉ. हेम चंद्र झा

शोध रुचियाँ:

- कोविड-19 जीव विज्ञान
- जैविक और जैवप्रक्रिया मॉडलिंग, नियंत्रण और बहु-मानदंड अनुकूलन
- होस्ट-रोगजनक अंतःक्रिया – कैंसर की प्रगति में एपस्टीन-बार वायरस और हेलिकोबैक्टर पाइलोरी से संबंधित सह-संक्रमण
- एपिजेनेटिक विनियमन – कैंसर में रोगजनकों से उत्पन्न रोगजनन
- गैस्ट्रिक कैंसर, सिर और गर्दन के कैंसर और मल्टीपल स्केलेरोसिस के वायरल संक्रमण के दौरान रोगजनकों का भार
- कैंसर और संक्रामक कारकों से उत्पन्न रोगों में दवा की खोज
- आनुवंशिक अभियांत्रिकी



प्रौद्योगिकी विकास एवं कौशल विकास

प्रो. संदीप चौधरी

शोध रुचियाँ:

- संरचनात्मक अभियांत्रिकी
- सतत निर्माण पद्धतियाँ
- मिश्रित पुल
- नवीन ईटें और ब्लॉक
- कंक्रीट की सूक्ष्म संरचना और स्थायित्व
- उन्नत अभिलक्षणन तकनीकें
- भवन निर्माण सामग्री में अपशिष्ट प्रबंधन



प्रो. राजेश कुमार

शोध रुचियाँ:

- नैनो पदार्थ और नैनो उपकरण
- इलेक्ट्रॉनिक और इलेक्ट्रोक्रोमिक उपकरण
- उपकरण भौतिकी, रमन स्पेक्ट्रोस्कोपी और माइक्रोस्कोपी
- प्राकृतिक जैव पदार्थ



प्रो. शैबाल मुखर्जी

शोध रुचियाँ:

- डीसी-टू-डीसी कन्वर्टर के लिए किफ़ायती एचईएमटी/एचएफईटी
- इमेज प्रोसेसिंग और न्यूरोमॉर्फिक कंप्यूटेशन के लिए विषम एकीकृत आरआरएएम
- अगली पीढ़ी के अल्ट्राथिन और किफ़ायती फोटोवोल्टिक
- कृषि, जल और वायु के लिए लचीले और किफ़ायती जैव-रासायनिक संसर
- उच्च-प्रदर्शन वाले यूवी डिटेक्टर



प्रो.संतोष कुमार विश्वकर्मा

शोध रुचियाँ:

- ऊर्जा-कुशल और विश्वसनीय एसआरएएम मेमोरी डिज़ाइन
- डीएनएन एक्सेलेरेटर के लिए हार्डवेयर-कुशल आर्किटेक्चर
- एज एआई के लिए एसआरएएम-आधारित इन-मेमोरी कंप्यूटिंग आर्किटेक्चर
- आईओटी एप्लिकेशन के लिए विश्वसनीय, सुरक्षित डिज़ाइन
- विश्वसनीयता के लिए डिज़ाइन



प्रो. पवन कुमार कांकर

शोध रुचियाँ:

- यांत्रिक घटकों का दोष निदान
- स्थिति आधारित रखरखाव
- मशीन लर्निंग
- सिग्नल प्रोसेसिंग



आउटरीच एवं लैंगिक समानता

प्रो. निर्मला मेनन

शोध रुचियाँ:

- डिजिटल मानविकी
- उत्तर-औपनिवेशिक साहित्य और सिद्धांत
- वैश्वीकरण अध्ययन
- अन्य भाषाओं में अनुवादित विश्व साहित्य
- उत्तर-औपनिवेशिक साहित्य का संस्थानीकरण



प्रो. नीलिमा सत्यम डी.

शोध रुचियाँ:

- भू-तकनीकी भूकंप अभियांत्रिकी
- गतिशील मृदा संरचना अंतःक्रिया विश्लेषण
- द्रवीकरण जोखिम और शमन
- एपिजेनेटिक विनियमन – कैंसर में रोगजनकों से उत्पन्न रोगजनन
- पर्यावरणीय भू-तकनीकी
- भूस्खलन अनुसंधान
- शैल यांत्रिकी और भूमिगत संरचनाएँ







जय प्रकाश नारायण राष्ट्रीय मानविकी उत्कृष्टता केंद्र (JPN)

केंद्र का परिचय

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा आईआईटी इंदौर में अक्टूबर 2022 में स्थापित जय प्रकाश नारायण (जेपीएन) राष्ट्रीय मानविकी उत्कृष्टता केंद्र, डिजिटल युग में मानविकी की भूमिका को नए सिरे से परिभाषित करने और शोध की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल का प्रतिनिधित्व करता है। राष्ट्रीय महत्व के एक प्रमुख संस्थान के रूप में, यह केंद्र डिजिटल मानविकी और पर्यावरण मानविकी के दो क्षेत्रों में अत्याधुनिक शोध, उन्नत शैक्षणिक अन्वेषण और उच्च-प्रभावी आउटरीच के लिए प्रतिबद्ध है। यह केंद्र भाषा, साहित्य, संस्कृति, पर्यावरण और प्रौद्योगिकी के संगम पर सहयोगात्मक पहल को बढ़ावा देने वाले एक प्रमुख केंद्र के रूप में कार्य कर रहा है। ऐसा करते हुए, यह केंद्र राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विद्वानों को डिजिटल तकनीकों का उपयोग करके सहयोगात्मक अनुसंधान के विस्तार हेतु एक अनूठा शोध परिवेश प्रदान करता है।

ध्येय

जेपीएन केंद्र का मिशन अत्याधुनिक अनुसंधान, शिक्षा और जन सहभागिता को सुगम बनाना है ताकि विद्वानों, शोधकर्ताओं और व्यवसायियों का एक सक्रिय समुदाय विकसित हो सके जो डिजिटल उपकरणों, कार्यप्रणालियों और समीक्षात्मक सोच का उपयोग करके डिजिटल परिदृश्य का अन्वेषण, व्याख्या और स्वरूप तैयार कर सकें। अनुसंधान परियोजना साझेदारियों और समावेशी आउटरीच के माध्यम से, डिजिटल और पर्यावरण मानविकी में ज्ञान सृजन और वैश्विक छात्रवृत्ति में योगदान का लक्ष्य है। उभरते विषयों में नए शैक्षणिक कार्यक्रम विकसित करके, विद्वानों और छात्रों की अगली पीढ़ी को डिजिटल छात्रवृत्ति और भविष्य के समाज की कल्पना करने और नवाचार करने के लिए ज्ञान और प्रशिक्षण से लैस करना हमारा लक्ष्य है।

परिकल्पना

डिजिटल और पर्यावरण मानविकी के क्षेत्र में नवाचार और सहयोग का एक अग्रणी केंद्र बनना, प्रौद्योगिकी और मानविकी के संगम पर अंतःविषय अनुसंधान, शिक्षाशास्त्र और आउटरीच पहलों को बढ़ावा देना।

डिजिटल और पर्यावरण मानविकी में अग्रणी उत्कृष्टता केंद्र

सुविधाएँ

कंप्यूटर, प्रयोगशाला उपकरण और शोध के लिए आवश्यक सॉफ्टवेयर व हार्डवेयर सहित अनुसंधान कार्य केंद्र स्थापित किया गया है। डिजिटल और पर्यावरण मानविकी के लिए आवश्यक उपकरण खरीदकर केंद्र में उपयोग के लिए व्यवस्थित कर दिए गए हैं। केंद्र प्रशिक्षण उपकरणों और तकनीकों से सुसज्जित है।

इसने i2S कोपीबुक OS A2 स्कैनर और एलआईएमबी प्रोसेसिंग सॉफ्टवेयर खरीदा है, साथ ही कुशल डिजिटलीकरण प्रक्रियाओं के लिए टीईएसएसईआरएसीटी ओसीआर सॉफ्टवेयर भी उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त, केंद्र के पास एक व्यापक सीएमआईई डेटाबेस भी है। गुणात्मक और मात्रात्मक विश्लेषण, विजुअलाइजेशन और 3डी मॉडलिंग के लिए, केंद्र ने OriginPro, ATLAS-ti और NVivo जैसे सॉफ्टवेयर खरीदे हैं। केंद्र धीरे-धीरे इन दो प्रमुख क्षेत्रों में शोध पुस्तकों और प्रकाशनों का एक पुस्तकालय भी विकसित कर रहा है।





STEERING COMMITTEE



Prof. Subhas S. Joshi
Director, IIT Indore
Chairperson, Advisory and Steering Committee



Prof. Nirmala Menon
Professor of Digital Humanities,
School of Humanities and Social Sciences
Convener, JPN Centre



Prof. Pritee Sharma
Professor of Economics
School of Humanities and Social Sciences
Co-Convener, JPN Centre



Prof. Biswarup Pathak
Professor of Computational Chemistry
IIT Indore
Member, JPN Centre



Prof. Abhishek Srivastava
Professor of Computer Science Engineering
IIT Indore
Member, JPN Centre

शैक्षणिक कार्यक्रम

जेपीएन सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस इन द ह्यूमैनिटीज़, मानविकी, संस्कृति, पर्यावरण और प्रौद्योगिकी के संगम पर अंतःविषय अनुसंधान और शैक्षणिक विकास को बढ़ावा देता है। नवंबर 2023 में, जेपीएन सेंटर ने डिजिटल और पर्यावरण मानविकी में एम.ए. और पीएचडी के लिए पाठ्यक्रम विकसित करने हेतु एक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समिति के साथ पाठ्यक्रम विकास कार्यशाला आयोजित की। पीएचडी कार्यक्रम 2024–25 के ऑटम में शुरू किया जाएगा।

परियोजनाएँ

शैक्षणिक कार्यक्रम		
कार्यक्रम	प्रवेश लेने वाले छात्र	वर्ष
पीएचडी (डीएच एंड ईएच)	05	जुलाई 2024 से प्रवेश
एमएस बाय रिसर्च (डीएच एंड ईएच)	01	जुलाई 2024 से प्रवेश

केंद्र की आउटरीच गतिविधियाँ

इसके अतिरिक्त, इस वर्ष, केंद्र ने शैक्षणिक वर्ष 2024–25 के लिए अपने आउटरीच प्रयासों के तहत विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित कीं। कुछ चुनिंदा आउटरीच गतिविधियाँ नीचे सूचीबद्ध हैं:

- भाषा दस्तावेज़ीकरण: तकनीकें और प्रौद्योगिकियाँ पर कार्यशाला (19–21 फ़रवरी 2024)
- डिजिटल मानविकी और अवसंरचना उपकरण अभिलेखागार और सिद्धांत कार्यशाला (18–19 सितंबर 2024)
- स्थानिक अर्थमिति कार्यशाला और पीएचडी संगोष्ठी (7–10 जनवरी 2025)
- वित्तीय अर्थमिति पर कार्यशाला (9–10 जनवरी 2025)
- अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक सहयोग कार्यशाला वैश्विक संगोष्ठी दक्षिण एशिया ऑनसाइट कार्यक्रम (17 – 23 फ़रवरी 2025)

केंद्र की आउटरीच गतिविधियों का उद्देश्य विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से जागरूकता बढ़ाना और जनसहभागिता को प्रोत्साहित करना था। ऐसी ही एक पहल जेपीएन द्वारा वित्त पोषित लेखन केंद्र परियोजना है, जिसके तहत सामुदायिक सहभागिता, भागीदारी और सहयोग को बढ़ावा देने वाली विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की गईं। केंद्र की गतिविधियों को नियमित रूप से इसकी वेबसाइट (<https://jpnnationalcentre.com/>) और लिंकडइन <https://www.linkedin.com/in/jaya-prakash-narayan-national-centre-of-excellence-in-the-humanities-195100288/recent-activity/all/> और ट्विटर (X) @jpncentre जैसे सोशल मीडिया हैंडल पर अपडेट किया जाता है।



जेपीएन राष्ट्रीय केंद्र द्वारा आयोजित कार्यशाला और संगोष्ठियों की झलकियाँ

अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ

जेपीएन राष्ट्रीय मानविकी उत्कृष्टता केंद्र, प्रौद्योगिकी और मानविकी के संगम पर अंतःविषयक अनुसंधान को बढ़ावा देता है। यह डिजिटल अभिलेखीकरण, कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान, डेटा विजुअलाइजेशन और सांस्कृतिक विरासत के भू-स्थानिक मानचित्रण में नई परियोजनाओं को सहायता प्रदान करता है। समावेशी और सुलभ ज्ञान प्रणालियों को बढ़ावा देकर, यह केंद्र डिजिटल युग के लिए ऐतिहासिक कलाकृतियों का संरक्षण और पुनर्व्याख्या करता है। केंद्र ने कई अंतःविषयक अनुसंधान परियोजनाओं की शुरुआत और समर्थन किया है। यह डिजिटल मानविकी (डीएच) और पर्यावरण मानविकी (ईएच) के क्षेत्रों में वार्षिक वित्त पोषण के अवसर प्रदान करता है, जिससे देश भर के विद्वान नवीन अनुसंधान कर सकें। ये अनुदान विशेष रूप से उन परियोजनाओं को समर्थन देने के उद्देश्य से हैं जिनके पास वित्तीय सहायता या उपयुक्त शैक्षणिक मंचों तक पहुँच का अभाव है, जिससे एक अधिक समावेशी और विविध अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा मिलता है।

प्रत्येक वर्ष यह शोध प्रस्ताव आमंत्रित करता है तथा विद्वानों को अनुदान, मार्गदर्शन और सहयोग के अवसर प्रदान करता है। नवाचार और



क्षमता निर्माण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के माध्यम से, केंद्र डिजिटल और पर्यावरण मानविकी के उभरते क्षेत्रों को आगे बढ़ाता है और मानवतावादी अन्वेषण के भविष्य को आकार देता है। वर्ष 2023-24 में, केंद्र को 47 शोध प्रस्ताव प्राप्त हुए और 10 को वित्त पोषण के लिए चुना गया। शैक्षणिक वर्ष 2024-25 में, केंद्र को देश भर के विभिन्न शोध संस्थानों से 45 शोध प्रस्ताव प्राप्त हुए और 24 को वित्त पोषण के लिए चुना गया। बाहरी विशेषज्ञों द्वारा सहकर्मी समीक्षा प्रक्रिया के बाद परियोजनाओं का चयन किया गया। चयनित परियोजनाओं को



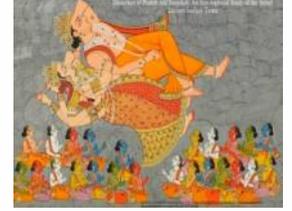
प्रस्तुत किया गया और विशेषज्ञ समिति द्वारा गहन मूल्यांकन के बाद अंतिम चयन किया गया। वित्त पोषित परियोजनाओं के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:

जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न आपदाओं के कारण सामाजिक-आर्थिक-पर्यावरणीय भेद्यता: मध्य प्रदेश के लिए तहसील-स्तरीय मूल्यांकन: यह परियोजना जल, खाद्य, उद्योग, ऊर्जा और पर्यावरण पर जलवायु और मानवजनित कारकों के क्षेत्रीय प्रभावों का पता लगाती है।



प्राचीन भारतीय बोर्ड गेम: भारतीय बोर्ड गेम (और अन्य इनडोर गेम भी) हमारी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इस परियोजना का उद्देश्य बोर्ड गेम की इन सांस्कृतिक स्मृतियों को संरक्षित करने के लिए एक डिजिटल संग्रह बनाना है और यह सांस्कृतिक अध्ययन और इतिहास के संगम पर स्थित है।

डिजिटल आर्काइव ऑफ नागा ओरल हेरिटेज: नागालैंड के एक मूल निवासी समूह, नागाओं की मौखिक कलात्मक और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के दस्तावेजीकरण के लिए एक नई पद्धति स्थापित करने का प्रयास करता है। अध्ययन में बताया गया है कि नागा लोकगीतों में महत्वपूर्ण सामुदायिक ज्ञान और ऐतिहासिक अंतर्दृष्टि निहित है, जिनका अभी तक सूचना के प्राथमिक स्रोत के रूप में पूरी तरह से उपयोग नहीं किया गया है।



प्रकृति और संस्कृति की डाइलेक्टिक्स: चुनिंदा प्राचीन भारतीय ग्रंथों का पारिस्थितिक-नैतिक अध्ययन: प्रस्तावित परियोजना का उद्देश्य विभिन्न संस्कृत धार्मिक ग्रंथों में वर्णित आदिम हिंदू सभ्यता की पारिस्थितिक-नैतिक प्रथाओं का अध्ययन करना है।

जेपीएन केंद्र द्वारा समर्थित परियोजनाओं की एक झलक नीचे दी गई है:



आईआईटी इंदौर में डिजिटल ह्यूमैनिटीज इंटरसेक्सन्स (डीएचआई) जर्नल का शुभारंभ

वर्ष 2024 के लिए केंद्र की प्रमुख उपलब्धियों में से एक भारत से पहली डिजिटल मानविकी पत्रिका का शुभारंभ था। डिजिटल मानविकी इंटरसेक्सन्स (डीएचआई) एक पूर्ण रूप से उपलब्ध, समकक्ष-समीक्षित पत्रिका है जो डिजिटल मानविकी में बहुभाषी और अंतःविषय अनुसंधान के लिए समर्पित है। केएसएचआईपी, आईआईटी इंदौर द्वारा प्रकाशित, यह पत्रिका मानविकी और डिजिटल विधियों के समागम का अन्वेषण करती है। डीएचआई बहुभाषी मानविकी, महत्वपूर्ण डिजिटल अध्ययन, मानविकी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डेटा विज्ञान, स्थानिक मानविकी, डिजिटल संग्रहण, ग्रंथसूची और डिजिटल मीडिया अध्ययन जैसे प्रमुख क्षेत्रों में शोध प्रकाशित करता है और विविध और समावेशी छात्रवृत्ति को बढ़ावा देता है। एफएआईआर सिद्धांतों (खोजने योग्य, सुलभ, अंतःक्रियाशील, पुनरु प्रयोज्य) के अनुरूप, डीएचआई छात्रवृत्ति की दृश्यता, सुगम्यता और प्रभाव को बढ़ाने का प्रयास करता है, एक व्यापक और समावेशी विमर्श को बढ़ावा देता है जो डिजिटल मानविकी में क्षेत्रीय और वैश्विक दोनों तरह की बातचीत को आकार देता है। पत्रिका का पहला अंक निर्माणाधीन है और अक्टूबर 2025 में लॉन्च होने वाला है।



<https://dhi.iiti.ac.in/index.php/dhjournal/index>

समूह:



प्रोफेसर निर्मला मेनन

संयोजक, जेपीएन राष्ट्रीय केंद्र
प्रोफेसर,
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान स्कूल, आईआईटी इंदौर
ईमेल: convenerjpn@iiti.ac.in
nmenon@iiti.ac.in

प्रो. निर्मला मेनन आईआईटी इंदौर में अंग्रेजी की प्रोफेसर और जेपीएन सेंटर ऑफ एक्सीलेंस इन द ह्यूमैनिटीज की संयोजक हैं। वह डिजिटल ह्यूमैनिटीज एंड पब्लिशिंग ग्रुप की प्रमुख हैं और उन्होंने उत्तर-औपनिवेशिक और डिजिटल ह्यूमैनिटीज पर महत्वपूर्ण रचनाएँ लिखी हैं। वह ऑक्सफोर्ड एफ्लिएट हैं और प्रमुख अनुदान प्राप्त कर चुकी हैं, साथ ही वह भारत में डिजिटल सांस्कृतिक विरासत और ओपन एक्सेस को भी बढ़ावा देती हैं।

शोध रुचियाँ

- टेक्स्ट माइनिंग और नैचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (एनएलपी)
- डिजिटल संस्करण और डिजिटल प्रकाशन
- डिजिटल संग्रहण और संरक्षण
- अनुवाद अध्ययन
- आभासी और संवर्धित वास्तविकता
- स्थानिक मानविकी और जीआईएस
- विभाजन अध्ययन
- ग्रंथसूची अध्ययन



प्रो. प्रीति शर्मा

सह-संयोजक, जेपीएन राष्ट्रीय केंद्र
प्रोफेसर,
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान स्कूल, आईआईटी इंदौर
ईमेल: psharma@iiti.ac.in

आईआईटी इंदौर में अर्थशास्त्र की प्रोफेसर और जेपीएन सेंटर की सह-संयोजक प्रो. प्रीति शर्मा कृषि एवं विकास अर्थशास्त्र, पर्यावरण मानविकी और जलवायु लचीलापन पर शोध करती हैं। उनका कार्य भूमि, जल और वन प्रशासन, ग्रामीण गरीबी और पारंपरिक प्रथाओं पर केंद्रित है। वे सस्टेनेबिलिटी स्टडीज़ लैब का नेतृत्व करती हैं, अंतःविषयक अनुसंधान में मार्गदर्शन करती हैं, और विकासशील देशों में पर्यावरण और व्यापार संबंधी मुद्दों पर व्यापक लेखन करती हैं।

शोध रुचियाँ

- जलवायु लचीलापन और अनुकूलन
- सतत कृषि और खाद्य प्रणालियाँ
- पारंपरिक जल प्रबंधन पद्धतियाँ
- पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं का मूल्यांकन
- पर्यावरण और विकास अर्थशास्त्र
- ग्रामीण आजीविका और गरीबी
- शहरी स्थिरता और भेद्यता
- वन और अग्नि प्रबंधन
- स्थिरता संकेतक और नीतिगत प्रभाव
- भू-सूचना विज्ञान और सतत विकास

RESEARCH ASSOCIATES



Dr. Reema Chowdhary



Dr. Subha Chakraborty



Dr. Dinabandhu Mahata



Dr. Justy Joseph

DOCTORAL STUDENTS



Mr. Suman Das



Ms. Anima Singh



Ms. khayti Garhwal



Ms. Tanusri Das

MS RESEARCH

SUPPORT STAFF



Mr. Himanshu Ramawat

WEB DEVELOPER



Mr. Aaditya Nayak

प्रशासन अनुभाग

प्रशासन अनुभाग सामान्य प्रशासनिक कार्यों और गैर-शैक्षणिक कार्मिकों से जुड़े सभी मानव संसाधन मामलों की देख-रेख करता है। यह प्रत्येक कार्मिक के संपूर्ण प्रशासनिक कार्यकाल का प्रबंधन करता है, पदभार ग्रहण करने से लेकर सेवानिवृत्ति तक और पूरे सेवा रिकॉर्ड का रखरखाव करता है। यह अनुभाग अधिष्ठाता, प्रशासन, सह अधिष्ठाता, प्रशासन (एचआर एवं नीति) और कुलसचिव के मार्गदर्शन में कार्य करता है और दैनंदिन गतिविधियों के लिए सहायक कुलसचिव (प्रशासन) और पाँच कार्मिकों की टीम कार्य करती है।

मुख्य जिम्मेदारियों में ये शामिल हैं: पदभार ग्रहण करने की औपचारिकता पूरी करना; व्यक्तिगत फाइलों और सेवा रिकॉर्ड का रखरखाव; वेतन, पदोन्नति, छुट्टी, एलटीसी, आश्रित रिकॉर्ड, प्रतिनियुक्ति, वार्षिक वेतन वृद्धि, पुष्टिकरण, अनुबंध कर्मचारियों के कार्यकाल विस्तार से संबंधित मामलों की प्रक्रिया करना।

यह अनुभाग गैर-शैक्षणिक कार्मिकों से जुड़े आरटीआई आवेदन, अपील, ऑडिट प्रश्न, कोर्ट केस और मंत्रालय, लोकसभा और राज्यसभा के प्रश्नों के उत्तर तैयार करता है। यह सीधी भर्ती और पदोन्नति के लिए आरक्षण तालिका का रखरखाव करता है, डीपीसी आदेश जारी करता है, स्थापना रजिस्टर का रखरखाव करता है और वेतन, ओवरटाइम, लीज़ रेंट और पोस्टल चार्ज के लिए मासिक बिल प्रोसेस करता है।

31 मार्च, 2025 तक, संस्थान में 171 गैर-शैक्षणिक कार्मिक हैं: श्रेणी क में 29, श्रेणी ख में 55 और श्रेणी ग में 87।

वर्ष के दौरान, इस अनुभाग ने एचआरएमएस सुविधा के माध्यम से परिवहन भत्ता में कटौती, पता प्रमाण पत्र जारी करने और बाहरी पदों के लिए एनओसी के अनुमोदन का ऑटोमेशन शुरू किया है। रिकॉर्ड ड्यूरेबिलिटी को बेहतर बनाने के लिए एक नया इंडेक्स फाइलिंग सिस्टम शुरू किया गया है। वार्षिक सेवा पुष्टिकरण और अचल संपत्ति रिटर्न जमा करने का काम समय पर किया गया। संस्थान की टेलीफोन डायरेक्टरी को पूरी तरह से डिजिटाइज़ कर दिया गया है। आरटीआई, कोर्ट केस, ऑडिट से जुड़े प्रश्न और संसदीय प्रश्नों समेत सभी वैधानिक और विधायी प्रश्नों का तुरंत उत्तर दिया गया। बड़े अस्पतालों और प्रयोगशाला को सीजीएचएस रेट पर पैनल में शामिल किया गया और सभी गैर-शैक्षणिक कार्मिकों के लिए आरक्षण तालिका अपडेट की गई। कई डीपीसी संचालित की गईं, और आउटसोर्स कर्मचारी के लिए सोशल-सिक्योरिटी के उपाय किए गए। प्रशासनिक दक्षता और कार्मिकों के मनोबल को मजबूत करने के लिए हर सप्ताह कर्मचारी प्रशिक्षण सत्र और पर्सनलाइज्ड बर्थडे और वर्क-एनिवर्सरी मैसेज की सुविधा शुरू की गई।



नीचे दी गई जानकारी के अनुसार, सभी गैर-शैक्षणिक कार्मिकों के लिए संस्थान के अधिकारियों द्वारा हर सप्ताह गृह प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए गए:

क्र. सं.	प्रशिक्षण सत्र का विषय	प्रशिक्षक / अनुदेशक	प्रशिक्षण की तिथि
01.	इन्वेंट्री – नुकसान और राइट-ऑफ प्रक्रिया	श्री सिबा प्रसाद होता, कुलसचिव	7 फरवरी, 2025
02.	सीपीडब्ल्यूडी मैनुअल और कार्यों के लिए निविदा	श्री पी वी नारायण राव, अधीक्षण अभियंता	14 फरवरी, 2025
03.	भाग-1: आईआईटीआई के आईटी अधिनियम और कानून	कमांडर सुनील कुमार (सेवानिवृत्त) संयुक्त कुलसचिव	20 फरवरी, 2025
04.	मानव संसाधन प्रबंधन और नेतृत्व	डॉ. कुमार गौरव सहायक कुलसचिव	28 फरवरी, 2025
05.	“विश्व स्तरीय संस्थान का लक्ष्य” (आईआईटी बॉम्बे प्रशासनिक प्रशिक्षण केंद्र में आयोजित प्रशिक्षण सत्र की झलकियां)	डॉ. कुमार गौरव, सहायक कुलसचिव श्री राजन थॉमस, सहायक कुलसचिव सुश्री चौनिका मल्होत्रा, कनिष्ठ अधीक्षक	7 मार्च, 2025
06.	सेवा त्यागना – सेवानिवृत्ति, ग्रेच्युटी, पेंशन और इसकी श्रेणी के अलावा	श्री अशोक कुमार देव उप कुलसचिव	21 मार्च, 2025
07.	अवकाश नियमावली	श्री राहुल लाल, कनिष्ठ सहायक	28 मार्च, 2025

गैर-शैक्षणिक कार्मिकों के लिए एक्सीलेंस अवार्ड्स – 2025

पुरस्कार श्रेणी	पुरस्कार विजेता का नाम
वरिष्ठ गैर-शैक्षणिक कार्मिक (श्रेणी 'क') में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन	1. डॉ. कुमार गौरव, सहायक कुलसचिव
कनिष्ठ गैर-शैक्षणिक कार्मिक (श्रेणी 'ख' व 'ग') में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन	1. श्री राजेश ठाकरे, कनिष्ठ अधीक्षक 2. सुश्री अपेक्षा राजपुरोहित, कनिष्ठ अधीक्षक 3. श्री पंकज कुमार साहू, प्रबंधक
तकनीकी कार्मिक में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन	1. श्री गौरव सिंह, कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक 2. सुश्री प्रिंसी अवधिया, एप्लीकेशन डेवलपर / सर्वर प्रोग्रामर
सहायक कार्मिक में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन	1. श्री जितेंद्र वर्मा, कनिष्ठ परिचारक (मल्टी स्किल्ड) ग्रेड-II 2. श्री अनूप शर्मा, परिचारक



भर्ती प्रकोष्ठ

परिचय:

भर्ती प्रकोष्ठ एक पारदर्शी, कुशल और प्रौद्योगिकी-संचालित भर्ती पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के उद्देश्य से कार्य करता है जो सर्वोत्तम कार्यप्रणालियों को आकर्षित और बढ़ावा देता है और सभी मानव संसाधन प्रक्रियाओं में उत्कृष्टता, समावेशिता और अखंडता सुनिश्चित करता है। यह संस्थान के कर्मचारियों से संबंधित सभी मानव संसाधन-संबंधी गतिविधियों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके कार्यों में सीधी भर्ती, संविदात्मक और आउटसोर्स नियुक्तियाँ, अंशकालिक नियुक्तियाँ और विभागीय पदोन्नति समिति (डीपीसी) प्रक्रियाएँ शामिल हैं। इस प्रकोष्ठ का नेतृत्व अपर कुलसचिव (भर्ती) करते हैं और दो कर्मचारियों की एक समर्पित टीम द्वारा समर्थित है।

प्रमुख जिम्मेदारियाँ:

प्रकोष्ठ की प्रमुख जिम्मेदारियाँ इस प्रकार हैं:

- (क) गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों की भर्ती।
- (ख) विभागीय पदोन्नति समिति (डीपीसी) की बैठकों का आयोजन करवाना और पदोन्नति एवं वित्तीय उन्नयन के मामलों पर कार्य करना।
- (ग) कर्मचारियों की भर्ती का व्यापक रिकॉर्ड बनाए रखना।
- (घ) कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग (डीओपीटी) पोर्टल पर भर्ती आंकड़ों को नियमित रूप से अपडेट करना।
- (ङ) दक्षता और पारदर्शिता बढ़ाने के लिए प्रक्रिया स्वचालन, डिजिटल दस्तावेजीकरण और ई-गवर्नेंस पहलों को लागू करना।
- (च) शिक्षा मंत्रालय (एमओई), आरटीआई आवेदनों और संसदीय प्रश्नावलियों (लोकसभा/राज्यसभा) के प्रश्नों का समय पर उत्तर देना।
- (छ) रोजगार मेला जैसी केंद्र सरकार की पहलों के साथ समन्वय करना।

प्रमुख गतिविधियों और उपलब्धियों की मुख्य विशेषताएं (2024-25):

- (क) डीपीसी प्रक्रिया के माध्यम से 24 पदोन्नति/वित्तीय उन्नयन सहित विभिन्न माध्यम से 64 कर्मचारियों की सफलतापूर्वक भर्ती की गई।
- (ख) भर्ती प्रक्रिया को सुव्यवस्थित और त्वरित करने के लिए संस्थान के भर्ती पोर्टल को उन्नत सुविधाओं के साथ उन्नत किया गया।
- (ग) भर्ती कार्यों को सुरक्षित और कुशलतापूर्वक समर्थन देने के लिए एक समर्पित विशिष्ट सर्वर स्थापित किया गया।
- (घ) पारंपरिक मैनुअल फाइलों के बजाय टैबलेट के माध्यम से आयोजित डिजिटल साक्षात्कारों सहित 100% कागज रहित भर्ती का लक्ष्य प्राप्त किया गया।

2024-25 के दौरान भर्ती किए गए कर्मचारी

मोड	कार्मिक की संख्या
सीधी भर्ती	02
विभागीय पदोन्नति (डीपीसी)	24
संस्थान अनुबंध	06
आउटसोर्स कर्मचारी	18
अंशकालिक खेल प्रशिक्षक	12
अंशकालिक विज़िटिंग सलाहकार और डॉक्टर	02

निष्कर्ष:

भर्ती प्रकोष्ठ सभी भर्ती प्रक्रियाओं में पारदर्शिता, दक्षता और सरकारी मानदंडों का पालन सुनिश्चित करके संस्थान के मानव संसाधन आधार को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। स्वचालन और डिजिटल परिवर्तन पर इसके निरंतर ध्यान ने संस्थान को उच्च शिक्षा पारिस्थितिकी तंत्र में कुशल, प्रौद्योगिकी-संचालित भर्ती प्रक्रियाओं के लिए एक आदर्श के रूप में स्थापित किया है।

वित्त एवं लेखा

2.1 वर्ष 2024-25 की आय और व्यय निम्नलिखित हैं:

(₹ करोड़ में)

क्र.सं.	विवरण	2024-2025 चालू वर्ष
1	आय	
1.1.	अनुदान	185.02
1.2.	शैक्षणिक प्राप्तियाँ	46.81
1.3.	निवेश से आय	0
1.4.	अर्जित ब्याज	19.46
1.5.	अन्य आय	3.78
1.6.	कुल 1	255.07
2	व्यय	
2.1.	कर्मचारी भुगतान और लाभ	105.43
2.2.	शैक्षणिक व्यय	32.19
2.3.	प्रशासनिक और सामान्य व्यय	32.88
2.4.	परिवहन व्यय	0.81
2.5.	मरम्मत और रखरखाव	11.84
2.6.	मूल्यह्रास	50.97
2.7.	अन्य व्यय	10.45
2.8.	कुल 2	244.57
3	शेष राशि व्यय पर आय की अधिकता	10.50

2.2 पूंजीगत परिसंपत्तियों के सृजन से संबंधित स्थिति निम्नानुसार है:

(₹ करोड़ में)

क्र.सं.	विवरण	2024-2025		
		हेफ़ा	अन्य उद्देश्य	कुल
2.1	सहायता अनुदान योजना की आरंभिक शेष राशि	11.57	0.06	11.63
2.2	वर्ष के दौरान प्राप्त अनुदान	95.96	215.15	311.11
2.3	आईआरजी से जोड़े गए ओएच-35 / ओएच-31 / ओएच-36 के अंतर्गत घाटा	0.00	8.24	8.24
2.4	संस्थान के पास उपलब्ध कुल धनराशि	107.53	223.45	330.98
2.5	राजस्व व्यय हेतु उपयोग किया गया अनुदान	0.00	175.62	175.62
2.5.1	हेफ़ा के लिए सावधि ऋण पर ब्याज	9.39	0.00	9.39
2.5.2	हेफ़ा ऋण की चुकोती (75 प्रतिशत)	95.15	0.00	95.15
2.6	आय और व्यय के उपयोग को समायोजित करने के बाद योजना अनुदान	104.54	175.62	280.16
2.7	बुनियादी ढाँचे, भवन और निर्माण कार्यों तथा उपकरणों और अन्य परिसंपत्तियों के विकास हेतु उपयोग	0.00	23.29	23.29
2.8	31.03.2025 तक अप्रयुक्त शेष राशि	2.99	24.54	27.53

2.3 निधियों की उपलब्धता और उसके उपयोग की स्थिति:

वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान, संशोधित विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) की स्वीकृत राशि ₹1,911.12 करोड़ के सापेक्ष, शिक्षा मंत्रालय द्वारा ₹311.11 करोड़ (आवर्ती एवं गैर-आवर्ती प्रयोजनों के लिए ₹215.15 करोड़ + हेफ़ा प्रयोजनों के लिए ₹95.96 करोड़) की राशि जारी की गई तथा ओएच-36/ओएच-31 के अंतर्गत घाटे को आईआरजी से ₹8.24 करोड़ की अनुदान सहायता में जोड़ा जा रहा है। वर्ष के दौरान, संस्थान की आंतरिक आय ₹27.26 करोड़ आंकी गई, जो कि आईआरजी (संस्थान का हिस्सा) से 25 प्रतिशत हेफ़ा मूल ऋण के भुगतान को समायोजित करने के बाद ₹31.72 करोड़, टीएल-4 पर हेफ़ा ब्याज ₹0.45 करोड़ और 01.04.25 तक ₹27.53 करोड़ की अव्ययित शेष राशि मानने के बाद है।

पूँजीगत परिसंपत्तियों के सृजन के लिए 23.29 करोड़ रुपये की राशि का उपयोग किया गया है तथा संस्थान के पास उपलब्ध अनुदान में से आवर्ती व्यय पर 280.16 करोड़ रुपये (आवर्ती प्रयोजन के लिए 175.62 करोड़ रुपये + हेफ़ा प्रयोजन के लिए 104.54 करोड़ रुपये) (जिसमें 50.97 करोड़ रुपये का मूल्यहास शामिल नहीं है) खर्च किए गए। वर्ष के लिए, 27.26 करोड़ रुपये की अतिरिक्त आंतरिक राजस्व प्राप्ति को हेफ़ा ऋण मूलधन (संस्थान का 25 प्रतिशत हिस्सा) और ब्याज (हेफ़ा टीएल-4 पर, कुल ब्याज का 10 प्रतिशत) और ओएच-36/ओएच-31 के अंतर्गत घाटे के पुनर्भुगतान को समायोजित करने के बाद संग्रह निधि में स्थानांतरित कर दिया गया।

2.4 वर्ष के दौरान किए गए सुधारों, उपायों और पहलों में शामिल हैं:

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान वित्त एवं लेखा विभाग से निम्नलिखित सुधार, उपाय और पहल शुरू की गईं:

2.4.1 वर्ष के दौरान पेट्रोल सॉफ्टवेयर क्रियान्वित किया गया है।

2.4.2 संस्थान ने इस सुविधा के लिए चौनल पार्टनर बैंक के रूप में भारतीय स्टेट बैंक, केनरा बैंक और एचडीएफसी बैंक लिमिटेड के साथ आईआईटी इंदौर वेबसाइट पर भुगतान गेटवे विकसित किया है।

2.5. बच्चों के लिए शिक्षा सहायता:

वित्तीय वर्ष 2024-2025 के दौरान, संस्थान ने भारत सरकार के मानदंडों के अनुसार शिक्षा सहायता के लिए 199 संकाय और कर्मचारी सदस्यों को ₹98,30,250/- की राशि की प्रतिपूर्ति की।

2.6. कर्मचारी सदस्यों के लिए परिवहन सुविधाएँ:

आईआईटी इंदौर परिसर इंदौर शहर से काफी दूर स्थित है, इसलिए संस्थान परिसर से इंदौर शहर तक कर्मचारियों के आवागमन के लिए छात्रों/संकाय सदस्यों/कर्मचारियों को रियायती दरों पर परिवहन सुविधाएं प्रदान की गई हैं।

2.7 अग्रिम:

रिपोर्टिंग वर्ष के दौरान, निम्नलिखित के लिए व्यक्तिगत अग्रिम के रूप में कुल ₹98.64 लाख की राशि स्वीकृत की गई।

क्र.सं.	अग्रिम का प्रकार	लाभार्थियों की संख्या	स्वीकृत राशि	31.03.2025 तक बकाया राशि
			(₹ में)	(₹ में)
1	भवन निर्माण अग्रिम	05	97,64,219	2,16,29,162
2	कार अग्रिम	—	—	42,000
3	पर्सनल कंप्यूटर अग्रिम	02	1,00,000	1,64,558
	कुल		98,64,219	2,18,35,720

2.8 बीमा:

संस्थान के सभी छात्रों को आंतरिक रोगी उपचार के लिए ₹2.50 लाख का समूह चिकित्सा बीमा कवर और ₹5.00 लाख का समूह व्यक्तिगत दुर्घटना कवर प्रदान किया जाता है। वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान बीमा पर व्यय ₹37,25,593/- है। बाह्य रोगी उपचार की देखभाल मुख्यतः स्वास्थ्य केंद्र द्वारा आंतरिक रूप से की जाती है।

2.09 फेलोशिप/छात्रवृत्ति:

2.09.1. शोध छात्रों के लिए:

वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान, संस्थान ने निम्नलिखित श्रेणी के छात्रों के लिए फेलोशिप वितरित की है:

क्र.सं.	छात्रों की श्रेणी	छात्रों की संख्या	फेलोशिप (प्रति माह)
01.	एमओई अनुदान द्वारा वित्तपोषित संस्थान – पीएचडी	258	जेआरएफ- ₹37,000/-
02.	डीएसटी वित्तपोषित (पीएचडी)	49	एसआरएफ- ₹42,000/-
03.	सीएसआईआर वित्तपोषित (पीएचडी)	72	
04.	यूजीसी वित्तपोषित (पीएचडी)	163	
05.	एमओई अनुदान द्वारा वित्तपोषित संस्थान – एम.टेक.	235	₹12,400/-
06.	एमओई अनुदान द्वारा वित्तपोषित संस्थान – एम.एस. रिसर्च	50	₹12,400/-
07.	डीबीटी – एनसीसीएस पुणे	7	₹37,000/-

2.09.2 मेरिट कम मीन्स छात्रवृत्ति:

संस्थान ने बी.टेक और एमएससी के छात्रों को मेरिट कम मीन्स छात्रवृत्ति के रूप में ₹ 5,04,000/- वितरित किए हैं, जो विभिन्न श्रेणियों के तहत संस्थान द्वारा निर्धारित पात्रता मानदंडों को पूरा करते हैं।

2.09.3 वंचित वर्ग के छात्रों को ट्यूशन फीस में छूट:

संस्थान ने शिक्षा मंत्रालय के पत्र एफ. सं. 24. 2/2016 TS 1 दिनांकित 04 अप्रैल, 2016 के अनुसार शैक्षणिक सत्र 2024-25 में प्रवेशित वंचित वर्ग के यूजी छात्रों की ट्यूशन फीस की छूट के रूप में ₹ 6,64,79,967/- का भुगतान/वितरण किया है।

सामग्री प्रबंधन अनुभाग (एमएमएस)

वित्तीय वर्ष 2024-2025 के लिए 31 मार्च, 2025 तक सामग्री प्रबंधन अनुभाग की गतिविधियों का विवरण

क्र.सं.	विवरण	2024-25	मूल्य (₹)
1.	कुल जनरेट किए गए इंडेंट	कुल इंडेंट – 812 (संख्या) विभागीय- 793 (संख्या) 10 लाख से अधिक की परियोजनाएँ – 19 (संख्या)	विभागीय निधि: ₹73.48 करोड़ 10 लाख से अधिक की परियोजना इंडेंट: ₹2.08 करोड़ कुल इंडेंट मूल्य: ₹75.56 करोड़
2.	कुल जारी खरीद आदेश	कुल संख्या 881 विस्तृत विभाजन: • कुल पीओ (एलपीसी): 502 संख्या (गैर-जीईएम) • कुल पीओ (पीएसी): 25 संख्या (गैर-जीईएम) • कुल पीओ (सीपीपीपी): 15 संख्या (ई-प्रोक्योरमेंट) • कुल जीईएम ऑर्डर – 339 संख्या (ई-प्रोक्योरमेंट)	कुल पीओ मूल्य ₹69,85,93,438 /- विस्तृत विभाजन: • पीओ मूल्य (एलपीसी): ₹16,74,73,052 /- (गैर-जीईएम) • पीओ मूल्य (पीएसी): ₹1,37,01,842 /- (गैर-जीईएम) • पीओ मूल्य (सीपीपीपी): ₹30,78,25,133 /- • जीईएम पर ई-प्रोक्योरमेंट: ₹20,95,93,411 /-
3.	सीधी खरीद के आदेश (जीईएम पर)	कुल ऑर्डर 1,675 संख्या	कुल ₹1,54,41,158 /-
4.	कुल स्वदेशी आदेश	1,691 संख्या	₹48,12,19,385 /-
5.	कुल आयात आदेश	16 संख्या	₹23,28,15,211 /-
6.	पूर्व-बोली बैठक	44 + संख्या	आपूर्ति के दायरे, तकनीकी विनिर्देशों, मूल्यांकन, मानदंडों और संभावित बोलीदाताओं के प्रश्नों को संबोधित करने के लिए कई निविदा प्रक्रियाओं के भीतर पूर्व-बोली बैठकों की व्यवस्था की गई है।
7.	पीबीजी वापस किया गया (समाप्त)	73 संख्या	₹2,56,00,000 /-
8.	रियायती सीमा शुल्क (आयात)	54 संख्या	₹1.12 करोड़
9.	भारत और विदेश में नमूनों/ स्पेयर पार्ट्स का निर्यात:	10 संख्या	अनुसंधान प्रयोजन के लिए नमूने भारत से बाहर भेजे गए।
10.	ईएमडी धनवापसी संसाधित (31.03.2025 तक अंतिम रूप दिए गए निविदाओं के लिए):	32 संख्या	₹13.96 लाख
11.	स्थापित साख-पत्र (एल/सी):	06 संख्या (विदेशी) 01 संख्या (स्वदेशी) कुल 07 संख्या	22.13 करोड़ 3.71 करोड़ स्थापित एलसी का कुल मूल्य: 25.84 करोड़
12.	कुल खरीद में से विभिन्न माध्यमों से खरीद का प्रतिशत	आदेशों की संख्या ई-प्रोक्योरमेंट (जीईएम + सीपीपी) = 68.93 प्रतिशत	मूल्य की संख्या के अनुसार ई-प्रोक्योरमेंट (जीईएम + सीपीपी) = 74.65%
13.	शिक्षा मंत्रालय से वैश्विक निविदा छूट अनुमोदन	05 संख्या	₹4.56 करोड़
14.	संकाय सदस्यों/छात्रों द्वारा सीधी खरीद के अंतर्गत आयात का समन्वय एवं निकासी	43 संख्या	₹21.56 लाख
केंद्रीय भंडारण			
15.	कुल स्टॉक प्रविष्टि (उपभोज्य)	5269 संख्या	₹18,24,04,482 /-
16.	कुल स्टॉक प्रविष्टि (गैर-उपभोज्य/संपत्तियां)	3209 संख्या	₹66,79,14,604 /-
17.	कुल बायबैक सामग्री/	41 संख्या	₹7,45,765 /-

सर्वोत्तम कार्यप्रणालियाँ:

क्र.सं.	विवरण	टिप्पणियाँ
1.	पूर्व-बोली बैठक	<p>पूर्व-बोली बैठकें बोली प्रक्रिया में पारदर्शिता, निष्पक्षता और प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देती हैं। ये संभावित बोलीदाताओं को परियोजना आवश्यकताओं पर स्पष्टीकरण प्राप्त करने के लिए एक मंच प्रदान करती हैं, जिससे सभी प्रतिभागियों के लिए समान अवसर सुनिश्चित होते हैं।</p> <p>तदनुसार, आईआईटी इंदौर ने वित्त वर्ष 2024-25 में अपनी निविदाओं में 44 से अधिक पूर्व-बोली बैठकें आयोजित की हैं, जिसके परिणामस्वरूप बोलीदाताओं के लिए पारदर्शिता और स्पष्ट रूप से अपने विचार रखने का अवसर सुनिश्चित हुआ है।</p>
2.	अयोग्य बोलीदाताओं को प्रतिनिधित्व का अवसर	<p>आईआईटी इंदौर अयोग्य बोलीदाताओं को अपना पक्ष रखने, किसी भी गलतफहमी को दूर करने और संभावित त्रुटियों को सुधारने की अनुमति देता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि योग्य बोलीदाताओं को निविदाओं में अनुचित तरीके से बाहर नहीं रखा गया है।</p> <p>यह दृष्टिकोण हमारी खरीद प्रणाली में पारदर्शिता और निष्पक्षता के सिद्धांतों को कायम रखता है।</p>
3.	परियोजना खरीद की समय सीमा के भीतर खरीद	<p>किसी परियोजना के लिए खरीद की समय-सीमा का ध्यान रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे परियोजना निष्पादन के लिए आवश्यक सामग्रियों, सेवाओं और उपकरणों की समय पर उपलब्धता सुनिश्चित होती है।</p> <p>तदनुसार, आईआईटी इंदौर ने परियोजना खरीद की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनुकूलित खरीद चक्र तैयार करने हेतु परियोजना आवश्यकताओं के लिए समयबद्ध खरीद प्रक्रिया शुरू की है।</p>
4.	क्षमता निर्माण	<ol style="list-style-type: none"> ईआरपी 2.0 – ईआरपी 2.0 की शुरुआत की गई है जिसमें इंडेंट निर्माण (सभी) से लेकर ऑर्डर (10 लाख तक) देने तक की पूरी प्रक्रिया ऑनलाइन है। सरकारी ई-मार्केटप्लेस (जीईएम) पर हैंडहोल्डिंग सत्र – सभी हितधारकों – इंडेंट, डीलिंग सहायक और कार्यालय कर्मचारियों – के लिए हैंडहोल्डिंग सत्र आयोजित किए जाते हैं। इन सत्रों का उद्देश्य खरीद और संबंधित गतिविधियों के लिए जीईएम प्लेटफॉर्म के प्रभावी नैविगेशन और उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करना है। उपरोक्त सत्रों के लिए एमएमएस में जीईएम हेल्प डेस्क और प्रशिक्षण डेस्क भी बनाया गया है।

अनुसंधान एवं विकास (आर एंड डी)

आईआईटी इंदौर मूल अध्ययन, अनुप्रयुक्त विज्ञान, प्रौद्योगिकी विकास और नवाचार जैसे क्षेत्रों में अंतर-अनुशासनात्मक अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। इस दूरदर्शी दृष्टिकोण ने संस्थान को विज्ञान, अभियांत्रिकी, मानविकी और सामाजिक विज्ञान सहित विविध क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया है।

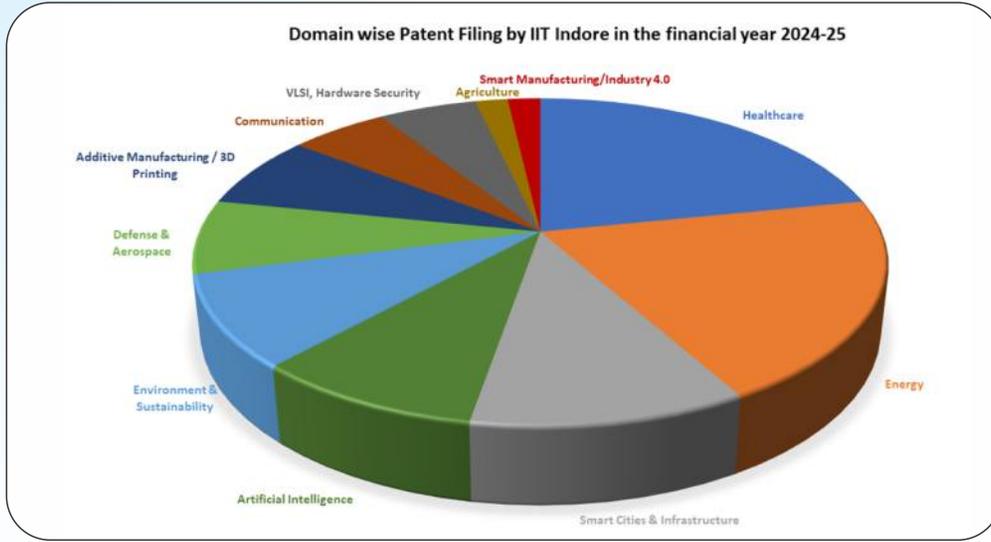
आईआईटी इंदौर की एक विशिष्ट विशेषता इसके शोध-आधारित शैक्षणिक कार्यक्रम हैं, जहाँ शोध को यूजी और पीजी दोनों पाठ्यक्रमों में सहजता से एकीकृत किया जाता है। संस्थान ने प्रोमोशन ऑफ रिसर्च एंड इनोवेशन फॉर अंडरग्रेजुएट स्टुडेंट्स (पीआरआईयूएस) योजना की वास्तविक रूप से शुरुआत करके उच्च-स्तरीय शोध के शुरुआती अनुभव को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया है, जिससे छात्रों को अपनी शैक्षणिक यात्रा की शुरुआत से ही अत्याधुनिक परियोजनाओं में कार्य करने का अवसर मिलता है।

आईआईटी इंदौर के अनुसंधान को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय, दोनों ही स्तरों पर व्यापक मान्यता प्राप्त हुई है। संकाय सदस्यगण और शोधकर्ता जापान, दक्षिण कोरिया, रूसी संघ, पुर्तगाल, फ्रांस, जर्मनी, यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमेरिका और कई अन्य देशों के प्रतिष्ठित संस्थानों और अनुसंधान संगठनों के साथ कई उच्च-प्रभावी अंतरराष्ट्रीय सहयोगों में सक्रिय रूप से शामिल हैं, जिससे संस्थान की वैश्विक अनुसंधान उपस्थिति को बल मिलता है।

अनुसंधान एवं विकास आईआईटी इंदौर की प्रमुख उपलब्धियाँ

1) समग्र आंकड़े:

- अब तक विभिन्न वित्त पोषण एजेंसियों की 800 अनुसंधान एवं विकास परियोजनाएँ चल रही हैं, जिनमें स्पर्क की 20 परियोजनाएँ और 623 परामर्श परियोजनाएँ शामिल हैं।
- विभिन्न प्रायोजित परियोजनाओं, परामर्श परियोजनाओं, कार्यशालाओं आदि से संस्थान को प्राप्त कुल निधि 814 करोड़ रुपये है।
- 9632 से अधिक प्रतिष्ठित प्रकाशन।
- वित्त वर्ष 2024-25 के दौरान, 55 भारतीय पेटेंट फाइल किए गए; जो पिछले वर्ष की तुलना में 67% की वृद्धि है। यह प्रभावशाली वृद्धि इसके शोधकर्ताओं के अथक प्रयास और इसके नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र की मजबूती को दर्शाती है। अब तक कुल 210 पेटेंट फाइल किए जा चुके हैं।
- संस्थान के आईपी पोर्टफोलियो को दो औद्योगिक डिज़ाइनों और दो पंजीकृत ट्रेडमार्क के साथ और संवर्धित किया गया, जो इसके रचनात्मक उत्पादन की विविधता और दायरे को रेखांकित करता है।
- 29 भारतीय पेटेंट प्रदान किए गए, जिससे वैज्ञानिक उत्कृष्टता और अनुप्रयुक्त अनुसंधान में संस्थान की राष्ट्रीय अग्रणी स्थिति की पुष्टि हुई। सबसे बड़ी प्रगति करने वाले क्षेत्रों में, स्वास्थ्य सेवा नवाचारों ने अग्रणी स्थान प्राप्त किया, जिसके बाद ऊर्जा क्षेत्र में महत्वपूर्ण विकास हुआ—दोनों ही क्षेत्र भारत के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- कुल 97 पेटेंट प्रदान किए गए हैं।
- दो प्रमुख प्रौद्योगिकियों का लाइसेंस उद्योग भागीदारों को सफलतापूर्वक प्रदान किया गया, जिससे अनुसंधान मार्केट-रेडी अनुप्रयोगों में बदल गया और प्रौद्योगिकी स्थानांतरण एवं व्यावसायीकरण में संस्थान की भूमिका सुदृढ़ हुई।
- अप्रैल 2023 और सितंबर 2024 के बीच फाइल किए गए पेटेंट आवेदनों के पूरे पोर्टफोलियो को एआईसीटीई की कपिला योजना (39 पेटेंट आवेदन) के तहत वित्तीय सहायता प्रदान की गई।
- प्रौद्योगिकियों के टीआरएल का लाभ उठाने के लिए संस्थान द्वारा ट्रांसलेशन रिसर्च फेलोशिप के लिए 1 करोड़ रुपये की वार्षिक सीमा के साथ 10-15 पदों को मंजूरी दी गई है।
- लैब टू लैब पारिस्थितिकी तंत्र को प्रोत्साहित करने के लिए 20 ट्रांसलेशनल रिसर्च फेलोशिप प्रदान की गई हैं।



2) हाल ही में स्वीकृत उच्च मूल्य वाली परियोजनाएँ:

आईआईटी इंदौर को एएनआरएफ पीएआईआर हब और एनएम-आईसीपीएस टीटीआरपी के लिए स्वीकृति मिल गई है। इसकी प्रक्रिया अंतिम चरण में है।

- एएनआरएफ पीएआईआर हब सक्षम:
एएनआरएफ-पीएआईआर योजना के तहत, आईआईटी इंदौर को छह प्रमुख संस्थानों: देवी अहिल्या विश्वविद्यालय (इंदौर), विक्रम विश्वविद्यालय (उज्जैन), आईआईआईटी भोपाल, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, एनआईटी कुरुक्षेत्र और आरटीएम नागपुर विश्वविद्यालय के साथ मिलकर सक्षम नामक एएनआरएफ-पीएआईआर नेटवर्क की मेजबानी के लिए चुना गया है। इस नए प्रयास के लिए अगले कुछ वर्षों में 100 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है।
- एनएम-आईसीपीएस टेक्नोलॉजी ट्रांसलेशन रिसर्च पार्क (टीटीआरपी):
आईआईटी इंदौर को राष्ट्रीय अंतःविषय साइबर-भौतिक प्रणाली मिशन (एनएम-आईसीपीएस) के तहत चार टेक्नोलॉजी ट्रांसलेशन रिसर्च पार्क (टीटीआरपी) में से एक की मेजबानी के लिए चुना गया है। आईआईटी इंदौर ने देश की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए एक मजबूत डिजिटल स्वास्थ्य बुनियादी ढाँचा बनाने हेतु आईआईटीआई दृष्टि-सीपीएस फाउंडेशन के माध्यम से एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया। आईआईटी इंदौर के प्रस्ताव की गहन जाँच के बाद, एनएम-आईसीपीएस के मिशन गवर्निंग बोर्ड ने 'डिजिटल हेल्थकेयर' के फोकस क्षेत्र में एनएम-आईसीपीएस के तहत टीटीआरपी में उन्नयन के लिए आईआईटीआई दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन का चयन किया है। इस नए प्रयास के साथ अगले कुछ वर्षों में 150 करोड़ रुपये का अतिरिक्त आवंटन भी शामिल है।

3) प्रमुख परियोजनाएँ:

- भारत में डिजिटल स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में स्थानांतरण अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए आईआईटी इंदौर में चरक सेंटर फॉर डिजिटल हेल्थकेयर की स्थापना की गई है।
- एग्री हब: एमईआईटीवाई द्वारा संस्थान को कृषि के लिए नवाचार केंद्र स्वीकृत किया गया है, जिसकी कुल लागत 14.98 करोड़ रुपये है।
- स्वयान: आईआईटी इंदौर की स्वयान परियोजना ने हमें भारत की ज़ोन प्रौद्योगिकी क्रांति में अग्रणी स्थान दिलाया है। अनुसंधान, नवाचार और कौशल विकास पर विशेष जोर देते हुए, इस परियोजना ने मानवरहित हवाई प्रणालियों (यूएस) में 450 से अधिक पेशेवरों को सफलतापूर्वक प्रशिक्षित किया है, जिससे देश की भविष्य की आवश्यकताओं के लिए एक उच्च कुशल कार्यबल का निर्माण हुआ है।
- 6जी लैब: संस्थान को 6जी नेटवर्क पर काम करने के लिए दूरसंचार विभाग (डीओटी), भारत सरकार द्वारा प्रतिष्ठित परियोजनाओं से सम्मानित किया गया है।
- डीएसटी सीपीआर-सीओई: तकनीकी नवाचार और बौद्धिक संपदा पर एक परियोजना।
- नर्मदा परियोजना: 100 करोड़ रुपये की लागत वाली एक उच्च प्रभाव वाली परियोजना। जल शक्ति मंत्रालय से नर्मदा नदी क्षेत्र प्रबंधन के लिए संस्थान को 6 करोड़ रुपये स्वीकृत।
- रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय, औषधि विभाग से संस्थान को बायोमेडिकल उपकरणों में एम.टेक कार्यक्रम के क्रियान्वयन के लिए 10.07 करोड़ रुपये की उच्च प्रभाव परियोजना स्वीकृत।

4) आईआईटी इंदौर में अनुसंधान, विकास और नवाचार में सुधार के लिए प्रोत्साहन:

- बाह्य वित्त पोषण एजेंसियों से प्रथम नियमित अनुदान प्राप्त होने से पहले, संस्थान द्वारा अब तक 6.57 करोड़ रुपये मूल्य के 66 वाईएफआरएसजी (यंग फैकल्टी रिसर्च सीड ग्रांट) ब्रिज फंडिंग के रूप में आईआईटी इंदौर के युवा संकाय सदस्यों को प्रदान किए गए हैं।
- अब तक संस्थान द्वारा आईआईटी इंदौर के युवा संकाय सदस्यों को 1.4 करोड़ रुपये मूल्य की 21 ड्रीम लैब परियोजनाएँ और 7 पीआरआईयूएस परियोजनाएँ प्रदान की गई हैं, जिनका उद्देश्य अत्याधुनिक शोध में उच्चस्तरीय शोध प्रशिक्षण प्रदान करना और आईआईटी इंदौर में नामांकित यूजी छात्रों के साथ मिलकर काम करना है।
- संस्थान द्वारा छात्रों और संकाय सदस्यों को 8 सर्वश्रेष्ठ प्रौद्योगिकी और 10 सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र पुरस्कार और 1 सर्वश्रेष्ठ समीक्षा पत्र पुरस्कार प्रदान किए गए हैं, प्रत्येक पुरस्कार के लिए 2 लाख रुपये की आकस्मिक राशि प्रदान की गई है।
- एसआईपीपीटी (स्कीम फॉर इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी प्रोटेक्शन एंड टेक्नोलॉजी ट्रांसलेशन): संस्थान द्वारा एसआईपीपीटी (स्कीम फॉर इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी प्रोटेक्शन एंड टेक्नोलॉजी ट्रांसलेशन) के अंतर्गत 61 आईडीएफ आवेदनों को स्वीकृति दी गई है, जिससे संकाय सदस्यों को भारतीय पेटेंट फाइल करने हेतु प्रत्येक पेटेंट के लिए ₹ 25,000 तक की आंशिक वित्तीय सहायता प्रदान की जा सके।
- टीआरएफ (ट्रांसलेशनल रिसर्च फेलो) प्रौद्योगिकियों के टीआरएल का लाभ उठाने के लिए 10-15 पदों की पेशकश की जाती है, जिसकी वार्षिक सीमा ₹ 1 करोड़ है। संस्थान द्वारा ट्रांसलेशन रिसर्च फेलोशिप के लिए 1 करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए हैं। लैब टू लैंड इकोसिस्टम को प्रोत्साहित करने के लिए 20 ट्रांसलेशनल रिसर्च फेलोशिप प्रदान की गई हैं।

5) आउटरीच:

- **रिसर्च स्पेक्ट्रम:** आईआईटी इंदौर की त्रैमासिक शोध पत्रिका; पिछले वर्ष रिसर्च स्पेक्ट्रम का खंड 1 (जिसमें 4 अंक हैं) और खंड 2 (अब तक 3 अंक) प्रकाशित हुए। रिसर्च स्पेक्ट्रम, आईआईटी इंदौर के संकाय सदस्यों और छात्रों द्वारा चयनित शोध कार्यों के ग्राफिकल सारांशों का संकलन है।
- **टेक्नोलॉजी हैंडबुक:** 'ए हैंडबुक ऑफ आइडियाज, इनोवेशंस एंड टेक्नोलॉजीज ऑफ आईआईटी इंदौर' का दूसरा संस्करण जारी किया गया है, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों की आईआईटी इंदौर की लगभग 200 प्रौद्योगिकियों का संकलन किया गया है।



- **वन वीक वन टेक्नोलॉजी:** आईआईटी इंदौर में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नवाचारों/अनुसंधान की समझ और शोध प्रसार को बढ़ाने के लिए रिसर्च आउटरीच के एक हिस्से के रूप में 'वन वीक वन टेक्नोलॉजी' अभियान शुरू किया गया है। ऐसे नवाचारों का विवरण विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित किया जा रहा है।
- **इनोव्हेस्ट टॉक्स:** अनुसंधान एवं विकास अनुभाग ने एक शोध आउटरीच कार्यक्रम के रूप में तकनीकी पॉडकास्ट शुरू किया है। इस मंच पर आईआईटी इंदौर के विभिन्न विभागों के संकाय सदस्यों के शोध कार्यों पर चर्चा की जाती है और रिकॉर्ड किए गए सत्र आधिकारिक यूट्यूब चैनल इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी ऑफिशियल पर उपलब्ध कराए जाते हैं।



Indian Institute of Technology Indore Official

@IITI_official • 113 subscribers • 18 videos

Welcome to the Official YouTube Channel of Indian Institute of Technology Indore.

Subsc...more

[linkedin.com/company/innquest-talks](https://www.linkedin.com/company/innquest-talks) and 3 more links

Customize channel

Manage videos

Videos

Shorts Palylists

Posts



Prof. Abhirup Datta on Building Space Science in India | InnoQuest Talks Ep#04...

33 views • 6 days ago



Prof. Palani on Smart Materials, DRDO & ISRO Collaborations | InnoQuest Talks Ep#...

461 views • 1 month ago



Prof. Devendra Deshmukh on Research, Leadership & Industry Collaboration |...

388 views • 3 months ago



Director IIT Indore Prof. Suhas Joshi x Priyanka Kimmatkar | Vision & Leadership |...

1.2K views • 4 months ago

अनुसंधान एवं विकास दलः



अंतर्राष्ट्रीय संबंध

आईआईटी इंदौर ने उच्चतर शिक्षा में साझेदारी के माध्यम से दुनिया भर में अपने शिक्षण और अनुसंधान का अंतर्राष्ट्रीयकरण करने में अपनी प्रभावशीलता सिद्ध की है। आईआईटी इंदौर विश्वस्तरीय अनुसंधान और शैक्षणिक सुविधाएँ, तकनीकी नवाचार केंद्र प्रदान करने और भारतीय संस्कृति, विरासत और भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु, हम अनुसंधान के अवसरों और संस्थानों के विकास पर सहयोग करने के लिए दुनिया भर में अपने सहयोगियों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। हमारा लक्ष्य अत्याधुनिक अनुसंधान क्षेत्रों में उत्कृष्टता केंद्र स्थापित करना है। यह एक ऐसे केंद्र के रूप में कार्य करेगा जो आज के समाज की प्रमुख समस्याओं के समाधान के लिए अनुसंधान, शिक्षा और कार्यप्रणाली को एकीकृत करेगा।

वर्तमान में, हमने विश्व भर में 130 से अधिक समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए हैं, 400 से अधिक विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ नेटवर्क विकसित किया है, विदेशी संस्थानों के साथ 40 से अधिक द्विपक्षीय अनुसंधान अनुदान, 9000 से अधिक प्रकाशन, 85 से अधिक ज्ञान परियोजनाएं, 28 से अधिक स्पार्क, वज़्र और एएसईएम-डीयूओ परियोजनाएं हैं।

आईआईटी इंदौर ने हाल ही में रूस, जर्मनी, ब्रिटेन, कैमरून, इथियोपिया, नेपाल, घाना और अन्य सार्क और आसियान, अफ्रीकी और मध्य पूर्व क्षेत्र से हमारे डिग्री और एक्सचेंज कार्यक्रमों में कई अंतर्राष्ट्रीय छात्रों की मेजबानी की है।

विश्व भर में हाल के सहकार्य:

संस्थान	देश
यूनिवर्सिटी ऑफ हडर्सफील्ड	यूके
यूनिवर्सिटी ऑफ रेन्सेस, फ्रांस (यूनिवरेन)	फ्रांस
यूनिवर्सिटी ऑफ विंडसर	कनाडा
यूनिवर्सिटी ऑफ ट्रांसपोर्ट टेक्नोलॉजी हनोई	वियतनाम
इंस्टीट्यूट टेक्नोलॉजी बांडुंग	इंडोनेशिया
यूनिवर्सिटी ऑफ स्प्लिट	क्रोएशिया
यूआईटी द आर्कटिक यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्वे	नॉर्वे
मॉस्को स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ सिविल इंजीनियरिंग	रूस
बेबेस-बोल्याई यूनिवर्सिटी, क्लुज-नेपोका	रोमानिया
पीटर द ग्रेट सेंट पीटर्सबर्ग पॉलिटेक्निक यूनिवर्सिटी	रूस
यूनिवर्सिटी ऑफ इलोरिन, नाइजीरिया (यूनिलोरिन)	नाइजीरिया
एशियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी	थाईलैंड
और कई अन्य विश्व-प्रसिद्ध संगठन...	

आईआईटी इंदौर-अंतर्राष्ट्रीय साझेदार:

जर्मन अकादमिक एक्सचेंज सर्विस, डीएएडी
भारत में अध्ययन
आसियान देशों के लिए भारत में डॉक्टरेट फ़ेलोशिप
भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्
नेपाल छात्रवृत्ति
हेरिटेज नेटवर्क
शास्त्री इंडो-कैनेडियन संस्थान
द एसोसिएशन ऑफ कॉमनवेल्थ यूनिवर्सिटीज
इरास्मस+
इंडो-इथियोपिया नेटवर्क: 45 इथियोपियाई विश्वविद्यालय

शैक्षणिक गतिविधियाँ

हमने विभिन्न शैक्षणिक/अनुसंधान कार्यक्रमों जैसे पीएचडी सह-पर्यवेक्षण, यूजी एक्सचेंज, सीवी रमन फेलोशिप, इंडिया साइंस एंड रिसर्च फेलोशिप (आईएसआरएफ), आसियान-इंडिया रिसर्च ट्रेनिंग फेलोशिप (एआई-आरटीएफ) आदि के तहत अंतर्राष्ट्रीय छात्रों/संकाय सदस्यों/शोधकर्ताओं की मेजबानी की है। हर साल, आईआईटी इंदौर विभिन्न सरकारी योजनाओं जैसे स्टडी इन इंडिया (एसआईआई), भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् (आईसीसीआर) और एसोसिएशन ऑफ साउथईस्ट एशियन नेशंस (आसियान), सार्क फाइनेंस-आरबीआई, नेपाल स्कॉलरशिप के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय छात्रों का प्रवेश प्रदान करता है।

वर्ष 2024-25 के अंतर्राष्ट्रीय संबंध कार्यक्रमों के इनबाउंड पुरस्कार विजेता:

क्र.	नाम	विभाग	कार्यक्रम	देश	वर्ष
1.	बिनोद सापकोटा	सीएसई	एक्सचेंज कार्यक्रम (अल्पकालिक अनुसंधान फ़ैलोशिप)	नेपाल	2024-25
2.	टिवोड्रोस कसाहुन	जानपद अभियांत्रिकी	एक्सचेंज कार्यक्रम (अल्पकालिक अनुसंधान फ़ैलोशिप)	इथियोपिया	2024-25
3.	शिमेलिस तमीन	यांत्रिक अभियांत्रिकी	एक्सचेंज कार्यक्रम (अल्पकालिक अनुसंधान फ़ैलोशिप)	इथियोपिया	2024-25
4.	उस्मान मोहम्मद अबुबकर	रसायन विज्ञान	एक्सचेंज कार्यक्रम (अल्पकालिक अनुसंधान फ़ैलोशिप)	नाइजीरिया	2024-25
5.	आस्था इलासनमी	एमईएमएस	एक्सचेंज कार्यक्रम (अल्पकालिक अनुसंधान फ़ैलोशिप)	नाइजीरिया	2024-25
6.	श्री इवांस अकीमत	बीएसबीई	एक्सचेंज कार्यक्रम (अल्पकालिक अनुसंधान फ़ैलोशिप)	इसहाक असियामाह	2024-25
7.	शादू बुकास अहमद अजमीर	सीएसई	एक्सचेंज कार्यक्रम (अल्पकालिक अनुसंधान फ़ैलोशिप)	मॉरीशस	2024-25
8.	श्री दीपक पौडेल	रसायन विज्ञान	एक्सचेंज कार्यक्रम (अल्पकालिक अनुसंधान फ़ैलोशिप)	नेपाल	2024-25
9.	श्री गेडेफॉ अस्मारे टैफेट	रसायन विज्ञान	एक्सचेंज कार्यक्रम (अल्पकालिक अनुसंधान फ़ैलोशिप)	इथियोपिया	2024-25
10.	श्री यूबा राज पौड्याल	सीएसई	एक्सचेंज कार्यक्रम (अल्पकालिक अनुसंधान फ़ैलोशिप)	नेपाल	2024-25

वर्ष 2024-25 अंतर्राष्ट्रीय संबंध कार्यक्रमों के आउटबाउंड पुरस्कार विजेता:

क्र.	नाम	विभाग	कार्यक्रम	विश्वविद्यालय, देश	वर्ष
1.	राखी साहा	भौतिकी	एक्सचेंज कार्यक्रम (अल्पकालिक अनुसंधान फ़ैलोशिप)	डैनकूक यूनिवर्सिटी, दक्षिण कोरिया	2024-25
2.	प्रीता मुखर्जी	एसएचएसएस	एक्सचेंज कार्यक्रम (अल्पकालिक अनुसंधान फ़ैलोशिप)	न्यू कैसल यूनिवर्सिटी	2024-25
3.	निखल कुमार पांडे	सीई	एक्सचेंज कार्यक्रम (अल्पकालिक अनुसंधान फ़ैलोशिप)	द यूनिवर्सिटी ऑफ हांगकांग	2024-25
4.	पूर्ण कुकड़िया	ईई	एक्सचेंज कार्यक्रम (अल्पकालिक अनुसंधान फ़ैलोशिप)	वेस्ट वर्जीनिया यूनिवर्सिटी	2024-25
5.	सौरभ मिश्रा	एमई	एक्सचेंज कार्यक्रम (अल्पकालिक अनुसंधान फ़ैलोशिप)	बेन-गुरियन यूनिवर्सिटी ऑफ़ द नेगेव, इज़राइल	2024-25
6.	उत्कर्ष बरनवाल	सीई	एक्सचेंज कार्यक्रम (अल्पकालिक अनुसंधान फ़ैलोशिप)	एशियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी, थाईलैंड	2024-25
7.	गुरु दयाल कुमार	एसएचएसएस	एक्सचेंज कार्यक्रम (अल्पकालिक अनुसंधान फ़ैलोशिप)	येल यूनिवर्सिटी, यूएसए	2024-25
8.	रजत कुमार	एमई	एक्सचेंज कार्यक्रम (अल्पकालिक अनुसंधान फ़ैलोशिप)	ट्रिनिटी कॉलेज डबलिन, आयरलैंड	2024-25
9.	विशेष गर्ग	सीएसई	एक्सचेंज कार्यक्रम (सेमेस्टर एक्सचेंज कार्यक्रम)	ब्राउनशिवग यूनिवर्सिटी, जर्मनी	2024-25
10.	समीर लक्कड़	एमई	एक्सचेंज कार्यक्रम (सेमेस्टर एक्सचेंज कार्यक्रम)	यूनाइटेड किंगडम	2024-25

मोबिलिटी ग्रांट 2024-25 के प्राप्तकर्ता

क्र.सं.	ग्रांट प्राप्तकर्ता का नाम	विभाग	संस्थान का दौरा
1.	डॉ. देबायन सरकार	रसायन विज्ञान	यूनिवर्सिटी ऑफ़ रेगेन्सबर्ग, जर्मनी
2.	डॉ. जयप्रकाश मुरुगेसन	एमईएमएस	नागाओका यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी, जापान
3.	प्रो. संजय कुमार सिंह	रसायन विज्ञान	यूनिवर्सिटी ऑफ़ अल्बर्टा, कनाडा

अंतर्राष्ट्रीय यात्रा ग्रांट 2024-25 के प्राप्तकर्ता

क्र.सं.	ग्रांट प्राप्तकर्ता का नाम	विभाग	संस्थान का दौरा
1	डॉ. चंद्रेश कुमार मौर्य	सीएसई	1. यूनिवर्सिटी ऑफ़ लीडेन, नीदरलैंड 2. यूनिवर्सिटी ऑफ़ ग्रोनिंगन, नीदरलैंड
2	डॉ. मोहनसुंदरी थंगावेल	एचएसएस	यूनिवर्सिटी ऑफ़ मोंटाना (यूएम), यूएसए
3	डॉ. अक्षय कुमार	एचएसएस	यूनिवर्सिटी ऑफ़ क्वींसलैंड, ब्रिस्बेन, ऑस्ट्रेलिया
4	डॉ. चंदन हलदर	एमईएमएस	एजीएच यूनिवर्सिटी ऑफ़ क्राको, पोलैंड
5	प्रो. पवन कुमार कंकर	एमई	फेडरेशन यूनिवर्सिटी ऑस्ट्रेलिया
6	डॉ. अमरेंद्र कुमार सिंह	रसायन विज्ञान	स्टॉकहोम यूनिवर्सिटी, स्वीडन
7	प्रो. तृप्ति जैन	ईई	न्यूकैसल यूनिवर्सिटी, यूके
8	डॉ. देबोप्रिया मुखर्जी	गणित	1. यूनिवर्सिटी ऑफ़ ऑकलैंड, न्यूजीलैंड 2. मोनाश यूनिवर्सिटी, ऑस्ट्रेलिया
9	डॉ. आशुतोष सखाराम मंडपे	सीई	नॉटिंगहम ट्रेट यूनिवर्सिटी, यूके
10	प्रो. शरद गुप्ता	बीएसबीई	यूनिवर्सिटी ऑफ़ बीलेफेल्ड, जर्मनी

अन्य शैक्षणिक कार्यक्रम (इनबाउंड):

इनबाउंड कार्यक्रम	प्राप्तकर्ता	गृह देश
संयुक्त-सह-पर्यवेक्षण कार्यक्रम	टिवोड्रोस गेरा	इथियोपिया
	मिन्याहिल तनाशु तोगा	इथियोपिया
	एफरेम अलेमु मंटोसे	इथियोपिया
	अयानो कोइरिटा बनाले	इथियोपिया

अंतर्राष्ट्रीय आउटरीच

अंतर्राष्ट्रीय आउटरीच भारत और अन्य देशों के बीच ज्ञान और कौशल के आदान-प्रदान को सुगम बनाने का एक तंत्र है, विशेष रूप से भारतीय विश्वविद्यालयों और विदेशों में स्थित सार्वजनिक संस्थानों/संगठनों के बीच सहयोग के माध्यम से। इस वर्ष हमने ऑनलाइन/ऑफलाइन माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों के प्रख्यात वक्ताओं द्वारा कई वेबिनार और वार्ताएँ आयोजित की हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख गतिविधियाँ इस प्रकार हैं:



जूलियस-मैक्सिमिलियंस-यूनिवर्सिटीएट वुर्जबर्ग के सहयोग से भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर में आईआरटीजी-डीएफजी कार्यशाला का आयोजन



जर्मन अनुसंधान दिवस सम्मेलन



जर्मन अनुसंधान दिवस सम्मेलन



ताइवान शिक्षा केंद्र की स्थापना



अमेरिकन फील्ड सर्विस (एएफएस) के सहयोग से एसटीईएम अकादमी कार्यक्रम के अंतर्गत 29 अंतर्राष्ट्रीय छात्रों का दौरा



आईआईटी इंदौर के प्रतिनिधिमंडल का थाईलैंड और वियतनाम दौरा



आईआईटी इंदौर के प्रतिनिधिमंडल का नेपाल दौरा



स्पार्क-यूकेआईआईआर परियोजना के तहत, 13 बी.टेक छात्रों का इंग्लैंड के यूनिवर्सिटी ऑफ प्लायमाउथ का दौरा।

अंतर्राष्ट्रीय छात्रों व आईआईटी समुदाय के बीच सहकार्य निर्माण हेतु नई पहल



आईआर कार्यालय में नववर्ष 2025 का उत्सव



रालामंडल वन्यजीव अभयारण्य की यात्रा



आईआईटीआई वन भ्रमण



दिवाली उत्सव

उपलब्धियाँ

2025 में आईआईटीआई के छात्रों को प्राप्त 45 से अधिक प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय फ़ैलोशिप

- रमन चारपाक फ़ैलोशिप
- प्रिंस ऑफ़ सोंगक्ला यूनिवर्सिटी, थाईलैंड में 2025-26 के लिए अनुसंधान इंटरशिप अनुदान
- 74वीं लिंडाऊ नोबेल पुरस्कार विजेता बैठक 2025 का निमंत्रण
- एनयूएस यंग फ़ैलोशिप कार्यक्रम -2025
- डीएएडी कोस्पी फ़ैलोशिप
- एल्यूएच-आईआईटीआई साझेदारी के तहत एल्यूएच एक्सचेंज मोबिलिटी कार्यक्रम
- लघु तत्काल आवश्यकता अनुदान
- साइंटिफिक हाई लेवल विज़िटिंग फ़ैलोशिप (एसएसएचएन)
- एमआईटीएसीएस
- ऊर्जा अनुसंधान संस्थान, एसडीएस, जिन्नान शहर, चीन में इंटरशिप कार्यक्रम
- लुइसियाना स्टेट यूनिवर्सिटी, अमेरिका में अनुसंधान इंटरशिप कार्यक्रम
- श्रमण छात्रवृत्ति

आईआईटीआई में अध्ययन/शोध के लिए अंतर्राष्ट्रीय छात्रों को 30 से अधिक फ़ैलोशिप प्राप्त हुईं
आईआईटीआई में अध्ययन/अनुसंधान के लिए अंतर्राष्ट्रीय छात्रों द्वारा प्राप्त फ़ैलोशिप

- एआई-आरटीएफ
- सीवी रमन रिसर्च फ़ैलोशिप

2025 में आयोजित जागरूकता कार्यशालाएँ व सेमिनार

- डीएएडी का आईआईटी इंदौर दौरा - जर्मनी में अध्ययन और अनुसंधान
- डीएफजी-जर्मन अनुसंधान दिवस
- यूएसआईईएफ-फुलब्राइट मार्गदर्शन कार्यशाला
- फ़्रांस में अध्ययन संगोष्ठी

पूर्व छात्र एवं कॉर्पोरेट संबंध (एसीआर)

एसीआर कार्यालय का परिचय: पूर्व छात्र एवं कॉर्पोरेट संबंध (एसीआर) कार्यालय की स्थापना पूर्व छात्रों एवं कॉर्पोरेट संस्थाओं के साथ संबंधों को बढ़ावा देने और उन्हें बनाए रखने के उद्देश्य से की गई है। इस कार्यालय में अधिकारियों और कर्मचारियों की एक समर्पित, गतिशील और उत्साही टीम शामिल है, जिसका नेतृत्व एसीआर के अधिष्ठाता, प्रोफेसर सुमन मुखोपाध्याय करते हैं, जो संस्थान के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए निरंतर कार्यरत हैं और इसके लक्ष्य के अनुरूप कार्य करते हैं।

क. एसीआर टीम द्वारा “पूर्व छात्र संबंध” को बढ़ावा देने के लिए की गई गतिविधियाँ:

1. पूर्व छात्र सम्मेलन:

- पहला सम्मेलन: 5 अक्टूबर, 2024 को एम्स्टर्डम, नीदरलैंड में भारत से बाहर पहले पूर्व छात्र सम्मेलन का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 12 पूर्व छात्र (अपने परिवार के सदस्यों सहित) शामिल हुए।
- दूसरा सम्मेलन: दूसरा भारत पूर्व छात्र सम्मेलन 8 और 12 दिसंबर 2024 को सिंगापुर में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 15 पूर्व छात्र (अपने परिवार के सदस्यों सहित) शामिल हुए।
- तीसरा सम्मेलन: तीसरा भारत पूर्व छात्र सम्मेलन 9 फरवरी 2025 को टोक्यो, जापान में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 25 पूर्व छात्र (अपने परिवार के सदस्यों सहित) शामिल हुए।
- चौथा सम्मेलन: 24 अगस्त, 2024 को दिल्ली में अपने तीसरे आउट-ऑफ-कैंपस पूर्व छात्र सम्मेलन—दिल्ली अध्याय का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 120 पूर्व छात्र (अपने परिवार के सदस्यों सहित) शामिल हुए।
- पाँचवाँ सम्मेलन: चौथा आउट-ऑफ-कैंपस पूर्व छात्र सम्मेलन—मुंबई अध्याय 22 फरवरी, 2025 को मुंबई में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 150 पूर्व छात्र (अपने परिवार के सदस्यों सहित) शामिल हुए।

2. मैग्नम ओपस 2025 (आईआईटी इंदौर परिसर में पूर्व छात्र का दौरा):

- मैग्नम ओपस 2025 – (पूर्व छात्रों और वर्तमान छात्रों का एक मिलन समारोह) 11 व 12 जनवरी, 2025 को आईआईटी इंदौर परिसर में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 60 पूर्व छात्र (अपने परिवार के सदस्यों सहित) उपस्थित थे।

3. पूर्व छात्रों के साथ सहयोग:

- बैंगलोर में बैंगलोर स्थित पूर्व छात्रों के साथ पहला समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

4. पूर्व छात्र आयोजन व इंटरैक्टिव सत्र:

- 29 मार्च, 2025 को आईआरएस शशांक गुप्ता के साथ मेंटरशिप कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा (प्रतिभागी: 90+ वर्तमान छात्र)।

5. वार्षिक पुस्तिका – 2024 व 2025:

- 2024 व 2025 के डिग्री प्राप्त करने वाले छात्रों के लिए वार्षिक पुस्तिका “एडीआईओएस 3.0 और 4.0” के 02 संस्करण जारी किए गए।

6. पूर्व छात्र पत्रिका – 2024 व 2025:

- 24 अगस्त, 2024 को पूर्व छात्र सम्मेलन – दिल्ली अध्याय के दौरान पूर्व छात्र पत्रिका संस्करण 2024 और 22 फरवरी, 2025 को पूर्व छात्र सम्मेलन – मुंबई अध्याय के दौरान संस्करण 2025 का विमोचन किया गया।

7. संस्थान समाचार पत्रिका:

नवंबर 2024 (त्रैमासिक) से संस्थान समाचार पत्रिका “पॉड पल्स” जारी किया गया।

8. चौरिटीज़ एंड फाउंडेशन (सीएएफ), अमेरिका:

सीएएफ अमेरिका से धनराशि प्राप्त हुई।

9. “युवा अन्स्टोपेबल स्कॉलरशिप स्कीम 2024–25”:

- इस कार्यक्रम के तहत, 26 बी.टेक छात्रों को वर्ष 2024–25 के लिए छात्रवृत्ति के रूप में कुल 4 लाख रुपये प्राप्त हुए हैं।

पूर्व छात्र संबंध गतिविधियों की कुछ झलकियाँ पूर्व छात्र सम्मेलन (देशवार)



05 अक्टूबर, 2024
एम्स्टर्डम, नीदरलैंड



8 व 12 दिसंबर, 2024
सिंगापुर



9 फरवरी, 2025
टोक्यो, जापान

पूर्व छात्र सम्मेलन (शहरवार अध्याय का आयोजन)



24 अगस्त, 2024, दिल्ली



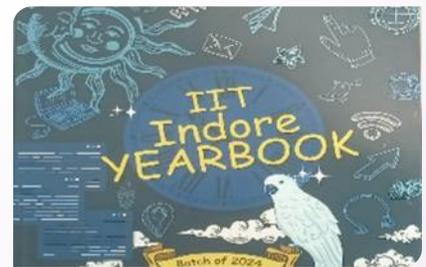
22 फरवरी, 2025, मुंबई



मैग्नम ओपस 2025



आईआईटीआई पूर्व छात्र अध्याय बेंगलूर
के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर



हमारे पूर्व छात्रों के साथ पूर्व छात्र आयोजन का सत्र



ख. “कॉर्पोरेट संबंध” को बढ़ावा देने के लिए एसीआर टीम द्वारा की गई गतिविधियाँ:

1) सीएसआर पहल के तहत परियोजना कार्यान्वयन:

क. हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (हुडको): आईआईटी इंदौर को आईआईटी इंदौर में पीएम-अजय विद्यार्थी छात्रावास के एक तल के निर्माण के लिए हुडको सीएसआर गतिविधियों के तहत वित्तीय सहायता प्राप्त हुई।

स्वीकृत धनराशि: 2.5 करोड़ रुपये।

ख. भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास एजेंसी (आईआरडीडी): भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) इंदौर, मध्य प्रदेश को आईआईटी इंदौर स्थित स्वास्थ्य केंद्र के लिए चिकित्सा उपकरणों की खरीद हेतु आईआरडीडी की सीएसआर गतिविधियों के अंतर्गत वित्तीय सहायता प्राप्त हुई।

स्वीकृत धनराशि: 10 लाख रुपये।

ग. जेएसडब्ल्यू सीमेंट: ‘जेएसडब्ल्यू सीमेंट’ द्वारा वित्तपोषित अनुसंधान परियोजना की स्वीकृति: जेएसडब्ल्यू सीमेंट द्वारा एक वर्ष की अवधि के लिए एक अनुसंधान परियोजना को मंजूरी दी गई है।

स्वीकृत धनराशि: 14 लाख रुपये।

घ. बीएसबीई के एक संकाय सदस्य: आईआईटी इंदौर ने एक अज्ञात दानकर्ता के साथ अगम प्रसाद मेमोरियल गोल्ड मेडल नामक एक नए पुरस्कार के गठन के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। यह पुरस्कार प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष में आईआईटी इंदौर के विभिन्न विभागों में उत्कृष्ट पीएचडी शोध प्रबंधों को मान्यता देने और पुरस्कृत करने के लिए है।

स्वीकृत धनराशि: 10 लाख रुपये।

ङ. प्रोफेसर गणित मूर्ति: आईआईटी इंदौर ने ‘श्री गणित सुब्बा राव और श्रीमती गणित वेंकट रमानी पुरस्कार’ नामक एक नए पुरस्कार की स्थापना के लिए आईआईटी इंदौर के बीएसबीई विभाग के प्रोफेसर जी.एस. मूर्ति के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इस पुरस्कार का उद्देश्य प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष में आईआईटीआई के अभियांत्रिकी विभागों में सर्वश्रेष्ठ पीएचडी शोध प्रबंध को पुरस्कृत करके अभियांत्रिकी के क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धियों को मान्यता देना और उन्हें पुरस्कृत करना है।

स्वीकृत धनराशि: 10 लाख रुपये

च. अदानी एंटरप्राइजेज: आईआईटी इंदौर ने एक पीएचडी स्कॉलर के लिए अदानी एंटरप्राइजेज के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसे ‘अदानी इंडोलॉजी पीएचडी स्कॉलरशिप’ के रूप में जाना जाता है और पीआई को ‘अदानी इंडोलॉजी चेरर प्रोफेसर’ के रूप में जाना जाता है।

स्वीकृत धनराशि: 1 करोड़ रुपये

1) उद्योग भ्रमण: आईआईटी इंदौर द्वारा मजबूत शैक्षणिक-उद्योग सहयोग को बढ़ावा देने और अनुसंधान साझेदारी, प्रौद्योगिकी स्थानांतरण और छात्र जुड़ाव के अवसरों की खोज के निरंतर प्रयासों के तहत, संस्थान के संकाय सदस्य और वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा क्षेत्र के प्रमुख उद्योगों के कई दौरे किए गए। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

उद्योग जगत का दौरा 7 जनवरी, 2025 को मेसर्स राल्सन टायर्स लिमिटेड, पीथमपुर, 24 जनवरी, 2025 को महले इंजन कंपोनेंट्स प्राइवेट लिमिटेड, पीथमपुर, 18 फरवरी, 2025 को जॉन डियर ट्रैक्टर, देवास प्लांट, 11 मार्च, 2025 को जेडएफ स्टीयरिंग, पीथमपुर, 8 अप्रैल, 2025 को कर्मिस टर्बोचार्जर, पीथमपुर।

2) आईआईटी इंदौर के छात्रों द्वारा कॉर्पोरेट/उद्योग भ्रमण: औद्योगिक अंतर्दृष्टि का वास्तविक अनुभव प्रदान करने के लिए, आईआईटी इंदौर के छात्र समूहों ने विभिन्न प्रतिष्ठित विनिर्माण और अभियांत्रिकी संयंत्रों का दौरा किया। इन यात्राओं में व्यावहारिक शिक्षा और ऑन-साइट इंजीनियरों के साथ तकनीकी चर्चा पर ध्यान केंद्रित किया गया।

क. वोल्वो आयशर कमर्शियल व्हीकल्स, (4 अप्रैल, 2025) 40 छात्र, 1 संकाय सदस्य

ख. वोल्वो आयशर कमर्शियल व्हीकल्स, (18 अप्रैल, 2025) 40 छात्र, 2 संकाय सदस्य

ग. सीएनएच कंस्ट्रक्शन्स (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, (21 मार्च, 2025) 40 छात्र, 4 संकाय सदस्य

घ. सीएनएच कंस्ट्रक्शन्स (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, (28 मार्च, 2025) 40 छात्र, 4 संकाय सदस्य

3) कॉर्पोरेट/उद्योग का आईआईटी इंदौर में दौरा: कई कॉर्पोरेट संस्थाओं और उद्योग के लीडर ने संभावित शोध साझेदारियों का अन्वेषण करने और कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) पहलों पर संस्थान के साथ जुड़ने के लिए शैक्षणिक वर्ष के दौरान आईआईटी इंदौर का दौरा किया। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

कॉर्पोरेट संबंध गतिविधियों की कुछ झलकियाँ



29 जनवरी, 2025 को सीएएसई उत्कृष्टता केंद्र (सीसीओई) का उद्घाटन



रालसन टायर्स लिमिटेड पीथमपुर (जिला-धार), 7 जनवरी, 2025



जॉन डीरे देवास प्लांट, 18 फरवरी, 2025



महले इंजन कंपोनेंट्स, 24 जनवरी, 2025



जेडएफ स्टीयरिंग, पीथमपुर प्लांट, 11 मार्च, 2025



श्री सचिन अग्रवाल, वीईसीवी द्वारा अतिथि व्याख्यान, 24 फरवरी, 2025



सीएनएच कंस्ट्रक्शन्स के श्री सतेंद्र तिवारी द्वारा अतिथि व्याख्यान, 19 मार्च, 2025



स्वर्ण पदक के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर, 14 जनवरी, 2025



एसबीआई फाउंडेशन भ्रमण, 13 नवंबर, 2024



टीम, पूर्व छात्र एवं कॉर्पोरेट संबंध (एसीआर)

शैक्षणिक बाह्यसंपर्क



शैक्षणिक बाह्यसंपर्क कार्यालय का परिचय:

शैक्षणिक बाह्यसंपर्क कार्यालय का दृष्टिकोण जीवन को आकार देने, समुदायों का निर्माण करने और एक समृद्ध विश्व बनाने में शिक्षा की परिवर्तनकारी क्षमता में गहरे विश्वास से प्रेरित है। हमारे मिशन के मूल में शिक्षा में उत्कृष्टता, समानता और सशक्तिकरण के प्रति प्रतिबद्धता निहित है। विभाग कौशल विकास कार्यक्रमों के साथ-साथ विभिन्न डिग्री और प्रमाणपत्र कार्यक्रमों का आयोजन कर रहा है।

1. डेटा विज्ञान एवं प्रबंधन में विज्ञान अधिस्नातक (एमएसडीएसएम):

आईआईएम इंदौर के सहयोग से, आईआईटी इंदौर ने डेटा विज्ञान एवं प्रबंधन में दो वर्षीय विज्ञान अधिस्नातक कार्यक्रम शुरू किया है। वर्ष 2021 से, अब तक चार बैच शुरू हो चुके हैं। आईआईटी इंदौर के 12वें दीक्षांत समारोह में बैच 1 और 2 से कुल 81 छात्रों ने डिग्री प्राप्त की। आगामी दीक्षांत समारोह में 75 छात्रों का तीसरा बैच ग्रेजुएट होगा और डिग्री प्रदान की जाएगी।

2. वोल्वो आयशर कमर्शियल व्हीकल (वीईसीवी) के कर्मचारियों के लिए एग्जेक्यूटिव एम.टेक:

संस्थान ने 31 जुलाई, 2023 को हस्ताक्षरित अकादमिक-उद्योग सहयोग के अंतर्गत, शैक्षणिक वर्ष 2023-24 में वीईसीवी लिमिटेड के कर्मचारियों के लिए 'हाइब्रिड एंड इलेक्ट्रिक व्हीकल' में दो वर्षीय एग्जेक्यूटिव एम.टेक कार्यक्रम शुरू किया है। पहले बैच में, वीईसीवी लिमिटेड के कुल 10 कर्मचारियों को शैक्षणिक वर्ष 2023-24 में नामांकित किया गया था। दूसरे बैच में, वीईसीवी लिमिटेड के कुल 09 कर्मचारियों को शैक्षणिक वर्ष 2024-25 में नामांकित किया गया था।

3. मध्य प्रदेश सरकार के इंजीनियरिंग कॉलेजों के छात्रों के लिए इनबाउंड यूजी कार्यक्रम:

संस्थान ने एक आउटरीच कार्यक्रम भी शुरू किया है, जिसके तहत मध्य प्रदेश सरकार के इंजीनियरिंग कॉलेजों के चयनित छात्रों को 28 अगस्त, 2023 को मध्य प्रदेश सरकार के तकनीकी शिक्षा, कौशल विकास एवं रोजगार विभाग (इन-बाउंड यूजी कार्यक्रम) के साथ हुए 'समझौता ज्ञापन' के तहत आईआईटी इंदौर में बी.टेक के अपने अंतिम वर्ष की पढ़ाई और उसे पूरा करने का अवसर दिया जाता है। पहले बैच में 23 और दूसरे बैच में 17 चयनित छात्र इस कार्यक्रम में शामिल हुए और आईआईटी इंदौर में अपना आठवां सेमेस्टर पूरा किया। तीसरा बैच संभवतः जुलाई/अगस्त 2025 में शुरू होगा।

4. **इंजीनियरिंग कॉलेज के संकाय के लिए पीएचडी कार्यक्रम (सीटी श्रेणी):**
शैक्षणिक सहयोग को बढ़ावा देने, शैक्षणिक अवसरों को बढ़ाने और अनुसंधान संस्कृति को बढ़ावा देने के पारस्परिक उद्देश्य को मान्यता देते हुए, आईआईटी इंदौर ने तकनीकी शिक्षा कौशल विकास एवं रोजगार विभाग, मध्य प्रदेश सरकार के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) के तहत यूनियर्सिटी इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी – राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भोपाल सहित सरकारी (स्वायत्त) इंजीनियरिंग कॉलेजों के स्थायी संकाय सदस्यों के लिए अंशकालिक डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएचडी) कार्यक्रम शुरू किया है, जिसे 28 अगस्त, 2024 को निष्पादित किया गया। पहले बैच में, यूनियर्सिटी इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी – राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भोपाल सहित सरकारी (स्वायत्त) इंजीनियरिंग कॉलेजों के कुल 03 संकाय सदस्यों को शैक्षणिक वर्ष 2024-25 में पीएचडी कार्यक्रम में नामांकित किया गया था।
5. **एमसीटीई महू के अधिकारियों के लिए एमटेक:**
आईआईटी इंदौर, आईआईटी इंदौर स्थित अत्याधुनिक रक्षा एवं अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी केंद्र (सीएफडीएसटी) के अंतर्गत प्रायोजित उम्मीदवारों (एसडब्ल्यू) श्रेणी के अधिकारियों के लिए दो वर्षीय एम.टेक डिग्री प्रोग्राम शुरू करने जा रहा है। इस पहल का उद्देश्य सशस्त्र बलों में प्रौद्योगिकी के समावेश को बढ़ावा देना और सैन्य अनुप्रयोगों के लिए अत्याधुनिक तकनीकों में विशेषज्ञ मानव संसाधन तैयार करना है। यह कार्यक्रम रक्षा कर्मियों को अत्याधुनिक तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान करेगा।
पहले बैच में, जुलाई 2025 बैच में कुल 30 सैन्य अधिकारी हमारे संस्थान में शामिल होंगे।
6. **आईआईटी इंदौर और नेशनल ऑटोमोटिव टेस्ट ट्रेक्स (एनएटीआरएक्स) के बीच सहयोग:**
आईआईटी इंदौर और नेशनल ऑटोमोटिव टेस्ट ट्रेक्स ने सड़क सुरक्षा, स्थिरता, ट्रैक पूर्वानुमानित रखरखाव, ट्रैक के लिए वैकल्पिक पदार्थों के उपयोग के साथ-साथ इलेक्ट्रिक वाहनों और बैटरी आदि क्षेत्रों पर संयुक्त अनुसंधान और प्रौद्योगिकी विकास परियोजनाएं संचालित करने के उद्देश्य से एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।
7. **साइबर सुरक्षा एवं साइबर कानून में एग्जेक्यूटिव कार्यक्रम:**
आईआईटी इंदौर और राष्ट्रीय विधि संस्थान विश्वविद्यालय (एनएलआईयू) ने साइबर सुरक्षा एवं साइबर कानून के क्षेत्र में कार्यरत पेशेवरों के लिए एक संयुक्त कार्यकारी मास्टर कार्यक्रम शुरू करने हेतु एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इस कार्यक्रम का उद्देश्य देश में डिजिटल परिवर्तन के लिए कुशल कार्मिक तैयार करना है, जिन्हें न केवल प्रौद्योगिकी बल्कि कानूनी पहलुओं में भी विशेषज्ञता हो।
8. **सैन्य प्रौद्योगिकी संस्थान (एमआईएलआईटी), पुणे के साथ शैक्षणिक सहयोग:**
सैन्य प्रौद्योगिकी संस्थान (एमआईएलआईटी), पुणे के साथ शैक्षणिक सहयोग, जिसमें आईआईटी इंदौर, अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में क्षमता निर्माण में एमआईएलआईटी, पुणे की सहायता करेगा।
9. **पीएम श्री जेएनवी के टीजीटी-विज्ञान और गणित के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम 25 से 29 नवंबर, 2024।**
शिक्षा मंत्रालय ने पीएम-श्री स्कूलों के शिक्षकों के लिए संरचित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से पूरे भारत में शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के उद्देश्य से एक योजना शुरू की है। यह पहल स्कूलों और उच्चतर शिक्षा संस्थानों में उभरती शैक्षणिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिक्षकों के शैक्षणिक कौशल, तकनीकी ज्ञान, शिक्षा में प्रौद्योगिकी के एकीकरण, विषय-विशिष्ट कौशल संवर्धन और समग्र योग्यता को उन्नत करने पर केंद्रित है। इस पहल के तहत, आईआईटी इंदौर को शिक्षण के स्तर को ऊपर उठाने और जमीनी स्तर पर शैक्षणिक आधार को मजबूत करने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण सत्र आयोजित करके कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया है।
इस कार्यक्रम के अंतर्गत 99 शिक्षकों ने एक सप्ताह के आवासीय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।
10. **प्रधानमंत्री श्री के.वी, और जेएनवी स्कूल के दौरे के लिए एक्सपोजर विजिट:**
आईआईटी इंदौर, स्कूली शिक्षा में समानता, पहुँच और समावेशन में परिवर्तन को बढ़ावा देने हेतु भारत सरकार की पीएम स्कूल फॉर राइजिंग इंडिया (पीएम श्री) योजना का एक हिस्सा है। पीएम श्री स्कूल का व्यापक उद्देश्य छात्रों का इस प्रकार पोषण करना है कि वे सक्रिय, उपयोगी और योगदान देने वाले नागरिक बनें। पीएम श्री स्कूल फॉर राइजिंग (पीएम श्री) के छात्रों के संस्थान भ्रमण का उद्देश्य छात्रों को भारत के एक प्रमुख तकनीकी संस्थान में विकसित अत्याधुनिक शोध, नवाचारों और शैक्षणिक उत्कृष्टता से परिचित कराना था। इस भ्रमण का उद्देश्य सैद्धांतिक ज्ञान और वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों के बीच के परस्पर ज्ञान और छात्रों की वर्तमान तकनीकी प्रगति और उनके कार्यान्वयन की समझ को बढ़ाना था।

अगस्त 2024 से मार्च 2025 तक, विभिन्न केंद्रीय विद्यालयों (केवी), पीएम श्री स्कूलों, जेएनवी और निजी स्कूलों के लगभग 1450 छात्रों ने आईआईटी इंदौर का दौरा किया है।

11. मार्गदर्शन योजना:

अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) की मार्गदर्शन योजना 2023 के अंतर्गत आईआईटी इंदौर को मेंटर इंस्टीट्यूशन (एमआई) के रूप में नामित किया गया है, जिसका उद्देश्य स्थानीय इंजीनियरिंग कॉलेजों (मेंटी बेनिफिशियरी इंस्टीट्यूट) को मार्गदर्शन प्रदान करना है। मार्गदर्शन योजना के अंतर्गत निम्नलिखित गतिविधियाँ संचालित की गईं:

- छात्रों और संकाय सदस्यों के लिए 2-दिवसीय स्टार्टअप बूटकैम्प;
- संकाय विकास कार्यक्रम;
- छात्रों के लिए व्यावहारिक शिक्षा;
- एनआईआरएफ रैंकिंग पर मार्गदर्शन।

12. मध्य प्रदेश सरकार के तकनीकी शिक्षा, कौशल विकास और रोजगार विभाग के अंतर्गत संत शिरोमणि रविदास ग्लोबल स्किल पार्क (जीएसपी):

आईआईटी इंदौर ने 04 अक्टूबर, 2023 को मध्य प्रदेश सरकार के तकनीकी शिक्षा, कौशल विकास एवं रोजगार विभाग के अंतर्गत संत शिरोमणि रविदास ग्लोबल स्किल पार्क (जीएसपी) के साथ एक समझौता किया, जिसके तहत आईआईटी इंदौर, जीएसपी में व्यावसायिक कौशल अधिग्रहण केंद्र-II (कोसा-II) में प्रशिक्षण सुविधा का संचालन करेगा और उद्योग-संबंधित कार्यक्रम प्रदान करेगा। इस योजना के संभावित लाभार्थी मध्य प्रदेश सरकार के तत्वावधान में संचालित शैक्षणिक संस्थानों के आईटीआई, डिप्लोमा और बी.ई./बी.टेक कार्यक्रमों के छात्र होंगे।

कुल 42 छात्रों ने भाग लिया और उन्हें केंद्रीय कार्यशाला में प्रशिक्षित किया गया।

मेकरस्पेस प्रयोगशाला – आईआईटी इंदौर

आईआईटीआई की मेकरस्पेस प्रयोगशाला में प्रोटोटाइप विकास, नवाचार और अनुभवात्मक शिक्षण के लिए अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित विश्वस्तरीय बुनियादी ढाँचा मौजूद है। इस प्रयोगशाला में पायलट स्तर पर प्रोटोटाइप और उत्पाद विकास आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रॉनिक्स, मैकेनिकल और कम्प्यूटेशनल से संबंधित सभी आवश्यक सुविधाएँ एक ही प्रयोगशाला में उपलब्ध हैं। यह प्रयोगशाला आईआईटी इंदौर के लगभग प्रथम वर्ष के यूजी छात्रों के लिए प्रयोगशाला सत्र आयोजित करती है। इसके अतिरिक्त, मेकरस्पेस प्रयोगशाला सीनियर यूजी छात्रों और पीजी एवं पीएचडी छात्रों को प्रदान किए जाने वाले कुछ अन्य मुख्य और वैकल्पिक पाठ्यक्रमों के लिए भी सहायता प्रदान करती है। इन सुविधाओं का उपयोग यूजी छात्र अपने अंतिम वर्ष के बी.टेक प्रोजेक्ट्स, परास्नातक और पीएचडी छात्र अपने शोध के लिए, और कई संकाय सदस्य अपने शोध प्रोजेक्ट्स को क्रियान्वित करने के लिए करते हैं।



शैक्षणिक वर्ष 2024–2025 के दौरान मेकरस्पेस प्रयोगशाला द्वारा की जाने वाली गतिविधियों की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

- **जेनेसिस कार्यक्रम:**— मेकरस्पेस प्रयोगशाला ने 27 से 31 जुलाई, 2024 तक नए शामिल हुए बी.टेक छात्रों के लिए जेनेसिस कार्यक्रम का आयोजन किया है। छात्रों द्वारा पुल बनाने की गतिविधि, गियरबॉक्स, रोबोट, कार्बोरेटर, क्लच, वाल्व, माइक्रोस्कोप, सीपीयू, माइक्रोवेव और पेपर श्रेडर के लिए असंबली / डिसएसेम्बली गतिविधि का प्रदर्शन किया गया।
- **प्रयोगशाला कक्षाएँ:**— मेकरस्पेस ने ऑटम और विंटर सेमेस्टर में मेकरस्पेस लैब (आईसी-152) की व्यावहारिक कक्षाएँ आयोजित कीं। सिलाई मशीन से एप्रन की सिलाई, 2डी और 3डी घटकों की मॉडलिंग, पाटर्स की 3डी प्रिंटिंग, मटेरियल्स की सीएनसी मशीनिंग, धातुओं को जोड़ना, सर्किट का सिमुलेशन, असंबली और ब्रेडबोर्ड पर परीक्षण, ऑसिलोस्कोप, फंक्शन जनरेटर, पावर स्रोत आदि की जानकारी पर व्यावहारिक कार्य। जॉइंट की सोल्डरिंग, सॉफ्टवेयर का उपयोग करके पीसीबी रूटिंग, पीसीबी निर्माण और परीक्षण, आर्डुइनो और रास्पबेरी-पीआई के लिए सेंसर को कोडिंग और इंटरफेसिंग, आर्डुइनो के साथ बुनियादी सिग्नल जनरेशन और मापन जैसे कार्य छात्रों (कुल 457 छात्रों) द्वारा पूरे किए गए।
- **मेकरस्पेस द्वारा पूरा किया गया निर्माण अनुरोध:**— मेकरस्पेस ने विभिन्न उद्देश्यों के लिए 34 विभिन्न कार्य अनुरोधों को पूरा किया है, जिनमें यूजी/पीजी शिक्षण, पीजी अनुसंधान, बीटीपी और प्रायोजित परियोजनाएँ शामिल हैं।

- लाइन फॉलोइंग रोबोट का प्रदर्शन (यूजी प्रथम वर्ष के छात्रों के पाठ्यक्रम का अंतिम प्रोजेक्ट आईसी-152):— बी.टेक. प्रथम वर्ष के छात्रों ने विभिन्न अनुप्रयोगों (जैसे कृषि, घरेलू कार्य, हाउसकीपिंग, औद्योगिक कार्य आदि) के लिए 80 लाइन फॉलोअर रोबोट तैयार किए हैं। प्रयोगशाला ने छात्रों को संसाधन, मार्गदर्शन और उपभोग्य सामग्रियों के संदर्भ में सहायता प्रदान की।



लाइन फॉलोअर रोबोट प्रस्तुति

- कैपस्टोन परियोजनाएँ:** छात्रों के व्यावहारिक कौशल को बढ़ाने और अंतःविषयक शिक्षण गतिविधियों को बढ़ावा देने, प्रोटोटाइप या उत्पाद बनाने और कक्षा में सीखी गई अवधारणाओं को वास्तविक जीवन में लागू करने में सक्षम बनाने के लिए, मेकरस्पेस प्रयोगशाला ने कैपस्टोन परियोजनाएँ प्रस्तुत की हैं। वर्तमान में संकाय सदस्यों द्वारा 23 परियोजना प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए हैं और 86 से अधिक छात्र 19 वास्तविक जीवन परियोजनाओं पर काम कर रहे हैं।
- प्रशिक्षण कार्यक्रम:— निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया है:**
 - मेकरस्पेस प्रयोगशाला (सीएलीट, उज्जैन) ने यूईसी उज्जैन के बी.टेक छात्रों के लिए 30 अप्रैल – 1 मई 2024, 12 –13 दिसंबर 2024, 23–24 दिसंबर 2024, 24–25 फरवरी 2025, 27–28 फरवरी 2025 तक डिजिटल मैनुफैक्चरिंग पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए हैं और कुल 142 छात्रों को प्रशिक्षित किया गया।
 - प्रतिष्ठित प्रोफेसरों/उद्योगपतियों/वैज्ञानिकों/संकाय सदस्यों/अधिकारियों/छात्रों का दौरा: वर्ष 2024–2025 के दौरान कई प्रतिष्ठित प्रोफेसरों/उद्योगपतियों/वैज्ञानिकों/संकाय सदस्यों/अधिकारियों/छात्रों (कॉलेज और स्कूल के छात्र) द्वारा मेकरस्पेस की अत्याधुनिक सुविधाओं का दौरा किया गया। सभी आगंतुकों ने मेकरस्पेस की सुविधाओं की सराहना की।

आधारभूत संरचना विकास कार्यालय



आधारभूत संरचना विकास कार्यालय के कार्मिक

आईआईटी इंदौर को 501.42 एकड़ भूमि आवंटित की गई, जिसमें 198 एकड़ वन क्षेत्र भी शामिल है। आईआईटी इंदौर का आधारभूत संरचना विकास कार्यालय उन सेवा विभागों में से एक है जो परिसर में आवश्यक बुनियादी ढाँचागत सुविधाएँ जैसे भवन, बिजली, पानी की आपूर्ति, सड़कें और मार्ग, पार्क और उद्यान तथा अन्य सभी आवश्यक सुविधाएँ प्रदान करने और उनके रखरखाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संस्थान ने 2.21 लाख वर्ग मीटर क्षेत्र (36 संरचनाओं) का निर्माण कार्य पूरा कर लिया है। इसके अलावा, चरण III (ए) का निर्माण कार्य शुरू हो चुका है, और चरण III (बी) और चरण III (सी) के लिए 624 करोड़ रुपये का प्रस्ताव मंत्रालय के विचाराधीन है।

पिछले वर्ष परिसर में निम्नलिखित विकास कार्य किए गए:

1. खेल मैदान का विकास
2. एलआरसी के चतुर्थ तल पर संकाय सदस्य केबिन का निर्माण
3. संवर्धन प्रौद्योगिकी उन्नति परिसर का निर्माण
4. क्षितिज मंडपम का निर्माण
5. मेघदूत सरोवर का विकास
6. वर्षा जल संचयन तालाबों का निर्माण
7. पशु प्रयोगशाला का निर्माण
8. प्रयोगशाला परिसर का निर्माण
9. बहुस्तरीय कार पार्किंग का निर्माण
10. पीएम-अजय के अंतर्गत छात्रावास निर्माण
11. कवर्ड कॉरिडोर का निर्माण
12. क्रिकेट मैदान में स्पाटर्स लाइटिंग की व्यवस्था
13. ईएसएस-07 में अतिरिक्त 2.5 एमवीए ट्रांसफार्मर
14. चरण III ए कार्य



1. खेल मैदान का विकास:

खेल मैदान की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

- 1) फुटबॉल मैदान
- 2) सिंथेटिक एथलेटिक ट्रैक
- 3) हॉकी मैदान
- 4) लॉन टेनिस कोर्ट – 2
- 5) वॉलीबॉल कोर्ट – 2
- 6) बैठने की गैलरी
- 7) बेसमेंट में वीआईपी लाउंज, छात्रावास, इनडोर खेल क्षेत्र, आदि।
- 8) विभिन्न खेल सुविधाएँ जैसे डिस्कस और हैमर बेस, जेवलिन थ्रो, हाई जंप, शॉर्ट पुट, स्टीपलचेज़, पोलो वॉल्ट, ट्रिपल जंप और लॉन्ग जंप, जिसमें वार्म-अप क्षेत्र भी शामिल है।

यह सुविधा 30.05.2025 को पूर्ण हुई थी।



2. एलआरसी के चतुर्थ तल पर संकाय सदस्य केबिन का निर्माण:

संकाय सदस्यों और छात्रों के बैठने की व्यवस्था के लिए, लाइब्रेरी भवन के चतुर्थ तल पर विभाजन कार्य करते हुए संकाय सदस्य केबिन बनाए गए हैं। इस क्षेत्र में 12 डिज़ाइन किए गए केबिन हैं, जिनमें से प्रत्येक का आकार लगभग 150 वर्ग फुट है, साथ ही लगभग 40 छात्रों के बैठने के लिए एक सामान्य बैठने की जगह भी है। यह सुविधा 07.06.2024 को पूर्ण हो गई और इसमें संचालन किया जा रहा है।



3. संवर्धन प्रौद्योगिकी विकास संकुल (ट्रांजिट लैब कॉम्प्लेक्स):

आईआईटी इंदौर ने मौजूदा दृष्टि भवन (ओल्ड टेस्ट बड्स बिल्डिंग) के पास प्रयोगशाला स्थल विकसित किए हैं। इस सुविधा में 4 प्रयोगशालाएँ हैं जिनका कुल क्षेत्रफल 4660 वर्ग फुट है। यह सुविधा 05.11.2024 को बनकर तैयार हो गई है और इसमें कार्य किए जा रहे हैं।

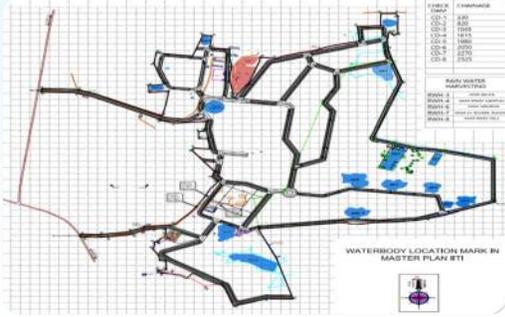


4. क्षितिज मंडपम का निर्माण:

विभिन्न आयोजनों के दौरान, आगंतुकों के लिए लंच/डिनर की व्यवस्था हेतु केंद्रीय आहार सुविधा के निकट एक विशाल भोजनालय का निर्माण किया गया है। इसमें 2500 लोगों की क्षमता वाला एक खुला हॉल, 2 रसोई क्षेत्र, 2 बर्तन धोने के क्षेत्र, 2 भण्डार कक्ष और 2 पेंट्री शामिल हैं। इस सुविधा का कार्य 18.01.2025 को पूरा हो गया और इसका संचालन किया जा रहा है।



5. **मेघदूत सरोवर का विकास:** आईआईटी इंदौर के छात्रों के आराम के लिए अभिनंदन भवन और पुस्तकालय के बीच एक जलाशय सहित मनोरंजन स्थल विकसित किया गया है। जलाशय के चारों ओर पैदल पथ और बैठने की जगह के साथ-साथ हरे-भरे पौधे भी लगाए गए हैं।



6. **वर्षा जल संचयन तालाबों का निर्माण:** आईआईटी इंदौर जल संरक्षण हेतु परिसर में लगभग 22.32 करोड़ लीटर की कुल क्षमता वाले 8 चेकडैम और 7 आरडब्ल्यूएच वर्षा जल संचयन तालाबों का निर्माण कर रहा है। 7 आरडब्ल्यूएच तालाबों में से 5 पहले ही विकसित हो चुके हैं और 2 प्रस्तावित हैं। इसके अलावा, संस्थान द्वारा 8 चेकडैमों में से 2 पहले ही विकसित किए जा चुके हैं और शेष 6 की योजना बनाई जा रही है। वर्तमान में विकसित कुल संग्रहण क्षमता 15 करोड़ लीटर है।



7. **पशु प्रयोगशाला:** यह बीएसबीई संकाय सदस्यों और छात्रों के लिए एक शोध सुविधा है जिसका कुल क्षेत्रफल 5509 वर्ग फुट है। इसे जी+3 के लिए नियोजित किया गया है और वर्तमान में यह केवल भू-तल पर है।



8. **प्रयोगशाला परिसर का निर्माण:** आईआईटी इंदौर में शिक्षकों और छात्रों की बढ़ती संख्या को देखते हुए, शिक्षकों और छात्रों की शोध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए लगभग 22,000 वर्ग फुट क्षेत्रफल में एक प्रयोगशाला की योजना बनाई गई है। इस प्रयोगशाला में 8 संकाय सदस्य केबिन और 24 संकाय सदस्य केबिन और 96 छात्रों के बैठने की जगह होगी।



9. **बहुस्तरीय कार पार्किंग का निर्माण:** आईआईटी इंदौर में संकाय सदस्यों और कर्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए, संस्थान द्वारा यहाँ के सदस्यों और आगंतुकों के लिए एक बहु-स्तरीय पार्किंग सुविधा विकसित करने की आवश्यकता देखी गई। इस पार्किंग सुविधा में 76 कारों (38 भू-तल पर + 38 छत पर) की क्षमता है और यह अभिनंदन भवन और एलआरसी के पास स्थित है।



10. **पीएम-अजय के अंतर्गत छात्रावास निर्माण:** सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा प्रायोजित प्रधानमंत्री अनुसूचित जाति अभ्युदय योजना (पीएम-अजय) के अंतर्गत छात्रावास निर्माण का प्रावधान है। छात्रावास की क्षमता 250 लोगों की है। छात्रावास में जी+5 मंजिला भवन है जिसका क्षेत्रफल 6,550 वर्ग मीटर है।



11. **कवर्ड कॉरिडोर का निर्माण:** कवर्ड कॉरिडोर का निर्माण बरसात और गर्मियों के मौसम में छात्रावास ब्लॉक से शैक्षणिक ब्लॉक तक छात्रों की आवाजाही को सुगम बनाने के लिए किया जा रहा है। यह कार्य लगभग 808 मीटर लंबाई में किया जा रहा है।



12. **क्रिकेट मैदान में स्पोर्ट्स लाइटिंग:** क्रिकेट मैदान में कक्षा-I गैर-टेलीविजन लाइटिंग स्तर की स्पोर्ट्स लाइटिंग प्रदान की जाती है ताकि छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों को दिन के उजाले के बाद अभ्यास सत्र और मैच आयोजित करने में सुविधा हो।



13. **ईएसएस-07 पर अतिरिक्त 2.5 एमवीए ट्रांसफार्मर:** बढ़ती लोड मांग, बिजली की अतिरिक्तता और भविष्य में विस्तार की आवश्यकताओं को देखते हुए, ईएसएस-07 (सेंट्रल वर्कशॉप के पास) पर एक अतिरिक्त 2.5 एमवीए, 11/0.433 केवी ड्राई टाइप ट्रांसफार्मर की स्थापना की गई। ईएसएस-07 पर अतिरिक्त ट्रांसफार्मर की स्थापना से निम्नलिखित उद्देश्य पूरे होंगे:

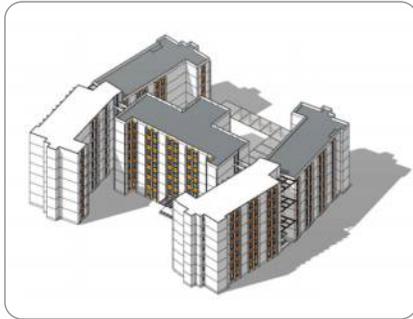
- (क) लोड शेयरिंग: यह ट्रांसफार्मरों के बीच लोड को समान रूप से वितरित करने में मदद करेगा जिससे ओवरलोडिंग को रोका जा सकेगा।
- (ख) प्रणाली विस्तार: यह आगामी बुनियादी ढाँचे और उपकरणों की सहायता करेगा जिससे बिजली की माँग में वृद्धि होगी।
- (ग) बेहतर विश्वसनीयता: मौजूदा ट्रांसफार्मर की विफलता या रखरखाव की स्थिति में बढ़ी हुई बैकअप क्षमता।
- (घ) वोल्टेज स्थिरता: उच्च माँग की स्थिति में बेहतर वोल्टेज रेग्यूलेशन।

14. चरण III (ए) कार्य: संस्थान की शैक्षणिक और अनुसंधान गतिविधियों के विस्तार के कारण शैक्षणिक और सहायक बुनियादी ढाँचे का निर्माण आवश्यक है, जिसके लिए संस्थान ने चरण III (ए) के अंतर्गत कार्यों की योजना बनाई है। प्रस्तावित राशि 496 करोड़ रुपये है और इसे हेफ़ा द्वारा स्वीकृत किया गया है। कार्य प्रगति पर हैं। संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैं:

Other Academic Programmes (Inbound):

कार्य का नाम	क्षेत्र / तल	सुविधाएँ
छात्रावास (बीएच 07)	15450 / जी+6	750 (सं.) ऑक्योपेंसी
छात्रावास (जीएच 02)	15450 / जी+6	750 (सं.) ऑक्योपेंसी
छात्रावास (जीएच 04)	15450 / जी+6	750 (सं.) ऑक्योपेंसी
स्टूडियो अपार्टमेंट (एसए 01)	11000 / जी+7	104 2बीएचके और 16 1बीएचके इकाइयाँ
आवासीय परिसर (एफएच 07)	9795 / जी+7	64 2बीएचके इकाइयाँ
भारी और परिष्कृत प्रयोगशाला परिसर (शैक्षणिक पॉड)	28820 / जी+5	कुल क्षेत्रफल 28820 वर्ग मीटर है। 6 दोहरी ऊँचाई वाली भारी प्रयोगशालाएँ 24 मॉड्यूल-2 प्रयोगशालाएँ
शैक्षणिक पॉड		53 मॉड्यूल-3 प्रयोगशालाएँ 12 सीओई प्रयोगशालाएँ
उत्कृष्टता केंद्रों के लिए बुनियादी ढाँचा		2 एसआईसी प्रयोगशालाएँ 96 संकाय सदस्य कक्ष 384 छात्र के बैठने की जगह

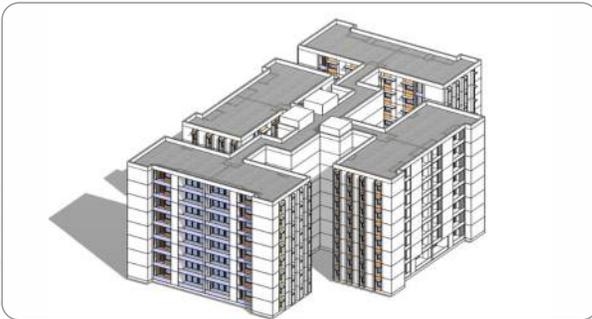
3 छात्रावासों के लिए प्रस्तावित एलिवेशन



स्टूडियो अपार्टमेंट के लिए प्रस्तावित एलिवेशन



आवासीय परिसर के लिए प्रस्तावित एलिवेशन



भारी एवं परिष्कृत प्रयोगशाला परिसर (शैक्षणिक पॉड) के लिए प्रस्तावित एलिवेशन



छात्र कार्य

छात्र कार्य कार्यालय संस्थान और उसके छात्रों के बीच प्रशासनिक इंटरफ़ेस के रूप में कार्य करता है, जो मुख्य रूप से छात्र जिमखाना के माध्यम से छात्रों द्वारा संचालित विभिन्न पहलों और कार्यक्रमों की देखरेख और समर्थन करता है। इस कार्यालय का नेतृत्व निम्नलिखित द्वारा किया जाता है:

- प्रोफेसर श्रीवत्सन वासुदेवन – अधिष्ठाता, छात्र कार्य (डीओएसए)
- डॉ. संजीव सिंह – सह अधिष्ठाता, छात्र कार्य (एडीओएसए; कार्यकाल मई 2025 तक)
- डॉ. जयप्रकाश मुरुगेसन – सह अधिष्ठाता, छात्र कार्य (एडीओएसए1)
- डॉ. अभिजीत जोशी – सह अधिष्ठाता, छात्र कार्य (एडीओएसए2)
- कमांडर. सुनील कुमार (सेवानिवृत्त) – संयुक्त कुलसचिव
- सुश्री शिल्पा चौहान – कनिष्ठ अधीक्षक
- श्री सुरेंद्र सिंह सुल्या – डीओएसए के पीए

छात्र जीवन परिसर में छात्र जीवन सक्रिय, गतिशील है और शैक्षणिक उत्कृष्टता तथा व्यक्तिगत विकास, दोनों को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किया गया है। संस्थान निम्नलिखित के माध्यम से एक समग्र शिक्षण परिवेश को बढ़ावा देता है:

- विभिन्न क्लबों और प्रकोष्ठों के माध्यम से संरचित पाठ्येतर गतिविधियाँ।
- बी.टेक. परियोजना कार्य और औद्योगिक दौरे, व्यावहारिक शिक्षा को बढ़ावा देना।
- उद्योग और शिक्षा जगत के साथ मज़बूत जुड़ाव, छात्रों को वास्तविक दुनिया की चुनौतियों के लिए तैयार करना।
- एक स्वस्थ छात्र को व्यक्तिगत शैक्षणिक सहायता और मार्गदर्शन।

लाइव (जीवन कौशल पहल एवं मूल्य शिक्षा): लाइव एक समिति है जिसमें सभी हितधारक शामिल हैं जो छात्रों के कल्याण के लिए काम करते हैं। इस समिति में शिक्षाविदों, छात्र कार्य, स्वास्थ्य केंद्र और परामर्श केंद्र के सदस्य शामिल हैं। ये सभी एक ही मंच पर एकत्रित होकर छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने और उनकी विभिन्न चिंताओं का समाधान करने के तरीकों पर चर्चा करते हैं। चूंकि सभी हितधारक एक साथ मंच साझा करते हैं, इसलिए यह छात्रों की ज़रूरतों पर केंद्रित ध्यान देता है और आईआईटी इंदौर ऐसा मॉडल अपनाने वाला पहला संस्थान है।

जेनेसिस: आईआईटी इंदौर का एक प्रमुख ओरिएंटेशन कार्यक्रम, जेनेसिस (छात्र प्रेरणा व सहायता के माध्यम से उभरते नए प्रवेशकों का मार्गदर्शन), प्रथम वर्ष के छात्रों के संस्थान के परिवेश में एक सहज शैक्षणिक और भावनात्मक परिवर्तन सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इस अवधि के दौरान कोई कक्षाएं आयोजित नहीं की जाती हैं। इस कार्यक्रम में शैक्षणिक परिचय, मार्गदर्शन, स्वास्थ्य सत्र, संस्थागत लोकाचार से परिचय, और आर्मी एयरो नोडल सेंटर, आर्मी मार्कस्मैनशिप यूनिट, इन्फैंट्री संग्रहालय और कैडेट प्रशिक्षण सहित संरचित दौरे शामिल हैं। जेनेसिस छात्रों के बीच प्रारंभिक जुड़ाव, अनुशासन और संस्थागत जुड़ाव को बढ़ावा देता है।

जिमखाना: छात्र जिमखाना एक केंद्रीय छात्र निकाय है जो छात्र गतिविधियों और पहलों के समन्वय का कार्य करता है। यह पाँच मुख्य परिषदों में विभाजित है: विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, सांस्कृतिक परिषद, खेल परिषद, परामर्श, बाह्य संपर्क एवं पूर्व छात्र परिषद और शैक्षणिक परिषद।

विज्ञान एवं तकनीकी परिषद: कुल पंद्रह क्लबों के साथ, परिषद एक विलक्षण दृष्टि से एकजुट है: आईआईटी इंदौर में तकनीकी उत्कृष्टता को बढ़ावा देना। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद को आईआईटीआईएसओसी (आईआईटी इंदौर का समर ऑफ कोड) के सफल आयोजन पर गर्व है, साथ ही पूरे वर्ष कई समृद्ध कार्यशालाओं और कार्यक्रमों का आयोजन किया है। इन पहलों का उद्देश्य तकनीकी शिक्षा,



नवाचार और समग्र छात्र विकास को बढ़ावा देना है। सदस्यों ने अत्याधुनिक एआई अनुप्रयोगों से लेकर प्रतिस्पर्धी हार्डवेयर निर्माण तक लगातार चुनौतीपूर्ण और नई परियोजनाएं शुरू की हैं और उल्लेखनीय सफलता के साथ राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है। इस वर्ष, परिषद एनआईडीएआर और आईकेआर जैसे प्रतिष्ठित प्लेटफार्मों में भाग लेगी, जो राष्ट्रीय और वैश्विक तकनीकी क्षेत्रों में आईआईटी



इंदौर की उपस्थिति को मजबूत करने के हमारे मिशन में एक और कदम आगे बढ़ाएगा।

सांस्कृतिक परिषद: सोलह क्लबों से मिलकर बनी इस परिषद ने संस्थान को संस्कृति, रचनात्मकता और सामुदायिक जुड़ाव के एक उन्नतिशील केंद्र में बदल दिया है, जहाँ इसके छात्रों की अपार प्रतिभा और विविधता का प्रदर्शन होता है। पूरे शैक्षणिक वर्ष के दौरान, सांस्कृतिक परिषद ने छात्र समुदाय की भावना, प्रतिभा और रचनात्मकता का उत्सव मनाकर परिसर को जीवंत बना दिया। स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस और शिक्षक दिवस पर मनमोहक प्रस्तुतियों से लेकर भारतीय शास्त्रीय कलाओं की भावपूर्ण अभिव्यक्ति तक, हर कार्यक्रम ने सांस्कृतिक समृद्धि और कलात्मक उत्कृष्टता के प्रति परिषद की प्रतिबद्धता को दर्शाया। आईबीसीसी और टी बनाम एम जैसे प्रतिस्पर्धी कार्यक्रमों ने छात्रों की बौद्धिक गहराई को चुनौती दी, जबकि रंगरेज़ा, सांस्कृतिक संध्याएँ, संगीत संध्याएँ, नाटक प्रदर्शन, गरबा नाइट्स और दान अभियान जैसे उत्सवी समारोहों ने समुदाय, उत्सव और करुणा को बढ़ावा दिया।



खेल परिषद: संस्थान को 38वें इंटर आईआईटी एक्वेटिक्स मीट की मेज़बानी करने का गौरव प्राप्त हुआ, जिसमें 18 आईआईटी संस्थानों के शीर्ष एथलीटों ने उत्कृष्टता, खेल भावना और सौहार्द की भावना से प्रतिस्पर्धा करने के लिए एक साथ आए। इस आयोजन में रोमांचक तैराकी और वाटर पोलो प्रतियोगिताओं का प्रदर्शन किया गया, जिसमें देश भर के छात्र-एथलीटों के समर्पण और प्रतिभा को उजागर किया गया। मेज़बान के रूप में, संस्थान ने विश्वस्तरीय सुविधाएँ, सफल आयोजन और जीवंत परिवेश प्रदान किया, जिसने इस आयोजन को एक यादगार सफलता बना दिया।



हमें गर्व है कि हमने 57वें इंटर आईआईटी स्पोर्ट्स मीट का आयोजन किया, जो आईआईटी क्षेत्र के सबसे प्रतिष्ठित खेल आयोजनों में से एक है। सभी 23 आईआईटी संस्थानों के प्रतिभागियों के साथ, यह आयोजन एथलेटिक क्षमता, टीम वर्क और प्रतिस्पर्धी भावना का एक भव्य उत्सव था। कड़े मुकाबलों से लेकर दृढ़ता और एकता के प्रेरक प्रदर्शनों तक, यह स्पोर्ट्स मीट छात्र खेल संस्कृति की मज़बूती का एक सच्चा प्रमाण था। संस्थान को आतिथ्य, बुनियादी ढाँचे और कार्यक्रम प्रबंधन में



एक नया मानक स्थापित करने पर गर्व है।

इसके अलावा, स्पोर्ट्स काउंसिल ने जोश, शौर्य और जनरल चौम्पियनशिप सहित एथलेटिक कार्यक्रमों की एक गतिशील श्रृंखला के माध्यम से परिसर जीवन को ऊर्जावान बनाना जारी रखा। ये पहल उत्साही छात्र भागीदारी को बढ़ावा देने और संस्थान भर में एक मज़बूत, समावेशी खेल संस्कृति विकसित करने के लिए डिज़ाइन की गई हैं। वर्ष का एक प्रमुख आकर्षण लक्ष्य 3.0 था, जो आईआईटी इंदौर का प्रमुख इंटर-कॉलेज खेल उत्सव था, जो फरवरी 2025 में छगनाइट द स्पिरिट थीम के



तहत आयोजित किया गया था। इस आयोजन में देश भर के 12-15 संस्थानों ने भाग लिया, जिसमें 500 से अधिक एथलीटों ने 9 विभिन्न खेल विषयों में प्रतिस्पर्धा की। इस बड़े पैमाने के उत्सव ने न केवल एथलेटिक उत्कृष्टता और टीम वर्क का जश्न मनाया, बल्कि संस्थान समुदाय के भीतर और बाहर के संबंधों को भी मज़बूत किया।



शैक्षणिक परिषद: शैक्षणिक परिषद ने पूरे वर्ष शैक्षणिक जुड़ाव और बौद्धिक विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। एक प्रमुख पहल अनुसंधान और औद्योगिक सम्मेलन 2025 का सफल आयोजन था, जिसका उद्देश्य युवाओं को अनुसंधान, नवाचार और उद्योग सहयोग के लिए प्रेरित करना था। परिषद ने सभी शैक्षणिक शाखाओं में विभागीय अभिविन्यास कार्यक्रम भी आयोजित किए, जिससे सुचारु शैक्षणिक परिवर्तन सुनिश्चित हुआ और छात्र-शिक्षक के बीच प्रारंभिक संपर्क को बढ़ावा मिला। इसके अतिरिक्त, परिषद ने 'टेक्नो संवाद' नामक एक इंटरैक्टिव प्लेटफॉर्म की शुरुआत की, जिसे शैक्षणिक जागरूकता बढ़ाने और छात्रों के बीच महत्वपूर्ण शैक्षणिक विषयों और अवसरों पर संवाद को प्रोत्साहित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।



ई समिट'24: उद्यमिता प्रकोष्ठ (ई-सेल) इंदौर छात्रों में नवाचार, रचनात्मकता और एक मजबूत उद्यमशीलता की भावना को बढ़ावा देना जारी रखता है। 2024 में, ई-सेल ने ई-समिट'24 और मार्केटिंग फिएस्टा का सफलतापूर्वक आयोजन किया, दो प्रमुख कार्यक्रम जन्होंने परिसर में उद्यमशीलता के पारिस्थितिकी तंत्र को जीवंत किया। इन आयोजनों में श्री नतिन विजय, श्री दीपांशु राज, श्री राजेश डेम्बला, श्रीमती स्वाति गनेटी और कई सफल स्टार्टअप संस्थापकों सहित प्रसिद्ध हस्तियों के यावहारिक सत्र शामिल थे, जिन्होंने अपनी यात्रा साझा की और अगली पीढ़ी के परिवर्तनकर्ताओं को प्रेरित किया। स्पीकर सत्रों के अलावा, ई-सेल ने पिचिंग प्रतियोगिताओं और "ब्रेक इट डाउन" जैसे कई इंटरैक्टिव कार्यक्रमों की मेजबानी की, जो सभी छात्रों में उद्यमशीलता की सोच और समस्या-सुलझाने के कौशल को विकसित करने के लिए डिज़ाइन किए गए।



फ्लक्सस 12.0: वार्षिक तकनीकी उत्सव, फ्लक्सस 2025, नवाचार, संस्कृति और रचनात्मकता का एक शानदार उत्सव था। यह उत्सव दिग्गज गायक सोनू निगम के मनमोहक प्रदर्शन के साथ नई ऊँचाइयों पर पहुँच गया, जिनकी मधुर धुनों ने इस भव्य समारोह में एक जादुई रंग भर दिया। सांस्कृतिक उत्सव के साथ-साथ, फ्लक्सस ने कई तकनीकी प्रतियोगिताओं और प्रदर्शनियों का भी आयोजन किया, जिनमें आरआरकेट के प्रभावशाली प्रदर्शन भी शामिल थे, जिन्होंने अत्याधुनिक तकनीक और शोध से दर्शकों का मन मोह लिया।

उत्सव की शुरुआत काव्यांजलि से हुई, जो कविता और कहानी सुनाने का एक भावपूर्ण उत्सव था। पंकज दीक्षित, शुभम पांडे, एकाग्र शर्मा, मनु वैशाली और राजेश कुमार जैसे प्रसिद्ध कलाकारों ने शब्दों और भावनाओं का अनूठा संगम प्रस्तुत किया। बौद्धिक माहौल को और समृद्ध बनाने वाले 'ज्ञान के शब्द' सत्र थे, जहाँ श्री अनिल स्वरूप, डॉ. संजय अरोड़ा और डॉ. गजेन्द्र पुरोहित जैसी प्रतिष्ठित हस्तियों ने अमूल्य अंतर्दृष्टि और प्रेरणा साझा की। फ्लक्सस 2025 वास्तव में रचनात्मकता, बौद्धिकता और प्रेरणा के एक जीवंत मंच के रूप में चमका, जो संस्थान की गतिशील भावना को दर्शाता है।



अन्य आकर्षण

एमयूएन 8.0: संयुक्त राष्ट्र में भारत के पूर्व स्थायी प्रतिनिधि श्री टी. एस. तिरुमूर्ति की गरिमामयी उपस्थिति में, एमयूएन 8.0 एक जीवंत और बौद्धिक रूप से समृद्ध अनुभव बन गया। इस सम्मेलन में विभिन्न स्कूलों और कॉलेजों के 300 से अधिक छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, जिससे भावी राजनयिकों और परिवर्तनकर्ताओं के लिए एक गतिशील मंच तैयार हुआ।

हॉस्टल डेज़ उत्सव: इस वर्ष हॉस्टल डेज़ उत्सव पहले से कहीं ज़्यादा जीवंत और शानदार थे। हर छात्रावास में भावपूर्ण गायन और ऊर्जावान नृत्य से लेकर कहानी सुनाने, चित्रकारी और खाना पकाने तक, विविध प्रतिभागों का प्रदर्शन हुआकृजिससे सौहार्द और रचनात्मकता से भरपूर एक ऊर्जा से भरपूर माहौल बना।



उपलब्धियां

क्रैकिंग द कोड: नरेन कुमार साई, पी.वी. शेखर और निष्कर्ष लूथरा को चेन्नई क्षेत्र में आईसीपीसी वर्ल्ड फाइनल्स 2024 के लिए क्वालीफाई करने पर बधाई। उनकी टीम ने असाधारण कोडिंग और समस्या-समाधान कौशल का प्रदर्शन करते हुए ऑनसाइट रीजनल राउंड में प्रभावशाली 21वीं रैंक हासिल की।

हैकाथॉन हीरोज़: प्रिंस सुमन, चंद्रहास, वात्सल्य सिंह, अमित मित्तल और हर्ष मंत्री की टीम, उत्कृष्ट नवाचार और टीम वर्क का प्रदर्शन करते हुए प्रतिष्ठित सी2एस डिजिटल हैकाथॉन में राष्ट्रीय फाइनलिस्ट के रूप में उभरी।



स्थापना दिवस समारोह: जैव प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव प्रो. राजेश एस. गोखले की उपस्थिति में 16वें स्थापना दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संवर्धन प्रौद्योगिकी उन्नयन संकुल का उद्घाटन, नए शैक्षणिक कार्यक्रमों का शुभारंभ और प्रतिष्ठित संकाय सदस्यों एवं कर्मचारियों का अभिनंदन किया गया।

सांस्कृतिक उत्कृष्टता – अंतर आईआईटी प्रदर्शनियां

माइम प्रदर्शन (5वां स्थान): विजित, नैन्सी, मापांश, ध्रुव, वंश, अर्नव, अपूर्व, पार्ल, रुबल, नवील, संस्कृति और यश सहित प्रतिभाशाली कलाकारों के दल द्वारा प्रस्तुति।

3डी एनिमेशन (5वां स्थान): अद्वैत, प्रणीत, क्षितिज, मनन और यश द्वारा एक आश्चर्यजनक 10-सेकंड रेंडरिंग प्रतिस्पर्धा एंट्री।

स्ट्रीट फोटोग्राफी (7वां स्थान): उमंग, आदित्य, अतुल्य, आदि, ऋषि, काव्या, हर्ष, ऋषभ और आदिनाथ द्वारा खूबसूरती से कैप्चर की गई स्ट्रीट नैरेटिव।



हिंदी स्लैम कविता (5वां स्थान): रैना ताथेड़ द्वारा एक जबरदस्त स्वरचित पद्य प्रदर्शन।

सिनेफाइल्स क्लब ट्रायम्फ (कुल मिलाकर दूसरा रनर-अप): ऑनलाइन फिल्म निर्माण और 51-घंटे की मूवी प्रतिस्पर्धा में असाधारण कहानी, जिसका नेतृत्व विश्वजीत, अंशुल, प्रियश, प्रेम, सार्थ, अनुवब, लावण्या, प्रांजल, रचित, यश सी., सौम्या, शिवम और कपिल ने किया।

कल्याणकारी गतिविधियाँ: जीवंत सामुदायिक भावना और सामाजिक उत्तरदायित्व का प्रदर्शन करते हुए, अनुभाग ने पूरे वर्ष प्रभावशाली कल्याणकारी गतिविधियों की एक श्रृंखला का आयोजन किया है:

रक्तदान अभियान: 16वें स्थापना दिवस पर, रक्तदान शिविर लगाया गया, जहाँ 262 रक्तदाताओं ने इस जीवनरक्षक कार्य में निस्वार्थ रूप से योगदान दिया।

कपड़ा दान अभियान: अवाना क्लब ने 9 से 15 मई तक पूरे परिसर में कपड़ा दान अभियान चलाया, जिससे ज़रूरतमंदों को उत्साह और सहायता मिली। कपड़ा और स्टेशनरी संग्रह के एक बड़े अभियान ने पूरे परिसर समुदाय को संगठित किया और दान को सोच-समझकर वंचित समूहों में वितरित किया, जिससे सहानुभूति का एक उदाहरण प्रस्तुत हुआ।



दिवाली उत्सव: त्यौहारों के मौसम के दौरान, छात्रों ने परिवहन कार्यालय के कर्मचारियों के साथ मिठाइयाँ और उपहार बाँटे, जिससे पूरे परिसर में कृतज्ञता, समावेशिता और खुशी को बढ़ावा मिला।

दृष्टिबाधित छात्रों के लिए सहायता: बीइंग सेवक चौरिटेबल फाउंडेशन के सहयोग से, मुंबई में दृष्टिबाधित छात्रों को आवश्यक शैक्षणिक किटकृजिनमें ब्रेल प्रणाली, पोषण संबंधी पूरक और शिक्षण सामग्री शामिल हैं – प्रदान की गई, जिससे सुलभ शिक्षा को बढ़ावा मिला।

स्कूल सहभागिता पहल: अवाना टीम ने सिमरोल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय और कन्याशाला में कक्षा 4 से 12 तक के विद्यार्थियों के लिए इंटरैक्टिव शैक्षणिक सत्र आयोजित किए। वे नियमित रूप से गाजिंदा स्थित शासकीय विद्यालय का भी दौरा करते हैं, जिसे संस्थान ने अंगीकृत किया है, जिससे शैक्षणिक पहुँच मज़बूत हुई है।

स्थिरता के लिए वृक्षारोपण अभियान: पर्यावरण संरक्षण को सुदृढ़ करने के लिए, छात्रों ने एक सफल वृक्षारोपण अभियान का आयोजन किया, जिससे परिसर में हरियाली बढ़ी और पारिस्थितिक उत्तरदायित्व के बारे में जागरूकता बढ़ी।



प्रशिक्षण एवं नियोजन प्रकोष्ठ, आईआईटी इंदौर

आईआईटी इंदौर का प्रशिक्षण एवं नियोजन प्रकोष्ठ (टीपीसी) अग्रणी बहुराष्ट्रीय निगमों, अनुसंधान संस्थानों और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू) के साथ सुदृढ़ संबंध बनाकर अपने छात्रों के लिए उत्कृष्ट करियर के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। कैंपस प्लेसमेंट के लिए केंद्रीय समन्वय निकाय के रूप में कार्य करते हुए, यह प्रकोष्ठ भर्तीकर्ताओं और छात्रों, दोनों के लिए एक सुचारु और कुशल भर्ती प्रक्रिया सुनिश्चित करता है।

संकाय सदस्यों, कर्मचारियों और उत्साही छात्र कार्यबल वाली एक समर्पित टीम के साथ, टीपीसी पूर्णकालिक प्लेसमेंट और इंटरशिप सुनिश्चित करने के लिए प्रतिष्ठित भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ता है। यह सहयोगात्मक पारिस्थितिकी तंत्र पूरे वर्ष प्लेसमेंट संबंधी गतिविधियों के सुचारु संचालन को सक्षम बनाता है।

नियोजन सत्र का अवलोकन

शैक्षणिक वर्ष 2024–25 के लिए प्लेसमेंट सत्र हाइब्रिड प्रारूप में आयोजित किया गया था, जो अक्टूबर 2024 में शुरू होकर पूर्णकालिक भर्ती के लिए दीक्षांत समारोह तक चला। इंटरशिप सत्र पहले, अगस्त 2024 में शुरू हुआ और दिसंबर 2024 तक चला।

मुख्य आकर्षण

- चुनौतीपूर्ण वैश्विक आर्थिक परिवेश और व्यापक भर्ती में कमी के बावजूद, आईआईटी इंदौर में पिछले वर्ष की तुलना में भाग लेने वाली कंपनियों की संख्या और कुल ऑफ़र में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई।
- ऑटोमोबाइल, उच्च आवृत्ति व्यापार, सूचना प्रौद्योगिकी, परामर्श, विश्लेषण, कोर इंजीनियरिंग, अनुसंधान और सार्वजनिक उपक्रमों जैसे क्षेत्रों में 140 से अधिक संगठनों ने आईआईटी इंदौर से भर्ती की।
- पिछले प्लेसमेंट सीजन की तुलना में प्रस्तावित उच्चतम पैकेज दोगुना हो गया।
- सभी शैक्षणिक कार्यक्रमों में कोर-सेक्टर प्लेसमेंट के अवसरों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

छात्र नियोजन की तैयारी:

टीपीसी करियर विकास पहलों और उद्योग जुड़ाव कार्यक्रमों की एक व्यापक श्रृंखला आयोजित करके छात्रों को प्लेसमेंट और इंटरशिप के लिए तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कार्यशालाओं, प्रतियोगिताओं और ज्ञान-साझाकरण प्लेटफॉर्मों के माध्यम से, छात्रों को ऐसे कौशल प्रदान किए जाते हैं जो उद्योग की बदलती अपेक्षाओं के अनुरूप हों।

वर्ष के दौरान प्रमुख पहलों में शामिल हैं:

1. **कौशल संवर्धन कार्यशाला: "रिज्यूमे से ऑफ़र तक सफलता के लिए रणनीतियाँ"** अंतिम वर्ष के छात्रों के लिए रिज्यूमे निर्माण और साक्षात्कार की तैयारी पर एक केंद्रित कार्यशाला का आयोजन किया गया। "एक उत्कृष्ट सीवी तैयार करना" और "प्रभावशाली साक्षात्कार" पर आयोजित सत्रों में 150 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया और उन्हें पेशेवरों से उपयोगी जानकारी प्राप्त हुई।
2. **"प्लेसमेंट अनुभव पुस्तिका" और "इंटरशिप अनुभव पुस्तिका"** – तैयार की गई और छात्रों को वितरित की गई, जिससे उन्हें प्लेसमेंट की यात्रा में सहायता के लिए सहकर्मियों-नेतृत्व मार्गदर्शन, तैयारी की रणनीति और सफलता की कहानियां प्रदान की गईं।
3. **प्रमुख मानव संसाधन कार्यक्रम: ऑपच्यूनैक्स का शुभारंभ:** टीपीसी ने ऑपच्यूनैक्स के दो संस्करणों का सफलतापूर्वक आयोजन किया, जो शिक्षा जगत और उद्योग जगत के बीच सेतु बनाने के उद्देश्य से एक प्रमुख मानव संसाधन सम्मेलन है। इसमें पैनल चर्चाएँ और विशेषज्ञ वार्ताएँ शामिल थीं, जहाँ प्रख्यात प्रतिभा अधिग्रहण नेताओं ने छात्रों के साथ उद्योग जगत की अंतर्दृष्टि साझा की।
4. **प्लेसमेंट ऑटोमेशन सॉफ्टवेयर:** प्लेसमेंट प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने के लिए एक नया सॉफ्टवेयर प्लेटफॉर्म पेश किया गया, जो छात्रों और भर्तीकर्ताओं दोनों के लिए उपयोगकर्ता-अनुकूल इंटरफ़ेस और वास्तविक समय संचार चैनल प्रदान करता है।
5. **वन-ऑन-वन एचआर मेंटरशिप:** एक विशेष पहल के भाग के रूप में, आंतरिक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता जीतने वाले छात्रों को अग्रणी एचआर पेशेवरों से व्यक्तिगत कैरियर मार्गदर्शन तक विशेष पहुंच प्रदान की गई।

6. **प्लेसमेंट टॉक सीरीज़:** प्लेसमेंट टॉक 2.0: पिछले वर्ष की सफलता के बाद, टीपीसी ने हाल ही में प्लेसमेंट प्राप्त करने वाले छात्रों द्वारा बातचीत की एक नई श्रृंखला आयोजित की। सॉफ्टवेयर, कोर इंजीनियरिंग, परामर्श और एनालिटिक्स जैसे विविध क्षेत्रों को कवर करने वाले इन सत्रों ने वर्तमान बैचों को विस्तृत तैयारी रणनीतियों और व्यक्तिगत अनुभवों से अवगत कराया।

उपरोक्त कार्यक्रमों की एक झलक:



चर्चाएँ, मार्गदर्शन और बातचीत:



ऑपर्युनेक्स:



प्लेसमेंट वार्ता:

आईआईटी इंदौर में प्रमुख भर्तीकर्ता

आईआईटी इंदौर ने परिसर में आने वाली कंपनियों की संख्या और छात्रों को दिए जाने वाले वेतन, दोनों में उल्लेखनीय वृद्धि देखी है। भर्ती सत्र के शुरुआती दौर में सॉफ्टवेयर विकास, अनुसंधान एवं विकास, एआई/एमएल और डेटा साइंस/एनालिटिक्स में पदों की पेशकश करने वाली कंपनियों का प्रभुत्व रहा। इनमें से कई कंपनियाँ अपने-अपने क्षेत्रों में वैश्विक स्तर पर अग्रणी हैं।

दुनिया की शीर्ष परामर्शदात्री फर्मों, बैंकों और सॉफ्टवेयर कंपनियों ने प्लेसमेंट में भाग लिया, जो आईआईटी इंदौर की अपने प्रतिभाशाली छात्रों के समूह में से कुछ सर्वश्रेष्ठ भर्तीकर्ताओं को आकर्षित करने में सफलता को दर्शाता है।

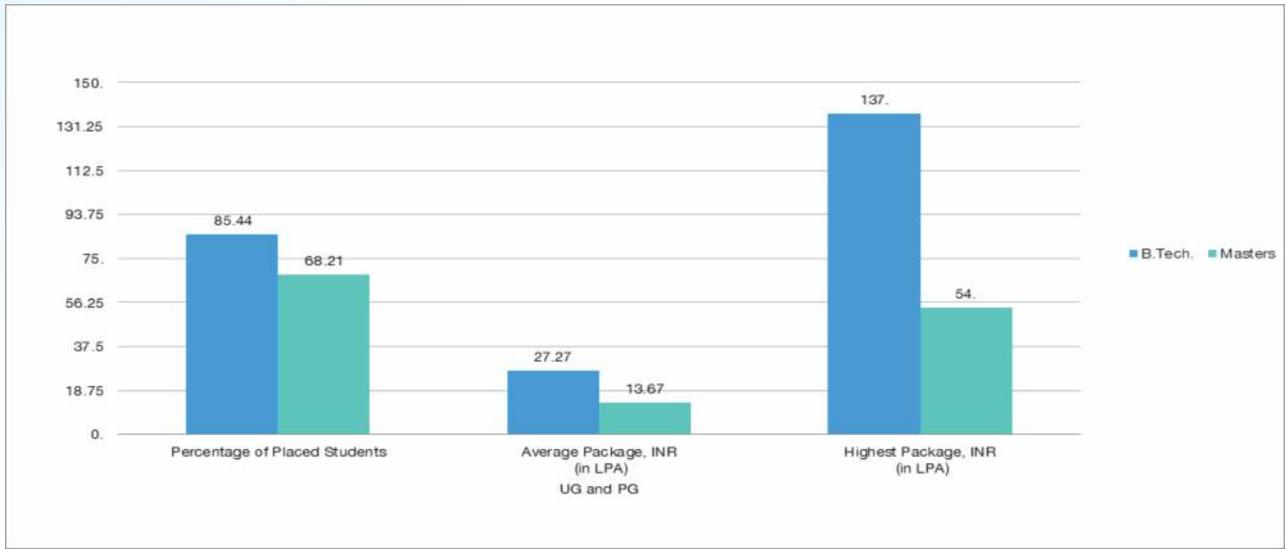
इसके अतिरिक्त, कैम्पस भर्ती में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू) की भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। एचपीसीएल, बीपीसीएल, ईआईएल, मेकॉन, बीईएल और सी-डॉट जैसी अग्रणी पीएसयू ने हमारे छात्रों को पूर्णकालिक पदों की पेशकश की

पूर्णकालिक प्लेसमेंट और इंटर्नशिप के अवसर प्रदान करने वाली अग्रणी कंपनियों में गूगल, डीई शॉ, क्वाडआई, ब्लैकरोक, डेटा ब्रिक्स, बीएनवाई मेलॉन, डेलॉइट, टीसीएस, क्वालकॉम, फिलपकार्ड, एक्सट्रिया, महिंद्रा एंड महिंद्रा, एलएंडटी, जिंदल स्टेनलेस लिमिटेड, वोल्वो आयशर कमर्शियल व्हीकल्स प्राइवेट लिमिटेड, पेटाएम, फ्यूचर्स फर्स्ट, गोल्डमैन सैक्स, ओरेकल, मैथवर्क्स, स्विच मोबिलिटी, टेक्सास इंस्ट्रूमेंट्स, एनवीडिया, स्पेक्ट्रल डिजाइन, जोमैटो, टाटा कैपिटल, वर्सा नेटवर्क्स, एनालॉग डिवाइसेज और एचसीएल टेक आदि शामिल हैं।

चार्ट और मैट्रिक्स के साथ समग्र प्लेसमेंट आँकड़े (शैक्षणिक वर्ष 2024-25)

कार्यक्रम	बैच का आकार	पंजीकृत छात्र	कुल प्लेसमेंट	प्लेसमेंट प्राप्त छात्रों का प्रतिशत	औसत पैकेज, आईएनआर (एलपीए में)	उच्चतम पैकेज, आईएनआर (एलपीए में)
बी.टेक	353	316	270	85.44 प्रतिशत	27.27	137
मास्टर्स	270	151	103	68.21 प्रतिशत	13.67	54

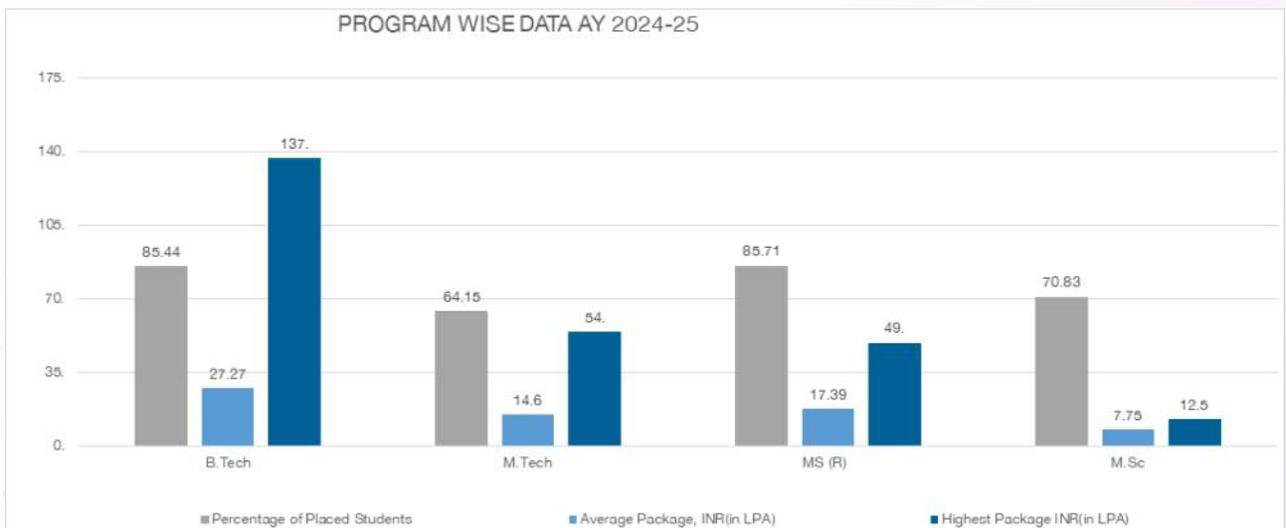
प्लेसमेंट आँकड़े शैक्षणिक वर्ष 2024-25



चार्ट और मैट्रिक्स में कार्यक्रम-वार प्लेसमेंट सांख्यिकी (शैक्षणिक वर्ष 2024-25):

कार्यक्रम	बैच का आकार	पंजीकृत छात्र	कुल प्लेसमेंट	प्लेसमेंट प्राप्त छात्रों का प्रतिशत	औसत पैकेज, आईएनआर (एलपीए में)	उच्चतम पैकेज, आईएनआर (एलपीए में)
बी.टेक	353	316	270	85.44 प्रतिशत	27.27	137
एम.टेक	147	106	68	64.15 प्रतिशत	14.6	54
एमएस (आर)	25	21	18	85.71 प्रतिशत	17.39	49
एमएससी	109	24	17	70.83 प्रतिशत	7.75	12.5

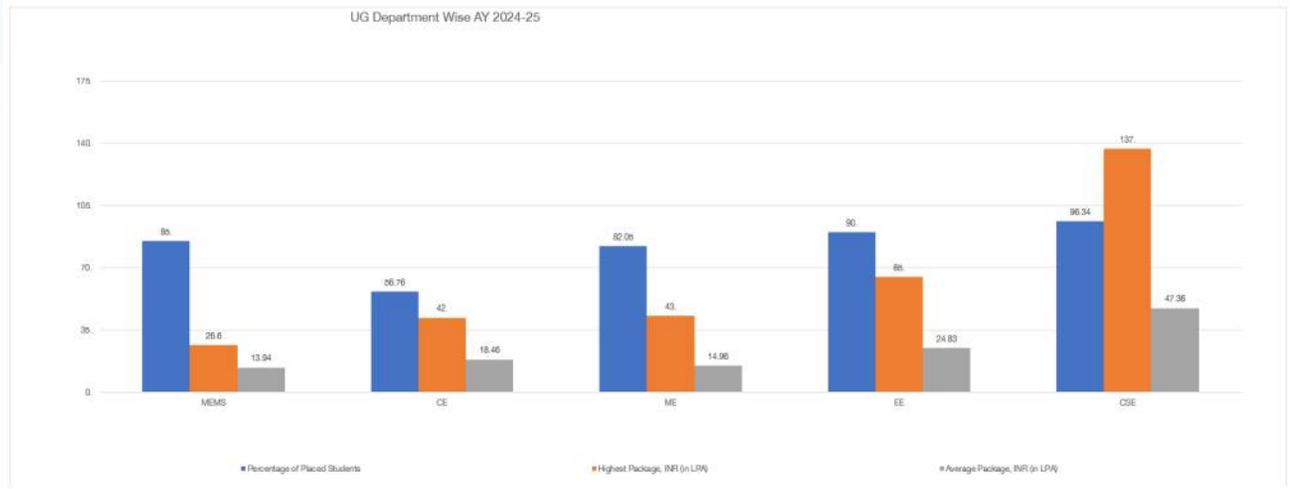
ग्राफ और मैट्रिक्स में विभाग-वार बी.टेक प्लेसमेंट सांख्यिकी (शैक्षणिक वर्ष 2024-25):



ग्राफ और मैट्रिक्स में विभागवार बी.टेक प्लेसमेंट सांख्यिकी (आकलन वर्ष 2024-25)

विभागवार (बी.टेक)	पंजीकृत छात्र	कुल प्लेसमेंट	प्लेसड छात्रों का प्रतिशत	उच्चतम पैकेज, आईएनआर (एलपीए में)	औसत पैकेज, आईएनआर (एलपीए में)
सीएसई	82	79	96.34	137.00	47.36
ईई	80	72	90.00	65.00	24.83
एमई	78	64	82.05	43.00	14.96
सीई	37	21	56.76	42.00	18.46
एमईएमएस	40	34	85.00	26.60	13.94

स्नातक विभाग-वार शैक्षणिक वर्ष 2024-25



इंटरनशिप रिपोर्ट

कॉर्पोरेट जगत में शामिल होने वाले इच्छुक छात्रों के लिए औद्योगिक अनुभव आवश्यक है। छात्रों को अपने छठे सेमेस्टर के बाद गर्मियों के दौरान इंटरनशिप करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है ताकि वे वास्तविक दुनिया का अनुभव प्राप्त कर सकें और कक्षा की अवधारणाओं को पेशेवर परिवेश में लागू कर सकें।

इंटरनशिप की मुख्य विशेषताएं:

- 150 से अधिक प्री-फाइनल वर्ष के छात्रों ने भारत और विदेशों में अग्रणी संगठनों में इंटरनशिप हासिल की।
- सबसे अधिक दिया जाने वाला वजीफ़ा 5 लाख रुपये प्रति माह तक पहुँच गया।
- 80 से अधिक प्री-प्लेसमेंट ऑफ़र (पीपीओ) दिए गए, जो इंटरनशिप के दौरान छात्रों के उच्च प्रदर्शन का प्रमाण है।

विभाग-वार इंटरनशिप मैट्रिक्स (शैक्षणिक वर्ष 2024-25):

विभाग	इंटरनशिप प्रस्ताव की संख्या (2025 बैच)	पीपीओ कन्वर्ज़न (2025 बैच)
संगणक विज्ञान	65	50
विद्युत अभियांत्रिकी	42	24
यांत्रिक अभियांत्रिकी	33	4
जानपद अभियांत्रिकी	7	4
धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान	5	0

निष्कर्ष:

वैश्विक स्तर पर नौकरी बाज़ार में कमी के बावजूद, आईआईटी इंदौर में 2024–25 का प्लेसमेंट सीज़न सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। संस्थान में निम्नलिखित उपलब्धियाँ देखी गईं:

- कंपनी की भागीदारी और नौकरी के प्रस्तावों में वृद्धि।
- ऑटोमोटिव, वित्त, परामर्श, कोर इंजीनियरिंग, आईटी, अनुसंधान एवं विकास, और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों जैसे क्षेत्रों में भर्तीकर्ताओं की विविधता में वृद्धि।
- छात्रों के कौशल विकास पर ज़ोर, जिसमें रिज्यूमे निर्माण, मॉक इंटरव्यू और करियर मेंटरशिप शामिल है।

प्लेसमेंट के अलावा:

- लगभग 10–15 प्रतिशत स्नातक विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों, आईआईएम और आईआईटी में उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं।
- लगभग 3–5 प्रतिशत उद्यमिता में कदम रखते हैं और अपना स्वयं का स्टार्ट-अप शुरू करते हैं।

टीपीसी कौशल संवर्धन, रणनीतिक उद्योग साझेदारी और निरंतर कैरियर विकास पहलों के माध्यम से छात्रों को सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है – जिससे आईआईटी इंदौर की प्रतिभा और नवाचार के लिए एक प्रमुख गंतव्य के रूप में स्थिति मजबूत होगी।

टीपीसी टीम 2024–25 (यूजी + पीजी)



छात्रावास

आईआईटी इंदौर में छात्रावास की आधारभूत संरचना

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, इंदौर ने एक सक्रिय और सहयोगात्मक परिसर जीवन को बढ़ावा देने के लिए एक मजबूत और समावेशी छात्रावास संरचना विकसित की है। 2016 में उद्घाटन किए गए ए.पी.जे. अब्दुल कलाम छात्रावास ने संस्थान के स्थायी परिसर में छात्रावास जीवन की शुरुआत की। इसके बाद 2019 में होमी जहाँगीर भाभा (एचजेबी) छात्रावास और 2020 में देवी अहिल्या (डीए), विक्रम साराभाई (वीएसबी) और सी.वी. रमन (सीवीआर) छात्रावासों का उद्घाटन हुआ।

प्रत्येक छात्रावास में 99 आवासीय इकाइयाँ हैं, जिनमें कुल 574 छात्र व छात्राएँ रहती हैं। शैक्षणिक जुड़ाव और सामाजिक मेलजोल को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किए गए प्रत्येक छात्रावास में छह साझा शयनकक्ष, एक पूरी तरह सुसज्जित बैठक क्षेत्र, एक साझा रसोईघर, दो शौचालय और दो वाशरूम हैं। राष्ट्रीय एकीकरण और अंतःविषय सहयोग को बढ़ावा देने के लिए, विभिन्न राज्यों, भाषाई पृष्ठभूमि और शैक्षणिक विषयों के छात्रों को प्रत्येक छात्रावास में सोच-समझकर समूहीकृत किया गया है।

संस्थान की स्थायित्व के प्रति प्रतिबद्धता के अनुरूप, सभी छात्रावासों में सौर जल तापन प्रणालियाँ उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम छात्रावास में केंद्रीय वातानुकूलित सुविधाएँ उपलब्ध हैं, जो पूरे वर्ष छात्रों के आराम को बढ़ाती हैं।

छात्रावास की आधारभूत संरचना का विस्तार

बढ़ते शैक्षणिक समुदाय की जरूरतों को पूरा करने और आवासीय सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए, आईआईटी इंदौर में विश्वस्तरीय सुविधाओं से युक्त तीन नए छात्रावासों का निर्माण कार्य चल रहा है। ये छात्रावास छात्र आवास के अंतर्राष्ट्रीय मानकों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं, जिनमें स्थायित्व, आराम और सामुदायिक जीवन पर विशेष ध्यान दिया गया है।

आगामी वर्षों में संचालन शुरू हो जाने पर, नए छात्रावास उच्च गुणवत्ता वाले आवास उपलब्ध कराने की संस्थान की क्षमता में महत्वपूर्ण वृद्धि करेंगे तथा शिक्षा और अनुसंधान में उत्कृष्टता के प्रति इसकी निरंतर वृद्धि और प्रतिबद्धता को समर्थन प्रदान करेंगे।

प्रशासन

छात्रावास प्रशासन की देखरेख मुख्य वार्डन डॉ. सप्तर्षि घोष द्वारा की जाती है और छात्रावास समन्वयक श्री हेमंत चौहान, कनिष्ठ सहायक सुश्री चंद्राणी मित्रा सरकार और कनिष्ठ सहायक सुश्री प्रतिभा चंदनशिवे द्वारा सहयोग प्रदान किया जाता है। प्रत्येक छात्रावास एक समर्पित वार्डन के मार्गदर्शन में संचालित होता है, जिन्हें एक पर्यवेक्षक और एक परिचारक द्वारा दैनिक प्रबंधन को सुचारु रूप से चलाने में सहायता प्रदान की जाती है।

छात्रावास संख्या	छात्रावास का नाम	छात्रावास का प्रकार (छात्राएँ / छात्र)	वार्डन / प्रभारी वार्डन	सह वार्डन
01	एपीजे छात्रावास (अवुल पकिर जैनुलाबदीन अब्दुल कलाम)	छात्र	डॉ. शिवराज मोहना सुंदरम	—
02	सीवीआर छात्रावास (चंद्रशेखर वेंकट रमन)	छात्र	डॉ अक्षय प्रताप सिंह	—
03	एचजेबी (होमी जहाँगीर भाभा)	छात्र	डॉ अयान मंडल	—
04	देवी अहिल्या छात्रावास	छात्राएँ	डॉ अरात्रिका दास	—
05	विक्रम साराभाई छात्रावास	छात्र	डॉ संसुमा ब्रह्मा	—

अतिथि आवास सुविधाएँ

आईआईटी इंदौर अपने छात्रावास परिसर में सुसज्जित अतिथि कक्षों की सुविधा प्रदान करता है ताकि आने वाले अतिथियों और गणमान्य व्यक्तियों के लिए सुखद और सुविधाजनक प्रवास सुनिश्चित हो सके। अतिथि गृह में एक समय में 60 अतिथियों के ठहरने की व्यवस्था है।

प्रत्येक अतिथि कक्ष आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित है, जिनमें शामिल हैं:

- स्मार्ट एलईडी टीवी
- सोफ़ा सेट
- सेंटर टेबल
- कूलर
- माइक्रोवेव
- इलेक्ट्रिक केटल
- गद्दा और कंबल
- बेडशीट और तकिया
- तौलिए
- कपड़े का स्टैंड

ये प्रावधान संस्थान में आने वाले सभी अतिथियों को आराम, कार्यक्षमता और स्वागतपूर्ण परिवेश प्रदान करने के लिए तैयार किए गए हैं।

छात्रावास की तस्वीरें



छात्रावास क्रमांक 01 – ए.पी.जे. अब्दुल कलाम



छात्रावास क्रमांक 02 – सी. वी. रमन



छात्रावास क्रमांक 03 – होमी जे. भाभा



छात्रावास क्रमांक 04 – देवी अहिल्य



छात्रावास क्रमांक 05 – विक्रम साराभाई

छात्रावास की मूल सुविधाएं



बेसिक रूम



कॉमन हॉल



वॉशरूम



आरओ वाटर टैप के साथ रसोईघर



वाईफाई



आरओ वाटर डिस्पेंसर

छात्रावासों में खेल सुविधाएं



बैडमिंटन कोर्ट



टेबल टेनिस



सॉकर टेबल

छात्रावासों में अन्य सुविधाएँ



समाचार पत्र स्टैंड



पत्रिका स्टैंड



फिटनेस उपकरण

केंद्रीय आहार सुविधा

केंद्रीय आहार सुविधा: एक साथ भोजन करने के माध्यम से समुदाय को बढ़ावा देना

संस्थान की केंद्रीय आहार सुविधा, जिसे कार्बन बिल्डिंग के नाम से जाना जाता है, हमारे परिसर की समावेशी और समुदाय-केंद्रित भावना का प्रमाण है। लगभग 2,500 लोगों को एक साथ भोजन कराने की क्षमता के साथ, यह सुविधा विभिन्न छात्रावासों के छात्रों को एक साथ भोजन करने के लिए प्रोत्साहित करती है, जिससे एकता और सौहार्द बढ़ता है।

डाइनिंग कॉम्प्लेक्स में तीन कैटरर्स – के स्टार, गौरी और फूडसूत्र – मौजूद हैं और छात्रों, संस्थान के कर्मचारियों और मेहमानों के लिए अलग से सेक्शन उपलब्ध हैं। इस सुविधा को कई रसोई, सुलभ शौचालय और लिफ्ट सेवाओं के साथ सोच-समझकर डिज़ाइन किया गया है, ताकि सभी के लिए एक आरामदायक और समावेशी अनुभव सुनिश्चित हो सके। आगामी बुनियादी ढाँचे के विकास के तहत रसोई के आधुनिकीकरण की योजनाएँ बनाई जा रही हैं।

विशेष भोजन कक्ष आमंत्रित गणमान्य व्यक्तियों और विशिष्ट अतिथियों के लिए उत्कृष्ट भोजन सेवाएँ और आतिथ्य प्रदान करता है। प्रतिदिन स्वस्थ और संतुलित भोजन परोसा जाता है और साप्ताहिक बैठकों के माध्यम से मेनू चयन में छात्र समुदाय सक्रिय भूमिका निभाता है। छात्र समुदाय द्वारा समर्थित एक सतर्क भोजन समिति द्वारा निगरानी और गुणवत्ता नियंत्रण सुनिश्चित किया जाता है।

पारदर्शिता और सुविधा, डाइनिंग अनुभव की आधारशिला हैं। एक व्यापक डाइनिंग वेबसाइट आवंटन फॉर्म, छूट फॉर्म (लंबे और छोटे), शिकायत और विसंगति फॉर्म, बिलिंग जानकारी, कैटरर विवरण, मेनू और संपर्क जानकारी तक पहुँच प्रदान करती है और ये सभी एक क्यूआर कोड-सक्षम एक्सेस सिस्टम द्वारा पूरक हैं।

कार्बन बिल्डिंग सभी कोविड-उपयुक्त मानदंडों का अनुपालन करती है और इसमें कई कियोस्क भी हैं जो चौबीसों घंटे जलपान और सेवाएँ प्रदान करते हैं, जिससे परिसर के जीवन में सक्रियता बनी रहती है।

डाइनिंग सुविधा की देखरेख एक समर्पित प्रशासनिक टीम द्वारा की जाती है, जिसमें कनिष्ठ सहायक श्रीमती तरुणा तोमर, परिचारक और छात्र स्वयंसेवक शामिल हैं। समग्र प्रशासन का प्रबंधन भोजन समिति द्वारा किया जाता है, जिसकी अध्यक्षता डाइनिंग वार्डन डॉ. कलंदी सी. प्रधान करते हैं।

डाइनिंग हॉल बिल्डिंग की तस्वीर



आहार कक्ष की सफाई





डॉ. कलंदी सी. प्रधान
डाइनिंग वार्डन



डॉ. निशीथ प्रसाद
एसोसिएट डाइनिंग वार्डन



श्रीमती तरुणा तोमर
कनिष्ठ सहायक



श्री जवाहरलाल मोतीलाल
परिचारक

छात्रावासों के आहार सचिव

क्र. सं.	छात्रावास	नाम	ईमेल आईडी
1.	एपीजे	श्री गोदीशाला वर्षीथ	diningsecy.apj@iiti.ac.in
2.	सीवीआर	श्री महेश साहू	msc2303171025@iiti.ac.in
3.	वीएसबी	श्री शुभम कुमार	diningsecy.vsb@iiti.ac.in
4.	एचजेबी	श्री सौरभ चौधरी	diningsecy.hjb@iiti.ac.in
5.	डीए	सुश्री ऐश्वर्या अग्रवाल	diningsecy.da@iiti.ac.in

परामर्श प्रकोष्ठ दल

आईआईटी इंदौर का परामर्श प्रकोष्ठ, जो छात्र कार्य अनुभाग का एक महत्वपूर्ण घटक है, दिसंबर 2011 में अपनी स्थापना के बाद से ही छात्रों के कल्याण और व्यक्तिगत विकास में सक्रिय रूप से सहयोग कर रहा है। अब जीवन कौशल पहल और मूल्य शिक्षा (लाइव) के व्यापक स्वरूप में कार्यरत, इस प्रकोष्ठ ने समग्र छात्र विकास के साथ अपने प्रयासों को जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम आगे बढ़ाया है। यह प्रकोष्ठ एक सहायक, गोपनीय और समावेशी परिवेश को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है जहाँ छात्र शैक्षणिक तनाव, भावनात्मक चिंताओं और व्यक्तिगत चुनौतियों पर खुलकर चर्चा कर सकें।

भावनात्मक लचीलेपन में सुधार और समग्र विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, परामर्श प्रकोष्ठ की सेवाएँ सभी कार्यक्रमों के छात्रोंकृस्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी – के लिए उपलब्ध हैं। लाइव पहल विशेष रूप से मनोवैज्ञानिक समस्याओं की शीघ्र पहचान, रोकथाम और समय पर सहायता पर जोर देती है।

संरचित परामर्श सेवाओं, निवारक बाह्य संपर्क और मूल्य-आधारित जीवन कौशल शिक्षा के माध्यम से, इस प्रकोष्ठ का उद्देश्य छात्रों को व्यक्तिगत और शैक्षणिक दोनों ही रूपों में आगे बढ़ने के लिए सशक्त बनाना है। यह आईआईटी इंदौर में एक सकारात्मक और भावनात्मक रूप से स्वस्थ परिसर संस्कृति में योगदान दे रहे हैं।

परामर्श प्रकोष्ठ दल



प्रो. श्रीवत्सन वासुदेवन
अधिष्ठाता, छात्र कार्य



प्रो. एंटनी विजेश
प्रभारी प्राध्यापक, लाइव



सुश्री शिल्पा चौहान
कनिष्ठ अधीक्षक (कर्मचारी)



श्री शुभम मंदसौरकर
परामर्शदाता



सुश्री शुभ्रा व्यास
परामर्शदाता



सुश्री आशका मिस्त्री
परामर्शदाता



सुश्री सिमरन त्यागी
कल्याण चिकित्सक



सुश्री वृंदा भिकाडिया
कल्याण चिकित्सक

संकाय परामर्श समन्वयक

प्रत्येक विभाग के संकाय सदस्यों को विभागीय स्नातक समिति (डीयूजीसी) और विभागीय स्नातकोत्तर समिति (डीपीजीसी) के रूप में संकाय परामर्श समन्वयक के रूप में नामित किया जाता है। विभाग को सौंपे गए एक समर्पित परामर्शदाता के सहयोग से, ये समन्वयक छात्रों के कल्याण की सक्रिय रूप से निगरानी करते हैं और अपने-अपने विभागों में विभिन्न शैक्षणिक, भावनात्मक या व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान करते हैं।

छात्र परामर्श समन्वयक (एससीसी) एवं छात्र जिमखाना प्रतिनिधि।

छात्र समुदाय में सहकर्मी सहयोग को मजबूत करने और मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए, छात्र परामर्श समन्वयकों की एक कोर टीम का गठन किया गया है। इस टीम में स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी कार्यक्रमों से एक पुरुष और एक महिला छात्र शामिल हैं, जिनका चयन नेतृत्व कौशल, सहानुभूति और सहकर्मी तालमेल के आधार पर किया गया है। इसके अलावा, संस्थान के बढ़ते शैक्षणिक ढांचे में व्यापक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने और सहयोग प्रदान करने के लिए, प्रत्येक विभाग (स्नातक और स्नातकोत्तर दोनों स्तरों के लिए) से एक पुरुष और एक महिला छात्र को विभागीय छात्र परामर्श समन्वयक के रूप में नामित किया जाता है। संरचना इस प्रकार है:

विभागीय दल संरचना

कोर दल संरचना

श्रेणी	पुरुष	महिला	कुल
यूजी	1	1	2
पीजी	1	1	2
पीएचडी	1	1	2
कुल	3	3	6

कार्यक्रम	पुरुष	महिला	कुल
यूजी	9	9	18
पीजी	11	11	22
पीएचडी	11	11	22
कुल	31	31	62

कुल योग: 68 छात्र परामर्श समन्वयक (6 कोर + 62 विभागीय)

यह सहकर्मी-नेतृत्व वाली सहायता प्रणाली आईआईटी इंदौर में छात्र कल्याण के लिए समय पर और प्रभावी पहुंच सुनिश्चित करने के लिए संकाय परामर्श समन्वयकों और विभाग द्वारा नियुक्त पेशेवर परामर्शदाताओं के साथ निकट समन्वय में काम करती है।



के. निकेत रेड्डी
छात्र जिमखाना प्रतिनिधि



सुश्री तमन्ना सिंह
पीएचडी समन्वयक



सुश्री अदिति राव
स्नातकोत्तर समन्वयक



सुश्री श्रीजिता मैत्रा
स्नातक समन्वयक



श्री उम्मेद सिंह
पीएचडी समन्वयक



श्री भानु प्रताप शर्मा
स्नातकोत्तर समन्वयक



श्री हर्षवर्धन चौधरी
स्नातक समन्वयक

2024-25 के दौरान परामर्श प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित कुछ कार्यक्रम इस प्रकार हैं:

जेनेसिस ओरिएंटेशन सत्र – प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए परिवर्तनकाल सहायता

जेनेसिस पहल के एक भाग के रूप में, परामर्श प्रकोष्ठ ने प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए संरचित अभिविन्यास सत्र आयोजित किए। ये सत्र भावनात्मक समायोजन, शैक्षणिक परिवर्तन और मूल्य-आधारित निर्णय लेने पर केंद्रित थे। निर्देशित चिंतन, समूह चर्चा और प्रेरक वार्ताओं के माध्यम से, छात्रों को अपनी आईआईटी इंदौर यात्रा की शुरुआत से ही लचीलापन विकसित करने, आवश्यकता पड़ने पर सहायता लेने और परिसर समुदाय में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

छात्र मेंटरशिप कार्यक्रम – सहकर्मी-नेतृत्व सहायता प्रणाली

छात्र मार्गदर्शन कार्यक्रम ने नए छात्रों को स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी कार्यक्रमों के प्रशिक्षित वरिष्ठ साथियों से जोड़ा। मार्गदर्शकों ने शैक्षणिक योजना, तनाव प्रबंधन और परिसर जीवन पर मार्गदर्शन प्रदान किया। नियमित जाँच-पड़ताल, अनौपचारिक बातचीत और सहयोगात्मक समस्या-समाधान ने विश्वास और भावनात्मक समर्थन को बढ़ावा दिया, जिससे जुड़ाव की भावना बढ़ी और परिवर्तनकालीन तनाव कम हुआ।

विभागवार संकाय सलाहकार बैठकें (जनवरी और अप्रैल 2025)

विभिन्न विभागों के संकाय सलाहकारों ने जनवरी और अप्रैल में दो चरणों में छात्रों के साथ संरचित बैठकें आयोजित कीं। इन बैठकों में शैक्षणिक कठिनाइयों, व्यक्तिगत तनावों और जुड़ाव की कमियों पर चर्चा की गई। परामर्शदाताओं ने छात्रों की पहचान करके और जहाँ भी आवश्यक हो, समानांतर हस्तक्षेप प्रदान करके इस प्रक्रिया का समर्थन किया।



मानसिक स्वास्थ्य प्राथमिक चिकित्सा

9 से 11 अगस्त, 2024 तक, बीइंग बैलेंस्ड कंसल्टेंसी की संस्थापक डॉ. टीना ऑगस्टाइन जोसेफ के नेतृत्व में एक मानसिक स्वास्थ्य प्राथमिक चिकित्सा कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण संकाय सदस्यों और छात्र स्वयंसेवकों, दोनों को आकर्षक सत्रों, संवादात्मक गतिविधियों और रोल-प्ले के माध्यम से प्रदान किया गया। इसका उद्देश्य प्रतिभागियों को मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों का सामना कर रहे छात्रों की पहचान करने और उनका समर्थन करने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करना था। शीघ्र हस्तक्षेप और सहानुभूतिपूर्ण प्रतिक्रिया पर जोर देते हुए, इस कार्यक्रम ने समय पर सहायता प्रदान करने और संस्थान के समग्र कल्याण को बढ़ावा देने की समुदाय की क्षमता को बढ़ाया।

आईआईटी हैदराबाद में राष्ट्रीय सम्मेलन (8-10 अक्टूबर, 2024)

परामर्श प्रकोष्ठ के प्रतिनिधियों ने आईआईटी हैदराबाद में आयोजित छात्र कल्याण पर राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया। यह कार्यक्रम केंद्र द्वारा वित्तपोषित संस्थानों के लिए अपनी नवीन रणनीतियों को साझा करने और छात्र जीवन में मनोवैज्ञानिक तनावों और सहकर्मि सहायता ढाँचों पर चर्चा करने के लिए एक मंच के रूप में कार्य किया।

उच्चतर शिक्षा संस्थानों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम

भारत सरकार के उच्चतर शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित उच्चतर शिक्षा संस्थानों (एचईआई) में सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य, लचीलापन और कल्याण को बढ़ावा देने हेतु क्षमता निर्माण कार्यक्रम के लिए, संकाय सदस्यों को समय-समय पर भाग लेने के लिए नामित किया गया था। संकाय सदस्यों की भागीदारी संस्थान की अपने शैक्षणिक समुदाय में मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता और लचीलापन बढ़ाने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

परीक्षा तनाव प्रबंधन कार्यशाला (19 नवंबर, 2024)

परीक्षा अवधि के दौरान छात्रों की सहायता के लिए, प्रकोष्ठ ने माइंडफुलनेस अभ्यासों, ग्राउंडिंग अभ्यासों और शैक्षणिक योजना रणनीतियों को मिलाकर एक इंटरैक्टिव तनाव प्रबंधन सत्र का आयोजन किया। इस सत्र को अच्छी प्रतिक्रिया मिली, जिसमें छात्रों ने प्रदर्शन संबंधी चिंता को प्रबंधित करना और बेहतर तरीके से निपटने के तरीके विकसित करना सीखा।

प्लेसमेंट काउंसलिंग – व्यक्तिगत प्रेरक साक्षात्कार (दिसंबर 2024 – जनवरी 2025)

प्लेसमेंट की तैयारी कर रहे अंतिम वर्ष के छात्रों के लिए विशेष रूप से व्यक्तिगत परामर्श सत्र आयोजित किए गए। इन सत्रों में व्यक्तिगत लक्ष्यों को जानने, चिंता कम करने और आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए प्रेरक साक्षात्कार तकनीकों का उपयोग किया गया। छात्रों को भावनात्मक अवरोधों और अनिश्चितताओं का सामना करते हुए अपने करियर विकल्पों के साथ अपनी क्षमताओं को संरेखित करने के लिए मार्गदर्शन दिया गया।

छात्रावास-वार परामर्शदाताओं का दौरा (6-26 जनवरी, 2025)

परामर्श प्रकोष्ठ ने छात्रावासों का दौरा किया और छात्रों के साथ समूह और व्यक्तिगत रूप से बातचीत की। इसका उद्देश्य संकट की शीघ्र

पहचान, व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक सहायता प्रदान करना और उपलब्ध सेवाओं के बारे में जागरूकता बढ़ाना था। पोस्टर, स्वयं सहायता सामग्री और संवादात्मक चर्चाओं ने मानसिक स्वास्थ्य पर बातचीत को सामान्य बनाने में मदद की।

छात्रावास दिवस समारोह – वेलनेस बूथ व इंटरैक्टिव गतिविधियाँ (7–13 फ़रवरी, 2025)

छात्रावास दिवस समारोह के दौरान, परामर्श प्रकोष्ठ ने खेलों, गतिविधियों और इंटरैक्टिव प्रदर्शनों के साथ स्वास्थ्य बूथ स्थापित किए। इसका उद्देश्य एक सुकून भरे और उत्सवी माहौल में भावनात्मक स्वास्थ्य को बढ़ावा देना था। छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद लेते हुए कृतज्ञता, आशावाद और आत्म-देखभाल के संदेशों को सुना।

छात्रावास कर्मचारी जागरूकता प्रशिक्षण (28 मार्च, 2025)

छात्रावास वार्डन, देखभाल करने वालों और अन्य आवासीय कर्मचारियों के लिए छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के बारे में उनकी समझ बढ़ाने हेतु एक केंद्रित कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण में संकटग्रस्त छात्रों की सहायता करने, उनके व्यवहार में बदलावों को पहचानने और ज़रूरत पड़ने पर उन्हें पेशेवर मदद के लिए भेजने की व्यावहारिक रणनीतियों पर प्रकाश डाला गया।

साप्ताहिक पर्यवेक्षण और अनुवर्ती कार्रवाई, निरंतर भावनात्मक समर्थन पूरे वर्ष के दौरान, परामर्शदाताओं ने ज़रूरतमंद छात्रों के लिए व्यक्तिगत अनुवर्ती कार्रवाई और छात्रावासों का दौरा किया। इन नियमित बातचीत ने प्रगति पर नज़र रखने, भावनात्मक स्थिरता प्रदान करने और शैक्षणिक लक्ष्यों को व्यक्तिगत कल्याण के साथ एकीकृत करने में मदद की। संकाय और एससीसी के साथ सहयोग ने एक समन्वित दृष्टिकोण सुनिश्चित किया।

छात्र मानसिक स्वास्थ्य और व्यवहार पर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशालाएँ (27 नवंबर, 2024 और 29 मार्च, 2025) अपने आउटरीच और सामुदायिक जुड़ाव प्रयासों के हिस्से के रूप में, परामर्श प्रकोष्ठ ने पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय पहल के तहत स्कूली शिक्षकों के लिए दो व्यवहार प्रशिक्षण कार्यशालाएँ आयोजित कीं। ये सत्र किशोर स्वास्थ्य जागरूकता, भावनात्मक और व्यवहार संबंधी चिंताओं को पहचानने, कक्षा की गतिशीलता को प्रबंधित करने और सहानुभूतिपूर्ण संचार को बढ़ावा देने पर केंद्रित थे। शिक्षकों को छात्रों के भावनात्मक कल्याण का समर्थन करने और स्कूल के परिवेश में संकट का प्रभावी ढंग से जवाब देने के लिए व्यावहारिक उपकरणों और मूल्य-आधारित रणनीतियों से लैस किया गया था।

वेलनेस सॉफ्टवेयर का लॉन्च

छात्रों के कल्याण के प्रति हमारी निरंतर प्रतिबद्धता के एक हिस्से के रूप में, हमने आईआईटी इंदौर के छात्रों की एक रचनात्मक टीम के सहयोग से आईआईटीआई वेलनेस सॉफ्टवेयर विकसित किया है। यह प्लेटफॉर्म छात्रों को काउंसलिंग सेल से सीधे जुड़ने में मदद करेगा और कुशल डेटाबेस प्रबंधन, सूचनाएं, केस हिस्ट्री ट्रैकिंग, स्ट्रेस सायरन, अपॉइंटमेंट शेड्यूलिंग, फीडबैक संग्रह, वेलनेस संसाधनों तक पहुँच प्रदान करेगा और चिकित्सकों की रोज़गार क्षमता को बढ़ावा देगा।

एक भारत श्रेष्ठ भारत



एक भारत श्रेष्ठ भारत



आईआईटी इंदौर की एक भारत श्रेष्ठ भारत (ईबीएसबी) टीम भारत सरकार के विभिन्न अभियानों, जैसे एक भारत श्रेष्ठ भारत, राष्ट्रीय आविष्कार अभियान (आरएए), उन्नत भारत अभियान (यूबीए), स्वच्छ भारत अभियान (एसबीए), रुटीएजी आदि को बढ़ावा देने के लिए इसके संयोजक डॉ. नीरज कुमार शुक्ला (प्रोफेसर, गणित विभाग) के नेतृत्व में सक्रिय रूप से विभिन्न गतिविधियों का संचालन कर रही है।

“एक भारत श्रेष्ठ भारत” कार्यक्रम, विभिन्न क्षेत्रों के निवासियों के बीच निरंतर और सुनियोजित सांस्कृतिक जुड़ाव का एक अभिप्राय है। इसकी शुरुआत प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 31 अक्टूबर, 2015 को सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित राष्ट्रीय एकता दिवस के दौरान की थी। यह कार्यक्रम विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के लोगों के बीच आपसी मेल-मिलाप और आदान-प्रदान के माध्यम से सांस्कृतिक विविधता का उत्सव मनाने के लिए शुरू किया गया था ताकि पूरे देश में आपसी समझ की एक समान भावना व्याप्त हो।



एक भारत श्रेष्ठ भारत

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर की “एक भारत श्रेष्ठ भारत” टीम भारत सरकार के विभिन्न अभियानों, जैसे “एक भारत श्रेष्ठ भारत”, “राष्ट्रीय आविष्कार अभियान”, “उन्नत भारत अभियान”, “स्वच्छ भारत अभियान”, “ग्रामीण प्रौद्योगिकी एक्शनग्रुप” को बढ़ावा देने के लिए सक्रिय रूप से विभिन्न गतिविधियों का संचालन करती है।

- (i) एक भारत श्रेष्ठ भारत <http://ebsb.iiti.ac.in>
- (ii) राष्ट्रीय आविष्कार अभियान <http://ebsb.iiti.ac.in/rashtriya-avishkar-abhiyan/>
- (iii) उन्नत भारत अभियान <http://ebsb.iiti.ac.in/Unnat-Bharat-Abhiyan/>
- (iv) स्वच्छ भारत अभियान <http://ebsb.iiti.ac.in/Swachh-Bharat-Abhiyan/>
- (v) ग्रामीण प्रौद्योगिकी कार्य समूह <http://ebsb.iiti.ac.in/RuTAG/>



प्रो. नीरज कुमार शुक्ला
संयोजक, एक भारत श्रेष्ठ भारत
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर
ebsb@iiti.ac.in



एक भारत श्रेष्ठ भारत दल का उप समूह



डॉ. आशिष कुमार
दल समन्वयक



डॉ. मृगेन्द्र दुबे
दल समन्वयक



प्रो. अरुणा तिवारी
दल समन्वयक



डॉ. अनन्या घोषाल
दल समन्वयक



भारत सरकार के सहयोग से युवा संगम यात्रा

मणिपुर के माननीय राज्यपाल
श्रीमती अनुसुइया उइके का मार्गदर्शन



31/03/2023

मध्य प्रदेश के युवाओं की मणिपुर यात्रा -आईआईटी इंदौर एवं एनआईटी मणिपुर द्वारा आयोजित

मध्य प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री
श्री शिवराज सिंह चौहान का मार्गदर्शन



23/03/2023

मणिपुर के युवाओं की मध्य प्रदेश यात्रा-आईआईटी इंदौर और एनआईटी मणिपुर द्वारा आयोजित

एक भारत श्रेष्ठ भारत, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर | www.ebsb.iiti.ac.in



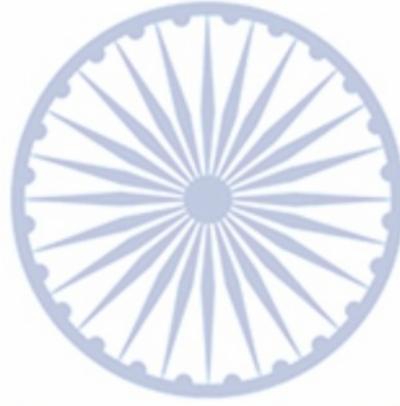
एक भारत श्रेष्ठ भारत

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर



प्रस्तुत करता हैं

विज्ञान पर चर्चा-कार्यक्रम की श्रृंखला



75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव

राज्य शिक्षा केंद्र, भोपाल
के सहयोग से

गणित, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विषय पर हिंदी भाषा
में रोचक श्रृंखलाबद्ध प्रस्तुति!



एक भारत श्रेष्ठ भारत



एक भारत श्रेष्ठ भारत, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर | www.ebsb.iiti.ac.in

हमारी सबसे महत्वपूर्ण पहलों में से एक राष्ट्रीय आविष्कार अभियान (आरएए) योजना को बढ़ावा देने के लिए “विज्ञान पर चर्चा – कार्यक्रम की श्रृंखला” है। कार्यक्रम “विज्ञान पर चर्चा – कार्यक्रम की श्रृंखला” का उद्देश्य स्कूली छात्रों को मुख्य रूप से हिंदी माध्यम में विज्ञान, गणित और प्रौद्योगिकी की अवधारणाओं को समझाना है। हमें आपको यह बताते हुए बेहद खुशी हो रही है कि 13 जनवरी, 2021 से 147 सत्रों का यूट्यूब के माध्यम से सीधा प्रसारण किया गया है। **सभी सत्र यहां यूट्यूब चैनल “आईआईटी इंदौर-ईबीएसबी क्लब” पर उपलब्ध हैं:**



इन चर्चाओं के कई वीडियो भारत सरकार के दीक्षा पोर्टल पर भी उपलब्ध हैं। श्रृंखला की लोकप्रिय चर्चाएँ इस प्रकार हैं:

शुभारंभ

विज्ञान पर चर्चा-कार्यक्रम की श्रृंखला

मुख्य अतिथि
पद्मश्री प्रो. हरीश चंद्र वर्मा
(एच.सी. वर्मा)

अतिथि वक्ता
श्री सृजन पाल सिंह

वेदों से सीखने लायक बातें

राष्ट्रीय आविष्कार अभियान, एक भारत श्रेष्ठ भारत
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर प्रस्तुत करता है
विज्ञान पर चर्चा - अधिवेशन 120
शीर्षक- सामाजिक जीवन पर वेदों का प्रभाव

अतिथि वक्ता: डॉ. टी. दशरथ
एच. सी. वर्मा

दिनांक - 20-09-2023
समय - 04.30 से 5.30 बजे

समाज के प्रति समर्पण का उदाहरण

राष्ट्रीय आविष्कार अभियान, एक भारत श्रेष्ठ भारत
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर प्रस्तुत करता है
विज्ञान पर चर्चा - अधिवेशन
शीर्षक- सोलर ऊर्जा की जरूरत एवं उपयोगिता

अतिथि वक्ता: श्री सृजन पाल सिंह
अतिथि वक्ता: श्री सृजन पाल सिंह

दिनांक - 26-04-2023
समय - 04.30 से 5.30 बजे

सीखने योग्य-उत्साहवर्धक बातचीत

राष्ट्रीय आविष्कार अभियान, एक भारत श्रेष्ठ भारत
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर
विज्ञान पर चर्चा - अधिवेशन 125
सीखने योग्य-उत्साहवर्धक बातचीत

अतिथि वक्ता: श्री सृजन पाल सिंह
अतिथि वक्ता: श्री सृजन पाल सिंह

दिनांक - 25-10-2023
समय - 04.30 से 5.30 बजे

मध्य प्रदेश के सरकारी स्कूलों के शिक्षकों के ज्ञान को बढ़ाने के लिए, हमने स्कूल शिक्षकों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यशालाएं भी आयोजित कीं।



हिंदी भाषा में मध्य प्रदेश सरकार द्वारा संचालित जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों तथा विद्यालयों के शिक्षकों के लिए "गणित, विज्ञान और प्रौद्योगिकी" पर **कार्यशाला की श्रृंखला** का आयोजन



एक भारत श्रेष्ठ भारत, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर | www.ebsb.iiti.ac.in

व्याख्यान - 03

वायु प्रदूषण: आओ मिलकर समझें



वक्ता: प्रो. संजय कुमार सिंह,
आईआईटी इंदौर

व्याख्यान - 52

हवाई जहाज कैसे उड़ते हैं?



वक्ता: श्री प्रशांत कुमार शुक्ला,
डीआरडीओ

व्याख्यान - 128

भारत में वैदिक विज्ञान का विकास



वक्ता: श्री कृष्णा किशोर दास जी,
प्रचारक, इस्कॉन उज्जैन

व्याख्यान - 137

इंदौर इतना साफ कैसे?



वक्ता: हर्षिका सिंह इंदौर
नगर पालिका निगम, इंदौर

व्याख्यान - 147

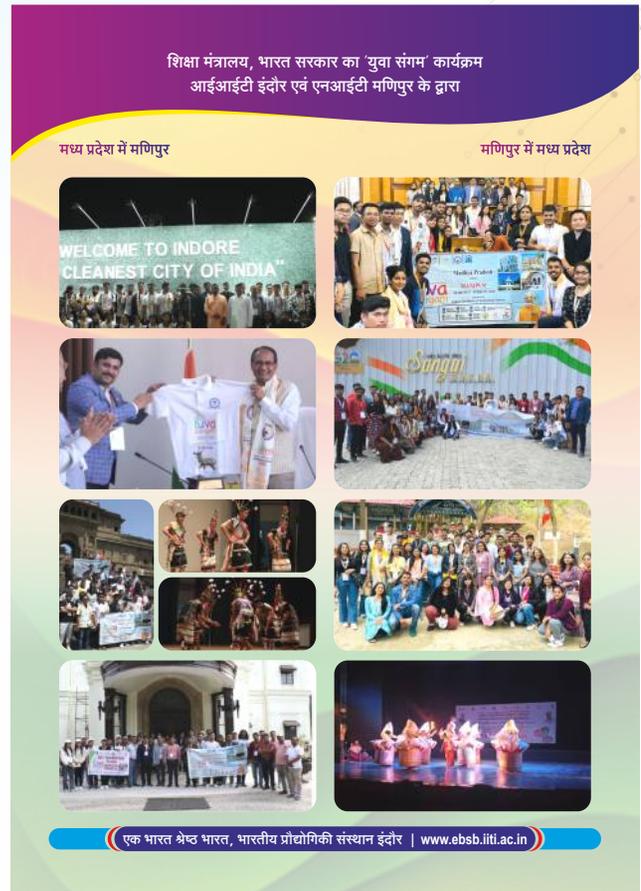
वैज्ञानिक चेतना और भारतीय नागरिकता बोध



वक्ता: श्री रजनी कांत मिश्रा, राष्ट्रीयसीमा शुल्क अप्रत्यक्षकर
एवं नार्कोटिक्स अकादमी (NACIN) लखनऊ

एक भारत श्रेष्ठ भारत अभियान को बढ़ावा देने के लिए, आईआईटी इंदौर की ईबीएसबी टीम ने "नॉर्थ ईस्ट कनेक्ट प्रोग्राम: युवा संगम कार्यक्रम चरण-I" का आयोजन किया। युवा संगम, भारत सरकार की एक पहल है जिसका उद्देश्य लोगों के बीच आपसी संपर्क को मजबूत करना और पूर्वोत्तर राज्यों तथा शेष भारत के युवाओं के बीच सहानुभूति का निर्माण करना है। यह कार्यक्रम एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत आयोजित किया गया था और इसमें पूर्वोत्तर (एनई) के 11 और देश के शेष 14 उच्च शिक्षा संस्थानों को आपसी दौरे के लिए जोड़ा गया था।





आईआईटी इंदौर की ईबीएसबी टीम, उन्नत भारत अभियान के पूर्ण उद्देश्य की प्राप्ति हेतु, हमारे आस-पास के गाँवों और उनके स्कूलों में निरंतर गतिविधियाँ आयोजित कर रही है। आईआईटी इंदौर के संकाय सदस्य और छात्र, ईबीएसबी टीम के साथ मिलकर, सामाजिक गतिविधियों से संबंधित आरएए, यूबीए, आरयूटीएजी और एसबीए के अंतर्गत विभिन्न परियोजनाओं पर भी निरंतर कार्य कर रहे हैं।



ईबीएसबी टीम इंदौर के स्थानीय प्रशासन, जैसे इंदौर के जिला कलेक्टर और जिला मजिस्ट्रेट, इंदौर नगर निगम, आस-पास के गांवों के ग्राम प्रधान आदि के साथ मिलकर समाज के विकास के लिए लगातार काम कर रही है।





भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर
Indian Institute of Technology Indore



एक भारत श्रेष्ठ भारत

webpage: <http://ebsb.iiti.ac.in>



भारत मंडपम, दिल्ली में आईआईटी इंदौर द्वारा
मध्य प्रदेश का प्रतिनिधित्व



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर
Indian Institute of Technology Indore

Khandwa Road, Simrol, Indore-453552, Madhya Pradesh, India

Website: www.iiti.ac.in

IIT-I study on betel nuts claims to aid in early diagnosis of oral cancer

Times News Network
Indore: A study by the Indian Institute of Technology, Indore (IIT-I), has claimed to aid in early diagnosis of oral cancer caused due to extensive consumption of betel nut in a malnourished population.



The institute in a statement released on Tuesday said a team of professors and students carried a study on betel nut, one of the key causes of an oral precancerous condition called Oral Submucous Fibrosis (OSMF), that leads to loss of elasticity in cheeks and restricts mouth opening. The condition, if

not unaddressed, can progress into oral cancer. The institute used the Raman micro-spectroscopy technique to study the biomolecular mechanisms behind the pathogenesis of OSMF and to identify the pathways, that can be targeted to prevent its transformation to cancer.

WESTERN RAILWAY
The Commissioner
 2nd Copy of Tender No. DT-CE/CI/WD/MS/SP/2024. Date & time of submission of tender already printed in NT and tender document. up to 15:00 Hours on 30.05.2024. How to be read: up to 15:00 Hours on 07.06.2024 and Date of opening of tender already printed in NT and tender document. 30.05.2024 at 15:30 Hrs. How to be read: 07.06.2024 at 15:30 Hrs. The other terms & conditions will remain unchanged. For more details please visit our website www.rwsr.gov.in 2192

The results of the study were verified using established sophisticated methods such as metabolomics and lipidomics by liquid chromatography-mass spectrometry.

IIT-I biochemist and biochemical engineering associate professor Dr Hem Chandra Jia said, "The study is based on a non-invasive spectroscopic technique, Raman micro spectroscopy. Such studies can help doctors and scientists to develop methods for early diagnosis of cancer. Moreover, they can help in cancer therapy to treat in early stages and improve the over-

all quality of life of the patients". Jia said, the study found that with a lack of appropriate nourishment, the betel nut dysregulates several cancer-causing pathways associated with molecules like acetyl-coA and carbohydrate metabolism. In the future, such molecules can be potential biomarkers for detecting whether a patient is susceptible to developing oral cancer.

Other members of the team included Dr Tarun Prakash Verma, Siddharth Singh, Sonali Adhikari from the department of biosciences and biomedical engineering and professor Rajesh Kumar and Dr Chanchal Rani from department of physics.

The study was supported by the department of science and technology (DST) and was published in the Journal of Raman Spectroscopy.

Professor Rajesh Kumar said, "Methods like Raman Spectroscopy can serve as non-invasive methods in identification of the signature molecules for early diagnosis of cancer and various other diseases. Such techniques can be fast and reliable for mass screening in public health centres".

In a first, IIT-I holds joint research project with UK university

Our Staff Reporter
Indore:



Indian Institute of Technology (IIT) Indore is conducting a joint research capacity building project with the University of Plymouth (UoP), a leading university in the United Kingdom (UK). This is an initiative taken by the Scheme for Promotion of Academic and Research Collaboration (SPARC) and the UK-India Education and Research Initiative (UKERI) to promote international student exchanges between India and UK.

The project is focusing on inspiring researchers of tomorrow in sustainable concrete construction. At present, a team of 2 faculties and 8 students from UK is at the Institute as part of the project. The joint research capacity building project is designed so that emerging engineers can be trained to specialise in sustainable construction practices. While the Indian government has been trying to promote sustainable solutions, like use of recycled aggregates, the construction industry is still finding it hard to adopt them for general construction. One of the reasons for this slow uptake is that the current workforce lacks the relevant skillset or motivation to adopt sustainable construction practices. This lack of skilled and motivated workforce inspired Chaudhary to jointly design this

programme with Dr Kim, who has been working on similar concepts in other South-east Asian countries. Chaudhary said, "This programme provides an excellent opportunity for undergraduate students to experience international standards of research and training at an early age. The project is expected to inspire more student exchange programmes focused on preparing a skilled workforce motivated to bring about sustainable changes in our community. The project is designed to prepare highly motivated and skilled engineers who can bring on-ground sustainable changes in the construction industry. This is the first time that the institute is conducting an international exchange programme at this scale for undergraduate students.

IIT-I to expand MSME vendor base, promote e-marketplace

Times News Network

Indore: In a bid to bolster the government e-marketplace and enhance the procurement system from Micro, Small and Medium Enterprises (MSME), Indian Institute of Technology (IIT), Indore is looking to expand the vendor base by onboarding new and additional players from the sector.

"With the implementation of General Financial Rules 2017 and government e-marketplace, IIT Indore has been executing the procurement procedure in compliance with this policy. While we possess a robust vendor database, we aspire to further expand it by incorporating new vendors to collaborate with us in providing superior goods and services at economical rates,

To foster the network of vendors, IIT Indore is organizing a Vendor's Meet on August 5 on campus

thereby optimizing taxpayers' funds," stated IIT-I public relations officer, Commander Sunil Kumar (Retd). The Ministry of Finance, through General Financial Rules 2017, mandated the procurement of goods and services from GeM by government users.

To foster the network of vendors, IIT Indore is organizing a Vendor's Meet on August 5 in the campus.

"This meet aims to amplify its vendor database, facilitate supplier registration on the GeM, and address queries pertaining to MSME

registration. As per the directive of the Government of India, procurement by government institutes should be executed through GeM. The meet is anticipated to persuade and guide the vendors to come under the purview of GeM, which offers a more transparent and expeditious procurement service," said Kumar.

"MSMEs are also provided few waivers in the procurement policy enabling them to participate in the bidding process at par with the established vendors. This meet will provide them with an opportunity to address their queries and comprehend the process of registration on GeM & MSME, which may assist them in expanding the horizon of opportunities for their businesses.

IIT-I to teach budding engineers sustainable construction practices

Times News Network

COLLABORATES WITH UK VARSITY

Indore: The Indian Institute of Technology (IIT), Indore will train budding engineers in sustainable concrete construction practices and to use recycled aggregates to promote sustainable solutions for the construction industry.

The Indian government has been actively advocating for the adoption of sustainable practices in the construction sector such as the incorporation of recycled aggregates. However, the scarcity of a skilled workforce has hindered the seamless implementation of these practices by industry stakeholders.

IIT-I has collaborated with the University of Plymouth (UoP), a leading university in the United Kingdom (UK) to conduct a joint research capacity building project to train emerging engineers in sustainable construction practices. "I have really enjoyed ha-

This is the first international exchange program for undergraduate students at IIT-Indore. The collaboration is part of the Scheme for Promotion of Academic and Research Collaboration (SPARC) and the UK-India Education and Research Initiative (UKERI) to promote international student exchanges between India and the UK

Research Initiative (UKERI) to promote international student exchanges between India and UK. Professor Subhas Joshi, Director, IIT Indore said "The project is focusing on inspiring the researchers of tomorrow in sustainable concrete construction. As part of the project, the students will be learning international best practices on using recycled aggregates and trained to implement them in the construction industry. As part of the project, a team of two faculties and eight students from the UK is at the institute."

"We were fortunate to receive this funding from the UKERI, so our Civil Engineering students at the University of Plymouth have a once-in-a-lifetime opportunity to come to IIT Indore to conduct research in sustainable construction materials," said Dr Bokun Kim, from UoP, UK.

Research Initiative (UKERI) to promote international student exchanges between India and UK. Professor Subhas Joshi, Director, IIT Indore said "The project is focusing on inspiring the researchers of tomorrow in sustainable concrete construction. As part of the project, the students will be learning international best practices on using recycled aggregates and trained to implement them in the construction industry. As part of the project, a team of two faculties and eight students from the UK is at the institute."

IIT Indore Success Story | 12th convocation ceremony was held on Saturday 673 including 161 girls graduate

Our Staff Reporter

23.8 per cent girls graduated from IIT Indore on Saturday in the 12th Convocation of IIT Indore held on Saturday at IIT Indore campus in which Secretary DORAD and Chairman Defense Research and Development Organisation (DRDO), Dr Jagan V Kamat was chief guest while IIT Indore director Himanshu Rai, Dr R Siran, chairman Board of Governors and other were present. You all are the future of India and have the ability to transform the nation. I wish you all achieve heights in your life, Chief guest Kamat said.



In the convocation, 334 students got B.Tech degree in undergraduate category. While 87 got MSc, 54-M.Tech, 23-MS (Research), and 84 MSc/MS in post-graduate category. In PhD, 81 students got their degrees. Total 673 students graduated from IIT of which 161 are girls.

Students celebrate their convocation ceremony. Photo by ANAND SHYAM. Silver Medal for best academic performance among all graduating UG students of particular department was given to Nitya Choudhary (B.Tech (CSE)), Vishalagopal Sai Venkata Sarath (B.Tech (CSE)), Dharit Dev Shishuabhi (B.Tech (EE)), Anit Vikrant Dhanav (B.Tech (ME)) and Jatin Satish Kumar (B.Tech (MEAG)). Inaugural silver medal for best overall performance among all graduating PG students (M.Tech and MS Program) was given to Rishav Sharma and Krishang Kadiyap. Best foundation gold medal for best academic performance among all graduating UG students was Abhinav Yadav, best B.Tech project (BIT) award amongst all academic work by a female student was Kanchari Samalshya PhD (Biochemistry and Biomedical Engineering) thesis title: Indigenous microbes for sustainable biopolymer synthesis: comprehensive optimisation and characterisation study. Institute's gold medal for best all-round performance among all graduating students was Abhinav Yadav, best B.Tech project (BIT) award amongst all academic work by a female student was Kanchari Samalshya PhD (Biochemistry and Biomedical Engineering) thesis title: Indigenous microbes for sustainable biopolymer synthesis: comprehensive optimisation and characterisation study. Institute's gold medal for best overall performance among all graduating PG students (MS/MSM Program) was Sebastian PS. MS/MSM (2021 batch) and Piyush Dabry MS/MSM (2022 batch). All students at the convocation were dressed in Kurta Pyjama or Kurta-Sewar or Saris. Parents of students were filled with joy and felt proud on their achievement.

IIT Indore, NATRAX join forces to foster joint research, technology



Our Staff Reporter
Indore:

Indian Institute of Technology Indore and National Automotive Test Tracks (NATRAX) have signed a Memorandum of Understanding (MoU) aimed at fostering joint research and technology development projects. This strategic partnership is set to enhance collaboration between academia and industry driving innovation and technological advancements in the automotive sector. The MoU was signed between IIT Indore director Prof

Subhas Joshi and NATRAX director Dr Manish Jaiswal. This collaboration will leverage the strengths of both institutions to undertake cutting-edge research, develop new technologies, and provide valuable opportunities for students and researchers. Joshi said, "This MoU marks a significant milestone in our efforts to bridge the gap between academia and industry. We are excited about the potential of this collaboration to drive innovation and create impactful solutions for road safety & track predictive maintenance."

Key objectives of MoU
 Joint Research Projects: Initiating collaborative research projects in areas such as road safety, track predictive maintenance without affecting the track characteristics, advanced materials, and sustainable technologies. Technology Development: Fostering the development of innovative technologies that can be applied in road safety & maintenance of tracks. Knowledge Exchange: Facilitating the exchange of knowledge and expertise between IIT Indore and NATRAX through workshops, seminars, and training programmes. Student Engagement: Providing opportunities for students to participate in research projects, internships, and hands-on training at NATRAX facilities.

This IIT-I goggle prototype is cool, literally! Obstructs Heat, Delivers Cooling Sensation To Eyes

Times News Network

Indore: The Indian Institute of Technology (IIT), Indore has engineered a prototype for innovative flexible goggles designed to obstruct heat whilst delivering a cooling sensation to the eyes.

These sophisticated goggles possess the proficiency to filter infrared heat utilising electrochromic colour modulation. The electrochromic colour modulation constitutes a mechanism to regulate the heat-blocking capability in response to a minimal electric current. The technology will be of immense use for people working under extreme heat conditions especially our army working in such areas and personal working in arid lands. With a little modification in design the same technology can be utilised for making goggles for watching 3D cinema", said Professor Rajesh Kumar from the Physics Department at IIT Indore, the lead of the project.

The research team included Bhumiika Saini, Anjali Ghughgha, Nikita, Dr Samera Ivaturi, Dr Sushita Kandol, Love Bansal, Deb Rathi, Dr Sabin KC and Dr Ravil Bhatia.

The prototype developed by IIT-I exhibits flexibility and can be manipulated through bending or twisting, rendering it suitable for diverse practical applications necessitating heat isolation.

The goggles' distinctive architecture incorporates a mix of materials, comprising tungsten chalcogenide and oxides combined with electrochromic active materials.

"This combination lets the device block over 10 per cent of heat when the device is ON and maintain a cooler temperature, with a measurable 0.5°C difference between the two sides of the goggles' surface," said Kumar. The lenses demonstrate the capability to alter between blue and magenta hues, furnishing a visible indication of its active heat-filtering state. Beyond heat obstruction, the goggles exhibit remarkable light control, achieving optical modulation up to 100 per cent. This advancement indicates the emergence of eye-care devices that not only safeguard against sunlight but also amplify comfort through heat reduction—a significant development for protective eyewear at the institute said.

IIT Indore brainstorms on standards for changing climate

Our Staff Reporter

IIT Indore hosted a one-day workshop titled "Standards for the Changing Climate: A Shared Vision for a Better World" on Monday, focusing on addressing the challenges posed by climate change through the lens of standardisation.

The event, which was organised in collaboration with the Bureau of Indian Standards (BIS) and the DST-CPR Centre for Policy Research, attracted around 70 participants, including students, researchers, scholars and faculty members.

Prof Manish Goyal from the Department of Civil Engineering at IIT Indore led the workshop, which included expert talks and collaborative discussions.

He engaged the audience in a discussion about the necessity of developing quality products to meet standard requirements. Jimmy Shah, COO of Infinite Environmental Solutions Limited, engaged participants in an in-depth discussion about carbon footprints and the critical aspects of carbon emissions, including their relationship to climate change. He explored the various types of carbon emissions and their impact on the global carbon market, particularly in the context of standardisation. He also shared insights on the documentation and regulations established by the United Nations related to standardisation, addressing various issues in the carbon sector.

Prof. Suresh C. Mishra, scientist, CSIR AICTE, delivered a lecture on the application of artificial intelligence in environmental impact assessment and management. He effectively simplified complex concepts for the audience, demonstrating how the objectives of standardisation can be achieved through the integration of artificial intelligence in environmental initiatives.

Participants pose for a group photo after the workshop at IIT Indore on Monday.



Participants pose for a group photo after the workshop at IIT Indore on Monday.

केमेट्री विभाग की टीम को मिला पेटेंट. वाहन चलाने में उपयोग होने की है संभावना IIT ने बनाया ऐसा उत्प्रेरक जिससे कम कीमत में कम तापमान पर होगा हाइड्रोजन का उत्पादन

भारत संवाददाता

आइआईटी के केमेट्री विभाग ने कम कीमत में हाइड्रोजन का उत्पादन करने की तकनीक खोजी है। विभाग ने एक नया उत्प्रेरक विकसित किया, जिससे हाइड्रोजन बनाने के मौजूदा तरीकों की तुलना में कम तापमान पर मेचनीकल शुद्ध हाइड्रोजन का उत्पादन किया जा सकता है।

इस हाइड्रोजन का वाहन चलाने में उपयोग करने की संभावना बड़ा नई है, क्योंकि इस तकनीक से हाइड्रोजन का उत्पादन किफायती और परिवहन अनुकूल होगा। इससे वाहन को उत्पादन के प्रारंभिक चरणों में लागू किया जा सकता है।

हाइड्रोजन का उत्पादन करने की संभावना बड़ा नई है, क्योंकि इस तकनीक से हाइड्रोजन का उत्पादन किफायती और परिवहन अनुकूल होगा। इससे वाहन को उत्पादन के प्रारंभिक चरणों में लागू किया जा सकता है।

इस हाइड्रोजन का वाहन चलाने में उपयोग करने की संभावना बड़ा नई है, क्योंकि इस तकनीक से हाइड्रोजन का उत्पादन किफायती और परिवहन अनुकूल होगा। इससे वाहन को उत्पादन के प्रारंभिक चरणों में लागू किया जा सकता है।

13 records made at Inter-IIT Aquatics Meet

Our Staff Reporter

As many as 13 new records were made at the five-day Inter-IIT Aquatics Meet held at Indore from October 1 to 5. The records included Women's 4x100 Freestyle by IIT Kanpur, Men 200 x 4 in backstroke by Rohab Pillai of IIT Hyderabad, Women's 100 x 4 in freestyle by Pratiksha Das of IIT Kanpur and Men's 200 x 4 in breaststroke by Nishant Rishi of IIT Hyderabad, Men's 300 x 4 in backstroke by Ranjit Ramharia of IIT Delhi and Men's 50 in breaststroke by Nishant Rishi of IIT Hyderabad.

In the Men's category, IIT Delhi was the most followed by IIT Hyderabad as runners-up and IIT Guwahati in the third place.

In the Women's category, IIT Kanpur was the best followed by IIT Madras as runners-up and IIT Guwahati in the third place.

A total of 49 events were conducted including freestyle, breaststroke, butterfly, backstroke and water polo matches. The events were conducted by the Swimming Federation of India along with Madhya Pradesh Swimming Association.

IIT Indore director Prof Subas Joshi said, "IIT Indore, through its sports facilities and excellent coaching staff, has been able to host this prestigious event. This event witnessed fierce competition, personal triumphs, and measurable milestones. Our aquatics facilities are world-class, and we were thrilled to offer them to our talented athletes."



Winners pose for a group photo with IIT Indore director Prof Subas Joshi.

IIT-I, MCTE forge partnership for defence tech innovation

Times News Network

Indore: IIT DRISHTI CPS Foundation, the Technology Innovation Hub of IIT Indore, signed an agreement with the Military College of Telecommunications Engineering (MCTE) to foster innovation, research, and development in cyber physical systems (CPS) and defence technologies.

The technology innovation hub of IIT-I will help in the development of field ready prototypes and address the Indian Army's operational challenges and in the establishment of collaborative programs for start-ups, incubation centres, and Centres of Excellence in defence technology.

This collaboration aims to transform academic and military problem definitions into deployable solutions by leveraging IIT's expertise in system modelling, simulation, and visualization.

Li Gen KH Owas, Commandant, MCTE, said, "This MoU symbolizes the convergence of academic innovation and operational expertise, a synergy critical for addressing the challenges of modern warfare. Together with DRISHTI, we will transition projects from concepts to deployable solutions, fostering a culture of collaboration and innovation in defence technology."

As part of the memorandum of understanding (MoU), IIT DRISHTI CPS Foundation and MCTE will collaborate on joint research initiatives to explore Proof-of-Concept (PoC) projects to higher Technology Readiness Levels (TRLs), organise training programs, workshops, and skilling initiatives to enhance capabilities, and work on areas such as system simulation, modelling, hardware-software integration, and digitalisation.

Prof Rhupech Kumar Lad, project director, DRISHTI CPS Foundation, said, "The partnership with MCTE provides a platform to apply advanced cyber-physical systems research to critical national challenges, enriching outcomes and fostering technological innovation for national security."

The technology innovation hub of IIT-I said the institute has become the single point of contact for MCTE to interact with start-ups and external entities in the development of critical solutions for the Indian Army in the sphere of technology. The institute will also assist students of MCTE in developing projects into products and commercialising innovations.

IIT-I develops AI-system to detect anomaly in structures, HT wires

Times News Network

Indore: The Indian Institute of Technology (IIT), Indore, has developed a system using the power of Artificial Intelligence (AI) and Machine Learning (ML) to detect cracks and other structural anomalies in real-time. This groundbreaking technology is poised to revolutionize the process of structural inspection, enhancing accuracy and efficiency in assessing the integrity of buildings, roads, and high-tension wires.

The project, a collaborative endeavour spearheaded by Professor Abhiraj Datta, a faculty member at IIT-I, Kumar Shekhar, Shekhar, Masters, Space Engineering and Ph.D. scholar Harsha Avinash Tanti, seamlessly integrates Unmanned Aerial Vehicles (UAVs) with AI and ML algorithms to conduct comprehensive structural inspection and surveillance.

The UAVs are equipped with advanced cameras and LiDAR sensors, which synergistically provide detailed information about the location and size of any detected anomalies. The newly devised system can process data directly on the drone using edge computing, allowing for real-time decision-making. The drone's payload has been optimised to minimise space and power consumption, ensuring high performance and efficiency.

Professor Subas Joshi, Director of IIT Indore, said, "This research work has made a significant breakthrough in the field of structural inspection and surveillance. It has gained significant attention from experts, recognising its potential to advance inspection technology. As this system continues to be refined and applied, it is likely to have a significant impact on infrastructure monitoring and maintenance. This technology is particularly valuable for inspecting extensive road networks, cross-country gas pipelines, and high-tension power transmission lines. It has massive applications in the maintenance and surveillance of infrastructure like roads, power lines, etc., as well as in defence and space."

IIT-I claimed that the system has achieved a 98.7 per cent success rate in detecting and classifying cracks and processing data in just 30 milliseconds using advanced AI edge devices like NVIDIA Jetson.

Professor Datta said, "This innovation is expected to transform the way inspections are conducted, making the process faster, safer, and more reliable. Moreover, the system's ability to categorise anomalies based on risk levels and report them in real-time to ground station or inspection team is a unique advantage. This feature reduces the time and cost associated with maintenance and repairs. With its wide range of applications, including security and surveillance, this AI-enabled UAV system is set to become an essential tool in ensuring the safety and longevity of critical infrastructure."

IIT-I partners with Sun Life Global Solutions to foster innovation

Our Staff Reporter

IIT Indore has signed a MoU with Sun Life Global Solutions (SLG), the Global Capability Center and microcosm of the global insurance and asset management leader Sun Life, to drive innovation that will encompass the application of new age technologies like AI/ML, data analytics and processing and customer satisfaction. A key objective is to develop a skilled workforce capable of addressing new technological challenges in the GCC sector.

IIT Indore director Prof Subas Joshi said "The collaboration will help bridge the gap between academia and industry, combining our academic excellence with Sun Life's expert capabilities. The adoption of technologies as key enablers to our business strategy. Collaborating with IIT Indore strengthens our commitment to setting new standards in talent development, practice, flexibility, and efficiency for both modern and traditional systems. By adopting and scaling capabilities in AI, Cloud, and other emerging technologies, we will address critical skills in talent development. We are driving growth in areas such as Claims Prevention, Vision Business, and Social Analytics. Additionally, through Hackathons and ideation challenge in partnership with IIT Indore, we are looking at establishing a culture of engineering excellence that accelerates our speed to market."

The collaboration will also include joint research initiatives, technology transfer and support for the Indian start-up ecosystem.

Through this partnership, Sun Life aims to boost productivity and enhance service delivery by leveraging a skilled workforce capable of addressing new technological challenges in the GCC sector.

1,370 प्रतिभागी एथलेटिक्स, फुटबॉल, बैडमिंटन, सर्फिंग, भारोत्तोलन और शतरंज जैसी स्पर्धाओं में हुए शामिल

23 आईआईटी से 2,500 से अधिक प्रतिभागियों ने 12 स्पर्धाओं में लिया भाग

खेल भावना, टीम वर्क और सौहार्द का भाव आया नजर

57 वीं इंटर आईआईटी स्पोर्ट्स मीट का समापन

यूवा एथलेटिक को कायम मैनटेन व सपोर्ट की भावना आईआईटी इंटर में प्रिंसिपल गैरजिम्मेदार युवाओं को जोड़ने का अवसर है जिसे छात्रों के बीच में जोड़ने का अवसर है। युवा एथलेटिक को कायम मैनटेन व सपोर्ट की भावना आईआईटी इंटर में प्रिंसिपल गैरजिम्मेदार युवाओं को जोड़ने का अवसर है जिसे छात्रों के बीच में जोड़ने का अवसर है।

यूवा एथलेटिक को कायम मैनटेन व सपोर्ट की भावना आईआईटी इंटर में प्रिंसिपल गैरजिम्मेदार युवाओं को जोड़ने का अवसर है जिसे छात्रों के बीच में जोड़ने का अवसर है।



Participants pose for a group photo at the IIT Sports Meet.

AI useful in Alzheimer's diagnosis at early stage, reveals IIT Indore study

OUR STAFF REPORTER
INDORE

Indian Institute of Technology (IIT), Indore has conducted a study that revealed that advanced Artificial Intelligence (AI) techniques are useful in unlocking new potentials in Alzheimer research, marking a significant advancement in understanding and diagnosing this challenging condition.

The article on this study named 'Ensemble Deep Learning for Alzheimer's Disease (AD) Characterization and Estimation' has been published in the Nature Mental Health journal.

The study provides an in-depth exploration of recent advancements in deep learning, delving into sophisticated design strategies (diversity) and the incorporation of different types of data, including neuroimaging and genetic information. It thoroughly investigates current trends and challenges within the field, offering crucial insights into the evolving landscape of Alzheimer's disease diagnosis and management.

Alzheimer's disease is a devastating condition characterised by progressive deterioration of cognitive abilities in elderly pop-



ulation, presenting a major global health challenge. To address this, the team discussed cutting-edge artificial intelligence techniques to enhance understanding and diagnosis of AD.

Leveraging neuroimaging data obtained from advanced techniques such as Magnetic Resonance Imaging (MRI) and Positron Emission Tomography (PET), the researchers have meticulously reviewed sophisticated ensemble deep learning models in the manuscript. These models, combining multiple deep neural networks in a variety of ways, demonstrate exceptional potential in precisely identifying both structural and functional changes in the brain associated with Alzheimer's disease, providing additional straightforward benefits such as quantification of uncertainty of their predictions.

Prof. Tanveer, faculty member at IIT Indore,

heading the study said, 'Accurate and early diagnosis of Alzheimer's disease is paramount for effective intervention and treatment planning. Our research not only enhances diagnostic precision, but also enriches understanding of the intricate dynamics underlying AD. This research not only highlights the transformative role of Artificial Intelligence in advancing medical diagnostics, but also emphasises the critical role of multidisciplinary expertise and international collaboration in tackling complex healthcare challenges.'

The team includes Dr. Tripti from NIT Sikkar, Dr. Rahul, and Dr. Ashwani from IIT Indore, along with distinguished international faculty: Dr. Inan Beshiri from the University of Manitoba, Canada, Prof. Javier del Ser from TECNALIA, Spain, Prof. PSI Sughathan from Qatar University and Prof. CT Liu from UTS Australia.

Five-day workshop on Advanced Econometrics begins at IIT Indore

Our Staff Reporter
INDORE

A five-day workshop on 'Advanced Econometrics', which would cover a diverse range of topics from endogeneity to complex panel data models, was kick-started on an inspiring note at IIT Indore on Monday. The participants will experience a rigorous exploration of methodologies that are shaping contemporary econometric research. The sessions would not only highlight theoretical frameworks but also emphasise practical applications through hands-on exercises and case studies, a press release issued by IIT Indore said.

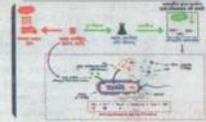
The workshop is being conducted by the School of Humanities and Social Sciences and has invited Prof. Kausik Chaudhari from the University of Leeds, UK, visiting faculty at IIT Indore, who with years of

expertise and numerous publications to his credit, brings a wealth of knowledge and experience that is sure to enrich the discourse throughout the workshop. Prof. Ruchi Sharma, head of the school, talked about offering a platform for both researchers and budding scholars to expand their understanding of this critical field. She said, 'As India continues to make significant strides in economic development, the importance of robust econometric analysis cannot be overstated. Workshops such as these serve as catalysts for advancing research capabilities and nurturing talent in the field of economics.' Participants include doctoral students pursuing research in economics and related disciplines, as well as professionals from industry keen on enhancing their analytical skills.

IIT इंदौर ने खाद्य अपशिष्ट से बढ़ाई कंक्रीट का ताकत

कचरे से मजबूत होगा मकान, नुकसान से बचेगा पर्यावरण

पत्रिका पत्रिका न्यूज नेटवर्क patrika.com



इंदौर: हम रोजाना जो खाद्य फेंकते हैं, उससे भारी मात्रा में कार्बन डाईऑक्साइड गैस निकलती है, जो ग्लोबल वार्मिंग का कारण बनती है। आइए इसी इंदौर के वैज्ञानिकों ने एक ऐसी तकनीक विकसित की है, जिसमें खाद्य अपशिष्ट और खास बैक्टीरिया को मिलाकर कंक्रीट को मजबूती लगाने का रास्ता खोजा जा सकता है। इससे दरारे खुद-ब-खुद भर जाते हैं। कंक्रीट ज्यादा टिकाऊ बनता है।

रिसर्च टीम ने बताया, अब खाद्य अपशिष्ट सड़ना है तो उसमें से कार्बन डाईऑक्साइड निकलती है। इसे बैक्टीरिया के साथ कंक्रीट में मिलाया जाए तो यह गैस कंक्रीट में मौजूद कैल्शियम के साथ मिलकर कैल्शियम कार्बोनेट नामक ठोस क्रिस्टल बनाती है। यह क्रिस्टल कंक्रीट में मौजूद दरारी खिंटों को भर देते हैं, जिससे कंक्रीट ज्यादा ठोस और टिकाऊ हो जाता है।

मजबूती में 205% बढ़ती

शोध में प्रोफेसर हेमचंद्र झा ने बताया, पहले कंक्रीट में बैक्टीरिया मिलाने के लिए महंगे पदार्थों का उपयोग किया जाता था, जिससे प्रक्रिया महंगी हो जाती थी। अब टीम ने खाद्य अपशिष्ट को खाद्य अपशिष्ट के रूप में इस्तेमाल किया है, जो पानी में आसानी से घुलता है और कंक्रीट के छुगों पर कोई बुरा असर नहीं डालता। इस प्रक्रिया में एक बैक्टीरिया का उपयोग किया गया है, जो पूरी तरह सुरक्षित है और किसी भी बीमारों का कारण नहीं बनता। खास बात यह है कि इस तकनीक से कंक्रीट की मजबूती में 205 फीसदी तक इजाफा हुआ है।

कार्बन उत्सर्जन में 20 फीसदी तक कमी आने की उम्मीद

शोधकर्ताओं का कहना है कि यह तकनीक अब बड़े स्तर पर उत्पादन के लिए तैयार है। ईंट, ब्लॉक और प्रीकास्ट कंक्रीट बनाने वाली फैक्ट्रियों को अपनाकर कम लागत में मजबूत और पर्यावरण के लिए बेहतर निर्माण सामग्री बना सकती है। इस तकनीक के व्यापक उपयोग से निर्माण क्षेत्र में कार्बन उत्सर्जन में 20 फीसदी तक कमी आने की उम्मीद है। इससे न केवल पर्यावरण को फायदा होगा बल्कि मकान और इमारतों की अधिक टिकाऊ और किरायेती बनेगी।

IIT Indore ponders on 'South Asia: Onsite Version'

Our Staff Reporter
INDORE

In a significant step toward strengthening international academic ties, JP Narayan National Centre of Excellence in the Humanities (JPN Centre), School of Humanities and Social Sciences (SHSS), and the International Office at IIT Indore are organising the International Academic Collaboration Workshop on Global Seminar South Asia: Onsite Version from February 17-23.

This initiative is part of the Memorandum of Understanding (MoU) between Kansai Gakuin University (KGU), Nishinomiya, Japan, and the IIT Indore, marking another milestone in their commitment to academic exchange and research collaboration.

The workshop will serve as a platform for cross-cultural learning, bringing together faculty and students from both institutions to engage in intellectual discourse, research sharing, and experiential learning.



Participants of the workshop pose for a group photo at IIT Indore on Thursday

Prof. Shibo Kei, a professor from KGU's School of International Studies, shared his university's vision of developing globally competent professionals who can contribute to an intercon-

ected world. His insights underscored the significance of such collaborations in preparing students to navigate diverse academic and professional landscapes.

On behalf of IIT Indore, Prof. Pritee Sharma, the MoU coordinator, emphasised that this workshop offers Japanese students a deep dive into India's rapid

economic growth, leadership in the IT sector, advancements in traditional and modern manufacturing systems, and initiatives in environmental conservation through a series of seminars and site visits. She said "Beyond the structured sessions, this initiative is expected to lay the foundation for long-term student and faculty ex-

change programs, joint research collaborations, cultural engagements, and language learning opportunities between the two universities. Moreover, it aspires to create a broader impact by extending these partnerships to other academic institutions in both India and Japan."

IIT Indore director Prof. Suhas Joshi said "As the world grows increasingly interconnected, initiatives like these are vital in fostering mutual understanding, academic excellence and cross-border collaboration. Through this workshop, IIT Indore and KGU reaffirm their commitment to shaping globally aware scholars, equipped with the knowledge and cultural sensitivity to address the challenges of the future."

Adding another dimension to the discussion, Prof. Nirmala Menon elaborated on the JPN Centre's mission of fostering global exchange in research, language studies, literature, and cultural exploration. Meanwhile, Prof. Miharui Yui from KGU, a key figure in this collaboration, brings valuable expertise in India Studies, enriching the workshop with her insights on Indo-Japanese academic partnerships.

संस्थान के कार्यक्रम व समारोह

सेमिनार व बाह्य संपर्क समिति, आईआईटी इंदौर

आईआईटी इंदौर की शैक्षणिक बाह्य संपर्क पहल, शैक्षणिक समुदाय और समाज के साथ प्रभावशाली जुड़ाव को बढ़ावा देने, ज्ञान के आदान-प्रदान और सामाजिक उत्तरदायित्व को बढ़ावा देने के लिए विशिष्ट रूप से डिज़ाइन की गई है, जो आईआईटी इंदौर को अन्य संस्थानों से अलग बनाती है। कई अन्य भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों, जो मुख्य रूप से तकनीकी शिक्षा और अनुसंधान पर केंद्रित हैं, से भिन्न, आईआईटी इंदौर अंतःविषय अनुसंधान, सामाजिक प्रभाव और वैश्विक सहयोग को अपने मूल उद्देश्य में एकीकृत करके एक समग्र दृष्टिकोण पर जोर देता है। यह विशिष्ट दृष्टिकोण प्रो. रघुनाथ साहू (संयोजक) के नेतृत्व में इसकी सेमिनार व बाह्य संपर्क समिति में परिलक्षित होता है, जिसमें डॉ. प्रियांशु सिंह, डॉ. कालंदी सी. प्रधान और सहायक कुलसचिव प्रशासन के सदस्य सक्रिय योगदान देते हैं।

चलाए गए कार्यक्रमों में शामिल हैं:

1. विमर्श (VIMARSH) संस्थान लोक व्याख्यान
2. आईएनएसए विशिष्ट व्याख्यान
3. भारतीय राजदूतों द्वारा लोक व्याख्यान
4. विज्ञान दिवस ओपन हाउस
5. इंदौर के विद्यालयों का प्रयोगशाला भ्रमण
6. विभिन्न विभागों और केंद्रों द्वारा तकनीकी और बाह्य संपर्क व्याख्यान

यह समिति विविध प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन करती है, जिनमें विश्व स्तर पर प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा अतिथि व्याख्यान, शिक्षा जगत और उद्योग जगत के बीच सेतु का काम करने वाली शोध संगोष्ठियाँ और स्थानीय चुनौतियों के समाधान हेतु सामुदायिक सहभागिता कार्यक्रम शामिल हैं। ये पहल आईआईटी इंदौर को अपने अत्याधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान को छात्रों और शैक्षणिक सहकर्मियों से लेकर उद्योग जगत के पेशवरों और आम जनता तक, व्यापक दर्शकों के साथ साझा करने में सक्षम बनाती हैं, साथ ही शोध संबंधी जिज्ञासाओं और कार्यप्रणालियों को परिष्कृत करने के लिए मूल्यवान प्रतिक्रिया भी प्रदान करती हैं। आईआईटी इंदौर को विशिष्ट बनाने वाली बात है अपने अद्वितीय उत्कृष्टता केंद्रों के माध्यम से नवाचार को बढ़ावा देने की इसकी प्रतिबद्धता, जिसमें अंतःविषय क्षेत्र शामिल हैं, जो भविष्य के शोधकर्ताओं को प्रेरित करने और उद्योग जगत की प्रगति का समर्थन करने के लिए इसके बाह्य संपर्क प्रयासों में सहज रूप से एकीकृत हैं।

पारंपरिक बाह्य संपर्क कार्यक्रमों से भिन्न, जो केवल शैक्षणिक प्रसार पर केंद्रित हो सकते हैं, आईआईटी इंदौर का दृष्टिकोण व्यावहारिक सामाजिक योगदान पर जोर देता है, जैसे ग्रामीण समुदायों के लिए स्थायी तकनीकी समाधान और क्षेत्रीय एवं वैश्विक मुद्दों पर केंद्रित सहयोगी परियोजनाएँ। अग्रणी शैक्षणिक संस्थानों, उद्योगों और स्थानीय समुदायों के साथ अपने मज़बूत नेटवर्क का लाभ उठाकर, समिति यह सुनिश्चित करती है कि आईआईटी इंदौर ज्ञान प्रसार और सामाजिक प्रगति का एक गतिशील केंद्र बना रहे। शैक्षणिक दृढ़ता, अंतःविषय नवाचार और सामाजिक उत्तरदायित्व का यह विशिष्ट मिश्रण आईआईटी इंदौर को परिवर्तनकारी शिक्षा और बाह्य संपर्क में अग्रणी बनाता है।

सेमिनार और बाह्य संपर्क समिति कई कार्यक्रमों का आयोजन करती है, जिनमें प्रमुख विमर्श संस्थान के सार्वजनिक व्याख्यान भी शामिल हैं। इन कार्यक्रमों में निम्नलिखित प्रमुख हस्तियों द्वारा दिए जाने वाले सार्वजनिक बाह्य संपर्क व्याख्यान शामिल हैं: पद्मश्री प्रो. एच.सी. वर्मा, एमेरिटस प्रोफेसर, भौतिकी, आईआईटी कानपुर; पद्मश्री प्रो. किरण सेठ, एसपीआईसी मैसी के संस्थापक और प्रख्यात विद्वान; परमाणु भौतिक विज्ञानी, प्रो. अमित रॉय, उपाध्यक्ष, नासी, प्रयागराज; प्रख्यात रसायनज्ञ पद्मश्री प्रो. ई.डी. जेमिस; क्षेत्रीय उपाध्यक्ष, भारतीय-दक्षिण एशिया प्रशांत, एएनएसवाईएस इंक., श्री रफीक सोमानी; अध्यक्ष, आईएनआई, प्रो. इंद्रील मन्ना; प्रख्यात रासायनिक इंजीनियर, पद्मश्री प्रो. जी.डी. यादव; डीबीटी सचिव, प्रो. राजेश एस. गोखले और प्रो. शुभाशीष चौधरी, निदेशक, आईआईटी बॉम्बे, आदि।



संस्थान सेमिनार और बाह्य संपर्क समिति ने सार्वजनिक व्याख्यानों की एक विस्तृत श्रृंखला की भी व्यवस्था की है, जिसमें पंजाब विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. अरुण के. गोवर द्वारा आईएनएसए विशिष्ट व्याख्यान (होमी भाभा का जीवन और समयरु एक समझ), पूर्व भारतीय राजदूत माननीय श्री मंजीव सिंह पुरी द्वारा सार्वजनिक व्याख्यान (विषयरु वैश्विक नियति के साथ भारत का मिलन), स्कूली बच्चों के लिए विज्ञान दिवस ओपन हाउस कार्यक्रम, इंदौर के विभिन्न स्कूलों द्वारा आईआईटी इंदौर प्रयोगशालाओं का दौरा आदि शामिल हैं।

ये पहल आईआईटी इंदौर को अपने अत्याधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान को छात्रों और शैक्षणिक सहकर्मियों से लेकर उद्योग के पेशेवरों और आम जनता तक व्यापक दर्शकों के साथ साझा करने में सक्षम बनाती हैं, साथ ही अनुसंधान पूछताछ और कार्यप्रणाली को परिष्कृत करने के लिए मूल्यवान फीडबैक को शामिल करती हैं।

विमर्श संस्थान के लोक व्याख्यान छात्रों, शोधकर्ताओं और व्यापक समुदाय को ऐसे विचारकों तक पहुँच प्रदान करके महत्वपूर्ण रूप से लाभान्वित करते हैं जो नई सोच और व्यावहारिक समाधानों को प्रेरित करते हैं। छात्रों के लिए, ये व्याख्यान शिक्षा से लेकर उद्यमिता तक, विविध करियर क्षेत्रों से परिचय कराते हैं, जिज्ञासा और महत्वाकांक्षा को प्रज्वलित करते हैं। शोधकर्ता अंतःविषय दृष्टिकोणों और उभरते रुझानों की अंतर्दृष्टि प्राप्त करते हैं, जिससे जटिल समस्याओं से निपटने की उनकी क्षमता बढ़ती है। उद्योग के पेशेवरों और आम जनता सहित व्यापक समुदाय के लिए, ये कार्यक्रम विज्ञान, प्रौद्योगिकी और सांस्कृतिक विरासत की गहरी समझ को बढ़ावा देते हैं और सामाजिक प्रगति की दिशा में सहयोगात्मक प्रयासों को प्रोत्साहित करते हैं। शैक्षणिक उत्कृष्टता को वास्तविक दुनिया के प्रभाव से जोड़कर, आईआईटी इंदौर की संगोष्ठी और बाह्य संपर्क समिति अपने दर्शकों को वैश्विक और स्थानीय चुनौतियों में सार्थक योगदान देने के लिए सशक्त बनाती है। हमारे प्रत्येक विभाग और केंद्र आईआईटी इंदौर समुदाय और विभिन्न स्कूलों और कॉलेजों को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अग्रणी बनाने के लिए नियमित बाह्य संपर्क व्याख्यान आयोजित कर रहे हैं। इसके माध्यम से, आईआईटी इंदौर अगली पीढ़ी को एक उज्ज्वल करियर क्षेत्र पर अग्रसर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और ज्ञान के प्रसार के माध्यम से समाज को सशक्त बनाता है। इन गतिविधियों के पीछे हमारी शैक्षणिक टीम में निम्नलिखित सदस्य शामिल हैं।



प्रो. रघुनाथ साहू
(संयोजक)
प्रोफेसर,
भौतिकी विभाग
raghunath@iiti.ac.in



डॉ. प्रियांश सिंह
(सदस्य)
सहायक प्रोफेसर,
ज्ञानपद अभियांत्रिकी विभाग
priyansh@iiti.ac.in



डॉ. कलंदी सी. प्रधान
(सदस्य)
सहायक प्रोफेसर,
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान
kcpradhan@iiti.ac.in

13 जुलाई 2024: आईआईटी इंदौर का 12वां दीक्षांत समारोह

आईआईटी इंदौर ने 13 जुलाई, 2024 को 2024 बैच के 12वें दीक्षांत समारोह की मेजबानी की। मुख्य अतिथि के रूप में रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग के सचिव और डीआरडीओ के अध्यक्ष डॉ. समीर वी. कामत उपस्थित थे। इस अवसर पर शासी मंडल के अध्यक्ष डॉ. के. सिवन, आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी और आईआईएम इंदौर के निदेशक प्रो. हिमांशु राय भी उपस्थित थे।



13 जुलाई 2024: नर्मदा नदी क्षेत्र प्रबंधन अध्ययन केंद्र का उद्घाटन

नर्मदा नदी क्षेत्र प्रबंधन अध्ययन केंद्र का उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ. समीर वी. कामत, सचिव, रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग और अध्यक्ष, डीआरडीओ द्वारा किया गया। इस अवसर पर शासी मंडल के अध्यक्ष डॉ. के. सिवन, आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी और आईआईएम इंदौर के निदेशक प्रो. हिमांशु राय भी उपस्थित थे।



27 जुलाई 2024: "नगर वन परियोजना"

"नगर वन परियोजना" की आधारशिला श्री सुभाष चंद्रा, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, राष्ट्रीय प्रतिपूरक वनीकरण निधि प्रबंधन और योजना प्राधिकरण (कैम्पा) पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा रखी गई। श्री पुरुषोत्तम धीमान, अतिरिक्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक और मुख्य वन संरक्षक, मध्य प्रदेश सरकार द्वारा 27 जुलाई, 2024 को आईआईटी इंदौर में रखी गई।



02 अगस्त 2024: ओरिएंटेशन प्रोग्राम 2024

हर साल की तरह आईआईटी इंदौर ने 02 अगस्त, 2024 को लेफ्टिनेंट जनरल केएच गवास वीएसएम, कमांडेंट एमसीटीई की अध्यक्षता में आईआईटी इंदौर के प्रथम वर्ष बैच के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम का आयोजन किया।



11 अगस्त 2024: आईआईटी इंदौर में वृक्षारोपण अभियान

आईआईटी इंदौर ने बीएसडब्ल्यू फार्मास्युटिकल्स प्राइवेट लिमिटेड के सहयोग से पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए एक सफल वृक्षारोपण अभियान का आयोजन किया। छात्रों, शिक्षकों और कंपनी के प्रतिनिधियों ने पूरे परिसर में पौधे लगाए। इस पहल का उद्देश्य पारिस्थितिक जागरूकता बढ़ाना और एक हरित, स्वस्थ भविष्य में योगदान देना था। प्रतिभागियों ने पौधों की निरंतर देखभाल का संकल्प लिया।



16 अगस्त 2024: विदेशी छात्रों का आईआईटी इंदौर भ्रमण

आईआईटी इंदौर में अंतर्राष्ट्रीय स्कूल का दौरा – 29 विदेशी छात्र, 3 शिक्षकों और एमरल्ड हाइट्स इंटरनेशनल स्कूल के 3 छात्रों के साथ 16 अगस्त 2024 को आईआईटी इंदौर का दौरा किया।



24 अगस्त 2024: पूर्व छात्र सम्मेलन

आईआईटी इंदौर के पूर्व छात्र एवं कॉर्पोरेट संबंध कार्यालय ने 24 अगस्त, 2024 को दिल्ली में एक पूर्व छात्र सम्मेलन का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में विभिन्न बैचों और विषयों के 100 से अधिक पूर्व छात्र अपने परिवार के सदस्यों के साथ उपस्थित हुए, जो प्रौद्योगिकी, शिक्षा, अनुसंधान और उद्यमिता जैसे विविध क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते थे।



14 सितंबर 2024: आईआईटी इंदौर में हिंदी दिवस आयोजन

आईआईटी इंदौर में 17 सितंबर 2024 को हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास जोशी मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर राजभाषा हिंदी समिति, आईआईटी इंदौर के संयोजक प्रो. राजेश कुमार और आईआईटी इंदौर के कुलसचिव श्री एस.पी. होता भी उपस्थित थे।



1-15 सितंबर 2024: स्वच्छता पखवाड़ा

आईआईटी इंदौर परिसर में 1 से 15 सितंबर 2024 तक स्वच्छता और पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए स्वच्छता पखवाड़ा सक्रिय रूप से आयोजित किया गया। संकाय सदस्य, कर्मचारी और छात्रों ने परिसर की सफाई अभियान सहित विभिन्न गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भाग लिया। छात्रावासों, शैक्षणिक भवनों और सार्वजनिक क्षेत्रों की गहन सफाई की गई। कूड़ेदानों को रणनीतिक रूप से रखा गया और कचरे के पृथक्करण और प्लास्टिक-मुक्त जीवन पर सत्र आयोजित किए गए। इस कार्यक्रम ने आईआईटी इंदौर समुदाय में एक स्वच्छ और हरित परिसर बनाए रखने के प्रति जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा दिया।



2 अक्टूबर 2024: महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री जयंती

2 अक्टूबर 2024 को आईआईटी इंदौर और ग्रामीण विकास प्रौद्योगिकी केंद्र (सीआरडीटी) ने महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री जयंती उत्सव कार्यक्रम आयोजित किया। इस आयोजन में नेशनल इनोवेशन फाउंडेशन के निदेशक और आईआईएसएफ के संयोजक डॉ. अरविंद सी. रानाडे मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए।

सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के अतिरिक्त, आईआईटी इंदौर और सीआरडीटी ने एक हस्तशिल्प मेले का आयोजन किया, जहाँ स्थानीय कारीगरों ने अपने शिल्प का प्रदर्शन किया और उन्हें बेचा। यह पहल सतत आजीविका को बढ़ावा देती है और हमारे समुदाय की समृद्ध शिल्पकला को उजागर करती है, साथ ही हमारे छात्रों को ग्रामीण उद्यमिता के बारे में अमूल्य ज्ञान भी प्रदान करती है। इसके साथ ही "ग्रामीण विकास हेतु नवाचारपूर्ण विचार" शीर्षक से एक पोस्टर प्रदर्शनी भी प्रस्तुत की गई, जिसमें हमारे छात्रों द्वारा तैयार किए गए प्रोजेक्ट प्रदर्शित किए गए। यह प्रदर्शनी ग्रामीण समुदायों द्वारा सामना की जाने वाली विभिन्न चुनौतियों के समाधान हेतु उनके रचनात्मक विचारों को दर्शाती है, जिससे नवाचार और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को बढ़ावा मिला।



30 सितंबर 2024: 38वीं इंटर आईआईटी एक्वेटिक्स मीट

38वें इंटर आईआईटी एक्वेटिक्स मीट का उद्घाटन समारोह 30 सितंबर, 2024 को शाम 5:30 बजे आईआईटी इंदौर के क्रिकेट ग्राउंड में हुआ। इस समारोह में डॉ. कन्नन पुगाझंधी मुख्य अतिथि थे। वे एक जाने-माने स्पोर्ट्स फिजिशियन हैं, जिन्होंने 1989 में भारतीय क्रिकेट टीम, 1996 में अटलांटा ओलंपिक्स और 2002 वर्ल्ड कप के दौरान भारतीय हॉकी टीम के साथ काम किया है।



25 नवंबर 2024: आईआईटी इंदौर के शासी मंडल के अध्यक्ष डॉ. के. सिवन ने आईआईटी इंदौर में गाजिंदा के छात्रों से बातचीत

आईआईटी इंदौर के शासी मंडल के अध्यक्ष डॉ. के. सिवन ने अपने आधिकारिक दौरे के दौरान संस्थान द्वारा अंगीकृत गाजिंदा स्कूल के छात्रों के साथ संवाद किया। इस सत्र की शुरुआत छात्रों द्वारा हार्दिक स्वागत से हुई, जिसके बाद डॉ. सिवन ने प्रेरणादायक संबोधन दिया, जिसमें शिक्षा और वैज्ञानिक जिज्ञासा के महत्व पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने अपने जीवन के अनुभव साझा किए और छात्रों को ऊँचे लक्ष्य निर्धारित करने तथा नवाचार को अपनाने के लिए प्रेरित किया। इस संवाद में एक रोचक प्रश्नोत्तर सत्र भी शामिल था, जिसमें छात्रों ने

अंतरिक्ष, प्रौद्योगिकी और करियर विकल्पों से संबंधित सारगर्भित प्रश्न पूछे। कार्यक्रम का समापन समूह फोटो और मुस्कुराहटों के साथ हुआ, जो ग्रामीण शिक्षा उत्थान के प्रति आईआईटी इंदौर की प्रतिबद्धता को और सुदृढ़ करता है।



12 नवम्बर 2024: आईआईटी इंदौर और नैट्रैक्स के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर

आईआईटी इंदौर ने 12 नवंबर 2024 को आईआईटी इंदौर परिसर में निदेशक प्रोफेसर सुहास एस. जोशी तथा नैट्रैक्स के निदेशक डॉ. मनीष जायसवाल की उपस्थिति में नेशनल ऑटोमोटिव टेस्ट ट्रेक्स (नैट्रैक्स) के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। आईआईटी इंदौर और नैट्रैक्स दोनों अपने-अपने संसाधनों और क्षमताओं के अनुरूप सहयोग करने, अपनी क्षमताओं का समन्वयन करने और एक-दूसरे को समर्थन प्रदान करने की इच्छा व्यक्त की।



24 दिसंबर 2024: आईआईटी इंदौर और एमसीटीई महु, भारतीय सेना के बीच एमओए पर हस्ताक्षर

आईआईटी इंदौर ने मिलिट्री कॉलेज ऑफ़ टेलीकम्युनिकेशन इंजीनियरिंग (एमसीटीई), महु इंडियन आर्मी (आईए) के साथ 24 दिसंबर 2024 को आईआईटी इंदौर में निदेशक प्रोफेसर सुहास एस. जोशी, डॉ. प्रोफेसर देवेन्द्र देशमुख, अधिष्ठाता, शैक्षणिक बाह्य संपर्क, आईआईटीआई और मेजर जनरल संजय सज्जनहार, कमांडेंट एमसीटीई की मौजूदगी में मेमोरेंडम ऑफ़ एग्रीमेंट पर साइन किए। एमसीटीई महु ने अपने अधिकारियों, आईआईटी इंदौर के लिए एमओए में बताए गए अलग-अलग क्षेत्र में विशेषज्ञता के साथ "कम्युनिकेशन एंड इन्फॉर्मेशन सिस्टम्स" में एम.टेक प्रोग्राम स्पॉन्सर किया।



10-17 दिसंबर: आईआईटी इंदौर में 57वीं इंटर आईआईटी स्पोर्ट्स मीट

आईआईटी इंदौर ने आईआईटी कानपुर के साथ मिलकर 10 से 17 दिसंबर 2024 तक 57वीं इंटर आईआईटी स्पोर्ट्स मीट की सह-मेजबानी की, जो इसके लिए एक प्रमुख आयोजन स्थल के रूप में पहली मेजबानी थी। इस भव्य आयोजन में सभी 23 आईआईटी से 2,500 से अधिक खिलाड़ियों ने एथलेटिक्स, फुटबॉल, बैडमिंटन, स्क्वैश, वेटलिफ्टिंग, शतरंज और एक्वेटिक्स सहित कुल 12 विधाओं में भाग लिया। आईआईटी इंदौर ने छह खेलों में कुल 1,370 प्रतिभागियों की मेजबानी की, जिसके माध्यम से संस्थान की उन्नत सुविधाओं और उत्कृष्ट संगठनात्मक क्षमता का प्रदर्शन हुआ। उद्घाटन और समापन समारोहों में सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ और मशाल रिले शामिल थीं, जिन्होंने सौहार्द, खेलभावना और सततता के संदेश को सशक्त किया। पूरे आयोजन के दौरान रियल-टाइम अपडेट एक समर्पित ऐप के माध्यम से उपलब्ध कराए गए।



12 जनवरी 2025: आईआईटी इंदौर में विद्यार्थी विज्ञान मंथन राज्य स्तरीय कैंप

12 जनवरी 2025 को पीएम श्री केवी आईआईटी इंदौर में विद्यार्थी विज्ञान मंथन का राज्य-स्तरीय शिविर आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान इंदौर और उज्जैन मंडलों के सभी जिलों से चयनित 5400+ छात्रों में से 136 प्रतिभाशाली छात्रों ने भौतिकी, रसायन विज्ञान, गणित और जीवविज्ञान के प्रयोगशाला-आधारित प्रयोगों का प्रदर्शन किया। कक्षा 6 से 11 तक की प्रत्येक श्रेणी के विजेताओं (कुल 18 छात्र) को आईआईटी इंदौर के गार्गी हॉल में आयोजित समापन समारोह में विशिष्ट अतिथियों द्वारा प्रमाणपत्र, नकद पुरस्कार और इलेक्ट्रॉनिक किट प्रदान किए गए।



17 से 19 जनवरी 2025: स्पिकमैके

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर के सोसाइटी फॉर द प्रमोशन ऑफ इंडियन क्लासिकल म्यूज़िक एंड कल्चर अमंगस्ट यूथ ने 17 से 19 जनवरी 2025 तक एक शानदार क्षेत्रीय सम्मेलन का सफलतापूर्वक आयोजन किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में गणमान्य व्यक्तियों द्वारा उद्घाटन और स्पिकमैके के संस्थापक और प्रख्यात विद्वान डॉ. किरण सेठ का परिचयात्मक भाषण शामिल था, जिसके बाद क्षेत्रीय लोक परंपराओं और शास्त्रीय संगीत सत्रों को प्रदर्शित करते हुए मंत्रमुग्ध संगीत प्रदर्शन हुए। देश भर के विश्व स्तरीय कलाकार जैसे, श्री तारापद रजक (पुरुलिया छरू नृत्य प्रदर्शन), पंडित उल्हास कशाळकर (हिंदुस्तानी गायन), उस्ताद शाहिद परवेज़ खान (सितार प्रदर्शन), उस्ताद राजा मियां (हिंदुस्तानी गायन) आदि ने न केवल प्रदर्शन किया, बल्कि इन तीन दिनों के कार्यक्रम के दौरान अपने-अपने कला रूपों की सुंदरता को प्रशिक्षित करने और फैलाने के लिए इंटरैक्टिव कार्यशालाएं भी आयोजित कीं।

लोक संगीत, शास्त्रीय संगीत, नृत्य, वाद्य संगीत, योग, क्राफ्ट आदि पर आधारित कार्यशालाओं ने प्रतिभागियों को अपनी कलात्मक क्षमताओं को और अधिक खोजने तथा नई कौशल सीखने के लिए प्रोत्साहित किया। इस वर्ष, पूरे भारत से लगभग 100 छात्रों ने इन कार्यशालाओं में भाग लिया, साथ ही आईआईटी इंदौर के सदस्यों और उनके परिवारों ने भी सहभागिता की। कार्यक्रम को प्रतिभागियों से अत्यंत सकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त हुई। उन्होंने रचनात्मक अभिव्यक्ति में शामिल होने और अपने सांस्कृतिक विचारों से जुड़ने के अवसर के लिए गहरी प्रशंसा व्यक्त की।



26 जनवरी 2025: आईआईटी इंदौर में गणतंत्र दिवस समारोह

आईआईटी इंदौर ने 26 जनवरी 2025 को परिसर में देशभक्ति के जोश के साथ 76वां गणतंत्र दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत निदेशक प्रोफेसर सुहास जोशी के झंडा फहराने से हुई, जिसके बाद राष्ट्रगान और प्रेरणा देने वाले भाषण हुए। छात्रों और कार्मिकों ने सांस्कृतिक प्रस्तुति में हिस्सा लिया, जिसमें भारत की विविधता और भावना को दिखाया गया। इस उत्सव ने एकता और राष्ट्रीय गौरव को बढ़ावा दिया।



5 फरवरी 2025: आईआईटी इंदौर में रक्तदान शिविर का आयोजन

आईआईटी इंदौर में 05 फरवरी 2025 को स्थानीय ब्लड बैंक के सहयोग से उत्साहपूर्वक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। छात्रों, संकाय सदस्यों और कर्मचारियों ने इस मानवीय पहल में सक्रिय रूप से भाग लिया और अत्यंत समर्थन प्रदर्शित किया। कार्यक्रम की शुरुआत रक्तदान के जीवन-रक्षक महत्व पर केंद्रित एक संक्षिप्त जागरूकता सत्र से हुई। रक्तदान प्रक्रिया के दौरान चिकित्सा विशेषज्ञों ने सभी सुरक्षा मानकों का सावधानीपूर्वक पालन सुनिश्चित किया। यह पहल न केवल सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को प्रोत्साहित करती है, बल्कि प्रतिभागियों में सामुदायिक सेवा की भावना को भी सशक्त रूप से उजागर करती है।



17 फरवरी 2025: स्थापना दिवस

आईआईटी इंदौर में 17 फरवरी 2025 को 16वां स्थापना दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) के सचिव डॉ. राजेश एस. गोखले मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे तथा कार्यक्रम की शोभा आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रोफेसर सुहास जोशी ने बढ़ाई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि द्वारा प्रेरणादायक उद्बोधन, विविध सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ तथा शैक्षणिक उपलब्धियों का सम्मान शामिल था। संकाय सदस्यों, छात्रों और पूर्व छात्रों ने इसमें सहभागिता की और संस्थान की विकास यात्रा एवं उपलब्धियों पर विचार साझा किए। इस समारोह ने शिक्षा एवं अनुसंधान में उत्कृष्टता के प्रति आईआईटी इंदौर की प्रतिबद्धता को उजागर किया।



25 अप्रैल 2025: बेंगलुरु में उद्योगपतियों के साथ सेमीकंडक्टर पर ब्रेनस्टॉर्मिंग सत्र

इस कार्यक्रम में शिक्षा जगत, उद्योग और नीति क्षेत्रों से 50 से अधिक विशेषज्ञ एकत्रित हुए, जिन्होंने भारत की सेमीकंडक्टर क्षमताओं को सुदृढ़ करने, शिक्षा को बढ़ावा देने, नवाचार को प्रोत्साहित करने और सहयोगात्मक अनुसंधान को बढ़ाने की रणनीतियों पर चर्चा की। कार्यक्रम का प्रमुख फोकस सेमीकंडक्टर शिक्षा को मजबूत करना, उद्योगदृशैक्षणिक सहयोग को प्रोत्साहित करना और अनुसंधान उत्कृष्टता को बढ़ावा देना रहा।



24 फरवरी 2025: जीआईएस 2025 के दौरान डीएसटी विभाग के अंतर्गत दृष्टि सीपीएस आईआईटीआई और एमपीएसईडीसी के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर

मध्य प्रदेश सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग और आईआईटीआई दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन, आईआईटी इंदौर ने ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2025 के तहत भोपाल में आईटी और टेक्नोलॉजी समिट के पहले दिन इंदौर के सिंहासा आईटी पार्क में इनक्यूबेशन सेंटर बनाने के लिए एक एमओयू साइन किया गया। यह सहयोग स्टार्टअप विकास, तकनीकी व्यावसायीकरण और इंटेलिजेंट मैनुफैक्चरिंग को आगे बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह केंद्र को-वर्किंग के लिए समर्पित स्थान, विशेषीकृत प्रयोगशालाएँ तथा अनुसंधान और उद्योग सहयोग के लिए सक्षम परिवेश प्रदान करेगा।



राजभाषा समिति

1. हिंदी पखवाड़ा - 2024

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर द्वारा राजभाषा समिति के तत्वावधान में दिनांक 17 से 27 सितंबर, 2024 के दौरान हिंदी पखवाड़ा - 2024 का आयोजन किया गया। इस अवसर पर, संस्थान के पुस्तकालय में हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया। इस प्रदर्शनी में संस्थान के सदस्यों के साथ-साथ जवाहर नवोदय विद्यालय के विद्यार्थी व शिक्षक भी उपस्थित थे तथा वे हिंदी के विभिन्न पुस्तकों एवं अन्य पुस्तकों से अवगत हुए। इस पखवाड़े को सफल बनाने के लिए, संस्थान के अलग-अलग स्थानों, विभागों व अनुभागों में पोस्टर लगाया गया, ताकि संस्थान के सदस्य अधिक से अधिक संख्या में हिंदी से जुड़े तथा इस पखवाड़े में अपनी भागीदारी प्रस्तुत करें। संस्थान में हिंदी पखवाड़ा - 2024 के अंतर्गत कुल 9 प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं, जैसे कि स्वरचित हिंदी कविता पाठ, हिंदी निबंध प्रतियोगिता, स्वरचित हिंदी कहानी पाठ (किस्से), वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता, हिंदी क्रिज़ प्रतियोगिता, हिंदी पोस्टर प्रतियोगिता इत्यादि। इसके अतिरिक्त, संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन पुरस्कार का भी आयोजन किया गया, जिसमें सभी प्रतिभागियों ने सितंबर 2023 से लेकर अगस्त 2024 तक के राजभाषा व हिंदी के क्षेत्र में कार्य विवरण प्रदान किया। हिंदी पखवाड़ा - 2024 के पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान, कुल 61 प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र एवं नक़द इनाम के साथ पुरस्कारित किया गया। इस अवसर पर, संस्थान के निदेशक महोदय, अधिष्ठाता (प्रशासन) महोदय, कुलसचिव महोदय, अध्यक्ष महोदय एवं अन्य अधिकारीगण, कर्मचारीगण, छात्रगण उपस्थित थे।



2. तकनीकी हिंदी संगोष्ठी - 2024

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर एवं भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर द्वारा संयुक्त रूप से 2-3 दिसंबर, 2024 को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर में तकनीकी हिंदी संगोष्ठी - 2024 आयोजित की गई। इस संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य तकनीकी क्षेत्र में हिंदी को बढ़ावा देना था। इस संगोष्ठी के अवसर पर, केंद्रीय हिंदी संस्थान के पूर्व उपाध्यक्ष व वैश्विक हिंदी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी मुख्य अतिथि के रूप में, आईआईटी जोधपुर के निदेशक प्रो. अविनाश कुमार अग्रवाल, आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी, प्रो. सौमित्र कुमार सनाढ्य, प्रो. राजेश कुमार उपस्थित रहे। इस संगोष्ठी में आधिकारिक रूप से आलेखों के संग्रह का विमोचन किया गया। वहीं, 11 भारतीय भाषाओं में रची गई कविताओं के संकलन काव्य भारती का विमोचन भी किया गया। तकनीकी हिंदी संगोष्ठी - 2024 के तत्वावधान में आमंत्रित वक्ताओं द्वारा व्याख्यान दिया गया। इस दौरान, तकनीकी एवं राजभाषा सत्र व प्रचलित विज्ञान एवं शैक्षणिक सत्र का आयोजन किया गया। वहीं, विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों एवं कार्यालयों से पधारे आलेख प्रस्तुतकर्ताओं ने अपने आलेख का प्रस्तुतिकरण दिया। संध्या काल में चार सत्रों के सर्वश्रेष्ठ आलेखों को पुरस्कारित किया गया। इन आलेखों का चयन अलग-अलग सत्रों के निर्णायक मंडल द्वारा किया गया था। इसके बाद, सांस्कृतिक संध्या का भी आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न रसों के कवियों ने अपनी पंक्तियाँ प्रस्तुत कीं। 3 दिसंबर, 2024 को राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया।



3. वार्षिक एवं वित्तीय प्रतिवेदन – 2024

संस्थान में प्रत्येक वर्ष अनिवार्य रूप से हिंदी व अंग्रेजी में वार्षिक प्रतिवेदन तथा वित्तीय प्रतिवेदन प्रकाशित किया जाता है। संस्थान के वार्षिक प्रतिवेदन में, पिछले वर्ष विभिन्न विभागों, अनुभागों एवं केंद्रों द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्यों एवं उनके सफल परिणामों की जानकारी प्रविष्ट की जाती है जैसे कि संकाय सदस्यों द्वारा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रस्तुत किए गए शोध-पत्र, पोस्टर प्रस्तुतीकरण, प्राप्त किए गए पेटेंट इत्यादि। साथ ही, इस प्रतिवेदन में पिछले वर्ष आयोजित किए गए विभिन्न कार्यक्रम, बैठक, सम्मेलन इत्यादि का भी विवरण दिया जाता है। वहीं, वित्तीय प्रतिवेदन में विभिन्न विभागों, अनुभागों व केंद्रों के अलग-अलग मदों में खर्च की गई धनराशि का ब्यौरा दिया जाता है। दोनों प्रतिवेदन को मिलाकर, राजभाषा समिति द्वारा लगभग 60 हजार शब्दों का अनुवाद किया गया।



4. विश्व हिंदी दिवस – 2025

संस्थान की राजभाषा समिति द्वारा दिनांक 10 जनवरी, 2025 को विश्व हिंदी दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के पुस्तकालय (सेमिनार कक्ष) में हुआ। संस्थान के अधिष्ठाता (प्रशासन) प्रोफेसर संदीप चौधरी, कुलसचिव श्री एस पी होता, राजभाषा समिति के संयोजक प्रोफेसर राजेश कुमार, डॉ. शरद गुप्ता, श्री राजीव पाण्डेय एवं अन्य संकाय सदस्यगण, अधिकारीगण, छात्रगण, तथा कर्मचारीगण की उपस्थिति में कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर, हिंदी की महत्ता पर ध्यान आकर्षित करते हुए नूतन वर्ष – 2025 के हिंदी संस्करण वाले कैलेंडर का विमोचन किया गया। साथ ही, विश्व भर में हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार हो सके, इसके लिए संस्थान के संकाय सदस्यों, छात्र/छात्राओं एवं कर्मचारियों के समक्ष संस्थान की त्रैमासिक हिंदी समाचार पत्रिका के चतुर्थ, पंचम व षष्ठ अंक का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया। अंत में, इस कार्यक्रम का समापन लोगों के बीच भेंट के रूप में नूतन वर्ष – 2025 के कैलेंडर एवं समाचार पत्रिका का वितरण करके किया गया।

5. त्रैमासिक हिंदी समाचार पत्रिका

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर में हिंदी समाचार पत्रिका की शुरुआत की गई। यह पत्रिका प्रत्येक तीन माह के अंतराल में प्रकाशित की जाती है। इस पत्रिका के प्रथम अंक का विमोचन हिंदी पखवाड़ा – 2023 के समापन समारोह के अवसर पर किया गया था। इसके बाद, समाचार पत्रिका के द्वितीय अंक का विमोचन विश्व हिंदी दिवस – 2024 के उपलक्ष्य पर हुआ था। मूल रूप से, इस पत्रिका में संस्थान में जारी अलग-अलग शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण होता है, जिसमें संस्थान प्रांगण में एवं बाहर आयोजित होने वाले कार्यक्रम, शोध कार्य, सामाजिक कार्य इत्यादि शामिल हैं। इसके उपरांत, हिंदी समाचार पत्रिका के तृतीय अंक का सफलतापूर्वक प्रकाशन जुलाई 2024 में किया गया। इसी क्रम में, चतुर्थ, पंचम व षष्ठ अंक का विमोचन विश्व हिंदी दिवस – 2025 के अवसर पर किया गया। हाल ही में, सप्तम् अंक का प्रकाशन जून 2025 में किया गया है।



विद्यार्जन संसाधन केंद्र

विद्यार्जन संसाधन केंद्र (एलआरसी) संस्थान के शिक्षण, अध्ययन, शोध और परिसर में अन्य शैक्षणिक गतिविधियों को आवश्यक सहायता प्रदान करता रहा है। उपयुक्त तकनीक का उपयोग करते हुए, पुस्तकालय सूचना संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने, आजीवन सीखने को बढ़ावा देने और शैक्षणिक समुदाय के लिए उपयोगी परिवेश बनाने के लिए संसाधन प्रदान करता है।



चित्र 1. विद्यार्जन संसाधन केंद्र (एलआरसी) भवन

पुस्तकालय संग्रह

पुस्तकालय मुद्रित और डिजिटल स्वरूपों में अपने संग्रह का निर्माण और उसका विस्तार निरंतर कर रहा है। इनमें शिक्षण और शोध के लिए सभी प्रासंगिक विषयों की पुस्तकें शामिल हैं। पुस्तकालय में कथा साहित्य, साहित्य और सामान्य रुचि की पुस्तकों, जैसे समसामयिक घटनाएँ, खेल आदि का भी उत्कृष्ट संग्रह है, जो उपयोगकर्ताओं का खाली समय में कुछ अलग पढ़ने और रुचि संबंधी अध्ययन की आवश्यकताओं का ध्यान रखता है। गांधीवादी अध्ययन संग्रह, हिंदी संग्रह, बाल पुस्तक संग्रह और मातृभाषा संग्रह जैसे विशेष संग्रह पुस्तकालय में गौरवपूर्ण स्थान रखते हैं। 31 मार्च 2025 तक मुद्रित पुस्तकों का कुल संग्रह 41,990+ और ई-पुस्तकों का 9,330+ है।



चित्र 2. अध्ययन कक्ष

इलेक्ट्रॉनिक संसाधन

आज की सूचना क्रांति की दुनिया में, इलेक्ट्रॉनिक सूचना संसाधनों तक पहुँच अत्यंत आवश्यक है, विशेष रूप से शैक्षणिक परिवेश में। वर्ष 2025 के दौरान, एलआरसी ने 3260 से अधिक ई-जर्नल्स और 10 से अधिक डेटाबेस की सदस्यता ली है और उन तक पहुँच प्रदान की है। कुछ प्रमुख सदस्यता प्राप्त ई-संसाधनों में रॉयल सोसाइटी ऑफ केमिस्ट्री, जेएसटीओआर, एसआईएएम, डी ग्रुइटर, वर्ल्ड साइंटिफिक, एसीआई स्टैंडर्ड एंड जर्नल्स, साइफाइंडर, स्कोपस, इंडियास्टेट, सीएमआईई प्रोवेस, सीएसडी एंटरप्राइज कैपस, ग्रामरली, टर्निटिन फीडबैक स्टूडियो आदि शामिल हैं।

इसके अलावा, भारत सरकार की वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन (ओएनओएस) पहल के सदस्य के रूप में, आईआईटी इंदौर शैक्षणिक समुदाय को 13,000 से अधिक ई-जर्नल्स तक पहुँच मिल रही है।

उपयोगकर्ताओं की सुविधा के लिए हाइपरलिंक सहित ई-संसाधनों की पूरी सूची एलआरसी वेबसाइट पर उपलब्ध है।

संस्थागत रिपॉजिटरी

पुस्तकालय ने आईआईटी इंदौर के संकाय सदस्यों, छात्रों और कर्मचारियों के रचनात्मक और विद्वत्तापूर्ण कार्यों और शोध को एकत्रित, संरक्षित, व्यवस्थित और उन तक पहुँच प्रदान करने के लिए व्यापक रूप से उपयोग किए जाने वाले ओपन सोर्स डीस्पेस सॉफ्टवेयर का

उपयोग करके एक संस्थागत डिजिटल रिपॉजिटरी बनाई है। इस रिपॉजिटरी में निम्नलिखित संग्रहों में 15,090+ से अधिक आइटम शामिल हैं: आईआईटीआई विद्वत्पूर्ण प्रकाशन (शोध लेख और पुस्तकें), शोध प्रबंध और शोध निबंध, आईआईटी इंदौर की तकनीकी विशेषताएँ, बी.टेक परियोजनाएँ, डिजिटल मानविकी प्रयोगशाला, समाचार पत्रों की क्लिपिंग, दृष्टिबाधित दिव्यांगों के लिए संसाधन (ऑडियो व्याख्यान), वार्षिक प्रतिवेदन, दीक्षांत समारोह प्रतिवेदन, पत्रिकाएँ और समाचार पत्र, आदि।

संचलन एवं संदर्भ सेवा

पुस्तकालय की संचलन सेवा कोहा-आईएलएमएस (ओपन-सोर्स सॉफ्टवेयर) का उपयोग करके स्वचालित है और आरएफआईडी प्रणाली के साथ एकीकृत है। उपयोगकर्ता आरएफआईडी स्वयं-सेवा कियोस्क के माध्यम से पाठ्य सामग्री प्राप्त कर सकते हैं और उसे वापस कर सकते हैं। 1 अप्रैल 2024 से 31 मार्च 2025 तक, सभी श्रेणियों के उपयोगकर्ताओं को गृह अध्ययन हेतु कुल 21,572 दस्तावेज़ जारी/नवीनीकृत किए गए। उपयोगकर्ता श्रेणी-वार संचलन आँकड़े नीचे दी गई तालिका में प्रस्तुत हैं:

	बी.टेक.	एम.टेक.	एम.एससी.	एमएस रिसर्च	पीएचडी और आरए	संकाय सदस्य	अन्य
गृह अध्ययन के लिए संचलित सामग्री	11484	1480	2835	283	2882	1881	727

पुस्तकालय उपयोगकर्ता सेवाएँ भी प्रदान करता है, जैसे संदर्भ, नई पुस्तकों का संकलन, नए छात्रों के लिए ऑरिएंटेशन कार्यक्रम, अंतर-पुस्तकालय लोन, विषय मार्गदर्शिका, ई-संसाधनों के लिए प्रशिक्षण सत्र कार्यक्रम, विभिन्न पुस्तकालय सेवाओं के लिए क्यूआर कोड तथा आईआरआईएनएस पोर्टल के माध्यम से संकाय प्रोफाइल प्रबंधन आदि।

दस्तावेज़ वितरण सेवा पोर्टल

एलआरसी विभिन्न स्रोतों से अपने संग्रह में उपलब्ध न होने वाले शोध लेखों को प्राप्त करने की व्यवस्था करता है। यह सेवा शैक्षणिक और शोध उद्देश्यों के लिए संकाय सदस्यों, शोधार्थियों, छात्रों और कर्मचारियों को कॉपीराइट कानूनों की सीमा के भीतर प्रदान की जा रही है। इस सेवा को सुव्यवस्थित करने के लिए, एलआरसी ने ओपन-सोर्स सॉफ्टवेयर का उपयोग करके एक 'दस्तावेज़ वितरण सेवा' पोर्टल विकसित किया है। इसे पुस्तकालय की वेबसाइट http://library.iiti.ac.in/?page_id=2988 पर देखा जा सकता है। अप्रैल 2024 से मार्च 2025 की अवधि के दौरान, अन्य संस्थानों के पुस्तकालयों से कुल 1,410+ शोध लेख संकलित करके आईआईटीआई उपयोगकर्ताओं को प्रदान किए गए थे।

मातृभाषा संग्रह:

पुस्तकालय का यह मातृभाषा संग्रह खंड आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी द्वारा समुदाय को समर्पित किया गया। आईआईटी इंदौर के संकाय सदस्यों और कर्मचारियों द्वारा 8 भारतीय भाषाओं (अर्थात् संस्कृत, तेलुगु, कन्नड़, उड़िया, मराठी, बंगाली, गुजराती और हिंदी) में 880 से अधिक पुस्तकें दान की गई हैं।

स्वाध्याय

एलआरसी का स्वाध्याय (स्व-अध्ययन स्थल) स्व-अध्ययन के लिए अनुकूल परिवेश प्रदान करता है। यह स्थान मुख्य एलआरसी भवन से अलग है और उपयोगकर्ताओं के लिए चौबीसों घंटे खुला रहता है। वर्ष के दौरान, बड़ी संख्या में छात्रों ने इस सुविधा का उपयोग किया और इससे लाभान्वित हुए।



चित्र 3. स्वाध्याय (स्व-अध्ययन स्थान)



चित्र 4. पुस्तकालय दल

स्वास्थ्य केंद्र



सुविधाएँ: स्वास्थ्य केंद्र संस्थान समुदाय, जिसमें छात्र, शोध कर्मचारी, कर्मचारी और उनके आश्रित शामिल हैं, को समर्पित सेवाएँ प्रदान करता है। यहाँ सूक्ष्म बीमारियों के लिए बाह्य रोगी, डे-केयर और आंतरिक रोगी सेवाएँ उपलब्ध हैं। आपातकालीन और एम्बुलेंस सेवाएँ 24x7 उपलब्ध हैं। यहाँ सुसज्जित फिजियोथेरेपी सेवाएँ भी उपलब्ध हैं। स्वास्थ्य केंद्र की टीम आवश्यक जाँच सुविधाएँ प्रदान करती है, जिनमें ईसीजी और रैपिड जाँच जैसे जीआरबीएस, ट्रॉप ए आदि शामिल हैं।

नैदानिक सेवाएँ – इन-हाउस डायग्नोस्टिक प्रयोगशाला और एक्स-रे सुविधा रोगियों को व्यापक देखभाल में मदद करती है।

विशेषज्ञ परामर्श सुविधाएँ – दंत चिकित्सा, ई.एन.टी., चिकित्सा, प्रसूति एवं स्त्री रोग, बाल रोग, मनोरोग, नेत्र रोग, ओर्थोपेडीक, आहार विज्ञान और त्वचा रोग के लिए विशेषज्ञ परामर्श सेवाएँ उपलब्ध हैं। संस्थान के स्वास्थ्य केंद्र में सूक्ष्म दंत चिकित्सा प्रक्रियाएँ, प्रसवपूर्व अनुवर्ती जाँच और सूक्ष्म ई.एन.टी. प्रक्रियाएँ भी की जाती हैं।

उच्च स्तर की जाँच और प्रबंधन की आवश्यकता वाले मामलों को सूचीबद्ध अस्पतालों में भेजा जाता है।

निवारक एवं प्रोत्साहनात्मक स्वास्थ्य देखभाल गतिविधियाँ – स्वास्थ्य केंद्र टीम द्वारा रोगों की रोकथाम, शीघ्र पहचान और शीघ्र उपचार शुरू करने हेतु विभिन्न गतिविधियाँ संचालित की जाती हैं। संस्थान के कर्मचारियों की वार्षिक स्वास्थ्य जाँच की गई। निवारक स्वास्थ्य देखभाल और स्व-स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए स्वास्थ्य जागरूकता सत्र आयोजित किए गए। निवारक एवं प्रोत्साहनात्मक स्वास्थ्य देखभाल गतिविधि के रूप में हाउसकीपिंग स्टाफ और संस्थान के ड्राइवरों जैसे अग्रिम पंक्ति के कर्मचारियों की मूल स्वास्थ्य जाँच भी आयोजित की गई।

संस्थान के 16वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में एक सफल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 262 सामुदायिक सदस्यों ने रक्तदान किया।

रक्तदान शिविर 2025

कुल – 262 रक्तदान

वर्ष 2024-2025 के लिए स्वास्थ्य केंद्र का संख्यात्मक डेटा

कुल ओपीडी	:	18197
कुल डे केयर और आईपीडी	:	896
आपातकालीन और ट्रॉमा	:	463
ईसीजी, जीआरबीएस जैसी आंतरिक जाँच	:	1041
ओपीडी समय के बाद सूक्ष्म आपात स्थितियाँ	:	3831
कुल फिजियोथेरेपी	:	3275



केंद्रीय कार्यशाला



आईआईटी इंदौर में केंद्रीय कार्यशाला की स्थापना वित्तीय वर्ष 2011–2012 के दौरान की गई थी। यह प्रयोगशाला कक्षाओं, अनुसंधान और परियोजना घटकों के निर्माण का कार्य करती है। इसमें आधुनिक अत्याधुनिक सुविधाओं और उच्च-स्तरीय अनुसंधान उपकरणों से सुसज्जित उत्कृष्ट बुनियादी ढाँचा है। केंद्रीय कार्यशाला में सात कार्यशालाएँ हैं: मशीनिंग, वेल्डिंग, फॉर्मिंग, फाउंड्री, इंजेक्शन मोल्डिंग, फिटिंग और बढईगीरी और कुशल और उच्च कुशल कार्यबल की एक टीम है। कार्यशाला में टर्निंग, मिलिंग, ड्रिलिंग, सरफेस ग्राइंडिंग, इंजेक्शन मोल्डिंग, शीट शियरिंग, बेंडिंग, ड्राइंग, वायर ड्राइंग, निबलिंग, आर्क वेल्डिंग, एमआईजी/एमएजी वेल्डिंग, टीआईजी वेल्डिंग, गैस वेल्डिंग, प्लाज्मा एयर कटिंग, इंडक्शन हीटिंग, मेटल कास्टिंग, फिटिंग और बढईगीरी से संबंधित निर्माण कार्य किए जाते हैं।

इसकी स्थापना छात्रों को सरल यांत्रिक घटकों के उत्पादन और निर्माण का व्यावहारिक अनुभव प्रदान करने के लिए की गई थी। यह कार्यक्षेत्र में मशीन टूल्स और कंप्यूटर का उपयोग करके एक छोटा, प्रभावी और सफल कार्यशील मॉडल है। छात्रों को व्यावसायिक निर्माण और संयोजन प्रक्रियाओं में वर्तमान में उपयोग की जाने वाली विभिन्न निर्माण विधियों, सामग्रियों और घटकों, प्रक्रियाओं और सॉफ्टवेयर प्रोग्रामों से परिचित कराया जाता है। यह छात्रों को इंजीनियर बनने में अत्यंत सहायक है।

सीडब्ल्यू नवीन और अत्याधुनिक शोध करने के लिए तकनीकी विशेषज्ञता और बुनियादी ढाँचागत सहायता प्रदान करके, छात्रों और शोधार्थियों को उनके शोध उद्देश्यों को साकार करने में सहायता करता है। सीडब्ल्यू व्यावहारिक प्रशिक्षण सत्रों और कार्यशालाओं के माध्यम से छात्रों को व्यावहारिक प्रशिक्षण और कौशल विकास के अवसर भी प्रदान करता है।

प्रभारी प्राध्यापक, केंद्रीय कार्यशाला



डॉ. डैन सत्यराज

एसोसिएट प्रोफेसर (एमई) | ईमेल: workshopincharge@iiti.ac.in

शोध में रुचि:

- मध्यम से उच्च एन्ट्रॉपी मिश्र धातु
- पुनःक्रिस्टलीकरण और कण वृद्धि अध्ययन
- सतह संशोधन इंजीनियरिंग (एसएमएटी, लेजर शॉट-पीनिंग, आदि)
- सिवियर प्लास्टिक डिफॉर्मेशन (एसपीडी)
- एमईए और एचईए की माइक्रो, नैनो मशीनिंग
- यांत्रिक और कार्यात्मक गुण अध्ययन

वर्ष 2024–2025 के दौरान गतिविधियाँ

- केंद्रीय कार्यशाला में प्राप्त कार्य अनुरोध:— केंद्रीय कार्यशाला ने वर्ष 2024–2025 के दौरान विभिन्न उद्देश्यों के लिए 317 कार्य अनुरोध पूरे किए, जिनमें स्नातक/स्नातकोत्तर अनुसंधान शिक्षण, स्नातकोत्तर अनुसंधान, बीटीपी, प्रायोजित परियोजनाएँ और अन्य निर्माण कार्य शामिल हैं। कार्यशाला ने उपलब्ध स्क्रेप सामग्री का उपयोग गमले के स्टैंड, भंडारण रेक, कंप्रेसर शेड, बक्से, टेबल, स्टैंड आदि बनाने के लिए किया है।
- पुरस्कार और उपलब्धियाँ: केंद्रीय कार्यशाला ने 2 अक्टूबर 2024 को आईआईटी इंदौर में आयोजित स्वच्छता पखवाड़ा समारोह 2024 के दौरान सर्वश्रेष्ठ स्वच्छता पुरस्कार जीता।
- प्रयोगशाला कक्षाएँ: केंद्रीय कार्यशाला ने विनिर्माण प्रक्रिया प्रयोगशाला (एमई-258) और मशीनिंग विज्ञान एवं मापविज्ञान प्रयोगशाला (एमई-355) की व्यावहारिक कक्षाएँ आयोजित कीं।
- कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम:— केंद्रीय कार्यशाला ने आईटीआई छात्रों के लिए वेल्डिंग प्रौद्योगिकी में 2 दिवसीय कौशल विकास कार्यक्रम का आयोजन किया और 12 छात्रों को प्रशिक्षित किया।
- नई सुविधाओं का विकास:— केंद्रीय कार्यशाला ने प्रयोगशाला और अनुसंधान कार्यों में सहायता के लिए सीएनसी नियंत्रित लेजर वेल्डिंग और माइक्रो प्लाज्मा वेल्डिंग सुविधा विकसित की है।
- बुनियादी ढाँचे का विकास: केंद्रीय कार्यशाला ने प्रयोगशाला और अनुसंधान कार्यों में सहायता के लिए कार्यशाला परिसर में माइक्रोफैक्ट्री और उन्नत वेल्डिंग सुविधा विकसित की है।



जेनेसिस इवेंट-2024 के लिए निर्मित ट्रेस



निर्मित मोटर चालित फिल्ट्रेशन सेटअप



इंटर आईआईटी स्पोर्ट्स मीट-2024 के लिए निर्मित सीढ़ियाँ



स्टैंड के निर्माण कार्यों का निर्माण



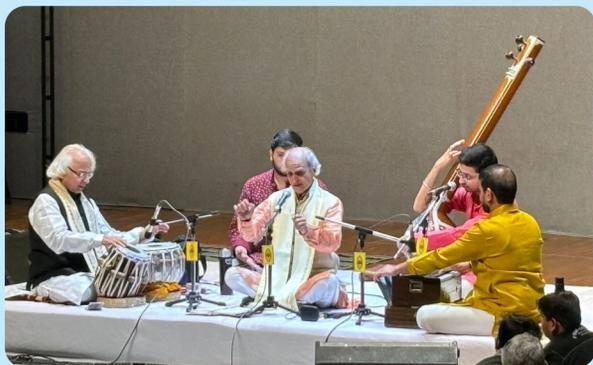
कॉन्सटैंट लोड प्लैट कॉइल स्प्रिंग का निर्माण



प्रयोगशाला के लिए विकास कार्य



सतत खेती के लिए बहुउद्देशीय सौर विद्युत चालित ट्रैक्टर



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर
Indian Institute of Technology Indore

खंडवा रोड, सिमरोल, इंदौर 453 552, भारत
 Website: www.iiti.ac.in